आचार्य श्री प्रवचन

(14.07.2018 से 24.11.2018 तक)

भाग-11

गुरुवर की वाणी,

बने सबकी कल्याणी

अन्य भाग हेतु : aagamdata.blogspot.in

खजुराहो अतिशयक्षेत्र

15-3-17 "कर्त्तव्य भी हो, भक्ति के साथ" प्रातः

एक-एक बूंद करके अंजुली में से वह पानी कितने भी आप हाथ को खिंचकर अंजुली बनाकर रखो तो भी वह रिसकर नीचे चला जाता है। दीर्घकाल बाद आप कह रहे हैं, हमने तो गिना नहीं, आप लोगों पर ही भरोसा करके चलते हैं। सुनते हैं 37 वर्ष हो गये 38 वाँ लगभग चालु हो गया। एक बार तो हम सैनवा जिसको द्रोणगिरी बोलते हैं वहाँ से छतरपुर, बड़ा-मलाहरा होते हुये हम आये थे।

दुबारा हमारा यहाँ पर आना हुआ वह अप्रत्याशित था, क्यों कि हमारा सागर वाचना के बाद मुक्तागिरी में चातुर्मास हुआ। इसलिए लोगों का अनुमान यही रहा कि महाराज तो दक्षिण में जा रहे हैं। सही भी था कि जिस दिशा में महाराज जा रहे हैं उधर का ही अनुमान कर रहे हैं परन्तु गाड़ी कभी-कभी रिवर्स भी हो जाती है। मुक्तागिरी में यहाँ के तात्कालिन अध्यक्ष एवं पुरी कमेटी प्रतिष्ठाचार्य जी के साथ हमें पंचकल्याणक हेतु निवेदन करने आयी।

प्रतिष्ठाचार्य जी भी भीण्ड के शिखरचन्द जी वृद्ध भले ही थे पर आवाज ऐसी की माइक की कोई आवश्यकता नहीं। बोलने लगे-महाराज आपको चलना ही है यह तय हो गया है। आपके सान्निध्य में पंच-कल्याणक एवं गजरथ महोत्सव करना है। साथ ही विद्वत्परिषद्

का सम्मेलन पुरी मण्डली आना है, यह सब आपके बिना सम्भव नहीं है।

हमने सोचा - चलो। दूरी बहुत है। बीच में गाड़ी गड़बड़ हो तो पहुँचेगी या नहीं। समय पर पंचकल्याणक में हमारा आना हुआ। इसी समय बहुत गड़बड़ियाँ थी। क्षेत्र के विषय में भी उस समय सुनने को एवं बहुत कुछ अध्ययन करने को प्राप्त हुआ। किन्तु 37 वर्ष बहुत हो जाता है। परिवर्तन भी बहुत हो जाता है। पंचकल्याणक सानन्द सम्पन्न हुआ और हमारा अन्यत्र विहार हो गया।

इसके उपरान्त इन लोगो ने सोचा होगा अब तो जब कभी भी कहेंगे लौटकर आ जायेंगे। यहाँ की सबसे बड़ी विशेषता रही कि यहाँ कि कमेटी संविधान के अनुसार काम करती रही है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसका सम्बंध पुरे राष्ट्र से जुड़ा हुआ एवं पुरातत्व के साथ जुड़ा हुआ है। इससे आगे भी अब अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र होने जा रहा है।

इसलिये नहीं कि यहाँ अन्तर्राष्ट्रीय विमान का आना और जाना होगा बल्कि ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह अलग स्थान रखता है। यहाँ कि जनता बिखरी हुयी है, लेकिन व्यवस्थित है। व्यवस्थित का मतलब कबड्डी के खेल की तरह एक का मुख इधर है तो दूसरे का मुख इस तरफ (आमने-

सामने) विपरित दिशा में हैं।

तो 37 वर्ष का दीर्घकाल व्यतीत हुआ। इसके अलावा भी क्षेत्रों में बुन्देलखण्ड के लोगों की सदैव मांग रही है। बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड (रीवांचल) को अलग मानकर जनता में मांग रही। यहाँ का कार्य लगातार चलता आ रहा है। ज्यादा तो कुछ नहीं कहूँगा। आप लोगों ने माँग (चातुर्मास) रखी है। सतना वाले सतना की मांग नहीं रखे। लगता है सतना वालों का पेट भर गया है।

तो हम पपौरा से बंधा जी - जतारा आदि होते हुये आये हैं। बीच में कुछ बच्चों ने नारे लगाये - "एक ही तमन्ना - एक ही आशा, हमारे इतें ही चौमासा।" हमारे इतें ही चौमासा - यह महत्वपूर्ण है। यहाँ (खजुराहो) आकर बदल गया। इतें के तो हैं ही। नामोल्लेख से स्पष्ट हो जाता है कि ये कहाँ चाहते हैं। एक सज्जन (इं. रमेश जैन) ने कहा - यहाँ चातुर्मास होने जा रहा है।

मतलब अभी हमारे पास मारजन (margin) [समय] है। आप समझते हैं विमान जब उड़ता है तो सीधा उड़ जाये कोई बात नहीं पर उतरता है तो एक - आध परिक्रमा लगाकर ही उतरता है। अभी हमारे पास भी 13 एवं पांच = 18 दिन हैं। इसलिये देखो कहाँ होता है? नाम आते ही सब अपने - अपने वाई की मांग करने लग जाते हैं। ये

भी अच्छी भावना है।

बंधन में बांधने की भावना - चार महिने एक स्थान पर रहकर साधना हो जाती है। विगत 50 वर्षों से बुन्देलखण्ड अथवा उसके साथ लगे हुये स्थानों पर संघ का चातुर्मास होते आये हैं। इस वर्ष कहां होगा श्रावक तो चाहता है अभी ही घोषणा कर दें किन्तु हमारे ऊपर भी बंदिश है, ऊपर से आदेश है। हाँ श्रावक तो गेसिंग / अनुमान लगाता ही है।

अच्छा तमन्ना का क्या मतलब होता है? तमन्ना का मतलब उत्कण्ठा होती है। हम तमन्ना रखते है ऐसा कहा था। सब व्यक्तियों की अपनी-अपनी तमन्ना होती है। हमारी भी तमन्ना है- ऐसा कह नहीं सकते। फिर शांतिनाथ भगवान इतने के तो हैं ही। किन्तु ये भी ध्यान रखो यहाँ आदिनाथ एवं पार्श्वनाथ के दो मन्दिर और है जो अपने इतिहास को लिये हुये आज भी खड़े हैं।

इन दोनों मन्दिरों को पूरे विश्व के लोग अहिंसा की उपासना एवं वितरागता के दर्शन हेतु उड़कर यहाँ आते हैं। महिनो-महिनो तक यहाँ रहते हैं। उन दोनों स्थानों को भूलते जा रहे है जैसे शान्तिनाथ भगवान को रखे हैं, उसी रूप में उनको भी रखने का अब समय आ गया है। ज्यादा तो नहीं कहना, कल का क्या? कल रविवार

का दिन है उस समय विशेष बात रखना चाहते हैं।

संस्कृति - इतिहास - परम्परा क्या होती है? विशेष रूप से जैनियों के यहाँ वह परम्परा आज भी कायम है। "सिद्धान्त कभी बदलता नहीं - स्थान कथंचित् बदल सकता है।" इसलिये भक्ति के साथ कर्तव्य क्या है इसे दृष्टिपात कर एकता के साथ कार्य करेंगे। वक्तव्य इसी भावना के साथ कि आप लोग लगे रहेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - मातृभाषा ही क्यों?

"खजुराहो में प्रथम दिन है। यहाँ तो प्रतिदिन विदेशी पर्यटकों का आना होता ही है। आज भी स्पेन से 5-6 विदेशी लोग आ. श्री के चरणों में आये। उनके साथ गाइड भी था। ब्र. विनोद जी भीण्ड एवं 1-2 ब्रह्मचारी वहाँ थे। मैं भी वहीं बैठा था। ब्र. विनोद ने उनसे 2-3 बार English में बात करनी चाही उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जब गाइड ने स्पेन में बात की तो उन्होंने जवाब दिया। मतलब कोई भी शब्द अपनी मातृभाषा का त्याग नहीं किया फिर भारतवासी क्यों अपनी भाषा का त्याग करने में तुले हुये हैं। हम कहीं भी रहें। जायें हमें अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिये। ब्र. जी को भी समझ में आ गयी। उन सभी विदेशियों ने सप्ताह में एक दिन शाकाहार रहने का संकल्प लिया। उनके लिये यह बहुत बड़ा त्याग था।"

रविवार
15-7-18 "श्रीफल भी पड़ गये कम" प्रातः
[सहस्त्रकूट जिनालय की घोषणा]

आप सभी लोग इतने भाव विभोर हो गये की पौने दस से भी आगे बढ़ गया। वहाँ से [पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ जिनालय] अभिषेक-शांतिधारा के बाद यहाँ आये। हमने सोचा अब अर्घ्य चढ़ाकर भी निकल जाते किन्तु वहाँ से भी ज्यादा समय यहाँ लग गया।

सभी लोग प्रतिमाओं के लिए लालायित हो गये। कमेटी वालों के श्रीफल भी कम पड़ गये तो इन्होंने दूसरा रास्ता निकाल लिया और 108-108 प्रतिमाओं हेतु श्रीफल चढ़ाने हेतु बुलाने लगे। हमें तो ऐसा ही समझ में आता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण- "श्रद्धा का प्रभाव"

"पूज्य आर्यिकाश्री के प्रति जैनियों की तो श्रद्धा है ही अजैन (जैनेतर) बन्धु भी उनके प्रति गाढ़ श्रद्धान रखते हैं। खजुराहो प्रवेश के समय हम लोगों का सिक्योरिटी पर रुकना हुआ। सिक्योरिटी के दो अधिकारी आर्यिकाश्री को भीतर दिखाने ले गये और उसके एक घण्टे बाद ही उन दोनों का परमोशन हो गया। ये है गुरुकृपा एवं श्रद्धा का कमाल।"

खजुराहो

16-7-18 "बुराई से बचने की पुड़िया" प्रातः

एक व्यक्ति वैद्य जी के पास जाकर कहता है मेरे मुख में/जीव्हा में हमेशा-हमेशा कड़वाहट का ही स्वाद आता है। क्या करें आप ही बताओ? मुख को भी प्रतिदिन 2-3 बार शुद्ध कर लेता हूँ फिर भी वर्षों हो गये कड़वाहट नहीं गयी। वैद्य जी ने कहा- मुख को धोने मात्र से मुख की कड़वाहट नहीं जाती। मुख में विकृति बाद में आती है पहले उसका जन्म पेट में होता है।

आपके पेट में विकृति बनी हुयी है इसलिये उसकी चिंता पहले करो मुख की नहीं। तो पेट की कड़वाहट कैसे दूर हो? वैद्य जी ने कहा- इसके लिये पुरा परिवर्तन करना होगा, आपको विशेष ध्यान देना पड़ेगा। अन्यथा कुछ अलग रूप से विकृतियाँ आ सकती है। और फिर हमारे पास भी आना पड़ सकता है (महाराज के पास)। किन्तु यदि भगवान के पास भी जाओ तो वे भी अच्छा कैसे करें?

इसलिये अपने परिणामों में थोड़ा तो बदलावट लायें। इस सिद्धान्त को अच्छे से समझो। क्यों कि मीठा के सेवन के उपरान्त भी कड़वाहट बनी रहती है। ये उदाहरण हमने आपके सामने रखा। अब आप कहते हैं महाराज! मैं बुराई से बचना चाहता हूँ। क्या करूं? कोई पुड़िया हो, कोई गोली हो, कोई फांकी हो और कुछ शेष तो नहीं

रह गया।

हम अपने परिणामों को स्वयं ही बिगाड़ लेते हैं। परिणाम यहाँ पर बिगड़ते हैं और समझते ये हैं कि इनके बिगड़ने का केन्द्र बाहरी पदार्थ है। फिर तो यदि आँखे बंद भी करले तो कलेण्डर के कलेण्डर सामने दिखने लगते हैं। सोचते हैं आंखे बंद करने से भूल का सुधार होगा पर होता उलटा ही है। आँखो को ज्यादा दबाते हैं तो और ज्यादा दिखते हैं। कान में नहीं सुनना चाहते तो भी घुस जाती हैं।

मतलब की घुसती है या बेमतलब की? एक ही नाम के कई व्यक्ति होते हैं। मान लो एक ही नाम के 10 व्यक्ति हैं। किसी ने पुकारा कलाचंद जी आये तो वही व्यक्ति उठता है पर 10 व्यक्ति हो तो इशारा तो मेरी ओर था, दूसरा कहता है- मेरी ओर इशारा था। नाम एक होने के कारण आपस में झगड़ा हो जाता है। पर की ओर दृष्टि रखने से अथवा पर में अपनत्व मान लेने से यह बिमारी चारों ओर फैली हुयी है।

तो आचार्यों ने पहले से ही घोषित कर रखा है कि इस बिमारी का इलाज संसार में कहीं भी नहीं हैं, चाहे कहीं भी चले जाओ। क्या आप ठीक होना चाहते हैं। हाँ महाराज! इसीलिये तो गर्मी में आये हैं। अपनी भूल को स्वीकार करलो। पेट

की गड़बड़ी- खानपान की गड़बड़ी के कारण है।

इन्द्रियों में जब राग पैदा हो जाता है तब यह स्थिति होती है। ऐसी परिस्थिति में कहीं भी चले जाओ, भगवान के चरणों में भी बैठ जाओ तो भी बिमारी ठीक नहीं होने वाली। कुछ तो होना चाहिये महाराज। पंचेन्द्रिय में यदि अच्छा-बुरा लेकर चल रहा है तो औषध यहाँ पर भी नहीं है। इसके अलावा यदि विश्वास है और यहाँ नहीं भी आ पाया, घर पर बैठा है तो घर बैठे- बैठे भी उसका इलाज हो जाता है।

वह विश्वास से वहीं पर ठीक हो जाता है। "आँखे बंद करने पर उसे भगवान और स्वप्न दिखाई देने लगते है किन्तु रागी यदि आँखे बंद करता है तो विषय और स्वप्न दिखायी देने लगते हैं। आँख- कान बंद होने पर आप जिस वस्तु की माँग करते है वही आपके सामने झलकने लगती है। मूल विकृति के कारण राग और द्वेष हैं। उसे ही दूर करने की बात है।

कल भी आपके सामने रखा था, आज फिर से कह रहा हूँ। कि वितराग जिनबिम्ब को देखकर मेरा राग कितना घटा। घटत क्रम पर है तो निश्चित वह और-और घटा सकते है। अपनी आस्था से भगवान का भक्त / पुजारी और-और कम करता

चला जाता है।

आप तार को युं-युं करते ही करंट में अन्तर आता है। जो फर-फर की आवाज आ रही थी वह सब ठीक-ठाक हो जाती हैं। अक्लमंद लोग भी अपने परिणामों की फरफराहट को ठीक करते रहते हैं। हरेक व्यक्ति के परिणाम हमेशा एक से बने रहे ऐसा होता ही नहीं हैं। कितनी भी अच्छी रोड हो - कितनी भी अच्छी गाड़ी हो - चालक भी कितना भी अच्छा हो। सब अच्छे होने पर भी गाड़ी एक स्पीड में नहीं चला सकते हैं।

ऐसा क्यों होता है? एक्सीडेन्ट होगा ही नहीं। कम्पनी वाले पहले ही बता देते हैं कि यह गाड़ी एक घण्टे में 150 किमी. दूर जाने की क्षमता रखती है परन्तु आप उस क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकते। तो क्षमता का प्रयोग कितना करना - अपनी क्षमता के अनुसार प्रयोग करो। "कार्य की क्षमता नहीं अपनी क्षमता देखो।"

इसी प्रकार अपनी गाड़ी को चलाना है। अपने शरीर रूपी गाड़ी को भी इसी तरह चलाना है। यही अपने परिणामों की संभाल है। धन्य हैं वे लोग जो गाड़ी को कम पेट्रोल में ज्यादा चलाते हैं। ऐसे महापुरुष विरले होते हैं। इसके विपरीत यदि खर्चा ज्यादा है और आमद कम है तो ये लक्षण है मिट जाने

का। आप मिटो नहीं।

अपनी बुद्धि को शांति से सोचने में उपयोग करो। अपनी गाड़ी कहाँ / किधर जा रही है, इतना तो ध्यान में रखो, सब हो जायेगा। जो भगवान बने हैं वे भी इसी प्रक्रिया से बने हैं। आप उतनी स्पीड़ से नहीं कर पा रहे कोई बात नहीं थोड़ा-थोड़ा सा बढ़ाओ जरूर उसे प्राप्त कर लेंगे। अज्ञानी इसे नहीं समझ पा रहा है।

अपनी भूल को ठीक करके ही मुख की कड़वाहट को दूर किया जा सकता है। कड़वी वस्तु से भी मुख मीठा एवं मीठा खाने से भी मुख की कड़वाहट बनी रह सकती है, यही परिणामों की विचित्रता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

संस्मरण - "जहरीला कांटा"

"बालक विद्याधर बचपन से ही बहुत परिश्रमी थे। खेत पर काम करने जाते थे। एक दिन की बात है खेत पर विद्याधर के पाँव में एक नुकीला एवं जहरीला कांटा घुस गया। बस कुछ ही समय में उसने अपना रूप दिखा दिया, पांव फूल गया, एक कदम भी नहीं रखने दिया। किसी की सहायता से रोड़ तक आये। वहाँ से एक बैलगाड़ी जा रही थी उसमें बैठकर वे घर आये। जो भी उसे निकालने की कोशिश

करता, विद्याधर जी उसे हाथ ही नहीं लगाने देते मतलब इतना तेज दर्द / पीड़ा थी।

तीन - चार दिन बाद किसी ने कहा इस पर पुलटिस बांध दो। रात में पुलटिस बांधा दी सुबह हल्का सा हाथ से यूं दबाया कांटा ऐसे बाहर आ गया जैसे किसी ने बटन दबाकर निकाला हो। आ० श्री ने कहा - तभी से मेरा पुलटिस पर गाढ़ श्रद्धान हो गया। आज इतने बड़े संघ में कुछ भी होता है तो गुरुजी उसे पुलटिस हेतु कहते हैं जो जड़ से रोग को ठीक कर देती है।"

आ० श्री के मुख से लोक कहावत -

- पूरब चमके बिजली, उत्तर बादल होय।
  सुन लो बड़े ध्यान से, भारी वर्षा होय।
- अमिया - निबुआ - बानियाँ, गला मसकै रस देय।
- स्वस्थ रहने के सूत्र -
  (i) पैर गरम - पेट नरम और सिर ठण्डा
  (ii) पेट को लंघन - आँख को बंधन - पैर को मर्दन
  (iii) आधा भोजन किजिये - दुगना पानी पीव।
  तिगुना श्रम - चौगुनी हंसी, वर्ष सवासौ जीव॥

कुछ हटके - "भारत के लोग बातें तो खूब करते हैं पर कुछ करने की बात आती है तो पीछे हट जाते हैं। किसी के जाने के बाद गुणगान नहीं, जीते जी जो अच्छा करे उसको प्रोत्साहित करें।"

"संयम स्वर्ण महोत्सव समापन"

17-7-18 "भाग्य को सुधारती - वैराग्य की स्मृतियाँ" प्रातः

आप लोगो से कोई पुछता हो तो आप क्या जवाब दोगे? मुझे पुछते है तो मैं आपके जवाब को देखकर ही जवाब दूंगा। स्वर्ग के देव यहाँ आते हैं, पंचकल्याणक आदि महोत्सव अथवा अन्य भी धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण करते है और अपने स्थान पर वापस चले जाते हैं। क्या आपको कभी स्वर्ग के किसी इन्द्र ने स्वर्ग चलने का निमन्त्रण दिया? चलो आपको, वहाँ महोत्सव मनाना है, आपको सिंहासन पर बिठायेंगे।

वहाँ स्वर्ग में भी महोत्सव तो होते होंगे पर उनमें स्वर्ग के देवों-अप्सराओं को भी बोरियत हो जाती है किन्तु जब वे ही धरती पर महोत्सव में आते है तो उन्हें सब कुछ जीवन्त नजर आने लगता है। वहाँ (स्वर्ग) पर केवल भोग ही नजर आते हैं। लम्बी-चौड़ी आयु भी भोगों में डूबे रहने से राग की प्रबलता से क्षणिक सी प्रतीत होने लगती है। और जब आयु का अन्त होता है - 6 माह शेष रह जाते हैं, माला मुरझाने लगती है तो शोक में आ जाते हैं, हाथ में कुछ नहीं आता।

यदि कोई सम्यग्दृष्टि देव होता है तो उसकी दृष्टि अवश्य ही इस ओर जाती है कि अब मुझे वह अवसर प्राप्त होने वाला है। यहाँ स्वर्ग मे उन भोगो को भोगा वहाँ पर उन विषयों की

हवा से बचुंगा।

यह इसी गति में सम्भव है। लोग ऊपरी हवा की बाधा को दूर करने हेतु आशीर्वाद मांगते हैं। उन्हें मालुम नहीं एक मिनिट में यह ऊपरी हवा दूर नहीं होगी। राग-द्वेष की/असंयम की हवा बहुत तपस्या मांगती हैं। आप लोग बिना तपस्या के ही पार होना चाहते हो। तपस्वी के चरण छुकर/पकड़कर पार जाना चाहते हो, इसे भूल जाइये। असंयम के साथ यह संभव नहीं हैं।

सामने देख रहा हूँ- आप सभी बैठे हैं, ऊपर से कोहरा बरस रहा है। मैं सोच रहा था कि इतनी गर्मी में ये कोहरा कैसे आ गया, ये सब असंयम का परिणाम है। "गुरु ने मुझे प्रकट कर दिया, दीया दे दिया" मैं अपने आपको भाग्यशाली समझता हूँ। एक अपढ़-अनगढ़ जिसे कुछ भी नहीं आता था फिर भी उन्होंने मुझे स्वीकार किया। "गुरु कृपा से, बांसुरी बना मैं तो, ठेठ बांस था" न भाषा जानता था न भाव थे किन्तु गुरु सब समझते हैं।

गुरु जी ने इतना ही कहा था- स्लेट यदि कोरी है तो कोई चिन्ता की बात नहीं किन्तु यदि उस पर कुछ लिखा है तो लिखने वालों को मिटाना बहुत ही कठीन होता है। यदि चाहते हैं तो उस स्लेट को एक बार साफ साफ करना जरूरी है। आप लोगों के जीवन में आज विज्ञापन का, प्रचार

प्रसार सामग्री का बोलबाला है।

उनसे भी गलत दिशा में ले जाने वाली है आधुनिक शिक्षा प्रणाली जिससे बचा जा सकता है तो वह है भारतीय शिक्षा प्रणाली। गुरुजी का जीवन समापन की ओर था उस समय ही उनके मुख से इस तरह की कुछ-कुछ बातें अंकुरित होने लग गयी थी। उस समय उन्होंने कहा था- "विद्याकालेन पच्यते" और "संघ को गुरुकुल बनाना है।" यह मंगलाचरण उन्हीं के प्रसाद से जीवन में घटित हो रहा है।

क्यों कि सारी पश्चिमी हवा भारत में घुस गयी, यहाँ की सुगन्धित हवा से वंचित रहे। वह पश्चिमी हवा आपको सुगन्धित नहीं कर सकी। अब भारत पुनः लौटता हुआ नजर आता है। जब अनुभूति तात्कालिक होती हुयी भी स्मृति के रूप में लगी रहती है तो अवश्य ही दैव्य (भाग्य) सुधर जाता है। मैं कुछ नहीं चाहता केवल इतना ही चाहता हूँ जो गुरुजी ने मुझे दीया दिया है, उसका प्रकाश मेरे इर्द-गिर्द तो है ही, इसका उपयोग सभी लोग कर सके।

समय पर्याप्त होने के कारण इतना ही। गुरु के माध्यम से बांस भी बांसुरी बन सकता है। उस अलौकिक काव्य - प्रबन्धकाव्य का दर्शन जो महाकाव्य हो गया जो अतित के साथ था भविष्य में कालजयी सही दिशा में नेतृत्व करता है आगे अन्त नहीं होता। ध्यान रखना - "अंत हमेशा राग-द्वेष का हुआ करता है, धर्म का अंत नहीं होता।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। जैन

"समापन समारोह"

17-7-18 प्रवचनांश मध्याह्न

० श्रम के पीछे विवेक होना अनिवार्य है अन्यथा वह श्रम व्यर्थ चला जाता है।

० तात्कालिक को तो कोई भी व्यक्ति टाल सकता है पर जो त्रैकालिक को टालता है मैं उसी को बुद्धिमान्-चिंतक-मेधावी-प्रतिभावान् अथवा विश्व कल्याण करने वाला मानता हूँ।

० आचार्यों ने किसी नेता, वक्ता अथवा भाषणबाजी करने वाले को याद न कर एक किसान को याद किया, क्योंकि उसके पास श्रम के साथ विवेक है। "बीज राख फल भोगवे, ज्यों किसान जग मांहि।"

० मूलाचार आदि में बीज को योनिभूत सचित्त कहा है, मतलब बीज पर भी पैर मत रखो अन्यथा आपके अहिंसा व्रत में दोष लगेगा।

० अहिंसा धर्म का निर्दोष पालन करना चाहते हो तो वाणी-प्रदूषण से पहले बचो।

० पानी-बिजली-पंखा आदि का दुरुपयोग अनर्थदण्ड में आता है। ऐसा दण्ड जो आत्मा को पिटता रहता है, वह अनर्थदण्ड है।

० ऐसे साहित्य का सृजन मत करो जो राष्ट्र को पंगु-लूला बना दें। मुझे ऐसे चिन्तकों के बारे में चिन्ता हो रही है।

० अतिसंधान करना कभी अनुसंधान नहीं हो सकता इसलिये सही-सही संधान करो। ज्यादा सोचना भी आगे बढ़ने में बाधक होता है।

o बीज की सुरक्षा बण्डा में है लेकिन कब तक? 2-3 साल बाद उसमें बीजत्व नहीं रहेगा यदि सही में ही बीज को सुरक्षित रखना चाहते हो तो उसे प्रवहमान बनाये रखो। प्रवहमान हेतु खेत में बो दो, हजारगुना होकर फलेगा यही कृषि विज्ञान है।

o हम पैसा फेकेंगे और खरीद लेंगे यह गलत धारणा है। 70 वर्ष में आपकी बुद्धि - आपका विवेक - आपकी सत्ता इसी गलत अवधारणा से बिक चुकी है।

o खेती में कीटनाशक एवं रासायनिक खाद के छिड़काव से कैंसर आदि भयंकर बिमारीयाँ फैल रही है। अस्पताल गली-गली में खुल रहे है आप उनमें दान कर रहे हैं। सोच रहे हैं धर्म कर रहा हूँ। अद्भुत है आपका धर्म! जो मूल बिमारी का कारण है उसे दूर करो।

o विज्ञान तो अंधो को भी दृष्टि देता है किन्तु ऐसा विज्ञान जिसके पिछे सम्यग्ज्ञान लगा हो।

o श्मसान = श्मसान जाने से पूर्व सम आ जाये तो सान ले जा सकते है। समता का सम अथवा कषायों के शमन का शम।

o यदि आप दूसरो के बारे में चिन्ता कर रहे हैं, जो ठण्ड से कांप रहा है उसे कम्बल उढा रहे हैं तो मैं समझता हूँ आप माला फेर रहे हैं। आगम को सुरक्षित रख रहे हैं।

o ये भी युग की देन है हम अपने अनुसार धर्म को चलाना चाहते है, धर्म के अनुसार हम चलना नहीं चाहते।

० धर्म स्वाश्रित होने की बात करता है पराश्रित होने की नहीं।

० आज का विज्ञान भले ही कह दे कि ये दूध है 6 महिने तक इसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा किन्तु हमारे आचार्यों ने हजारों वर्ष पूर्व से कहा- सभी पदार्थों की मर्यादा होती है। मर्यादा समाप्त होते ही उसमें तज्जातीय जीव उत्पन्न होने लग जाते हैं भले ही हमारी दृष्टि में न आ पाये।

० गेहूँ - आटा - रोटी मर्यादा की अवधि कम-कम होती जाती है गेहूँ 2-3 साल, आटा 3-5 दिन और रोटी सुबह से शाम। अब आप ही सोच लो आप क्या खा रहे हैं। भले ही बगार / छौंक लगाकर खा रहे हो, है तो वह बासी ही।

० पेट भरो - पेटी भरने की मत सोचो।

० ताली में भी लय हो अन्यथा विलय हो जाती है, बनी बनायी रोटी भी बिगड़ जाती है।

० गुरु जी ने कहा - आपने जो संयम ग्रहण किया है वह अगली गति में भी मतलब उसके संस्कार बने रहते हैं। इसलिये संयम को पुरुषार्थ पूर्वक ग्रहण करो।

० मैं वैरी बनना चाहता हूँ। हाँ! मैं परदुःख वैरी बनना चाहता हूँ। जब तक परदुःख को मिटा नहीं दूंगा चैन नहीं लूंगा।

० आप प्रेमी नहीं बन सकते हो तो परदुःख वैरी बनो।

० आपके भीतर यदि भाव है, भाषा नहीं भी हो तो भी चल जायेगा।

- आप रोने को पीते चले जाओ और एक मुस्कान छोड़ते जाओ। ये तो मायाचार होगा, नहीं ये माँ का आचार होगा। जैसे - माँ सब कुछ पीते चली जाती है फिर एक मुस्कान भी दे देती है।
- भाषाकारों ने - पितृभाषा, रानी भाषा, राजा भाषा आदि नहीं कहा "मातृभाषा" कहा। mother tounge कहा Father Tounge नहीं।
- मातृभाषा तो मातृभाषा होती है। वह तो वही है।
- किसान में निःस्वार्थ एवं परोपकार की प्रबल भावना भरी ही रहती है।
- आज तक किसी भी पशु-पक्षी के द्वारा देखने से नजर नहीं लगी, किन्तु यदि मनुष्य पशु-पक्षी को भी देख ले तो नजर लग जाती है। गैय्या का दूध सूख जाता है। मतलब मनुष्य इतना कठोर प्राणी है, हम समीक्षा नहीं करना चाहते।
- इतिहास को सुरक्षित रखने का प्रयास किया तो वे राजा छत्रसाल थे। बड़े-बड़े के चारों ओर कोट बनवाया।
- हओ कहना पोजेटीव का प्रतीक है इसलिये आप सभी से हम बार-बार हओ बुलवाते रहते हैं।
- आचार्य का विशेष गुण है - "परहित संपादेन अनेक कार्यं" स.सि. दूसरे के हित का संपादन करना ही जीवन का उद्देश्य होता है।
- गुरु ने ऐसा दिया मुझे दे दिया, जो स्वयं को एवं दूसरों को प्रकाशित करने का काम कर रहा है। नैं

□ □ □

18-7-18 "रोटी का कमाल" प्रातः

कल हम बीज की यात्रा को आटे तक लेकर गये थे, वह यात्रा अभी शेष रह गयी थी। जो यात्रीगण रह गये हैं वह सुन लें और उन्हें भी सुना दें जो कल चले गये हैं। अब आटे को भी कोई व्यंजन अथवा रोटी आदि में परिणत कर पेट में ले लिया। स्वयं भी खा सकता है और दूसरों को भी दे दिया। अब वह आटे की रोटी अथवा जो कोई भी व्यंजन था पेट में जाकर सर्वप्रथम रस के रूप में परिणत/परिवर्तित हो गया।

रस आद्य धातु मानी जाती है। वह रस रक्त में रक्त मांस से इस तरह परिवर्तित/रूपान्तरण होते-होते वीर्य तक पहुँच जाता है। विज्ञान का मानना है कि रस से वीर्य बनने में लगभग एक माह लगता है। उस आटे की रोटी की अवधी बढ़ गयी। वह विकासशील होता-होता वीर्य तक पहुँच जाता है। यह सारा का सारा परिवर्तन आपने जो रोटी अथवा अन्य जो कुछ भी खाया है उसका है। वह परिवर्तन आपके परिणामों पर आधारित होता है।

आपने देखा होगा कुछ लोग गरीब होकर के भी उनका रक्त बहुत अच्छा होता है वे बलशाली भी होते हैं जबकि मेवा-मिष्ठान्न खाने वाला सुगर की बिमारी हो सकती है, खून तो

बनता ही नहीं, क्यों नहीं बनता ये तो उन्हीं से पुछना। तो ये यात्रा कहाँ तक चली गयी।

अब इसी में कोई एक व्यक्ति ऐसा है जो शुद्ध सात्विक आहार - शाकाहार करता है। वह जो रोटी खाया उससे उसे तीर्थंकर प्रकृति का बंध हो जाता है। उसके भाव - उसके परिणाम सात्विक रहते हैं, विश्व का कल्याण हो ऐसे भाव किससे आये? उस रोटी का यह परिणाम है। रोटी की उम्र तो सामान्य से 3-4 घण्टे मात्र थी परन्तु अब देखो परिवर्तन होते-होते ऐसे भावों तक पहुँच गये।

आचार्य कहते हैं उसकी बहुत उम्र हो सकती है। सागरोपम आयु तक वह रह सकता है। सर्वार्थसिद्धि चला गया तो 33 सागर तक वहाँ रहेगा। यह सब करामात उस रोटी की है। रोटी के द्वारा ही इस तरह का कर्म बांधा। उसमें अनुभाग - स्थिति आदि इसी तरह की पड़ी। वहाँ से इधर आया पंचकल्याणक मनाये गये, समोशरण की रचना हो गयी ये सब रोटी का ही करामात है।

जैसे - जैसे उसकी यात्रा आगे की ओर बढ़ती जाती है वैसे - वैसे परिणाम भी बढ़ते जा रहे हैं। पहले अकेले की भी बात नहीं करता था और अब विश्व की बात हो रही है। यह

सब एक बीज का विस्तार है।

यदि उसे सही दिशा में ले जाते है तो इस प्रकार के परिणाम प्राप्त होते हैं। भव-भव में उसके द्वारा अच्छे कार्य का सम्पादन होता है/होना चाहिये। एक किसी अन्य के द्वारा भी वही रोटी खायी जा रही है पर परिणाम/भाव इस प्रकार के करता है कि नरकों में उतर जाता है। भीतर में इस तरह के परिणाम घटित होते रहते हैं।

हम अपने सात्विक भावों द्वारा उस खाये हुये बीज का सही उपयोग तो कर ही सकते हैं। यह सत् समागम से ही सम्भव है। अन्यथा सदुपयोग नहीं होगा, दुरुपयोग होने में देर नहीं लगेगी। यह हमारे अपने पुरुषार्थ/अपने परिणामों पर आधारित है। सोचिये- एक जीव द्वारा कितनों का कल्याण हो गया। देव-देवी-मनुष्य-तिर्यञ्च सभी लाभान्वित होते हैं।

उस रोटी का कमाल तो देखो/कबीर तो पीछे रह गये और कमाल आगे निकल गया/कबीर का बेटा था कमाल। आप लोग हर बात में कमाल लगाते हो/क्या कमाल हो गया? इसलिये किसका परिणाम क्या निकल सकता है ये सारा दैनन्दिनी जीवन में घटित कर सकते है। इसलिये अच्छे भाव- अच्छे कार्य करो। सत्कार्य

करने से एक का कल्याण नहीं असंख्यात का कल्याण एक रोटी के माध्यम से हो जाता है।

ऐसे दाता और ऐसे पात्र जब दोनों मिल जाते हैं तो कल्याण ही कल्याण है। पुराणों को पढ़ने से ज्ञात होता है कि हममें कितनी कमियाँ हैं। इधर-उधर की बातों में ही घण्टों-घण्टों, वर्षों-वर्षों, भवों-भवों निकल जाते हैं। दुर्लभता तब समझ में आती है जब उसका फल मिलता है। नरकों में जाने पर ऐसा होता है।

देव कभी नारकी नहीं हो सकता, नारकी कभी नारकी नहीं हो सकता। मनुष्य देव भी बन सकता है नारकी भी बन सकता है। तिर्यञ्च - मनुष्य भी बन सकता है मतलब चारों ओर के दरवाजे खुले हैं। वह बिगड़ भी सकता है तो सुधर भी सकता है। चारों ओर के लिये स्वतन्त्र है। अच्छाई के लिये भी स्वतंत्र है। इसलिये अपने भावों को सुधारो।

मांस खाने वाला कभी सत्कार्य नहीं कर पायेगा। शाकाहार करने वाला प्राणी स्व एवं पर दोनों का कल्याण कर सकता है। कल नहीं दिया था, आज नाश्ते में दे दिया। सब तक इसे पहुँचा देना।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नूँ

प्रातः
19-7-18 "जहाँ Science मौन होता, वहाँ हमारा विज्ञान बोलता"

ग्रीष्मकाल में अनेक घने वृक्ष भी पतझड़ होकर समाप्त से होकर केवल टहनियाँ - स्कंध आदि-आदि शेष रह जाते हैं। जैसे - वृद्धावस्था में शरीर की स्थिति हो जाती है वैसे ही उन वृक्षों की हो जाती है। किन्तु ग्रीष्मकाल पूर्ण होते ही वातावरण में नमी आ जाती है और उन्हीं वृक्षों में कोंपलें अंकुरित होकर धीरे-धीरे बढ़नी लगती है। मन में विकल्प आता है कि उस समय यह हरा-भरा कहाँ चला गया था और आज कहाँ से आ गया?

तो उस वृक्ष के भीतर में इसी प्रकार के नामकर्म का उदय चल रहा था। कालमान की प्रतिक्षा थी - ग्रीष्मकाल समाप्त हुआ वर्षायोग प्रारम्भ होने के कारण भीतर जो था वह बाहर आ गया। वह वृक्ष मृतप्राय जैसा दिख रहा है पर उसकी जड़ जीवित है इसी कारण ऋतुमान के परिवर्तन होते ही भीतर रस-पानी पहुँचा तो इस प्रकार से अन्तर आ गया।

यह भीतरी प्रक्रिया किसी को ज्ञात नहीं रहती। इसलिये कह दिया जाता है कि वृक्ष तो सूख ही गया किन्तु वह सूखा नहीं भीतर से हरा-भरा रहता है। जब वह वृक्ष कुछ ही दिन में हरी-भरी पत्तियों - टहनियों - फूल - फलों से

भर जाता है तो ठूंठ गायब हो जाता है।

जब हरा-भरा वृक्ष रहता है तो सबका मन उसके सामने खड़े होकर फोटो खिंचाने को लालायित रहता है, ठूंठ के सामने कोई भी अपना छाया चित्र नहीं लेना चाहता। कश्मीर को सब चाहते हैं, रेगिस्तान को कोई नहीं हाँ! जब वही रेगिस्तान में वर्षा हो जाती है तो हरा-भरा हो जाता है। हरा-भरा के लिये तालियाँ बज गयी, सूखा के लिये कोई ताली नहीं बजाता है। यही अनुमान का परिणाम होता है।

भीतर से तापमान रहता है पर नाड़ी की फड़कन लुप्त प्राय सी लगती है, इसलिये नाड़ी को मत देखो, पेट को देखो तो सब ज्ञात हो जायेगा। समय पर भोजन पानी मिलना चाहिये। बोल नहीं सकता कोई बात नहीं हाथ उठ जाता है आप भी ईशारा समझ जाते हैं उसका काम हो जाता है। आप कहते हैं- देखो अभी बच्चा जीवित है। कर्म का उदय है तब तक यह चलेगा, आपके द्वारा नहीं चलेगा फिर तो आप सब कुछ देने जाओगे तो भी वह नहीं लेगा।

भीतर से वह कर्म धीरे-धीरे कम होता जा रहा है अब आप उसमें नये प्राण नहीं फूंक सकते। हाँ, ज्यों ही वह कर्म नये रूप में उदय में आयेगा त्यों ही नया शरीर खड़ा हो जायेगा। इसमें फूंकने की

कोई आवश्यकता ही नहीं है।

इससे स्पष्ट है कि यह शरीर रूपी वृक्ष कभी हरा-भरा है तो कभी सूख जाता है, कभी बक्कल उतर जाता है फिर भी खड़ा रहता है। आज का विज्ञान उस भीतरी तत्व की ओर नहीं देखता, जिसके बल पर वह खड़ा है। उस कर्म के बिना यह काम नहीं हो सकता था। इसमें Simple मौन रहता है और हमारा विज्ञान बोलने लगता है।

आधुनिक विज्ञान के पास इसका कोई उत्तर नहीं है। संतो ने वर्षों पूर्व अपने उपदेश में एवं ग्रन्थों के माध्यम से बता दिया था कि बेग इस पर विश्वास कर लेना यह "कर्म-सिद्धान्त" है। हमारे-तुम्हारे से नहीं भीतर से/कर्मोदय से यह शरीर चल रहा है। आप स्वयं बताओ इसमें कितना माल-मसीदा डाला है। जरा हिसाब तो लगाओ फिर भी क्या हुआ?

राजस्थान में बोलते हैं-"पोलिया ढल जासी" मतलब गाल पिचक जाते हैं। क्या आपने नहीं किया इसके लिये? खूब नहलाया-खूब खिलाया अब तो जाने की तैयारी है। आप रंग-रोगन से भले ही उसे जवान बनाने में लगे रहो वह तो धीरे-धीरे मिटना शुरू हो ही गया है। आज तक विज्ञान ने

प्रयोगशाला में शरीर को ही देखा, शरीर का संचालन किससे हो रहा है, उस भीतरी तत्त्व को नहीं देखा।

तत्त्वज्ञाता ही इस पर ध्यान दे सकता है। वह इसी शरीर से अपना काम निकाल लेता है। कई लोग इसी शरीर के लिए देश-विदेश तक जाते रहते हैं किन्तु जो भीतर ही है उसे पाने हेतु बाहर की ओर नहीं इसी ओर आना ही पड़ेगा। सात समुन्दर पार भी चले जाये तो भी वह तत्त्व मिलने वाला नहीं है।

नाले का पानी सूख जाता है, नदी का पानी भी कभी-कभी सूख जाता है पर कुयें का पानी... उसका स्रोत ज्यों का त्यों बना रहता है। उसके स्वाद में भी कमी नहीं आती। ज्यों ही वर्षा होना प्रारम्भ हो जाती है कूप का जलस्तर भी बढ़ जाता है। तालाब में बाहर से संग्रहीत किया जाता है पर कूप का स्वरूप कुछ अलग प्रकार का है। उसमें पाषाण फोड़कर पानी भीतर से आता है। वह जीवन्त रहता है।

हमारे शरीर के भीतर भी जो आत्मतत्त्व है वह जब तक कर्म का उदय है तब तक इसके साथ (शरीर) खेलता रहता है। कर्म में बदलाव आते ही यह शरीर समाप्त हो जाता है। (आयुकर्म समाप्त) आप लोग इस रसायन पर पूर्ण श्रद्धान (विश्वास) करो। सदैव इसी तरह के प्रत्यय रखीये

कि कर्म सब झड़ जाये और चेतन तत्त्व मात्र रह जाये।

यह सम्मिश्रण -

रसायन प्रक्रिया स्वभाविक है। विश्वास की प्रक्रिया है। जब तक आप इसे अपने श्रद्धान का विषय नहीं बनाओगे तब तक इसी तरह की यात्रा चलती रहेगी। हमें हर तत्त्व का ज्ञान तो करना पर संचालन का मूल क्या है? उस पर श्रद्धान पहले करना है; यही मोक्षमार्ग की शुरुआत मानी जायेगी।

ज्ञान एवं चरित्र की उपलब्धि होने पर उसमें सम्यक्पना श्रद्धान के माध्यम से ही होता है। यह तभी जब हम उसी अनुरूप पुरुषार्थ करते हैं। ये तीनों मिलकर ही मोक्षमार्ग बनते हैं। कल कुछ गर्मी विशेष थी पर आज उसमें परिवर्तन आया है (वर्षा)। जीवन में इसी तरह स्थायी परिवर्तन हेतु योग्य पुरुषार्थ करते रहो।

अहिंसा परमो धर्म की जय॥

गुरुवाणी -

- "सामायिक कहाँ करना है ये विकल्प तो कई बार कर लेता है पर सामायिक करना है इसका विकल्प क्यों नहीं करता।" आ० श्री का कहना है सामायिक महत्त्वपूर्ण है/आवश्यक है, स्थान महत्त्वपूर्ण नहीं।
- "उपकरणों का अम्बार लगाने से उपकार होने वाला नहीं है।" [आत्मानुशासन गुरुमुख से]

20-7-18 "आओं बनाये समन्वय पार्टी" प्रातः

पहले राजा की सत्ता चलती थी आज किसकी सत्ता चलती है? [जनता - महाराजा की] नहीं, आज प्रजा की सत्ता मतलब प्रजातंत्र है। प्रजातंत्र में प्रजा को एक प्रकार से मतदान देने का अधिकार रहता है। और राजा उस मतदान को स्वीकार कर प्रजा को अनुशासित उनके हित में कार्य कर अपने आपको अहोभाग्य मानता है। राजा ये सब कुछ करके भी वहाँ असफल रहता है, जहाँ की प्रजा अनुशासित नहीं रहती।

ध्यान रखना! राजा को कोई वेतन नहीं दिया जाता। वह सवेतनिक न होकर भी जो कुछ भी उसे दिया जाता है उसमें अपनी ओर से भी मिलाकर [डालकर] प्रजा का हित करता रहता है। ये संक्षेप में राजाओं की स्थिति बता दी। इसीतरह युग के आदि में आदिनाथ भगवान के सुपुत्र जो प्रथम चक्रवर्ती हुये भरत नाम से विख्यात हुये। चक्रवर्ती जिसके अधीन में कई सारे राजा एवं सेनापति रहते हैं।

राज व्यवस्था अच्छे से चले इस हेतु उन्होंने कुछ सेनापति अपने पास अलग से नियुक्त किये। उनको कहा आपकी नियुक्ति इसलिये कि गयी है कि जनता में कोई भी कमी हो वह मेरे पास तक भेजने की कोशिश करना। आप सुन रहे हैं न? हाँ। हम अपने

भावों को आपतक भेजने की कोशिश कर रहे हैं।

आप सभी अपनी दुकान को बंद कर दें। दु-कान, आपके पास दो कान हैं उनसे सावधान होकर सुनें। ऐसा नहीं है कि एक से सुनें एवं दूसरे से बाहर निकाल दें। तो उनके द्वारा दिन में भी-रात में भी प्रत्येक गतिविधियों पर निगरानी रखी गयी। इसके बिना प्रजा का हित नहीं हो सकता। चक्रवर्ती भी तभी शासन कर सकता है। उसका प्रजा का हित ही मात्र लक्ष्य है। यही धर्म है। आज की बात आप जानते ही हैं।

अब एक रात सुनने को उपलब्ध हुआ। क्या उपलब्ध हुआ? चारों तरफ से कोई आवाज नहीं आ रही। वह राजा के पास (चक्रवर्ती के पास) पहुँचा - राजन् यह बात आपको बता दूँ। वह घबरा रहा था। कहीं बता दूंगा तो राजा मुझे निकाल न दें और यदि नहीं बताता हूँ तो कोई दूसरा यदि बता देगा तो भी मेरी छुट्टी हो जायेगी। तो वह अपनी रक्षा के साथ, राजा से कहता है।

मैं क्षमा चाहता हूँ। अनुबंध के साथ कहता है। मैं क्षमा चाहता हूँ। राजा कहता है दो-तीन बार तो कह दिया आगे तो कहो - राजन मैं क्षमा चाहता हूँ आपके बारे (विषय) में किसी व्यक्ति ने ऐसा कहा। क्या कहा? कहा कि हमारे पास तो एक

ही पत्नि [परिवार] है, इतनी झंझटे हो रही है फिर चक्रवर्ती के पास तो 96 हजार है।

हमें तो रात-दिन एक करनी पड़ रही है, वह तो पक्का है आर्त-रौद्र ध्यान कर रहा होगा और आर्त-रौद्र का परिणाम नरक है। इतने विवाह क्यों कर लिया समझ में नहीं आता। हमेंतो घर वालों पर विश्वास कर लिया, उन्होंने अनुमति दे दी। उन्होंने कहा तुम चिन्ता मत करो; हम सब कुछ कर लेंगे। किन्तु विवाह के बाद समझ में आ गयी। अब न छोड़ पा रहे हैं, न रख पा रहे हैं।

मैं गलत तो नहीं कह रहा? हओ तो कह दो। अब जो भी है उसे घर तक ही सीमित रखो। घर के बाहर यदि आवाज पहुँच गयी तो राजा-महाराजा तक बात पहुँच जायेगी। बस, आप तो सुनते जाओ। घर को ही कोर्ट बनाओ। यदि घर की बात देहरी से पार हो गयी तो गड़बड़ हो जायेगा। ये संयम घर में रहकर ही पाला जाता है। पालना चाहिये। महाराज कब तक पालें?

जब तक संकल्प लिया है। महाराज पहले बता देते तो हम नहीं लेते। हम क्या करें आपने ही सबके सामने जीवन पर्यन्त के लिये लिया। सभी को लड्डू खाने के लिये भी आमन्त्रित आपने ही किया। लिखित रूप में यह संकल्प हुआ। यदि इसमें

कुछ गड़बड़ हुआ तो न्यायालय में जाना पड़ेगा।

इससे अच्छा मेरे विचार से एक पार्टी बना दो। उस पार्टी का नाम है- "समन्वय पार्टी" "समन्वय बिना गृहस्थ आश्रम चल नहीं सकता।" तो राजा ने कहा कोई बात नहीं कल उस व्यक्ति को बुलाओ। उसे बुलवाया, उसने जो भी बात थी राजा से कह दी। आप ये हमारे ऊपर थोप रहे हैं, मैं भाग भी नहीं सकता - न ही कहीं जा सकता हूँ। विदेश आदि भी नहीं जा सकता।

मेरे पास एक है - आपके पास इतनी सारी है। आप कैसे रहते होंगे। कैसे करते हैं, परिणाम कैसे रहते हैं। आप ही बता दो - मेरी इस समस्या को सुलझा दो। राजा (चक्रवर्ती) ने कहा - कल आ जाना सब ठीक हो जायेगा। अब उसके हाथ में एक कटोरा दे दिया जो पूरा लबालब भरा हुआ है, यदि एक बूंद भी छलकेगा तो तुम्हारे प्राण भी बाहर आ जायेंगे।

जाओ हमारे पुरे परिवार वाले। घर वालों को देखकर आ जाओ। बस ध्यान रखना! एक बूंद भी बाहर तो रह नहीं पाओगे। ये हमारी आज्ञा है) उसके हाथ में कटोरा है, हाथ कंपकंपा रहे हैं किन्तु एक बूंद भी नीचे न गिर जाये ये ध्यान रखे हुये हैं। जो आदमी साथ में भेजे वे बता रहे हैं - ये पत्नि है-

ये पानि देवों से भी अधिक वैभववाली है।

ये आप देख रहे होन।

इस प्रकार वे बताते जा रहे हैं किन्तु उसको तो एक ही विचार आ रहा है- हमारा अनुबन्ध उसे देखने का नहीं, कटोरेको देखने का है अन्यथा जिन्दगी ही समाप्त हो जायेगी। मन में विचार करता है- जल्दी ले चलो। इस प्रकार सुरक्षित ले आये। राजा -आपने देखा मेरे वैभव को। वह कहता है रावन् ये सब लोग कह रहे थे मैं उन शब्दोंको भी नहीं सुन पा रहा था। देखना तो बहुत दूर है। मेरा ध्यान तो एक ही था।

न सुन रहा था- न देख रहा था- न ही इधर-उधर ध्यान था। राजा ने कहा ध्यान रखो! इसी तरह मैं रहता हूँ। घर में मैं रहता हूँ- मेरा तो देश से सम्बन्ध है। मेरा संबंध देश हित से है। यदि आपको कोई राजा मिल जाये तो उनसे कह देना ये उदाहरण खजुराहो क्षेत्र पर दिया था। [मुख्यमंत्री आगमन से पूर्व] ताली की आवश्यकता नहीं। सुनकर सार्थक मानो। इस प्रकार सभी परिपार करने लग जाये तो नेताओं का उत्साह भी बढ़ जायेगा। आज कोई नेताजी (मुख्यमंत्री) आ रहे हैं, सुना है। हमने तो पहले ही बोल दिया। आप समय मिल जाये तो उन्हें सुना सकते हैं। ये मौलिक वस्तु है। एक घर- नगर- क्षेत्र की बात नहीं, पूरा राष्ट्र ही नहीं, विश्व की समस्या का हल इस एक बात से हो सकता है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै

[आहारोपरांत]

20-7-18 "करना है कम समय में बड़ा काम" प्रातः 11.00

[मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री का आगमन - चर्चा एवं प्रवचन - सम्मान]

आप दैनिन्दिनी और शारिक संबंधी जो कोई भी गतिविधियाँ करते हैं, उन सभी में शरीर में रक्त संचार होता है। वह रक्त का संचार हमें देखने को उपलब्ध नहीं होता किन्तु वह सर्वत्र हुआ करता है। यदि किसी अंग में वह संचार प्रभावित हुआ तो शरीर के उस अंग में अस्त-व्यस्त पना आ सकता है जिसके द्वारा शरीर में चैन का अनुभव न होकर एक प्रकार से आकुलता/परेशानी का अनुभव हुआ करता है।

ऐसा ही कुछ हम अपने जीवन में अथवा सामाजिक जीवन में देखने को मिलता है, जिससे गड़बड़ियाँ हो जाती हैं। इसलिये कभी भी ये लोग (मुख्यमंत्री जी/नेता लोग) समय पर नहीं आ पाते हैं। जहाँ कहीं भी जाते हैं उस गड़बड़ी को ठीक करने में लग जाते हैं। कल आना था - आज रात में आये। सुबह आना था 10.30 पर आ पाये। क्या करें?

हमारा भी ऐसा ही जीवन चलता है। किन्तु चातुर्मास में चार महिने एक ही स्थान पर रहते हैं। गत दो वर्ष पूर्व चातुर्मास भोपाल में हुआ। वहाँ पर भी बाहर तो आते ही हैं, राजधानी में भी व्यस्त रहते हुये भी आये। एक बार तो पैरों में फोले आ गये।

8 दिन तक पुरा विश्राम लेना पड़ा, किन्तु इन्होंने भजन-भक्ति में अपने समय का सदुपयोग किया।

तो इस प्रकार जैसे हम एक ठीकाने पर नहीं रहते, वैसे ही ये भी एक ठीकाने पर नहीं रहते। इनका तो घर भी है तो वह विधानसभा ही है, वहीं से सारा संबंध रहता है। जनता के घर-घर में पहुँचकर दुःख-सुख में सहभागिता देकर उनको योगदान देते रहते हैं। इनके उपस्थित होने से इतना अवश्य है कि जनता में उल्लास आ जाता है। वे सोचते हैं कि हमारे लिए भी कोई पुछने वाला है।

केवल चुनाव के समय ही नहीं अन्य समय भी जनता के बीच में जाना चाहिये। मैं समझता हूँ जो भी कार्य होते हैं 5 वर्ष की अवधी बहुत कम पड़ जाती है। "जीवन की इस यात्रा में भी अवधी कम एवं कार्य बड़े-बड़े हैं।" जीवन हमेशा-हमेशा प्रभु के भरोसे ही रहता है। इसलिये अच्छे कार्य - जनता की भलाई प्रकृति के ऊपर निर्भर है। अच्छे भावों के बिना प्रकृति कभी भी हमारा साथ नहीं देती।" सात्विक भावों की परम आवश्यकता है। सात्विकता के द्वारा प्रजा का बहुत अच्छे से पालन होता है। अब केवल मध्य-प्रदेश की ही नहीं, पुरे भारत की भी बात किया करो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। मुँ

21-7-18 "मोह रूपी राहू को हटाना है मोक्षमार्ग" प्रात:

ज्योतिष्क मण्डल में बहुत प्रकार के देव होते हैं किन्तु दिन में आप केवल सूर्य को ही देख सकते हैं। जब कि दिन में उसी सूर्य के प्रकाश में आप सभी वस्तुओं को देखते हैं पर ताराओं को नहीं देख सकते। तारायें भी चमकने वाली होती हैं, उन्हें भी ज्योतिष्क मण्डल में सम्मिलित करते हैं। शायद दिन में गायब हो जाती हों, गायब मतलब कहीं भाग जाती हो। ऐसा तो नहीं है।

फिर दिन में क्यों नहीं दिखती? तो दिन में प्रकाशपुंज प्रभाकर का इतना तेज रहता है कि तारायें हमारे नेत्र का विषय नहीं बन पाती। चन्द्रमा भी गायब नहीं होता किन्तु उसकी हालत ऐसी होती है जैसे-टायफाइड का व्यक्ति हो जाता है। क्यों ऐसा ही है न? उसमें तेजी नहीं रहती, प्रकाश फेंकने की क्षमता नहीं। वह डूबता तो नहीं पर डूबने जैसा ही रहता है। सूर्य का आलोक होता है और चन्द्रमा का उद्योत। आलोक के सामने उद्योत फीका पड़ जाता है।

यह आपके सामने मैं इसलिये कह रहा हूँ क्यों कि लोग कहते हैं- महाराज! कभी-कभी उत्साह जाग्रत रहता है पर कभी-कभी हम हतोत्साहित हो जाते हैं। ऐसा हमारे जीवन

में क्यों होता है?

प्रतिपल ऐसा घटित हो रहा है। धर्म-कर्म में भी इसी तरह धारणा बनाने में लगे हैं। कई लोग अपनी पार्टी को मजबूत बनाने में लग जाते हैं। उस व्यक्ति को खड़ा करते हैं जो उनकी पार्टी का है फिर धारणा भी वैसी ही बना लेते हैं। वह वैसा हो या न हो पर "पार्टी मेकर" इस तरह के कार्य करने में जुट जाते हैं। इसी को आचार-संहिता बोलते हैं।

अब वह चन्द्रमा एवं तारायें सूर्य के सामने अपनी जगह नहीं बना पायी। प्रभाकर की गति (दशा) भी क्या होती है, वह भी देख लो। उदय होने के उपरांत भी ग्रहण पर क्या दशा होती है। कभी आपने सुना कि ताराओं पर ग्रहण लगा हो? बोलो। ताराचन्द हो-उसको ग्रहण लग जाये। महाराज! हमारे जीवन में ऐसा ही होता है जहाँ भी डालता हूँ- खाली हाथ ही आता हूँ। आप भरना चाहते है क्या? भरे को खाली करना बहुत कठीन होता है।

खाली करके उस पात्र को मांजा जाता है। उसमें जो किट्टिमा लगी है, जमा हुआ है, बहुत दिनों का है उसे खाली करके अच्छे से मांज लो। महाराज! हम खाली करना नहीं चाहते। तो जो बहुत दिनों का भरा है, वह खराब है, उसे खाली कर

दो। अन्यथा हम जो भी डालेंगे वह भी उसी रूप (खराब) हो जायेगा।

प्रभाकर जो प्रकाशपुंज है उस पर भी राहु का प्रभाव पड़ता है तब ज्ञात हो जाता है वह प्रभाकर भी चपेट में आ जाता है। पर ध्यान रखना, वह चपेट में भले ही आ जाये किन्तु एकदम अंधकार तो नहीं होता। हम अपना काम करते रहते हैं और प्रभाकर में जो ताप रहता है वह ताप भी पूर्ण गायब नहीं होता। राहु के होते हुये भी आलोक बना रहता है।

एक महिने में जब अमावस्या की तिथी पड़ती है उसी दिन सूर्यग्रहण तथा पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पर ग्रहण लगता है। कहीं-कहीं पर महिना अमावस्या से तो कहीं-कहीं पर पूर्णिमा से प्रारम्भ होता है। यहाँ पर पूर्णिमा से किन्तु दक्षिण में अमावस्या से माह चालु होता है। परम्परा अलग-अलग है। कितना अन्तर हो गया? 15 दिन का अन्तर है।

तो राहु-केतु का प्रभाव है जो वह देखने में नहीं आता। ये सब गणितिय पद्धति के ऊपर आधारित है। हम लोगो के पास दो उपयोग है- एक ज्ञानोपयोग दूसरा दर्शनोपयोग। अनादि से इन पर मोह रूपी राहु का प्रभाव पड़ा है। सुन रहे हो?

[हओ] कुछ भी हो जाय- हओ बोलने में तो वीहि नहीं रहेगी। अच्छा है।

"यह प्रत्यय ही [हओ] आपको केवलज्ञान कराने वाला है।" यह प्रत्यय गायब तो अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। इस प्रकार मोह रूपी राहू का प्रभाव आत्मा पर पड़ता है पर वह आत्मा कहती है कि उस ग्रहण को एक दिन ऐसा समाप्त कर दूंगी जिससे फिर दोबारा आ नहीं पाओगे। इतना ही नहीं तुम्हारे उदय में होते हुये भी कार्य कर रही हूँ। सोते हुये भी - लेटे हुये भी / हाँ! जब जागरण होगा आपको भागना पड़ेगा।

यह जागरण गुरुओं द्वारा - जिनवाणी द्वारा अथवा बिम्ब स्थापना द्वारा होता है। बिम्ब एवं जिनवाणी अभी साक्षात् नहीं हैं किन्तु गुरु तो साक्षात् उपस्थित हैं। आज तक यह परम्परा चली आ रही है। कुछ ही पर राहू - केतु का प्रभाव पड़ रहा है, सभी पर पड़े यह कोई नियम नहीं है। इन लोगों ने यह विनती की, आप लोग ग्रहण करने के बाद भी काम कर लेते हैं।

देखने की क्षमता है। देखने में सूर्य का आलोक सहायक होता है परन्तु खग्रास हो जाये तो एक अंश (थोड़ा सा भी) भी खुला नहीं रहेगा। खग्रास का मतलब ही है- पूरे को ही ग्रास बना लेना,

सूर्य को पूर्णतः निगल जाता है।

पुरा निगल जाये फिर भी उसके अस्तित्व को समाप्त नहीं कर सकता। हमारी दशा मोह के कारण ऐसी हुयी है। जिनवाणी एवं गुरुओं के द्वारा ज्ञात होता है यह ग्रहण अनादि से लगा है और अनंत काल तक चलेगा किन्तु यदि आप चाहो तो इसे समाप्त कर सकते हैं। करना चाहते हो क्या? हुओ हुओ फोकट में नहीं होता। पहले ही कहा है - पात्र को खाली कर दो फिर मांजमूंजकर साफ करके लाओ।

यदि गीला है तो भी नहीं चलेगा, अभी उसे सुखाना होगा। हम हाथ लगाकर देखेंगे फिर मांजेंगे - सुखायेंगे फिर उसके उपरान्त कोई चीज जो सेवन करने योग्य है - वह रखेंगे। चाहे सोने (स्वर्ण) का भी पात्र क्यों न हो। पात्र का जो दुषण है वह हमारे पास आया है तो उसे अच्छे ढंग से मांजकर, पुराने संस्कार को हटाना होगा तथा उसमें कोई विपरीत तत्त्व न रह गया हो उसे भी देखकर ही हम कुछ भरेंगे।

एकदम कुछ भी नहीं डाल सकते। इतना करेंगे तभी मोह का रवाना होना सम्भव है। इस प्रकार ज्योतिष्क मण्डल में तारायें और चन्द्रमा उस सूर्य प्रकाश में गायब हो जाते

है। सूर्य की भी यही दशा कर्फ्यु में हील जैसी होती है।

कर्फ्यु में 3-4 व्यक्ति एक साथ नहीं, दो लोग भी नहीं, एक-एक करके जा सकते हैं। चलने के लिये हील है। देख नहीं सकते - बोल नहीं सकते - खकार नहीं सकते। हां! खकार से भी गड़बड़ हो जायेगी, नहीं तो मिलेट्री खड़ी है। इसप्रकार मोह को निकालने हेतु ऐसा प्रावधान है। अभी कुछ लोग मिलकर आये थे। वे दो-दो मांग रहे थे (चातुर्मास) कुछ को एक भी नसीब नहीं ये दो-दो की मांग यही तो गड़बड़ है। [सतना वाले]

वे लोग यहाँ पर भी तथा वैसी अन्यत्र भी कर रहे हैं। कल ब्र. लोग भी आये थे। हम संकेत भेज देंगे। दे नहीं सकते। पहले से करने से गड़बड़ हो जाता है। वोट डालो - एक ही अभिमत देखो। बोलो नहीं - चलते जाओ। निशानी के लिए अंगुली पर निशान (स्याही) लगा देते हैं। कुछ लोग उसे मिटा देते हैं। देखने में आ जाता है। नहीं तो देखने में गृहण लगा है। इसलिये अपना काम उस मोह को कम करने का है यही उद्देश्य होना चाहिए। "उस मोह रूपी राहू को अनंतकाल के लिए निकालना ही हमारा मोक्षमार्ग है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

"विद्यालय में, शिक्षा विक्रय न हो, शिक्षा दान हो"

[पूज्य शैलसागर जी]

रविवार
22-7-18 "जीवन जीने की विधी" प्रातः

आप लोगो को इस उदाहरण के माध्यम से जो मैं आपके सामने रख रहा हूँ, तुलना कर लेना चाहिये कि अपने जीवन में हमें कैसे रहना है। किस प्रकार रहना है? पूर्वजो ने हमें किस प्रकार से जीने की विधी बतायी है? इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है। किसान अपने चरवाई की भूमि में एक गाय को छोड़ देता है। वह गाय कभी यहाँ खाती है तो कभी वहाँ खाती है।

इस पर किसान ने सोचा यह खाती कम अपव्यय ज्यादा करती है। कल को क्या करूंगा? इसलिये उसने उस गाय के गले में एक रस्सी बांध दी। रस्सी को एक खूंटी जो 7-8 फिट की दूरी पर थी उससे बांध दी। अब वह गाय जहाँ कहीं नहीं जा सकती है। जितनी रस्सी उससे आगे नहीं बढ़ पायेगी। खाते-खाते घुम गयी क्यों की रस्सी उतनी ही है। इधर-उधर नहीं खा सकती।

जितनी भूमि किसान की थी उतने में ही संतुष्ट है। जब कि अडोस-पड़ोस में दूसरे किसान की भूमि है, उसमें हरियाली भी अपेक्षाकृत अधिक है पर भूंह नहीं मार सकती। अपनी भूमि में जितना है जो है उसे ही खा सकती है। मालिक की आज्ञा इतने के लिये ही है। खाते-खाते 1-2 दिन में रस्सी पहाँ

तक बंधी थी उतना पुरा खा लिया।

फिर 1-2 फीट और बढ़ा दी, जिससे आगे की घास खा लेती है। किसान सोचता है कि यदि इसे बांधते नहीं तो यह इस तरह से नहीं खाती, इधर-उधर ही खाती रहती। आपको यह उदाहरण मैं इसलिए दे रहा हूँ कि आपकी भी सीमा है। अड़ोस-पड़ोस की भी सीमा है। आप देख भर सकते हैं, सेवन नहीं कर सकते। इस प्रकार से होने से अड़ोस-पड़ोस का व्यवहार अच्छा रहता है। अड़ोस-पड़ोस से यदि गड़बड़ व्यवहार रखोगे तो मात्र चिंता ही मिलेगी, सुख-शान्ति नहीं।

इसलिए दूसरों के पदार्थ की ओर दृष्टि को ले जाना अभिशाप है-वरदान सिद्ध नहीं होगा। आप वरदान चाहते हैं न? प्रभु कभी वरदान देते नहीं। हाँ! मार्ग बता देते हैं। रस्सी बांधने के लिए कहते हैं। हमारे पूर्वजों ने जो भी व्यवस्था दी है, उससे आज तक व्यवस्थित रह रहे हैं। आप भी उसी तरह अपनी संतान को भी यही पाठ दे रहे हैं।

हमने तो अपना जीवन पूर्ण कर लिया, तुम भी अपनी परिधी [सीमा] में रहकर दूसरों का सहयोग करो। कभी किसी से मांगो मत, श्रम करो। श्रम के द्वारा आप इतना अर्जन कर लें

तथा जो पराश्रित नजर आयें उन्हें सहयोग देकर स्वाश्रित करें, यही मानव का कर्तव्य है।

विदेश में ये सब व्यवस्था नहीं हैं। वहाँ की व्यवस्था यहाँ से भिन्न है। यहाँ भी विवाह होता है, वहाँ भी विवाह होता है, पर वहाँ सुबह विवाह होता है मध्याह्न तक विवाद हो जाता है। आप सुन रहे हैं? अपने यहाँ की व्यवस्था अच्छी है। उस पर विश्वास करते हुये कभी किसी दूसरे की सम्पत्ति पर नजर मत डालो। श्रम करते हुये अपने में संतुष्ट रहने की कला भारत में ही है।

भारत में जो भी बाहर से आया वह इस जीवन शैली से बहुत प्रभावित हुआ। वहाँ पर कितनी बार शादी (विवाह) और कितनी बार तलाक होता है हिसाब ही नहीं है। भारत में ऐसा नहीं है। यहाँ विवाह को कर्तव्य समझकर, एक दूसरे के पूरक बनकर, आपस में मिलकर, संतोष आदि गुणों से भरकर अपने मन को शान्ति प्रदान करते हैं।

"मन अशान्त वहाँ होता है, जहाँ लगाम नहीं रहता है। जहाँ कोई सीमा अथवा बंधन नहीं होता वहीं अशान्त होता है। इसलिये गृहस्थाश्रम में रहकर भी बहुत कुछ मोह-

अंधकार को जीतने का उपक्रम कर सकते हो।

और एक दिन जिस प्रकार प्रभु ने अपने उस मोह अंधकार को दूर कर दिया, उसी प्रकार हम भी मुक्त होकर प्रभु के समान बन सकते हैं। बशर्ते पाठ लेना चाहें तो। इसलिये इन वीतराग जिनबिम्ब से और कोई पाठ नहीं- बस जैसे वे राग-द्वेष से ऊपर उठ गये, हम भी उठ सकते हैं। एकदम नहीं कर सकते तो गैया की तरह रस्सी बांध लो।

अन्यथा फिर लट्ठ मारकर भगा दिये जाओगे। "कर्म ऐसे करो जिससे भविष्य में अशान्त न होना पड़े।" ऐसे कर्म करो जिससे बिना कहे ही संसारी प्राणी पर भी अच्छा प्रभाव पड़े। उनका प्रभाव भी हमारे पर पड़ता है और हमारा प्रभाव उन पर पड़ता है। पड़ सकता है। इसी के माध्यम से हम सभी अपना जीवन उन्नत बना सकते हैं। तो हमारे गैया के उदाहरण को याद रखीयो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

गुरुवाणी -

"आचार्य श्री कहते हैं आमतौर से जिन बातों को सब जानते हैं आमतौर से उन्हीं को सब भूल कर रहे हैं।" मतलब जो करना चाहिए वह नहीं कर रहे तथा जो नहीं करना चाहिए वह कर रहे हैं।

23-7-18 "कीमत पहलु की" प्रातः

आप लोगों को आत्मा की सिद्धि के बारे में बताने से पूर्व मैं एक उदाहरण देकर के आपके मन-आपके उपयोग को उस ओर आकृष्ट करना चाहता हूँ ताकि विषय को अच्छे से समझ सको। एक क्षेत्र पर खनन का कार्य चल रहा था। मतलब खोद रहे थे और खुदे हुये पत्थरों को नीचे की ओर लुड़का रहे थे। इसे देखने से ऐसा लग रहा था कि जैसे पक्षपात हो रहा है। कुछ पत्थर लुड़ककर नीचे आ रहे थे जब कि कुछ पत्थर बीच में ही रह रहे थे।

जो पत्थर मतलब के थे वे बीच में ही रह रहे थे तथा जो काम के नहीं वे ही नीचे आ रहे थे इसी से लगा कि पक्षपात हो रहा है। हरेक व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोण से निकालता है। निकालता [लगाता] ही नहीं समझाता भी है। उस बात में यदि कुछ रहस्य होता है तो उदाहरण देकर स्पष्ट भी करता है। सामने वाला भी सब कुछ भूल जाये पर उस उदाहरण को नहीं भूलता है।

मैं भी सोचता हूँ इस उदाहरण के माध्यम से जो आपके सामने रख रहा हूँ बात समझ में आयेगी। तो कुछ पत्थर बीच में और नीचे? क्यों होता है। जो गोल-मटोल थे - बतैया बोलते हैं इधर की भाषा में वे तो लुड़ककर नीचे आ जाते हैं।

उन्हें बस थोड़ा सा लुड़का भर दो गोल होने से नीचे आ जाते हैं।

जो बटैया नहीं हैं, पहलुदार हैं उन्हें लुड़का दो एक बार लुड़केगा फिर रुक जायेगा। दूसरी बार करो फिर रुक जायेगा। इसका मतलब कोण का होना जरूरी है। "जिसकी दृष्टि में दृष्टिकोण नहीं होता, तो विषय वस्तु समझ में नहीं आती।" जब भाव अथवा दृष्टिकोण से देखते हैं तो आँखे खुल जाती हैं। और विषय वस्तु गम्भीर हो तो समझ नहीं पाते, सरल बना दे तो अपढ़ भी समझ लेते हैं।

सम्भव है सरल विषय को भी समझने में पढ़े-लिखे फिर भी आना-काना करने लगे किन्तु अपढ़ जल्दी समझ जाता है। ये उदाहरण बिल्कुल ठीक दिया - पहलु होने से उसे अच्छे से समझ लेता है। तो जो पहलुदार थे वे रुक गये - बटैया सारे के सारे नीचे पहुँच गये। आज तक हम भी बटैया की भांति लुड़कते ही जा रहे हैं क्यों कि हमारा उपयोग उस ओर है ही नहीं।

स्वतंत्रता के उपरान्त हर व्यक्ति यही सोचता है। मुझे मत कहो - मैं स्वतंत्र हूँ। सभी स्वतंत्र है तो परतंत्र कौन रहेगा? कोप का भाजन न बन जाये, इसलिये हमें कुछ रुकना चाहिये। जिस किसी के कहने से अपने विचार बदले नहीं। हाँ कोई उदाहरण

मिल जाये तो अलग है।

परन्तु हाँ कहने से पूर्व कुछ न कुछ तो सोचना चाहिए। जो व्यक्ति कह रहा है वह प्रमाणिक है या नहीं? विश्वास पात्र है तो फिर सोचने की बात नहीं। प्रमाणिक व्यक्ति द्वारा जो भी रहस्य है उसे खोलने में वह कभी भी राग-द्वेष-मोह नहीं करेगा। उसे क्या? समझदार वही है जो राग-द्वेष-मोह से रहित हो समझाता है, वही प्रमाणिक माना जाता है। पहले ऐसी ही पंचायत होती थी। कौनसी पंचायत? दुनिया की पंचायत नहीं करते थे। हजारों-लाखों लोग आँख मीचकर स्वीकृति देते हैं।

गलतियाँ किससे नहीं होती सबसे होती है। केवल दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जिनसे गलती नहीं होती - एक भगवान - दूसरा पागल। पागल इसलिये कि वह जानता नहीं और भगवान गलती करते ही नहीं। हम-तुम गलती करते हैं पर उसे स्वीकारते नहीं। अपनी गलती को मानते ही नहीं कि हमने गलती की।

क्यों-सुन रहे हो न? [हाँ]

आपने हाँ का तो पाठ पढ़ लिया है। [आप प्रमाणिक जो हैं] तो जहाँ संदेह करते हैं, वहाँ समझाने वाला भी विश्वास-पात्र नहीं होता। यदि विश्वास-पात्र हो तो बात मानने में देर नहीं लगती। इतना है अभी हमें समझ में न

आ पाये किन्तु कालान्तर में आ जाती है।

हम उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चल रहे हैं। बात-बात में लुड़कते रहना ठीक नहीं। क्या करें महाराज? पहलु निकाल लो भगवान बनने में देर नहीं लगेगी। यह कैसे करे? औजार हैं न- शास्त्र (जिनवाणी) एवं गुरु-देशना रूपी औजार (छैनी) से पहलु बना लो। हमारे भीतर विचार होते हुये भी पहलुदार नहीं बन पा रहे हैं। पन्ना में भी पहलु होना चाहिए। (व्यंग्य)

हीरा पहलुदार होता है तो क्या कीमत होती है, यह अनगढ़ भी समझता है। अनगढ़ अर्थात जो गढ़ा न हो वह अनगढ़ होता है। आप अनगढ़ है या गढ़े हुये? [अनगढ़] किसने कहा? हम स्वीकार नहीं कर रहे। यदि पहलु नहीं हो तो वह चटनी के काम का होता है, उससे चटनी बनती है। कुछ काम का तो है। पहलु हो तो मौलिक माना जाता है।

यदि सहस्र पहलु वाला हीरा हो तो वह अनमोल हो जाता है। पन्ना से निकलता है किन्तु जयपुर में उसमें पहलु बनाये (निकाले) जाते हैं। पन्ना पास में ही है, जयपुर में मूल्य बढ़ क्यों गया? जब पहलु आ जाते हैं तो उसमें मुल्यता आ जाती है। जब तराशेंगे तो काम होगा। अभी आपका

तत्त्व भी पहलुदार बना नहीं, यदि बनाना चाहते हो तो अपने आपको व्यवस्थित कर दो।

पहलुदार बन गया फिर तो अनमोल हो जायेगा। मैं अनमोल का अर्थ समझता था जिसका कोई मोल नहीं परन्तु ऐसा नहीं है। बाद में जाकर ज्ञात होता है, बहुत-बहुत मोल वह है अनमोल। आत्मा भी अनमोल है। इसमें जब पहलु निकल जायेंगे तो फिर - "हीरा कहे ना मुख से - लाख हमारो मोल" अपनी कीमत किसी से कहलावो नहीं। जिसको पुछो वह अनमोल है।

जब स्वयं की कीमत अनमोल है तो फिर मांगने की क्या आवश्यकता? यह ज्ञान होना जरूरी है। गुरु-उपदेश से ही यह पता चलता है। इसपर श्रद्धान होना चाहिए। इसी को बताने हेतु बिम्ब स्थापना की व्यवस्था होती है। उन्हें देखकर हमें लगता है कि ये संसार में रहते अवश्य है पर संसार से इनका कोई प्रयोजन नहीं होता। वस्तुतः यहाँ कोई कंगाल नहीं-सब अनमोल है।

जब शान पर पत्थर चढ़ता है तब शिल्पी छैनी द्वारा उसमें पहलु निकालता है। पहलु हेतु ऐसा नहीं जहाँ कहीं भी चोट मार दी। इस वितरागता से (बिम्ब से) बटेया भी पहलुदार बन सकता है। अब आप समझ गये होंगे कि हम कितने मोलदार है। अब

5

इस बैटरी को छैनी के माध्यम से टांके लगाओ।

स्वरूप को निखारना चाहते हो तो टांकी चलाओ, पर टांकी कहाँ लगाना यह भी ध्यान रखना। स्वरूप पाने हेतु ही मानव जीवन मिला है खाने-पीने, भोग-विलास हेतु नहीं। जीवन रूपी गाड़ी को चलाने में पेट्रोल तो लग ही रहा है, उसका सदुपयोग करो दुरुपयोग नहीं। आप सभी लोग कहते हैं- महाराज हम दूर से आये हैं।

हम कहाँ से आये हैं- आपको क्या पता? आप सब दूर से आये हैं और भूल से आये हैं। भूल से आये हो तो अब अपनी भूल सुधार लो अवश्य ही उस तत्त्व की प्राप्ति होगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण- "हमारे भगवान अतुलनीय हैं"

"घटना कुण्डलपुर की है। पुरातत्त्व विभाग वाले अधिकारी वहाँ के सभी मन्दिरों एवं मूर्तियों की जानकारी लेने पहुँचे, उसमीति के लोग आ. श्री जी वहीं पर विराजमान थे उनसे पूछा क्या करें? आ. श्री ने कहा- जानकारी देने में कोई बाधा नहीं कितने मन्दिर- कितनी मूर्तियाँ सब बता देंगे पर वे भगवान Weight (वजन) की बात करते हैं तो हम कभी भी अपने भगवान को तौलने नहीं देंगे वे तो अतुलनीय हैं।"

२५-३-18 "देव नहीं महादेव बनो" प्रातः

देव भी देवाधिदेव (वीतराग भगवान) जो होते हैं उनके पास आकर भक्ति आदि [आराधना] करते रहते है। ये मन में प्रश्न उठ सकता है ये धरती पर रहते है और वे अधर में रहते हैं। देवलोक में रहते है तो अधर में रहते है। क्या कहा? उनके लिए पैर रखने को धरती तक नहीं, अधर में लटके हैं। पुरा का पुरा परिवर्तन हो गया। फिर भी सौधर्म इन्द्र जो सभी देवों का अग्रणी होता है उसके मन में एक प्रश्न उलझा हुआ रहता है।

अभी तक मैंने आगे-आगे होकर सभी कार्य किये पर प्रश्न यह है कि आगे होने के उपरान्त भी मैं एक ग्रास आहार नहीं दे सकता। आप सुन रहे हैं? [हाँ] सब कुछ कर लिया पर पंक्ति में खड़े होकर भगवान (महाराज) को आहार का सौभाग्य नहीं। केवल देखकर - गुणगान करके - भक्ति करके अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है। आहार होने पर सभी जीव प्रमुदित होता है। उस समय सौधर्म इन्द्र इतना आनन्दित होता है कि ताण्डव नृत्य करने लग जाता है।

इसके बावजूद भी वह आहार नहीं दे सकता। आहार क्या वह तो अमृत पान करा दे। ध्यान रखना - अमृत को कहीं भी आहार की संज्ञा नहीं दी। वो खाने की चीज नहीं चखने की चीज है। इतनी सी मात्रा में दे दें। नहीं लेंगे। क्यों कि वह परिश्रम द्वारा

अर्जित नहीं हैं। सुन रहे हो?

परिश्रम जो करता है उसी के हाथ से आहार लिया जाता है। पहले किया था परिश्रम उसी के फलस्वरूप तो सौधर्म इन्द्र का पद मिला। किया था पर अभी तो नहीं करता। इतना ताण्डव नृत्य करता है पर एक बूंद पसीना तक नहीं आता। इसलिये तपस्या के योग्य पर्याय नहीं हैं। दान आदि के वह योग्य नहीं हैं। बस सब के साथ शामिल होकर हाथ मात्र लगाने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है।

भीतर पीड़ा तो होती ही होगी पर क्या कर सकते हैं। योग्य होकर भी दे नहीं सकता। ले नहीं सकता। हाँ ले सकता है-वह है आशिर्वाद और दे सकता है तो वह है ढोक। ढोक दे सकता है। नमोऽस्तु कर सकता है। बुन्देलखण्डी शब्द है शायद ढोक। नहीं है तो राजस्थानी होगा। ढोक द- ढोक द। धीरे- धीरे भाषा का प्रभाव दूर तक फैल जाता है।

सर्वप्रथम तो मैं राजस्थान ही गया था। फिर इधर बुन्देलखण्ड में आया और बड़े बाबा ने पकड़ लिया। इधर आने के उपरान्त एक बार बड़े बाबा से सीधे जयपुर गया था। फिर नहीं गया। अब बुन्देलखण्ड का ही विस्तार हो रहा है। तो यह कह रहा था कि योग्यता अनेक प्रकार की होती है। पर्याय-

गति का प्रभाव पड़ता है।

"देव बन गया किन्तु महादेव नहीं बन पाया।" अब अपनी सीमा में रहकर ही कर सकते हो। पूजन तो कर सकोगे पर भोजन नहीं करा सकोगे। जिस समय भोजन (आहार) होता है, उसे देखकर उसके ऐसे भाव हो जाते हैं - गद्गद् हो जाता है। सभी लोग उसे देखने लग जाते हैं। पंचाश्चर्य करता है। अगली पर्याय में मुक्त भी होने वाला है। इतना पुण्य कमाया पर वर्तमान में अर्जित पुण्य काम में नहीं आ सकता।

"धन आता है पुण्य से पर देने के लिए (दान) अलग ही क्वालिटी का पुण्य चाहिए।" जिसके माध्यम से कर्मों की निर्जरा होती है। ऐसा पुण्य कर्म है जिसके कारण कर्मों की निर्जरा होती है। इस प्रकार का परिवर्तन उस पुण्य के द्वारा ही होता है। ये सारा का सारा विषय सौधर्म इन्द्र के पास विद्यमान है, प्रतिदिन सभा लगाता है पर जब ये अवसर (आहार) आता है तो वह सोचता है मनुष्य कितना सौभाग्यशाली है।

वह यहीं से गया है पर क्या करे? आज के विद्यार्थी को सतर्क करते हुये कहते हैं- कि सप्ली मेन्ट्री आयी है सौधर्म इन्द्र की। एक-आध विषय में निकला नहीं। ये इतिहास रहा है। अब दोबारा परीक्षा देना चाहे तो दे सकता है, नम्बर भी अच्छे

आ सकते हैं पर फर्स्ट class फर्स्ट नहीं कहलायेगा, अब तो पास कहलायेगा।

सप्लीमेन्ट्री वाले की कोई श्रेणी नहीं बनती। पूरक परीक्षा में यदि 99 अंक भी पा ले तो भी पास कहा जाता है। क्यों कि एक बार परीक्षा दे चुका है। आप परीक्षा में बैठो तो पूरक की बात नहीं करना, नही तो अधर में लटकना पड़ेगा। यहाँ सब कुछ स्वतंत्रता है, उन्हें बहुत सारी परतंत्रताओं में रहना पड़ता है। जय-जयकार द्वारा प्रशंसा करते है-धरती के पूत की। यह सौभाग्य केवल मनुष्य जीवन में ही प्राप्त होता है।

इसलिए अपने धन को अर्जित करते हुये दान के योग्य बनाओ नहीं तो टैक्स देना ही पड़ेगा। थोड़ा सा भी देते है तो नम्बर का एक नम्बर में हो जाता है। जादु नहीं यह प्रक्रिया है। इस अर्थ को जो समझता है वही अर्थशास्त्री माना जाता है। आप अर्थ का अर्जन तो करते है पर उस अर्जित अर्थ का सही उपयोग करने वाला ही तत्त्वज्ञानी होता है। एक किताब पढने में आयी थी।

आप भी उसे पढ़ियेगा। पहले पढ़ी हो तो दोबारा इस दृष्टि से पढ़े। नामोल्लेख करना तो मैं... क्यों कि वह लौकिक ग्रन्थ माना जाता है। लोकतन्त्र को पुनः स्थापित करने के लिए आवश्यक है। "कौटिल्य के आर्थिक विचार" मूल यह संस्कृत

में थी, इसका हिन्दी रूपान्तरण भी हो गया।

अनेक व्याख्याकारों ने इस पर व्याख्या की है। "अर्घ के पीछे युग लगा है ठीक है, अर्घ को सामने रखो, अर्घ को सिर पर मत रखो। सिर पर तो श्री जी ही शोभा देते हैं।"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

25-7-18 "संदेश श्री फल की आँखों का" प्रातः

आप लोगों को देखने के लिए दो आँखें मिली हैं। आपको जो चर्म चक्षु मिले हैं उसके द्वारा देखते हो शेष इन्द्रियों से देखते नहीं किन्तु उनसे वस्तु का ज्ञान होता है। इसी प्रकार देवों में भी दो आँखें होती हैं पर एक विशेष आँख जिसे अवधिज्ञान बोलते हैं। प्रायःकर मनुष्य में नहीं होती। तिर्यञ्चों में भी दो आँखें होती हैं। मकरी में भी दो आँखें पायी जाती हैं।

एक बहुत छोटा जीव (क्षुद्र जीव) कीट होती है "भिकुआ" बहुत ही छोटी होती है उसके भी दो आँखें होती हैं। आपको अपनी दोनों आँखें मलनी पड़ेगी अवश्य तब जाकर वह भिकुआ दिखेगी फिर और ध्यान से देखोगे तो उसकी दो आँखें दिख पायेगी। इस प्रकार सब जगह दो आँखों का प्रचलन है किन्तु श्री फल में तीन आँखें होती हैं। हाँ! देखो

बदलावट आ गया ना।

सबके पास दो आँखे पर श्री फल के पास तीन आँख इसीलिये आप श्री फल चढ़ाते हो। मोक्षफल प्राप्ताय फलम् नि० स्वाहा बोलते हो। यह तीसरी आँख मिलेगी तभी मोक्ष मिलेगा। तीसरी आँख कब मिलेगी? जब दो आँख बंद करोगे तब तीसरी आँख खुलती है। इसलिये कहा जाता है- सामायिक करते समय दोनो आँख बन्द करो। भगवान के जब दर्शन करते हो तब देखते होगे उनकी आँखे नासादृष्टि में रहती है, मतलब अब इन आँखो की कोई आवश्यकता नहीं है।

आप क्या करते हो? आँख से दिख नहीं रहा- चश्मा लगा लेते हो अथवा ऑपरेशन करा लेते हो। इन दोनो आँखो से आप भगवान की भक्ति उनकी आराधना में ओत-प्रोत हो जाते हैं। उस समय पांच इन्द्रिय के विषय नहीं दिखते बल्कि प्रभु की उस वीतराग मुद्रा (छवि) में खो जाते हो। [अभी तक तो बरसात की मांग कर रहे थे- स्वार्थ तो है (वर्षा होने पर)] अब आप सभी उधर नहीं भीतर देखो।

तो भगवान पर दृष्टिपात करने से, वे इन्द्रिय व्यापार से दूर हो चुके हैं। आँखे है पर उनका काम हो चुका है। आप यदि काम लेना चाहते तो प्रभु को देखने में, जिनवाणी पढ़ने में अथवा प्राणी रक्षा में आँखे बंद नहीं खोलो। बाकी समय

आँखे बंद रखो।

तबतीसरी आँख खुलेगी। काव्यरम्याती में कहते हैं- तीसरा नेत्र जब खुलता है तो कामदेव भस्म हो जाता है। कामदेव को यदि नष्ट करना चाहते हो, तो निश्चित रूप से तीसरी आँख खोलना पड़ेगा। तीसरी आँख खुलने पर उस कामदेव का नामो निशान समाप्त हो जायेगा। अनादिकाल से यह संसारी प्राणी दोनो आँखो का उपयोग विषयों को ही देखने में करता आया है।

भगवान कभी सोते नहीं। आप होनहार भगवान है। होनहार भगवान ऐसे थोड़े ही करते है। जो भगवान बने उन्हें देखो तो होनहार अन्यथा सोनहार। संसारी प्राणी हेतु कहा जा रहा है- क्यों कि रात-दिन वही देखता है जो संसार बढ़ाने में ही कारण होते है। भीतरी चक्षु को खोलो अथवा (आगम चक्षु कहा। आगम को अपना चक्षु बनाओ) उसी का ध्यान करो।

हमेशा-हमेशा के लिए संसार छूट जायेगा यदि भीतरी चक्षु खुल जायेंगे तो। इसलिये मुक्ति पाने के लिए तीसरी आँख खोलने के लिये कहा गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

(चतुर्दशी)
[चातुर्मास स्थापना]
26-7-18 "चातुर्मास का मुख्य उद्देश्य है साधना" प्रातः

आज आषाढ़ सुदि चौदस है। इसी दिन मुनि महाराज चातुर्मास की स्थापना करते हैं। कुछ अपवाद के दिन को छोड़कर के। स्थापना में एक चरण है भक्तियों का पाठ करके इस कार्य को प्रारम्भ किया जाता है। गृहस्थ लोग अपनी सुविधा के अनुसार सबको निमन्त्रण देकर रविवार के दिन निश्चित किया है। ऐसा सुनते हैं। उनकी स्थापना अलग ही कोटि की होती है।

तो आज की क्रिया के पाठ भक्तियों में हो चुके हैं। [चातुर्मास स्थापना] "चातुर्मास का मुख्य उद्देश्य साधना का है।" बहिरंग दृष्टि से बंध हो सकता है, होता है पर अन्तरंग दृष्टि से उस बंध को समाप्त किया जा सकता है। वैसे एक द्रव्य का दूसरे द्रव्य के साथ सम्बन्ध होना सम्भव नहीं है, फिर भी एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के लिए अलग ही महत्त्व रखता है।

आपका शरीर और आपके उठने-बैठने-चलने के भाव एकमेक है। जब आप चलते हैं तो आपके पीछे-पीछे अथवा सामने छाया भी साथ-साथ चल देती है। आपने छाया का निर्माण नहीं किया फिरभी भाव के बिना इस प्रकार की छाया हो नहीं सकती। भगवान भी चलते हैं पर भगवान की छाया नहीं पड़ती है,

इसमें अन्तरंग कारण है। वे भाव है।

~~उनकी~~ छाया नहीं पड़ती, आपकी छाया पड़ती है। संभव है आप जब फोटो लेते है तो बटन दबाकर फोटो लेते है। समोशरण में जाकर भगवान की फोटो लेकर दिखा दो। संभव है? नहीं (कितने भी बटन दबाओ फोटो नहीं ले सकते क्यों कि उनकी छाया ही नहीं पड़ती। [व्यंग्य - फ्लेश की लाइट चलाने पर] तो वह उनका चित्र पकड़ में नहीं आता। एक-दो बातें और है यदि फिर अवसर मिला तो बतायेंगे।

आज का इतना ही पर्याप्त समझता हूँ। दूसरा चरण और जुड़ता है- वो है पूरे संघ का आज उपवास है। चातुर्मास मुख्य तो साधना के लिये है। आप लोग भी भाग लेकर, लाभ ले सकते है। पुरुषार्थ करते है तो सहज रूप में उपलब्ध होगा। इस प्रकार यह संकल्प योग साधना की दृष्टि से होता है। यह छाया शरीर की होते हुये भी आत्मा के बिना नहीं। उसकी सक्रियता को लेकर ही देख पायेंगे। ऐसा शरीर और आत्मा का घनिष्ट संबंध कर्म के कारण ही हुआ है। इसी को समाप्त करने के लिए साधुओं को साधना करनी है। मुख्य तो "अन्तरंग है बहिरंग उसके साथ लगा हुआ है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

27-7-18 "मिल गये भगवान गौतम स्वामी को" प्रातः

कल आषाढ़ सुदी चतुर्दशी हो गयी थी। अब दीवाली तक साधु संत एक स्थान पर रहकर के आत्म साधना में अपने क्षण व्यतीत करते हैं। आजका यह प्रथम दिन है वैसे पक्ष का अन्तिम दिन है। आज पूर्णिमा है। इस दिन चन्द्रमा अपनी पूरी कलाओं के साथ शोभा को प्राप्त होता है। निमित्त - नैमितिक सम्बंध जिसको कहते हैं, उसे लेकर ही धरती पर समुद्र बहुत उल्लासित होता है, इसी से उसमें बड़ी- बड़ी लहरें उठती हैं, जो ज्वार - भाटा के रूप में उठती हैं।

चन्द्रमा धरती से कोसो दूर है फिर भी धरती पर उसके निमित्त से समुद्र/सागर में उल्लास देखने को उपलब्ध होता है। इसका क्या सम्बन्ध है? जो सामने दिख रहा है उसमें कथा की आवश्यकता नहीं होती। सम्बंध स्पष्ट दिख रहा है। "क्षेत्र की भले ही दूरी हो पर भावों के द्वारा तो जहां भी बैठो सम्बन्ध हो जाता है।" एक वर्ष में एक दिन उस तिथी पर अतिथी को याद करते हो। अतिथी कौन? जिसकी तिथी निश्चित नहीं, स्थान निश्चित नहीं वह अतिथी कहलाता है।

आप तिथी वाले हैं, अतिथी को याद करते हैं। उनको याद करने मात्र से भावों का ज्वार-भाटा

उठ जाता है।

फिर गीत - नृत्य की कोई आवश्यकता नहीं रहती। भावों की ऐसी हिलोरें उठती हैं, सब संगीतमय हो जाते हैं। बाहरी साधनों की, द्रव्य - क्षेत्रकाल कोई भी अपेक्षित नहीं होता है। भक्त जहाँ कहीं भी बैठा है वह सिद्धालय में बैठे सिद्धों की आराधना करता है। वे आ नहीं सकता, यह वहाँ जा नहीं सकता, उन्हें छू नहीं सकता बस अपने आचरण द्वारा उनको याद करता है।

इसी के माध्यम से कर्मों की निर्जरा होती है। इसे सुनकर भक्त इतना गद्‌गद् होता है, जो साक्षात् द्रव्य क्षेत्रकाल लगाकर करता है उससे भी बढ़कर भाव हो जाते हैं। ये भावों का खेल है। किसी भी गीतकार - नृतक - संगीतकार को बांध दे तो कला में वह लीन नहीं हो पाता। यदि उसे स्वतंत्र छोड़ दो तो फिर देखो कहा नहीं कि मन में ऐसे-ऐसे भाव, ऐसा नृतन करता है जिसके आगे दुनिया के सारे नृतक असफल हो जाते हैं। ऐसे भावों का आना तन्मयता से ही ये सब सम्भव हो पाता है।

तो आज के दिन ही गुरु - पूर्णिमा घटी। ऐसा क्यों हुआ? आज गौतम को गुरु मिले थे भगवान बनने के लिए। भगवान बाद में बना

जाता है।

"हम लोगों की दृष्टि में उन्हें गुरु मिले पर गौतम स्वामी की दृष्टि में भगवान मिले। दुनिया को गुरु मिले। फिर इसके बाद क्या हुआ? 66 दिन बाद अर्थात कल के दिन उनका मौन टूट जाता है। ये चमत्कार है गौतम स्वामी का। इसी सम्बन्ध से आज गुरु-पूर्णिमा और कल वीरशासन जयन्ती है।

केवलज्ञान होने के बाद भी 66 दिन तक दिव्य-ध्वनि नहीं खिरी। जब तक कोई समझाने वाला नहीं होता तब तक भगवान भी बोलते नहीं। समझाने वाले गणधर परमेष्ठी हैं। उनके आने पर ही 66 दिन बाद भगवान की वाणी सुनने को मिली। जब कि उससे पूर्व भी समोशरण की सभी सभायें खचाखच भरी हैं-सुनने के लिए। पर रहस्य खोलने वाले गुरु नहीं हैं, उन्हीं के माध्यम से हमें मिला, यह होती है गुरु की कृपा।

जैसे चन्द्रमा के माध्यम से समुद्र में लहर उत्पन्न होती है, उसी प्रकार से गुरु के (गौतम स्वामी) माध्यम से समोशरण की सभा में बैठे देव-मनुष्य, राजा-रंक, तिर्यञ्च सभी लाभ लेते हैं, आनंद लेते हैं।

आनंद सभी को मिले यह कोई

नियम नहीं है। इसके लिए एकाग्रता की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार संक्षेप में आप सभी के समक्ष रखा है। रविवार आने वाला है, उस दिन भी खूब मिलेगा। हमारी भावना है दोनों को मिलेगा। पक्का हो गया है। अभी एक दिन बीच में है, कल तो वीरशासन जयन्ती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"आदि दिगम्बरा:"

"बात गिरनार जी की है। श्वेताम्बर एवं दिगम्बर (कुन्दकुन्द आचार्य) में विवाद हो गया कि प्रथम वन्दना कौन करें? श्वेताम्बरों की अम्बिका देवी थी और दिगम्बरों की सरस्वती देवी। कैसे तय किया जावे कि दर्शन हेतु पहले कौन जावे। तब पाषाण निर्मिता देवी से आवाज आई "आदि दिम्बरा - आदि दिगम्बरा - आदि-दिगम्बरा"। इतना होते ही सर्वप्रथम आचार्य कुन्दकुन्द ने दर्शन किया फिर अन्य लोगों ने दर्शन किये।"

संस्मरण - "खजुराहो में प्रथम दिन था। मन्दिर से आसर पर निकल रहे थे। दर्शन करते ही आ० श्री के मुख से निकला - "रत्नत्रय की विशुद्धि में वृद्धि हो भगवन्" (आ० श्री जो प्रतिपल चर्या के प्रति सतर्क रहते हैं, वे कह रहे हैं कि विशुद्धि बढ़ते रहे।"

27-7-18 "गुरु पूर्णिमा प्रवचनांश" मध्याह्न

□ "मोक्षमार्ग में कोई भी साथ नहीं रहता है।" इसे नोट कर ले ताकि जब भी विकल्प हो - कोई तो साथ है दो - याद कर लेना।

□ महावीर स्वामी अकेले दिक्षित हुये, उनके साथ कोई भी दिक्षित नहीं हुये। पर पुण्यहीन नहीं थे।

□ तीर्थंकर प्रकृति निरन्तर बंधी कर्म है एक बार बंधना प्रारम्भ तो फिर रात - दिन कहीं भी रहे बंधता ही रहता है। उदाहरण दिया जैसे - कोई डिपार्टमेन्ट में किसी की नौकरी लगी। जब से Join किया तब से वह वेतन रात दिन चालु रहता है - वृद्धि पोहीप्राप्त होता रहता है।

□ सम्यग्दर्शन की विशुद्धि बढ़ती रहती है - महावीर स्वामी दीक्षा के उपरांत 12 वर्ष तक मौन रहे प्रतिपल विशुद्धि बढ़ती गयी जिसका फल केवलज्ञान में परिणत हो गया। नाड़ी की भांति वह विशुद्धि रुकी नहीं।

□ एक तो हुण्डावसर्पीणी काल फिर उम्र भी मात्र 72 वर्ष उसमें से भी 12 वर्ष तक मौन उसके बाद जो बचा उसमें से भी 66 दिन और चले गये। सबकुछ कटकरके मिला। इसलिये जो मिला - जितना मिला उसका पुरा उपयोग करो।

□ महावीर स्वामी ने कभी कोई विकल्प नहीं किया, न ही किसी को साथ लेने की सोची।

- महावीर स्वामी ने नकल नहीं की - 99 की बात नहीं शतप्रतिशत देंगे। केवलज्ञान प्राप्त होकर ही रहेगा।
- हायकू - "लिख रहा हूँ, यात्रा विवरण मैं, बिना लेखनी"
- "लिखते समय विचार नहीं चलते और विचार आते समय लिख नहीं सकते।"
- हम भी महावीर की तरह अकेले रहना चाहते हैं, पर आप रहने ही नहीं देते।
- लोग कहते हैं - महाराज तो बुन्देलखण्ड - बुन्देलखण्ड में ही विहार करते रहते हैं, उन्हें महावीर भगवान के बारे में पढ़ लेना चाहिए विपुलाचल (राजगृही) पर कितनी बार आये। कितने चातुर्मास राजगृही में हुये। अब नहीं कहना कि यहीं परिक्रमा लगाते हैं।
- एक तीर्थंकर तो ऐसे जिनका गर्भ - जन्म - तप - केवलज्ञान और निर्वाण एक ही स्थान से बाहर गये ही नहीं चम्पापुर से हुये। हो सकता है। सम्भव है तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध भी वहीं से किया हो।
- हम तो बड़ो का अनुकरण करते हैं। वैसे हमारे लिए सब क्षम्य है।
- महावीर स्वामी के लिए हुण्डावसर्पिणी काल का सर्प भी कुछ नहीं कर पाया।
- प्रथमानुयोग की कथाओं से स्पष्ट हो जाता है कि - मोक्षमार्ग टेंशन मुक्त होता है।

o कोई रोके तो रुको नहीं - मोक्षमार्ग में सम्मेदशिखर की तरह पीछे से कोई आवाज लगाये - हाँ कह दो आ जाओ अन्यथा पीछे और जो आ रहे हैं, उनके साथ आ जाना।

o मोक्षमार्ग में कोई किसी की नकल भी नहीं कर सकता। न ही नकल के भाव करता है।

o "आप अकेला अवतरे - मरे अकेला होय" गुरुजी वृद्ध भले ही हो गये थे पर अभी भी श्लोक का ज्ञान उनका पूर्ववत् था। इस लाइन (पंक्ति) में वे कहते थे - आप अकेला अब तरे मतलब अकेला जो है वही पार होगा।

इसलिये मोक्षमार्ग में कभी किसी को साथी नहीं।

o जिस प्रकार चुम्बक के दो टुकड़ो को आमने-सामने रखते हैं तो चिपक जाते हैं और पीठ दिखाते हैं तो भागते हैं इसी तरह आप पीठ दिखा दो। मुख से बोलो नहीं।

o तीर्थंकर की साधना के सामने किसी की भी साधना नहीं। उनके पीछे ही रहेंगे सभी। सूर्य कभी भी अपने ज्योतिष मण्डल के साथ नहीं रहता।

o तीर्थंकर के सामने कोई बोलता नहीं। जब गुरुजी ही नहीं बोलेंगे तो कौन बोलेगा? कोई नहीं।

o जो मान को स्तम्भित कर दे उसका नाम है मानस्तम्भ। ऐसा तप जिसके सामने सारा अभिमान गल जाता है।

□ बहुत कठिन है - अपना कार्य स्वयं करना। पर तीर्थंकर कभी किसी को कुछ नहीं कहते। संकल्प है - बुद्धिपूर्वक हम किसी को कुछ भी नहीं कहेंगे।

□ नहीं होता तो नहीं होगा परन्तु अपना कार्य स्वयं करो।

□ जब तक कोई दिगम्बरत्व धारण नहीं करेगा तब तक बोलूंगा नहीं - "ततः केन ब्रवीम्यहम्" किससे बोलूं?

□ जहाँ मात्र एक केवली भगवान और एक गणधर थे वहाँ 1500 शिष्य (मुनि) हो गये।

□ अध्यात्म में ऐसी शक्ति / ऐसा चमत्कार है कि बिना बोले ही सब करा देता है।

□ अपने पैरों से चलो - मंजिल पाओगे ऐसा भगवान महावीर ने करके दिखाया।

□ जैसे कर्फ्यु में ढील होती है आप जल्दी से अपना काम करके पुनः लौट आते हैं उसी प्रकार भगवान की दिव्यध्वनि में सब एकत्रित हो जाते हैं, पुनः बीच में घर - गृहस्थी का जो कोई कार्य निपटा कर आ जाते हैं।

□ वैराग्य है तो सब कुछ है - तभी तप है, तभी मन की एकाग्रता है, तभी सम्यग्ज्ञान है अन्यथा कुछ नहीं इधर उधर की बातें हैं।

□ देवों को सुनाना एवं देवों का सुनना दोनों ही कार्यकारी नहीं। असंयमी ही रहते हैं। देवों की स्थिति बाराती यों जैसे है खाया - पीया और खिसक लिये।

□□□

28-7-18 "स्वयं में शासित होना ही वीर शासन जयंती" प्रातः

आज शासन की जयन्ती है किन्तु शासन किसकी है, यह कहना बहुत कठीन होता है। शासन के लिए आप कहते है - वीर शासन जयन्ती, वीर भगवान ने तो कभी कहा ही नहीं कि मेरा कोई शासन होता है। शासन किसी के ऊपर होता है तो जो शासन करने वाला है उसको तो आनंद आता है परन्तु जिस पर शासन होता है, उसका क्या होता है? सही बताओ- छिपाओ नहीं? मेरे ऊपर शासन चला रहा है ऐसा कहने पर दुःख पीड़ा होती है।

किन्तु भगवान के शासन से पीड़ा अनन्त काल के लिए चली जाती है। वे शासन करना नहीं चाहते फिर भी हम कहते हैं- हे भगवन्! आपके शासन से ही हमारा दुःख दूर होगा। "उनका यही कहना है कि सब लोग स्वयं से शासित हो जाओ!" लोकतंत्र में किसी का शासन नहीं चलता है। यहाँ तो आप सुनने के लिए बैठे हैं- सभी अनुशासित हैं सुनने वाला भी अनुशासित है तब वह भीतर से कुछ बता देता है।

अनुशासन की बात यदि हमेशा हो जाये तो कहना ही क्या? सर्वांग सुन्दर इसी को बोलते हैं। पहले तो अनुशासन में रहते हैं किन्तु बाद में नहीं रहते हैं। भगवान ने अपने आप का मंथन किया है। अपने आप

का मंथन और दुनिया का मंथन दोनों में बहुत अंतर है।

कई लोग रवदान से अनेक प्रकार के रत्न निकालकर ले आते हैं- पर वीर शासन में ऐसा नहीं। "सब जग देख्यो छान" सुन रहे हो? (हाँ) छन्ना तो फट गये पर कुछ भी नहीं मिला। भगवान महावीर स्वामी ने कहा दूसरों का मंथन नहीं, दूसरों को छानो नहीं। अपने आप को छानो तो बात बनेगी। आप कहते हैं न - भैय्या अपना लोटा छानो। छानकर जिवाणी छोड़ो और पीलो।

आज ये नहीं हो रहा है। अपने छन्ना से अपना लोटा छानो तभी ये उपलब्ध होगा। उन्होंने आत्म मंथन किया। मंथन के उपरान्त नवनीत निकलता है। मंथन पानी का नहीं- दूध का नहीं दही का मंथन किया जाता है। दूध को अच्छे ढंग से जमाया तभी नवनीत प्राप्त होगा। जमाया नहीं तो क्या होगा? ये बात तो जमी नहीं।

देखा- फटा हुआ सा है। अब तो दूध भी गया और दही तो बना ही नहीं। क्या करें? छेना दे दो। छेना भी तब जब जमाना हो। यदि फट जायेगा तो छेना भी नहीं मिलेगा। इसलिए छेना हेतु अलग प्रकार से प्रक्रिया करनी होती है। इसके लिए (नवनीत) अनुशासन / आत्ममंथन परम आवश्यक होता है। नवनीत निकलते ही वह

ऊपर आ जाता है।

आप कहाँ से आये हैं? हम वहाँ के हैं। नवनीत से पूछो आप कहाँ से? हम दूध के देश के हैं, हम दूर के नहीं हम तो अपने पास से आये हैं। अपने आप में से आये हैं। नवनीत का वह गोला कितना भी दबाओ डूबता नहीं, मंथन के उपरान्त ही यह उपलब्धि होती है। मंथन करो - अनुशासन रखो तो यह होगा। एक हाथ ढीला - एक खेंचो / पूरा खेंच नहीं सकते, पूरा छोड़ नहीं सकते।

संसार का मंथन करोगे तो कुछ मिलने वाला नहीं है। अभी सारे के सारे नाच रहे थे। रोगी भी - वैद्य जी भी। ऐसा कौनसा आनंद आ रहा था। किसी से कहो तो नहीं नाचेगा और फिर कहो मत नाचो तो वह बेटा बोलता है - मैं तो नाचूंगा। भीतर से ऐसी स्फूर्ति आती है, उर्जा का अनुभव - अलौकिक आनंद आता है। एड़ी से चोटी तक रोमांचित हो जाता है। ऐसा दुनिया की कोई भी चीज नहीं कर सकती।

प्रभु ने ऐसा शासन चलाया, प्रत्येक व्यक्ति चाहता है उस शासन को। हम भी आप जैसे बन जायें। शासन के द्वारा यदि दबते ही जाये तो शोषण माना जायेगा। शासन द्वारा शोषण नहीं हो यही प्रभु का धर्म है। कल गणधर परमेष्ठी प्राप्त हुये थे, आज दिव्य ध्वनि खिरी। श्रावण बदी एकम् (प्रतिपदा) के

दिन यह परम्परा चालु हुयी।

उनके बताये अनुसार चलते है तो वीर शासन जयन्ती का महत्व है। इसको सबके सामने रख सकते है। यह क्षेत्र (खजुराहो) भारत से ही नहीं विश्व के कोने-कोने से लोग देखने के लिये आते है। पास में ही इसकी राजधानी छतरपुर है। विश्व के कोने-कोने से आने वाली जनता का प्रबन्ध आपको ही करना है। ऊपर से भी और गाडी से भी आयेंगे। ऊपर का अर्थ केवल विमान ही नहीं लेना। देव लोग भी ऊपर से ही आते हैं। उसी के अनुसार व्यवहार करना।

सभी के साथ सही शासन होगा-ऐसा मेरा विचार है। एक-एक दिन कम होता जा रहा है। उदिन का तो यह कार्यक्रम हो गया। कल आप लोगो की स्थापना होने वाली है, ऐसा हमने सुना है। हमें बुलायेंगे तो हम भी उसमें शामिल हो जायेंगे। आप तो विज्ञापन वाले हैं, पहले विश्व में विज्ञापन उसके बाद आयेंगे। चार महिने का यह कार्यक्रम अच्छा हो, हमारी साधना भी अच्छी हो, इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।"

Note- "आभिनिबोधिक - अभिमुख होने पर ही जो काम करे - जैसे माइक = मुंह के सामने होने पर ही ध्वनि आना।"

रविवार
29-7-18 "बड़े-बड़े आचार्यों की साधना स्थली है खजुराहो" प्रातः

आज अभी यह रविवार का पूर्वार्द्ध चल रहा है। जब हम यहाँ पर आये तो इस सभा-भवन को देखकर के ऐसा लगा, यहाँ पर वैसे ही लोग आते हैं और देखकर चले जाते हैं, इतना बड़ा सभा-भवन (पाण्डाल) बनाया गया है, ये तो खाली रह जायेगा, किन्तु पूर्वार्द्ध में ही खचाखच भर गया। अब प्रबंधक देख ले अभी ही ये पूरा हो गया तो -- लोग फिर कहेंगे कि प्रबंधकों की व्यवस्था ठीक नहीं है।

किन्तु मध्याह्न में इसी सभा-भवन में सभा व्यवस्थित बैठ जायेगी। यह अवसर आप लोगों का है, वैसे चतुर्दशी को भक्तियों के साथ हम लोगों की स्थापना हो चुकी है। ये तो आज रविवार के दिन जनता और लाभान्वित हो, इसलिये किया है। यह भी संकल्प ले रहे हैं कि हम यात्रियों/मेहमानों की व्यवस्था करेंगे। मूल तो यह है कि कई लोगों के निमित्त से बने जिन कलशों को यहाँ लाये हैं, उनमें ललीतपुर वाले - यहीं पर होगा चौमासा।

बंधा जी तो बांध ही लिये हैं, पपौरा जी वाले भी - यहीं रुकेंगे, सागर तो 101% यहीं पर हो रहा है। चूंकि जहाँ जंक्शन होता है, वहाँ सभी दिशाओं से रास्ता मिलते हैं, सभी प्रायः कर अपना अनुमान तो लगाते हैं, पर यह अनुमान कहनाई

से लग पाया।

आखिर खजुराहो में स्थापना हो गयी। अपनी-अपनी बात तो होती ही है। कलश बनाने वालों को भी पुरा श्रेय तो जाता ही है। बनवा लो - कहाँ होगा पता लग जायेगा। पुण्य पतला रह गया हो। फिर भी आनंद तो होता ही है। एक बात विशेष है - वो ये कि जहाँ भी होता है भारतवर्ष के लोग ही जुड़ते, यहाँ पुरे विश्व के सभी देशों के लोग आते हैं।

उन सब लोगों के लिए यह विशेष अवसर बन गया है। सफलता कहाँ तक मिलती है? देखो "हम तो यही समझते हैं जगह छोटी पड़ जाना ही सफलता है।" जितनी भी व्यवस्था करो कम ही पड़ेगी। भक्ति में थोड़ी-बहुत अव्यवस्था भी हो तो वह भी अच्छी ही लगती है (लगेगी) ज्यादा व्यवस्था करना भी ठीक नहीं होता। कुछ छुट-छाट होना मांगते हैं।

भक्त लोग तो भगवान से बंध जाते हैं। आज मध्याह्न का कार्यक्रम है। एक हफ्ता से लोग कहने लगे खूब पानी बरस रहा है। इतने पानी में कैसे - कहाँ बैठेंगे। दिल्ली वालों की शिकायत थी, बम्बई तो पानी में ही है, आगरा आदि में भी पानी। आज का मौसम न गर्मी - न ठंड है। अव्यवस्था से

बचने का मतलब जनता को किसी प्रकार की भी परेशानी न उठाना पड़े।

यह कार्य प्रभावना का कारण बने। और जो वर्षों से यहाँ रहकर क्षेत्र की सेवा कर रहे हैं। कितना पुण्य उन्होंने इकट्ठा किया होगा। अनुमान लगाना कठिन है। तीन जिलों के अन्तर्गत पन्ना - छतरपुर - सतना यह क्षेत्र है - राजनगर और बमीठा तो लगा हुआ ही है। पहले ही कहा था मीठा ही मीठा जहाँ है वह है - बमीठा। चरपरे का काम ही नहीं है। उस मीठे का भी सभी स्वाद लेंगे।

पूर्वजों ने जो मन्दिर, हजारों वर्ष पूर्व यहाँ खड़े हैं बड़े-बड़े यात्रा संघ यहाँ पर आये। उन संघों ने वन्दना, ध्यान आदि की। ऐसे पवित्र स्थान पर चातुर्मास की इस वर्ष स्थापना हुयी है। सब लोगों के कल्याण में यह निमित्त बने। इन्हीं शुभ भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

Note -

- पहले आवश्यकता आविष्कार की जननी होता था किन्तु आज आविष्कार आवश्यकता की जननी हो गया। यही दुर्भाग्य की बात है।
- यदि आपको संसार से भय (डर) नहीं लग रहा है तो समझ लेना आप जीव नहीं हैं। [आ० श्री]

30-7-18. "सोच हो-आसमान सी" प्रातः

महावीर प्रभु ने आप लोगों माने हम लोगों को उपदेश दिया। रास्ते पर लगाया। उन्मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पैल गया। हेय-उपादेय क्या है? ये बताया। हेय को छोड़ने एवं उपादेय को ग्रहण करने की विधी बतायी। सब कुछ बताया किन्तु समझ में नहीं आया। क्या समझ में नहीं आया? आपको आ गया हो तो बता देना। ये भूमिका मैं इसलिये बना रहा हूँ, क्यों कि महावीर को समझना इतना आसान नहीं है।

"लोग स्वयं को समझना नहीं चाहते और दूसरों को समझना चाहते हैं।" इसलिये /इस बिन्दु को ध्यान में रखकर ही उन्होंने यह कदम उठाया। उनको जो मुक्ति मिली वह एक रहस्यपूर्ण है। दीवाली को ठंड तो पड़ती ही है। राजस्थान में तो कुछ ज्यादा ही ठंड पड़ती है। वहाँ दीवाली को लाड़ू चढ़ाते हैं परन्तु कोट पहनकर के चढ़ाते हैं। हमने अपनी आँखो से देखा है। ये कौनसा सौला है?

एक-दो बिन्दु ऐसे होते हैं, जो किसी से कहना नहीं चाहिए। तो प्रत्युश बेला में वे चले गये। कहाँ? वहाँ चले गये जहाँ से अब कभी भी लौटकर नहीं आना। गौतम, सौधर्म इन्द्र आदि सभी लोगों ने देखा - खाली - खाली स्थान है। उ० वर्ष तक वह समोशरण खचाखच भरा था।

"उनको थोड़ा सा सोचना चाहिये था, ये हमारे दिमाग की उपज है।"

हम संकीर्ण बुद्धि वाले हैं। हमारे पास खुला आसमान नहीं। ढके हुये हैं हम। खुले में रहना नहीं चाहते। ढकना चाहते हैं। पहले देखते हैं कि चाबी है या नहीं? भले ही चाबी कोई काम की न हो। वह समय ऐसा था जब न दिन था, न रात थी, प्रत्युश बेला बोलते हैं। "इस प्रकार हम अमावस्या को लाड़ चढ़ाते हैं, जब कि भगवान को निर्वाण की प्राप्ति तो चौदस की पश्चिम रात्रि में हुई। आप लोगों ने रट रखा है।"

अमावस्या की रात में नहीं गये चौदस की ही रात मानी जायेगी। इस तरह आप अपने को बचाकर निर्वाण लाड़ चढ़ाते हैं। क्यों कि दीवाली को तो सोयेंगे। इस प्रकार कोई भी बच नहीं सकता। बात समझ में आ रही है? [हाँ] ये दिव्य-ध्वनि अथवा प्रवचन का विषय था ही नहीं। महाराज आज जब भी विहार करते हैं, कुछ तो संकेत दे दिया करो। कुछ भी संकेत देंगे तो पक्का है, रोना-धोना चालु हो जायेगा।

सारे के सारे प्रश्न हमारे ऊपर ही आयेंगे। इसलिये हम तो नीचे देखकर ही चलते हैं। उसमें भी आप लोगों का हॉल देख लिया। कब-क्या रुलावोगे पता नहीं? हम आपकी ओर नहीं देखते। कल किसी एक सज्जन ने नजर चुराने की बात कही

थी।

तो आप तो भारी भरकम सबको दिखते हैं किन्तु उन क्षुद्र जीवों को देखना जरूरी है। आप तो बचे हुये हो, उनका क्या होगा? यदि नहीं हैं तो उन तक ये बात पहुँचा देना जिन्होंने कल कहा था। आपको तो उन क्षुद्र जीवों को बचाना है नहीं (व्यंग्य)। भगवान महावीर ने यही कहा है कि नीचे की ओर देखकर चलना, इधर-उधर देखकर नहीं चलना जिससे सभी जीवों का रक्षण हो सके।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"विगन का भूत"

"शाकाहार और माँसाहार ये दो शब्द प्राचीन समय से चले आ रहे हैं। जिनका अर्थ सभी को स्पष्ट है। किन्तु विदेशी हवाओं से एक शब्द यहाँ पर आया है वह है-विगन। वे अपने आपको शाकाहारी से भी उच्च समझते हैं। ऐसी धारणा वाले अण्डे को शाकाहार एवं दूध-घी को माँसाहार बोलते हैं। उनका कहना है जैसे गाय-भैंस में रक्त है वैसे ही दूध है। जबकी यह पूर्णतः गलत है। विदेश में पशुओं का पालन गलत तरीके से होता है, इसमें दूध जैसे पवित्र आहार को मांस की उपमा देना निरी मूर्खता के अतिरिक्त क्या होगी। पूज्य आर्यिका ने विभिन्न उदाहरणों से बताया कि जैन पाक विज्ञान जैसा शुद्ध-सात्विक अन्य कोई पाक विज्ञान नहीं है।"

31-7-18 "आओ समझे जीवन की सच्चाई" प्रातः

एक बगीचे में फूलों के पौधों पर जहाँ चारो तरफ से भ्रमर मण्डरा रहे हैं। एक छोटी सी कलिका दूसरे फूल से कहती है- तुम तो खिले हुये हो, तुम्हारे मकरंद को पीने के लिए भंवरे चारों ओर परिक्रमा कर रहे हैं, तुम्हारी सुगन्धि चारो ओर फैल रही है, तुम्हारे तो आनन्द का कोई पार ही नहीं है। हम तुम्हारे पास ही हैं, लेकिन वह योग नहीं बन पा रहा है। हम कब खिलेंगे? कब मुझे वह आनन्द आयेगा?

ये संवाद फूल एवं कलिका के मध्य हो रहा है। तब खिले हुये फूल ने कहा- अभी तुम्हें बहुत तपस्या की आवश्यकता है। अभी आपने चातुर्मास किये ही कहाँ? 1-2 चातुर्मास तो करो, सब ज्ञात हो जायेगा। इस प्रकार कह ही रहा है कि इन दोनों से भिन्न एक तटस्थ फूल कहता है कि तुम दोनों को भी ज्ञात नहीं है। तुम अपने को कली मान रही हो और एक अपने आपको फूला हुआ (खिला) मान रहा है वह फूला नहीं समा रहा है।

ऐसा एक तीसरा जो अनुभवी था उसने कहा। तुम ऐसा कैसे कह रहे हो? आप भी खिले हो, आप में भी सुगन्धी फूट रही है, आपकी मकरंद की सुगन्ध से भ्रमर चारों ओर चक्कर काट रहे हैं, फिर आप भी आनन्द का अनुभव कर ही रहे होंगे?

वह कहता है, यही तो रहस्य की बात है।

नीचे को तो देखो, क्या है? एक खिला हुआ फूल नीचे गिरा हुआ था। मिट्टी में गिरा हुआ वह फूल पौधे के समीप ही था किन्तु अब उस पर कोई भी भँवरा नहीं मण्डरा रहा था। वह फूल इसी पौधे पर खिला था। आज जो खिला है, कल यूं ही नीचे गिर जायेगा। इस सच्चाई को सदैव ध्यान रखें।

चार दिन की जिंदगी है। इसे विषयों में न रमाकर अपने स्वरूप चिन्तन में लगायें। जो आत्मस्थ हो गये उन्हीं का स्मरण करता है। ऐसा लाभ तो केवल ज्ञानी जीव ही ले सकता है। सम्यग्दृष्टि जीव ही ऐसा करता है। मोक्षमार्ग में तो हमेशा- हमेशा ऐसी ही दृष्टि रखकर चलना है। भोग भूमि में तो चारों ओर भोग ही भोग है, देवगति में भी वे ही मिलेंगे किन्तु जो को सम्यग्दृष्टि देव अर्थात समझदार होते हैं वे नीचे उतरकर भक्ति करने आ जाते हैं। टोली की टोली ऐसी आकर खूब भक्ति करते हैं। यहाँ भी ऐसा ही है- आज की टोली अलग, कल की टोली अलग ही होती है। परिवर्तन होता रहता है। यहाँ से मरकर ले जा रहे हैं। उसे पाकर वे सुख का अनुभव करते हैं, साक्षात् प्रभु हमें भी प्राप्त हो जायें, इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

1-8-18 "कैसे दूर करें - मन की उचटन" प्रातः

आप लोगों के पास ज्ञान के लिए या इष्ट के बोध कराने के कारणभूत पाँच इन्द्रियाँ हैं और एक छठा साधन भी है जिसको मन बोलते हैं। मन को नोइन्द्रिय भी बोलते हैं। नो इन्द्रिय का मतलब है पाँच इन्द्रिय बाहर से देखने को उपलब्ध होती है पर मन अन्तरंग में रहता है। इसीलिए इसे अनंग भी कहा। इसका कोई निश्चित अंग नहीं है। इस प्रकार बाहरी पदार्थों से सम्बन्ध स्थापित करने हेतु छह साधन हो जाते हैं।

चुंकि हमने धारणा इस प्रकार की बना ली है कि इन साधनों के माध्यम से ही हमें सुख - शान्ति का अनुभव होगा। कालान्तर में भी इसी प्रकार करते चले जा रहे हैं, क्यों कि पूर्व के संस्कार आत्मा के ऊपर पड़ते जायेंगे। जब संस्कार घने हो जाते हैं तो स्वप्न में भी उन्हीं के विषय नजर आते हैं, और कुछ भी विचार में आता ही नहीं है। ऐसा क्यों होता है? क्यों कि मन उचट जाता है।

पांच इन्द्रियाँ उचटती नहीं। आप सुन रहे हैं? (हाँ) सुनते हुये भी, देखते हुये भी, भगवान के पास जाने पर भी मन उचट जाता है। एक पर लगाना चाहे तो नहीं लग सकता है। आँखे एक पर फिर भी पर मन एक अन्तर्मुहूर्त भी एक पर नहीं लग पाता। हीरे की कणिका बहुत छोटी होती है पर बड़े - बड़े पदार्थों को भी काटने की क्षमता

रखती है।

रखते हुये भी यदि उस पर घन का प्रहार किया जावे तो घन की आवाज तो हो जाती है पर उस कणिका को खरोंच तक नहीं आती, क्यों कि वह उचट जाती है। वह एक स्थान पर टिक नहीं सकती। ऐसे मन वाले आप आये हैं। फिर कह रहे हैं- सभी लोगों की यही मांग है -महाराज मन उचटे / उचके नहीं ऐसा कोई मार्ग बताओ। इसका अर्थ निकालें?

अर्थ बिल्कुल सरल है। "जिसको चाहते हैं वह लाभप्रद है या हानिप्रद इसे पहले देख लो।" आप उसे ही खरीदते हैं, जो आवश्यक है, लाभप्रद है, उसके बिना काम नहीं चलता आदि इसी प्रकार जहाँ मन लगा है उस पदार्थ से लाभ क्या है और हानि क्या है? यह विचार लें तो मन कभी उचट ही नहीं सकता। यह गाढ़ श्रद्धान होना जरूरी है, जिससे शास्त्रों में सम्यग्दर्शन कहते हैं। उचटना जो हो रहा है वह पूर्व संस्कारों से हो रहा है।

आस्था के माध्यम से चाहें तो उसे काबू में ला सकते हैं। मन में तो क्या स्वप्न में भी नहीं रखूंगा इन साधनों को। इनसे डर लगना चाहिए। ये मेरे लिए हानिकारक हैं -ऐसा समझें। जो वस्तु अच्छी लग रही है, वह हानिकारक है, पहले यह अवधारणा बनायें फिर कदम बढ़ायें। जब उनसे नजर हटा

लेंगे तो इच्छा हो ही नहीं सकती।

इच्छा बुद्धिपूर्वक होती है। पूर्व के संस्कार ही ऐसे हैं। अनंतकाल के यात्री हैं, अभी तक रुके नहीं अथवा रास्ता बदल नहीं पाये। उसे बदलने ही तो आये हैं महाराज! ऐसा आप कह सकते हैं। पर क्या करें उसमें बीच में आड़ा (अवरोध) आता है मन। मन को महा दगाबाज कहा है।" इसको महा दगाबाज मानो किन्तु ये ध्यान में रखना - जब इसे अण्डर में रख लेते हो तो इससे बढ़कर कोई साथी नहीं।

यदि ये मित्र बन गया फिर तो सब कुछ न्यौछावर (समर्पित) करने को तैयार है। इसलिये मोक्षमार्ग में सबसे पहले उसे ही नियन्त्रण में रखना है। तभी आगे कदम बढ़ा सकते हैं, नियन्त्रण में नहीं तो कदम बढ़ा ही नहीं सकते। साधनों से बचना कदाचित् सम्भव नहीं हो पर इन्द्रियों के विषयों से बचना तो सम्भव है ही। साधन सामने हो फिर भी राग उत्पन्न हो ये कोई नियम नहीं।

इतना श्रद्धान होगा तब आप मोक्षमार्ग में आगे की ओर बढ़ेंगे"। आप पंचेन्द्रिय के दास - गुलाम - नौकर नहीं बनिये।" "जैसा कहे - वैसा कर, इसी का नाम है नौकर"। आप नौकर हैं या नहीं? हमारे यहाँ तो पचासों नौकर हैं महाराज, हम तो...।" हम मन के नौकर न बनें, मन

को अपना नौकर (हेतु) बना लें।"

छोड़ो-छोड़ो कहने से हुआ नहीं क्यों कि आपने बड़ी मेहनत से जोड़ा है। अमीबोली लगाने के उपरान्त धीरे-धीरे खिसकती है। देना ही है तो....। इसमें रहस्य अलग है महाराज! भीतर से मन कहता है - बढ़ाओ नहीं। क्या? बोली। क्या बढ़ाओ? दुकान बढ़ाओ। खूब माल भरते जाओ। तो इस प्रकार की धारणा बनाना है। पाँच इन्द्रिय और मन को नियन्त्रण में करें - ये ही संयम है। संयम हेतु आस्था आवश्यक है। जिनसे लाभ हो उसे रखेंगे, बाकी को रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।

ये साधन हमारे साध्य में हेतु है, उसे भी एक सीमा तक ही रखेंगे। साधन की जब आवश्यकता नहीं तब वह गौण भी कर दिया जाता है। रात में सोने पर आँखे बंद हो जाती है अब चश्मे की कोई आवश्यकता नहीं। कभी देखा कोई चश्मा लगाकर सोया हो? (नहीं) इससे ऊपर उठने का प्रयास करें तभी संयम घटित हो सकता है। होता है। अब आप हीरे की कणिका को ध्यान में रखो। खरोंच तक नहीं आयी। मन को नियन्त्रण में रखना आवश्यक है, इसमें बड़े-बड़े योद्धा भी हार जाते हैं किन्तु जो योद्धा इसको जीत लेता है विजयलक्ष्मी उसे माला पहना देती है। इसलिये इसी को जीवन का विषय बनायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

2-8-18 "आओ सीखें-मन का संचालन" प्रातः

कल का अथवा परसों का जो विषय, उसका ही थोड़ा सा विस्तार करें। पांच इन्द्रियों का व्यापार रुक सकता है। कब? उनका आधार क्या है, ये देखो। आधार है मन। पांच इन्द्रियों के विषय हैं- स्पर्शन के 8, रसना के 5, गंध (घ्राणेन्द्रिय) के 2, चक्षु इन्द्रिय के 5 एवं कर्णेन्द्रिय के विषय। आप जो पढ़-सुन रहे हैं आदि-आदि।

कर्णेन्द्रिय के विषय शब्द अथवा ध्वनि के रूप में कानों तक आते हैं। शब्द अच्छे नहीं लगते, ध्वनि अच्छी लगती है। इसीलिए संगीत लाकर रख देते हो। कान शब्द सुनता तो है पर ध्वनि तो कानों को आकृष्ट कर लेती है। हमें ये समझ में नहीं आता। जब कि शब्द में बोध है- ध्वनि में बोध नहीं। संगीत मन का विषय है। उसमें जो रस आ रहा है, उसे अपना विषय बना लेता है।

इस तरह पांच इन्द्रिय के विषय तो हमने आपके सामने रखे। अब कीर्ति, सत्कार-पुरस्कार ये किसी इन्द्रिय के विषय नहीं हैं। आइये-आइये! ये विषय क्या कान के हैं? नहीं, ये मन के हैं, कान के नहीं। कौनसा रस है इसमें। कौनसा रस आता है उसमें। चखना चाहो तो कोई भी रस नहीं मिलेगा। केवल मान्यता जनक रहता है। हम अपनी मान्यता में वैसा

मान लेते हैं।

कुछ समय में जब मन विकृत हो/गड़बड़ हो तो वही जो अभी तक अच्छी लग रही थी, अब अच्छी नहीं लगती। भोजन करने बैठते हैं - अच्छा लगता है पर पेट भर गया तो, कोई डर [भय] लग गया तो अब रुचि समाप्त अच्छा नहीं लगता है। इन्द्रिय से भी भयानक है यह, इसे नो इन्द्रिय बोलते हैं। अन्तरंग में ऐसा भयानक रूप बन जाता है।

फिर दुनिया एक तरफ और वो (मन) एक तरफ हो जाता है। तूफान भी आ जाये वह भागना तो दूर हिलता तक नहीं। "मैं नहीं हटूंगा।" ये इरादा किसका है। पाँच इन्द्रियका तो है नहीं। मन कहता है - मैं किसी की बात नहीं सुनुंगा। मतलब कान सुनते नहीं, आंखे देखती नहीं, रसना चखती नहीं, स्पर्शन छुती नहीं, नाक सूंघती नहीं। वह इन्हीं पर हुकुमत चलाता रहता है।

किसी की बात नहीं सुनता। अब हम उसे आस्था के माध्यम से सुनाते हैं तो सुनने लग जाता है। उठकर खड़े हो जाओ खड़ा हो जाता है। शरीर को संकेत करो तो वह खड़ा नहीं होता और मन मान लेता है तो तुरन्त [एक क्षण में] खड़ा हो जाता है। इन सबको नियन्त्रण करने की क्षमता आस्था के

पास होती है।

आस्था को जाग्रत करने पर ये सारी की सारी सेना उसी अनुसार चलना प्रारम्भ कर देती है। फिर आप अपने ईशारे से संचालन कर सकते हो। "उपादान शक्ति नहीं है तो इशारा भी काम नहीं करता।" इस रहस्य को समझना अतिआवश्यक है। क्यों कि उस शक्ति के संचालन के लिए आपको कोई फावड़ा नहीं चलाना, न ही ताकत लगानी होती है।

घोड़े की लगाम की तरह है। घोड़ा ऐसा है जिसे प्रशिक्षण दिया हुआ रहता है। आपने उसे समझ लिया है या नहीं? शक्ति होते हुये भी उपयोग कितना करते हैं। आप स्वयं उपयोग नहीं करते तो कोई जबरदस्ती आपसे उपयोग नहीं करा सकता। जैसे- माँ समझाती है पी ले बेटा दूध पी ले। वह नहीं पीता तो माँ जबरदस्ती उसको पकड़ती है फिर गोद में लेटाती है। मुँह खोलकर चम्मच से डाल देती थी। फिर भी नहीं घुटकता तो नाक बंद करके गुटका देती है। सही है न? बिल्कुल।

मन से नहीं गुटका। अब बैठा देती है, थोड़ी देर में उल्टी हो जाती है। माँ सोचती है- क्या इरादा है? जब भूख लगेगी तब लेलेगा। अनुभव में आता है, शक्ति का दुरुपयोग हो गया।

अच्छे-अच्छे व्यक्तियों इसी प्रकार का इरादा है।

सही इरादा एवं हठ पूर्वक इरादा दोनों में अन्तर है। अच्छे व्यक्तियों से पूछताछ करके, सही दिशा में इरादा बनाया जावे तो पहाड़ को भी चढ़ जाते हैं। सही व्यक्ति से पूछताछ नहीं की तो इरादा गलत हो जाता है। हम लोगो का आज यही हाल हो रहा है। ऐसे में समझाना बहुत कठिन होता है।

घोड़े के मुख में लगाम होती है फिर स्थिरता लाने के लिए आँखे भी आई लगाम, देख नहीं सकता। उसके बाद भी हाथ में मारने हेतु नहीं जागरूक करने हेतु लगाम अलग से (चाबुक)। प्रशिक्षण दिया हो तो न माउथ लगाम, न आई लगाम तथा न ही और कोई लगाम की जरूरत होती है। मालिक के इशारे पर कार्य करता रहता है। जहाँ जाना चाहता है, वहीं ले जाता है।

मालिक को झपकी भी आ जाये तो भी इधर उधर नहीं ले जाता। ऐसा पुराण ग्रन्थो में लिखा है-पढ़ा है। आपको समझ में आ रही है न? [हाँ] मन बहुत होशियार है - कहाँ पर हाँ कहना और कहाँ नहीं तुरन्त जान लेता है। अतीत की घटनायें जब कर्मोदय के रूप में हमारे जीवन में आती है

तो हमें अपना स्वरूप दिखा देती है।

तो घोड़े के ऊपर बैठने वाला - बैठता नहीं उसे चलाने - भगाने वाला है वह। वह अपने दोनो पांव कहाँ रखा है। उसमें भी पैर फंसाता नहीं मतलब निमित्त में अपने को फंसाता नहीं। काम तो लेता है। इसी तरह बैठने की बात थी वह घोड़े पर बैठता नही - बैठने वाला गिर सकता है। वेग से भागने पर दोनो पैर निकाल भी सकता है। एक हाथ से लगाम घोड़े की गर्दन के बाल के पास से पकड़कर रखता है।

घोड़े को अण्डर में तभी जबकि वह नियन्त्रण में है। दोनों पैरों से दबाव बनाये रखता है, पीठ से ऊपर उठा रहता है। कभी देखा है या नहीं? देखा होगा तो समझ में आ जायेगा। पांच इन्द्रिय एवं मन पर नियन्त्रण बहुत कठीन है पर ध्यान रखना उन्हें नियन्त्रण में किये बिना एक इन्च तो क्या एक बाल भी आगे बढ़ नहीं सकते। हमारा आशीर्वाद भी काम नहीं करेगा। आपकी मंजुरी आवश्यक है।

मन मान ले तो भगवान बनने में देर नहीं लगेगी। अभी तो भगवान भी नहीं हैं। भगवान की बात करते हैं। फिर भी कम से कम बात कर रहे हो। पुरुषार्थ सही दिशा में सही समय पर हो इन्ही भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय। जै जै

3-8-18 "आओ सुधारें अपनी मान्यता" प्रति:

दुनिया में जो कोई भी अध्ययन हो रहे हैं, उस अध्ययन के माध्यम से अपने को मोक्षमार्ग संबंधी थोड़ा सा भी लाभ नहीं होता। जिसमें रात-दिन अध्ययन कर रहे हैं। इसलिये धार्मिक बातें हम लोगों को कष्टप्रद मालुम होती हैं। ये तो आपकी मान्यता है। मान्यता किस क्षेत्र में नहीं होती? उनसे पुछो तो उत्तर नहीं हैं। मान्यता तो मानने से होती है।

जिसके बारे में अनुभव नहीं है तो भी वह गलत नहीं होती। आज का विज्ञान इस बात को स्वीकार करने को तैयार भी है पर वह अपने ही क्षेत्र में स्वीकार करता है। यदि हर क्षेत्र में स्वीकार कर ले तो एक नई अनुभुति हो जाये। अनुभुति हर क्षेत्र में अपनी-अपनी होती है। जैसे- चाय के पत्ते लेते हैं। [चाय पत्ती] काले होते हैं। उनको उबलते हुये पानी में डाल दिया।

कुछ समय रखा। उसका जो भी सत्व अथवा अनुभाग था पानी में उतर कर आ गया। वो कैसा दिखता है। [लाल] नहीं इसीलिये तो पुछा वह काला रहता है। उसमें दूध डालने से लाल हो जाती है। ये मान्यता आप लोगों की है। मूल में ऐसा नहीं है। उसे देखने में भी अच्छा नहीं, पीने में भी अच्छा

नही उकाली से भी गया-बीता मानते है।

अब छान लिया। छानने के बाद चाय पत्ती को फेंक देते हैं। क्यों फेंक दिया? पैसे दिये थे। दोबारा काम में ले लो। मध्याह्न में भी नाश्ते के साथ दोपहर की चाय ले लेते। उसे फेंक क्यों रहे हो? महाराज एक बार काम में ले लेते हैं तो दोबारा काम में नहीं लेते। ये मान्यता है कि नहीं? बोलो। ये वस्तुस्थिति है। ये बात बच्चों को कह नहीं सकते। उन्हें धीरे-धीरे ही अनुभव में आयेगी।

जब तक अनुभव नहीं तब तक फालतु जैसी लगती हैं। ऐसे बच्चे समझदार नहीं हैं, मझदार में हैं। ये समझ में आयेगा तब पता चलेगा। अब उस चाय की पत्ती को फेंको मत दोबारा पानी में डालकर उबालो। आप पायेन्गे उसके स्वाद और इसके स्वाद कितना अन्तर है। उसी बच्चे से पुछ लो, क्योंकि अनुभव एक मिनिट में होता है। अनुभव के अभाव में आप जिन्दगीभर भी समझाते रहो तो भी समझ में नहीं आ पायेगा।

इसलिये मोक्षमार्ग में जो भी विज्ञान के पास है, गले नहीं उतरेगी। अब अनुभव में लेना प्रारम्भ कर दो। कर्म सिद्धान्त ऐसा सिद्धान्त है जो विज्ञान के पास है ही नहीं। कोई ऊपर की कृपा होगी ऐसा मानकर वो भी चलते है। "कर्म चाय के पत्ते की भांति है।" एक बार अनुभव कर लो अब दोबारा वही

कर्म नहीं आयेगा।

भीतर सत्ता में जब तक है तब तक अनुभव में नहीं आयेगा। यदि उदय में आ गया तो उसका स्वाद आयेगा। एक बार कर्म उदय में आ गया तो चाय पत्ते की भांति वह फेंकने योग्य हो गया किन्तु आप उसे फेंकते नहीं अपितु तीर्थंकर प्रकृति की भांति गांठ लगाकर बांधे रहते हैं। बांधे रहो वह काम में नहीं आयेगा। इस प्रकार ये ही पद्धति है।

कर्म जो बंधा है वह उदय में आता है। कर्मोदय में फिर से नूतन कर्म बंध राग-द्वेष करके हम बांध लेते हैं। इस राग-द्वेष को छोड़ दे तो जरूर तब्दीली आ सकती है। ये ही रहस्य है। किन्तु क्या करे? यह दुनियादारी के विकल्पों के साथ मान्यता (गलत) बनाता चला जाता है। न उसके सींग हैं न ही पूंछ है। क्यों कि यह उसके कोर्स में पाठ आया ही नहीं उसको सीखाया ही नहीं।

इसलिये कोर्स में पाठ नहीं आया क्यों कि हम उसको चखना चाह रहे हैं, सूंघना, देखना अथवा छूना चाह रहे हैं। अनेक प्रकार की बातें करके भी हमें मान्यता पर ही आना होता है। एक बहुत विषैला पदार्थ होता है - "साइनाइड" ऐसे भी प्रयोग किये गये - एक हाथ में पेंसिल है और एक

हाथ में साइनाइट की गोली।

इधर स्वाद आया कि नहीं?

वह पेंसिल से साइन नहीं कर पाया। ऐसे कई वैज्ञानिक मौत के घाट उतर गये। किसी दूसरे ने नहीं उतारा। आप ही बताओ वह बावला है कि नहीं? कर्म का अनुभव तो सब छोड़ दो। संवेदन कर्म का ही है, स्वाद लेने वाला आत्म तत्त्व है, ये रासायनिक प्रक्रिया है। मान्यता की पहले सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

साइनाइट के स्वाद का जब पचासों ने अनुभव कर लिया तो क्या वह मान्यता नहीं है? हम तो कसकर देखेंगे। देख लो - देख नहीं पाओगे। जिन्होंने अनुभव किया, उन्होंने विश्वास कर लिया कि इसमें मारक शक्ति है। जो संवेदन हो रहा है वह लेन-देन नहीं है। तो चाय पत्ती का उदाहरण याद रखेंगे। बाकी बात भूल जाते हैं पर उदाहरण याद रहता है। संतोषी माता की भांति चाय पत्ती तो याद रहेगी।

बच्चों को विश्वास करायें, मान्यता को मजबूत करें। वह (आत्मा) दिखने वाला है ही नहीं विश्वास के रूप में ही देख सकते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

आन्ती हाइकू -

नदी कभी भी, लौटती नहीं फिर,
तू क्यों लौटता?

5-8-18 "फास्टफूड ने दिलाया विश्वास पुनर्जन्म पर" प्रातः

एक लड़का और दो माँ है। अब किस माँ को वह लड़का मिले? बताओ। संसार के रहस्य को जो व्यक्ति नहीं जानता वह इससे वंचित ही हो जाता है। जो व्यक्ति इस रहस्य को जानता है वह वर्तमान में भी भोजन के स्थान पर भजन प्रारम्भ कर देता है। आप भोजन का भी आनंद एवं भजन का भी आनंद गौण रूप से जान रहे हैं। वही आप लोगों के सामने रखना चाहता हूँ।

2 माँ। लड़का है, लड़का कौनसी माँ के पास रहे अथवा कौनसी माँ उसे रखना चाहेगी? बोलो? जल्दी बोलो? अभी बोलियाँ हो रही थीं। उस लड़के की क्या बोली करवायें? अब सुनो! पहली वाली माँ है एक बाद वाली माँ है। वह लड़का एक बार- दो बार- तीन बार कहता है- माँ चलो! वहाँ जहाँ मैं रहता था, पढ़ता था, खाता था, खेलता था, जहाँ बहुत कुछ करता था।

मुझे याद आ गया है, मुझे माँ के पास तो जाना ही है। माँ ने पति [लड़के के पिताजी] से कहा। जिसको पूर्व जीवन पर आस्था है, वह ठीक ही कहता है। जिस नगर, जिस कॉलोनी, जिस घर के बारे में कहा, वहीं पर चले गये। उनको पहले से ही कह रखा था, आपका लड़का यहाँ पर आया था।

जैसे ही अवसान हुआ, तभी यहाँ पर उत्पन्न हुआ था।

जैसा उसने बताया नाम, गुरु (शिक्षक), कक्षा आदि सब वैसा ही निकला। घर में व्यापार भी करता था, शादी होने वाली थी, जहाँ बात-चीत चल रही थी वो भी बता दिया। अब कितना बोलें। आप लोगों का उस ओर देखना बन्द हो गया क्यों कि आप गाँव से नगर, नगर से भी ओर आगे चले गये हैं। यह बहुत चिन्तनीय विषय है।

अब विश्वविद्यालयों में भी इस ओर अनुसन्धान करना प्रारम्भ कर दिया है। आप सबकी आस्था तो है न? फिर वर्तमान में क्यों नहीं हो रहा है। इसका मूल कारण है- रहन-सहन, खान-पान। Fast-food के कारण ये स्थिति बन गयी है। आज बाजार में Fast-food के अलावा कुछ मिलता ही नहीं है। क्या खायेंगे? वही खायेंगे और उसी अनुसार सोचेंगे। इन सभी बातों से पुरानी माँ की आँखों में पानी आ गया।

लेकिन क्या करें? उस लड़के को छीन नहीं सकती, ये भी वर्तमान की माँ है। वह अपनी आलोचना कर रही है। वह लड़का सोचता है- वहाँ धर्म-कर्म से शून्य था। ये भी योग है कि मैं धर्म-कर्म वाले घर में आ गया हूँ। अब यहीं गाँव में रहूँगा। पुत्र-प्रेम है तो दोनों माँ भी

यहीं गाँव में रहें।

गांव का आनन्द लेओ। कौनसा आनन्द लेना चाहते हो? बोलो। दोनों आनंद आपके सामने है। पेट भी आपका अपना ही है। गाँव में शुद्ध मिलेगा, शहर में तो हवा भी अशुद्ध ही ग्रहण करोगे। अतः जितना आवश्यक है उतना ही काम करो। अपव्यय से पहले बचो। नीति-न्याय को समझो। फिर कहाँ जाना है? सोचो। आये कहाँ से हो? इसे भी जान लो।

महाराज हम आसाम से आये है। आसाम में कहाँ से आये? वहाँ गये क्यों थे? जवान गये थे अब बुड्ढे होकर आये हो। हमारे लाने भी आशीर्वाद दे दो। बहुत सारा आशीर्वाद दे दो। हमें मालुम है- आप आशीर्वाद का भी अपव्यय कर दोगे। इसीलिये अब हमने कटौती कर दी है। मध्याह्न का कह रहे थे- हमने सोचा देखा जायेगा। अभी कल वाली कटौती की तो पूर्ति कर दो, सो दे दिया है।

विज्ञान के पास कोई (कुछ) भी जानकारी नहीं है और हमारे शास्त्र जानकारी से भरे पड़े हैं। धर्म से ही कल्याण होगा। उसमें भी मुख्य तो अहिंसा धर्म है उसी से कल्याण होगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

6-8-18 "मोह क्षय से बढ़ता ज्ञान का क्षयोपशम" प्रातः समय तो बचा नहीं है। फिर भी थोड़ा सा सुनना चाहे तो...। सुनो! कल का जो विषय था- दो माँ एक लड़का है, निर्णय आपको करना है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि इस भव के बाद भी कुछ होता है एवं इस भव के पीछे भी कुछ था। इस विषय को ताजा करने के लिए एक लेख जो पढ़ा था, याद आ गया। महाराष्ट्र प्रान्त का एक लड़का पढ़ रहा था। वह तीन विषय में कमजोर था- गणित, English और हिन्दी। मराठी में वह अच्छा बोलता था और लिखता भी था पर इन विषयों में कमजोरी थी।

परन्तु एक दिन वह सोकर के जब उठा तो हिन्दी में अच्छा लेख लिख दिया, गणित भी पूर्ण कर ली, अंग्रेजी में भी पीछे नहीं रहा तथा अब वह संस्कृत में बोलने लगा। सुन रहे हो। [हाँ] आत्मा के वैभव का कोई ठिकाना नहीं है। मोह के कारण उसका क्षयोपशम बढ़ ही नहीं पाता। यदि क्षयोपशम ठीक तो सब ठीक हो जायेगा। मात्र अन्तर्मुहूर्त में अवधिज्ञान ही नहीं मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानी भी हो सकता है। होते हैं।

आज आप विश्वविद्यालय में जाकर बैठे रहो, वहीं की वहीं रहोगे। ज्ञान का क्षयोपशम पढ़ने-पढ़ाने से नहीं, मोह के क्षयोपशम अथवा तत् सम्बन्धी जो कर्म है उसे रोकने पर (क्षय होने पर) ही होगा। एक इसी तरह का दूसरा लड़का था, जो हरियाणा के पास का था।

वह हमेशा वैज्ञानिकों से ही बात करता था।

सामान्य लोगों के साथ बात ही नहीं करता था। 10वीं का वह लड़का कहता था मुझे तो कलाम साहब जैसे वैज्ञानिक से ही बात करना है। अब बोलो? कोई भी वैज्ञानिक आ जाये - 100 वर्ष बाद ऐसा करेगो। इस तरह की वह बातें करता है। महाराज हमें भी आशीर्वाद दे दो - मैं भी वैज्ञानिक बन जाऊँ। जब तुमने केवलज्ञानी बनने की योग्यता है तो फिर वैज्ञानिक की क्या बात करते हो।

वैज्ञानिक तो केवलज्ञानी के यहाँ पानी भरते हैं। क्या केवलज्ञानी पानी पीते हैं? नहीं वे तो प्यासे को पानी पीलाते हैं। मोह के कारण ऐसा होता है। तेल - लूण - लकड़ी में फंसे होने से मोह होता है। यह "मोह जीव को कमजोर बनाता है।" "मोह को कमजोर बनाओ - बलजोर नहीं।" तुम हमारे सामने डटकर बोल नहीं सकते। अभी तो वह हिम्मतवाला है। आप कहाँ छीपे है, पता नहीं।

वह आत्म तत्व बहुत ही बलवान है। एक ही रात में चार-चार भाषाओं का धनी बना दिया। यह सब तभी संभव है जब मोह का क्षय होगा। समय तो आपका पहले ही पूर्ण हो गया था फिर भी हमने देने में पूर्ण उदारता से दिया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

7-8-18 "सोचो पर सीधा, उलटा नहीं" प्रातः

यहाँ बहुत समझाया गया, उद्बोधित करने का प्रयास किया गया किन्तु बात समझ में नहीं आयी, बल्कि अपने आग्रह को ज्यों का त्यों बनाते रहे और विपरित कार्य करते गये। एक दिन जीवन समाप्त होने को है, और समाप्त हो गया। अब वह दूसरे भव में/दूसरी गति में चला गया। वहाँ पर जब जन्म लेता है तो उसे अपनी पूर्व जाति का स्मरण होता है, जिसको आगम में जाति-स्मरण बोलते हैं।

इस जाति स्मरण से वह अच्छे को भी बुरा, अपने हितु को भी वैरी आदि मानकर वहाँ पर उसके ऊपर प्रहार करता है। बड़ा वैचित्र्य है। जिसको पूर्व का स्मरण हो आया फिर भी अच्छाई नहीं दिखती किन्तु अच्छाई को भी बुराई के रूप में याद करता है और भिड़ जाता है। यह कार्यक्रम उसका सागरोपम काल तक चलता रहता है। जाति-स्मरण के बारे में मैंने कई बार विचार किया। वह शरीरगत जाति ही स्मरण में लाता है, आत्मा के रूप में जाति स्मरण को काम में नहीं लाता।

इसीलिये वह विपरित ही सोचता है। अब एक उदाहरण जो कल नहीं परसो दिया था- माँ के बारे में ही स्मरण किया। वह बहुत क्रुद्ध (गुस्सा) हो गया। अच्छा ये है- मैं दूध नहीं पीता था तो मेरे दोनों हाथ पकड़कर - चांटा भी मारती थी, बांध भी

देती थी, मैं रोता था इसको एक बूंद आंसु भी नहीं आते थे। अब वह उसके साथ भिड़ जाता है।

तुमने मेरी आँख फोड़ने का प्रयास किया था, मैं तेरी आँख ही निकाल लुंगा। काजल के बहाने, तुम ज्योति बढ़ जाये इसलिये ऐसा करती थी अब नेत्र (आँख) ही नहीं रहेगी तो क्या बढ़ेगी। इसको क्या कहें? बोलो। नरक में असंख्यात नारकी ऐसा ही कर रहे हैं। वहाँ से यदि आये हो तो रास्ता बंद तो कर दो। यहाँ से वहाँ जाने पर भी यही बात है। आत्मा को एक बार स्मरण तो कर लो।

उसको शरीर ही मात्र दिख रहा है इसीलिये शरीर धारण करने वाले से वैर कर रहा है। मित्रता करता भी है तो स्वार्थ के वशीभूत होकर करता है। भीतरी गुणों का स्मरण नहीं कर रहा। यहाँ तो कर ही सकता है पर नहीं कर रहा। गुरुओं की-जिनवाणी की कृपा है जो शरीर नहीं आत्मा के गुणों के बारे में हमें बार-बार स्मरण दिलाते हैं।

वे चले गये फिर भी जो आत्मा दिखती नहीं, उन्हें याद करने से उस आत्मा का स्मरण हो आता है। बिना कहे-सुने उस बुद्धा को देखने मात्र से आत्मा का स्मरण हो जाना। ये मेरे साथ रहे किन्तु मैंने कुछ नहीं किया, इस प्रकार वह तुलना कर रहा है। क्या यह जाति-

स्मरण नहीं है?

अड़ोस-पड़ोस को देखकर भी इस तरह के भाव जागृत होते हैं। कितना मोह करना है- कितना इकट्ठा करना। उसे देखो उसने मोह का त्याग कर दिया। दान क्या है? "मोह का त्याग करना ही दान है।" आप उस मोह के त्याग को बुरा क्यों मानते हो? जो हेय था उसी का त्याग किया - उपादेय का तो अपने-आप ग्रहण हो जायेगा। "हेय-उपादेय का त्याग और ग्रहण करना भेद विज्ञान है, भेदविज्ञान का नाम ही सम्यक्-दर्शन है।" इसीलिये दान-पूजा-सेवा इत्यादि को सम्यक्त्व वर्धनी क्रियायें कहा है।

धार्मिक अनुष्ठान में सहयोग करने हेतु प्रेरित करते हैं। स्वभाव हेतु प्रेरित करते हैं। ये प्रेरणा गुरुओं और जिनवाणी से होती है। हमें देखकर स्मरण होना चाहिए/प्रेरणा लेनी चाहिए। इस समय नहीं करोगे तो वहाँ सागरोपम काल तक पश्चाताप करना पड़ेगा। वहाँ पर यदि जाते हैं तो सम्यक्दर्शन की भूमिका हो सकती है परन्तु म्लेच्छ खण्ड में तो उस सम्यक्दर्शन की भूमिका भी नहीं बतायी।

"एक तरफ नारकी को स०द० दूसरी ओर मनुष्य जो म्लेच्छ है उसे स०द० नहीं।" इस दृष्टि से मैं नारकी से भी कई गुना मानता हूँ जहाँ स०द० की भूमिका भी नहीं है। किन्तु चक्रवर्ती दिग्विजय यात्रा

करता है, उस समय म्लेच्छ से यहाँ कुछ लोग आते हैं वे अपना कल्याण कर लेते हैं। कर सकते हैं। देखो! कैसी पात्रता आ गयी?

चक्रवर्ती उस पात्रता को दिलाने में निमित्त बना। वो भी 1-2 नहीं 32000 म्लेच्छ कन्यायें लाया है। क्या व्यक्तित्व है उसका? क्या उदारता रहती है? अष्टान्हिका में धार्मिक-अनुष्ठान करता है, उसमें सब लोग शामिल हो जाते हैं। जो म्लेच्छ से आये वे व्रतों को अंगीकार कर आर्यिका-मुनि भी बन जाते हैं।

ऐसे धर्मात्मा हैं आप। आप लोग बहुत दूर से आये हैं। इस दूरी की मैं बात नहीं कर रहा। कौनसी गति से आये हैं- दूरी तो वह है। जहाँ कहीं भी जाना है, अपने को स्मरण करके ही जाओ। इससे भी अच्छा वातावरण मिले एक-आध भव में ही वह सौभाग्य प्राप्त हो जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

गुरुवाणी → "ज्ञान का क्षयोपशम"

जिनवाणी के विनय-बहुमान से ज्ञान का क्षयोपशम बहुत बढ़ता है। आज इस विनय में कमी आती जा रही थी। आर्यिका ने कहा पहले षट्खण्डागम अथवा किसी भी ग्रन्थ की वाचना होती थी तो एक प्रति से पढ़ते थे शेष दोनों हाथ जोड़कर ध्यान से श्रवण करते थे। अब मुद्रण के कारण हर हाथ में ग्रन्थ तो आ गया पर ज्ञान नहीं आया।

8-8-18 "मछली की तरह हल्के बनो" प्रातः

आप लोग कभी-कभी पराजित जब हो जाते हैं उस समय कोई ऐसा एक वेग जो बलवती शक्ति, जो आपको पराजित कर देती है। जब वह शक्ति थोड़ी सी कमजोर हो जाती है तो फिर उस शक्ति के रहने पर भी पुरुषार्थ कर जाते हैं। यह क्रम हमेशा-हमेशा बना रहता है। चातुर्मास के समय वर्षा हो रही थी। हम बड़े बाबा के यहाँ जा रहे थे। पानी ऊपर से झरने की तरह अभी भी आ रहा था।

अद्भुत दृश्य था वह। जो झरने का पानी नीचे आया वहाँ नीचे जो मछलियाँ थी उन पर दृष्टिपात गयी। वह जलचर प्राणी है, पानी में रहना अथवा बहना है। वह मछली उस झरने के माध्यम से ऊपर चढ़ना प्रारम्भ कर देती है। आप सुन रहे हैं? [हाँ] महाराज! हम कमजोर हैं, हमारे पास साधन-सामग्री नहीं हैं, हम पैर कैसे ऊपर उठायें। उसे देखो जिसके पास पैर नहीं फिर भी वह सरपट जा रही है।

जो सामग्री मिली पहले उसका उपयोग तो करो। पैसा इकट्ठा करने मात्र से कुछ नहीं होगा। हम तो बहुत कमजोर हैं। कुछ तो चलते ही नहीं। ये रोना मत रोओ। पहले जो है उसे खर्च करो- संग्रह मत करो। उसे ऊपर पहुँचा दो। जैसे मछली पानी के द्वारा/सहारे अपने नीचे की यात्रा को ऊपर की ओर बढ़ा सकती है फिर आपके लिए तो ज्यादा ऊपर तो है ही नहीं। एक समय में

सिद्धालय पहुँच सकते हो।

आत्म पुरुषार्थ करो। अपने को हल्का कर लो तभी ऊपर चढ़ सकते हो। भारी तो चल भी नहीं सकता चढ़ना तो दूर है। दो प्रकार के भार होते हैं। एक शारीरिक भार होता है एवं दूसरा पेट। ज्यादा पेट बढ़ाओगे तो घर की चौखट से भी बाहर जाना मुश्किल है। इसलिए उस पेट को कम करने के लिए थोड़ा सा और लगा दो।

वह दृश्य आज भी प्रेरणा देता है। अड़ोस-पड़ोस को देखेंगे तो आप कमजोर नहीं हैं। त्याग-तपस्या के माध्यम से ही यह मिलने वाला है। जो प्राप्त हुआ है उसका वितरण करोगे तभी आगे बढ़ सकते हैं। मौका मिलते ही इसका उपयोग कर सकते हो। जिन्होंने उपयोग किया वे पतित से पावन बन गये।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"स्वास्थ्य-सूत्र गुरुमुख से"

"अनशन से जुर जात है।"

उपवास द्वारा कैसा भी ज्वर हो ठीक होता है। आ० क्षी ने कहा जुर (ज्वर) चुर जात है मतलब उड़ जाता है। हाथी भी 3 दिन के अनशन से मद रहित हो जाता है। पित्त स्नान से जाता है। और घी से वात का प्रकोप दूर होता है।

9-8-18 "तत्त्वार्थ-सूत्र रूपी रसायन शास्त्र" प्रातः

आज का यह युग रसायन का युग है। भिन्न-भिन्न पदार्थों के मिश्रण से भिन्न-भिन्न पर्यायें (अवस्थायें) उद्घाटित होती है। जिसके माध्यम से युग को प्रभावित करने का अवसर प्राप्त होता है। इसके द्वारा या तो मोह की ओर जाता है अथवा निर्मोह की ओर जायेगा। ये दो रास्ते है। संसार में इसी तरह के रसायन का निर्माण हो रहा है। उससे विपरित बातें हम लोगों के दिमाग में आती ही नहीं। वैज्ञानिक लोग सम्मोहन विधी द्वारा जैसा चाहते है, वैसा वातावरण बना देते हैं।

आप यदि इसे समझे तो परतंत्रता, पराभिमुख के दुःख से मुक्ति मिल जायेगी। क्या है ये रासायनिक प्रक्रिया? तो सुनो! जैसे चूना और हल्दी है। आपके सामने एक अनुपात से दोनों को लिया और एक मिश्रण बना लिया गया, उसे खोला तो देखा कि अब न ही चूना है और न ही हल्दी है। अब यदि हल्दी को अलग एवं चूना को अलग करना चाहे, उँगलियों से बीनना चाहे तो--? नहीं कर सकोगे।

अब चूना नहीं रहा, जो सफेद झक था, न ही हल्दी रही जो पीली थी। दोनों के मिश्रण से एक तीसरी अवस्था उत्पन्न हो गयी जो लाल है। फलाने लाल या फलाने चन्द है। ये रसायन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया को आप साइंस के छात्र को

भी समझा सकते है।

उसे यह बताया जा सकता है कि जीव और अजीव दोनो मिलकर एक तीसरी अवस्था प्राप्त है, इसी का नाम रसायन प्रक्रिया है। जीव को अजीव से पृथक बनाने की प्रक्रिया तत्त्वार्थ सूत्र के दस अध्यायों में बहुत ही सरल तरीके से बतायी गयी है। "एक बार जो इस रसायन शास्त्र को समझ लेगा, हमेशा-हमेशा के लिये उसको रसो की प्राप्ति हो जायेगी।"

अब जब जीव और अजीव दोनों मिल गये तो एक तीसरी ही अशुद्ध अवस्था प्राप्त हो गयी। जीव और पुद्गल नाचे यामें.....। जीव चूने की भांति है एवं अजीव हल्दी की तरह। दोनों की अपनी-अपनी क्षमता है। जीव राग-द्वेष करने वाला है और अजीव राग-द्वेष पैदा करने की क्षमता / परीणमन कराने की क्षमता रखता है। राग-द्वेष होना पहले अनिवार्य है। उस राग-द्वेष से ही वह चूना-हल्दी लाल रंग को प्राप्त होती है।

इस राग-द्वेष के बिना तीन काल में कोई प्रक्रिया नहीं जो जीव-अजीव को एक कर सके। इसे अलग करने का मात्र एक ही साधन है वह है- वीतरागता। उस वीतरागता की प्रक्रिया को अपना लोगे तभी यह चक्र रुकना संभव है,

अन्यथा असम्भव है।

आप आश्चर्य चकित होते होंगे कि यह प्रक्रिया फैल कैसे हो गयी? तो पहले ये बता दो आप वीतरागी हैं या रागी? रागी है तो गड़बड़ है। यह राग-आग दहे सदा....। हम शरीर रूपी नहीं हैं, आत्मा रूप हैं। दया करने से यह कार्य नहीं होगा, अपने पर दया करो। अपनी शक्ति - पौरुष- वीर्य का प्रयोग करें, आगे बढ़ें। आपको उन्नति की ओर ही जाना है।

कायर की भाँति यदि रोने लग जाओगे तो तीन काल में अलग होना संभव नहीं। अपने पौरुष को जगाते जाओ अथवा जिन्होंने जगाया उन्हें देखते जाइये। आप यहाँ देहली छोड़कर क्यों आये हो? काहे को आये? बोलो? दुनिया आती है। भारत ही नहीं भारत के बाहर से भी आ रहे हैं। वे लोग भागते - भागते आते हैं अपने-अपने वाहनों से। जब यहाँ देखते हैं तो उन्हें लगता है। पूरी दुनिया देखी पर खजुराहो में तो---अलग ही है।

(विदेशी) वो स्वयं कहते हैं कि अन्यत्र आनंद नहीं है। देखने मात्र से उन्हें भीतरी आनंद मिलता है। इसलिये इस रासायनिक प्रक्रिया को समझने का अवश्य ही प्रयास करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"कारण-कार्य को नहीं मानने वाला / नहीं समझने वाला आगम बाह्य है। वह स्व एवं पर दोनों का अहित कर रहा है।"

10-8-18 "पहचानिये आत्म-हीरे को" प्रातः

आप लोगों ने पढ़ा होगा, सुना भी होगा किन्तु पढ़ा तो ऐसे ही ऊपर-ऊपर से पढ़े होंगे अथवा वैसे ही सुना होगा। सुनने के लिये बैठे हैं तो सुनायेंगे ही, पूर्ण होने पर उठ जायेंगे। ऐसी मानसिकता ठीक नहीं। जो सुनते हैं उस पर गौर करें। चिन्तन करें। शास्त्र में आखिर ऐसा क्यों कहा? "बिन जानन के दोष-गुणन को कैसे तजिये गहिये"। गुण क्या हैं? दोष क्या है? ये ज्ञान नहीं तो वह कभी हित में नहीं लगा सकता।

जिसको गुणों की जानकारी है तो वह दोष से बच जाता है तथा जिसको दोष की जानकारी है तो भी वह उनसे बच सकता है। आँखों से दोष-गुण देखना आता है? दोषों का विमोचन/त्याग करने का पुरुषार्थ प्रथम जरूरी है। लोग सोचते हैं- महाराज हमें पहले गुण दिखा दो अन्यथा यदि गुण भी नहीं दोष भी चले जायेंगे तो हम क्या करेंगे। ये तो आपकी युक्ति है- बहाना बाजी है। आप इसमें निपुण-निष्णात हैं। यह निपुणता आपको बुमाने (संसार-परिभ्रमण) में काम आती है।

राजा का दरबार लगा था दूर-दूर से बहुमूल्य वस्तुओं का किमत इस प्रकार से आंकते कि राजा को देना ही पड़ता था। हम भले ही करोड़ कहें-राजा नहीं मानते पर वे अपने दरबार में ऐसे गुणवान लोगों को पास रखते हैं। जिससे उन्हें बहुमूल्य वस्तु की

जानकारी हो जाती थी।

बाहर से जो आते हैं, वे बढ़ा-चढ़ाकर मूल्य ले लेते इसलिए राजा के पास ऐसे भी लोग रहते थे। उस दरबार में हीरे-माणक-मोती की लड़ियाँ लाकर रख दी। बताओ क्या मूल्य है? सभी देखते रह गये। मूल्य बताओगे तो पुरस्कृत भी होगे एवं रत्न भी मिलेंगे। सामने वाला कहता है आप भी कुछ बोलिये? प्रारम्भ तो कर दो। हीरा कभी भी अपना मोल नहीं बोलता। एक लाख के बाद पुनः एक लाख आ जाता क्यों कि मोल होता ही नहीं।

हम खा-पीकर बैठे हैं, इसलिये चालु हो जाते हैं। हीरा खाया-पीया तो जाता नहीं। सामने वाले ने कहा- ये तो मिट्टी है। इस तरफ वाले ने कहा- मिट्टी में तो उत्पन्न होता ही है- खान से निकलते है। पन्ना वालो से पूछ लो- सतना वालो से भी पूछ लेना पन्ना के पास ही है। हजारो गाड़ी निकलती है तब कोई एक-आध निकल पाता है। भाग्य हो तो ज्यादा भी निकल सकता है।

सामने वाले ने कहा- आपने मिट्टी क्यों कहा? मिट्टी तो है ही, आप मिट्टी में बीज डालो वह उग जाता है। मिट्टी को सिद्ध करना कठीन है। (व्यंग्य) हम हीरा-मोती कह रहे हैं। सामने वाला मिट्टी कह रहा है। ऐसी कौनसी युक्ति है, जिससे मिट्टी सिद्ध कर दे। अब उन सबको एक थाली में बिखराकर रख दिया।

10-20 सेकिंड (सेकंड) भी नहीं हुये सभी इली पर मक्खी बैठ गयी। एक-दो पे नहीं बैठी।

ये बताओ सब पे मक्खी मात्र एक-दो पे नहीं ऐसा क्यों? हीरे को यदि कोई खाना चाहे तो... हाँ मृत्यु को बुलाना चाहे तो खा सकता है। जिस पर मक्खी बैठी उसे खा सकते हो, जिस पर नहीं बैठी उसे नहीं खा सकते हो। हीरे का गुणधर्म अलग होता किन्तु यहाँ मिट्टी की इली को शान पर चढ़ाकर हीरा बना दिया।

आप लोग पंचेन्द्रिय विषयों की ओर मक्खी की भांति भागते हो। आत्मा कभी खोई जाती है ही नहीं। स्व क्या? पर क्या? ये ज्ञान है ही नहीं। आत्मा एक मौलिक वस्तु है। आप आत्मा की परख नहीं कर सकते पर पंचेन्द्रिय विषय क्या है ये सबको मालुम है। उनका सेवन करने से कुछ समय तक संतुष्टि जैसी हो जाती है, वस्तुतः इसमें सार नहीं है।

बताओ कितने व्यक्तियों को ज्ञात है? प्रतिदिन सुनते हो। अनंतकाल बीत गया। आत्मा दिखती तो है नहीं, जो दिखता है वही सारभूत लगते हैं। अब इस धारणा को मिटाकर सही सोचना प्रारम्भ कर दो। ये शरीर पुनः पुनः क्यों मिलता है, इस पर सोचने लग जाओगे तो आत्मा की ओर आ सकते हो। आत्मा अविनाशी - अजर-अमर

है, पंचेन्द्रिय विषय क्षणभंगुर है।

सामने - सामने देखते हैं कि रवाना हो जाते हैं। किसी की उम्र ज्यादा किसी की आयु कम किन्तु जाना सबको है। मरना है तो मरजा किन्तु जीते जी कुछ कर जा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

11-8-18 "आओ देखें आत्मा रूपी लाइट में" प्रात:

आप लोगो ने तो हमारा पुरा समय ले लिया। फिर भी, सुनो! हम कम समय में बताना चाहेंगे। आपको बहुत जल्दी समझ में आ जायेगा। बहुत समय लेते हैं तो फिर सोचना पड़ता है। हाँ या ना में उत्तर अच्छा लगता है। आप किसी की पहचान करते हो, किस आधार पर करते हो? सही पहचान होनी चाहिए। आत्मा के आधार पर, आत्मा तो कभी दिखती नहीं। अच्छा ये फलाने चन्द जी है अथवा फलाने लाल जी है, इसके लिए नाम रख रखा है। नाम कोई वस्तु नहीं वह तो काम चलाने के लिए रख देते हैं।

जन्म लेने के उपरान्त एक नामकरण संस्कार होता है, सबने मिलकर एक नाम रख दिया। मृत्यु के बाद भी तो फर्म का नाम चलता रहता है। अब बोलो वो तो चले गये फिर भी उन्ही के नाम से फर्म चल रही है। नाती-पोते देखे भी नहीं फिर भी चल रहा है। चलाते है तो चलता है। ऐसा भी देखा एक ही व्यक्ति 7-8 स्थान या अधिक स्थान पर फर्म नाम से चल रही है। आप सभी धर्म सभा

में बैठे हैं।

धर्म की बात सुनना है तो बताओ गाड़ी चल रही है, सामने से भी गाड़ी आ गयी। आपने Bewar लगा दी। Bewar लगाते ही नम्बर प्लेट पर जो लाइट है वह जलती है। कैसी होती है? [लाल] लाइट कभी लाल होती ही नहीं। लाइट तो लाइट होती है उसका कोई कलर नहीं होता, हाँ! लाल काँच लगा दिया जाता है। लाइट का कलर नहीं, प्रकाश होता है।

बताना ये चाहते है कि जो घटना है वह ठीक नहीं हो रही। आप मात्र शरीर की घटना को लेकर सोचते रहते हैं, भीतर तो बिल्कुल शुभ्र प्रकाश है। यह शरीर लाइट नहीं है, इसके भीतर लाइट है। लाइट है तभी तक गतिविधियाँ होती रहती है। लाइट गयी तो कुछ नहीं राम-नाम सत्य है। इस प्रकार दिन में कुछ समय के लिए तो उस भीतरी लाइट के बारे में सोचेंगे/सोचना चाहिए।

दिन भर इस शरीर के बारे में ही सोचते रहते है, यह गलत है। इतना ही पर्याप्त है। भीतरी लाइट को याद रखीयो भूलियो नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"आज के लोगो का फोटो तो बहुत सुन्दर है, किन्तु भीतरी X-Ray बिल्कुल खराब।"

[मुनि श्री प्रमाणसागर जी महाराज]

रविवार
12-8-18 "सम्बन्ध टूटा तो जीवन टूटा" प्रातः

आज वैसे रविवार है। आप लोग सुबह से ही जगह का संरक्षण करके बैठ गये हैं। अध्याय में तो देना ही है फिर भी देख लेते हैं। वैसे ही हमारे पास बहुत कम समय है। एक व्यक्ति सरोवर तट पर बैठकर सोचता है। क्या? संसार के बारे में और मुक्ति के बारे में। मुक्ति तो देखने लायक कोई चीज है नहीं। संसार सामने ही है। सामने सरोवर जल से लबालब भरा हुआ है। जल में कमल की भौंडें तैर रही है। उनमें कुछ खिली हुयी है।

प्रति दिन कमल खिलते हैं। किन्तु एक दिन देखा, 1-2 दिन हो गये पर ये भौंडे (कलियाँ) कमल रूप में खिली ही नहीं। अपितु ये तो मुरझन की ओर चली जा रही है। तालाब तो जल से भरा है, अन्य कमल खिल भी रहे हैं, पर इसमें क्या राज है? देखने पर ज्ञात हुआ इन लोगो का जो तालाब से सम्बन्ध है वह भीतर से टूट गया था। यहाँ जल से भिन्न कमल की बात नहीं।

जल में कमल है पर होने मात्र से काम नहीं होगा। सम्बन्ध होना चाहिए। सम्बन्ध टूटने से वह सुखाव की ओर आ गया। यह सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण है। जिसको लेकर हमें चिंतन करना है। यदि हम देव-गुरु-शास्त्र से यद्वा-तद्वा करते

है, तो सम्बन्ध बना नहीं रह सकता है।

देव-गुरु-शास्त्र से संबंध होना जरूरी है। अन्यथा भीतरी कमल भी मुरझाना प्रारम्भ हो जाता है। हमारी यह जो दुकान छोटी-मोटी जैसी भी दिख रही है, इसका उसी से संबंध बना हुआ है। यदि यह सम्बन्ध टूट गया तो उसी समय से जीवन मुरझा जायेगा - टूट जायेगा। मोक्षमार्ग में जो भी तत्त्वज्ञान आदि है सब उन्हीं का है। संबंध रहेगा तभी सुरक्षित रहेगा नहीं तो यहीं की यहीं छूटने वाला है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण "विरुद्ध राज्यातिक्रम"

"वैय्यावृत्ति चल रही थी। ग्वालियर कलेक्टर राहुल जैन बैठे थे - ब्र. विनोद भिण्ड भी थे। वर्तमान शासन-प्रशासन की बात को लेकर आ० श्री ने कहा हमारे आचार्यों ने जो सूत्र दिये हैं वे इतने व्यापक है कि कोई भी उनका पालन करें तो व्यक्ति - समाज - राष्ट्र ही नहीं सम्पूर्ण विश्व सुखी हो सकता है।

तत्त्वार्थ सूत्र का एक सूत्र है कि कोई भी व्यक्ति राजकीय नियमों का उल्लंघन नहीं कर सकता। शासन-प्रशासन से लेकर छोटा-बड़ा सभी व्यक्ति यदि राष्ट्र के प्रति गौरव रखें, राष्ट्र हित में कार्य करें, उसकी नियमावली का पालन करें तो सुख-शान्ति का आनन्द ले सकता है / अनुभव कर सकता है।"

13-8-18 "पंक में रहकर भी बनो पंकज" प्रातः

कल आप लोगों को प्रातः बेला में एक बात कही थी। वह यह है कि जब तक जल में कमल रहता है वह अपनी क्षमता (मात्रा) अनुसार जल लेता रहता है किन्तु ज्यों ही उसका सम्बन्ध जल से टूट जाता है वह सूख जाता है। यह कमल के उदाहरण से आपके परिणामों की बात हमने कही थी। जब तक देवगुरुशास्त्र से संबंध है तब तक सब ठीक है उनसे सम्बन्ध छुटा/टूटा तो आपके कर्मों की निर्जरा भी रुक गयी एवं सातिशय बंध भी नहीं होगा।

इस अटूट श्रद्धान के साथ आपको देवगुरुशास्त्र की आराधना करते रहना है। आज भी उसी कमल के उदाहरण के साथ सुनाना चाहते हैं यदि आप लोग सुनना चाहो तो। महाराज वही-वही कमल? वही-वही कमल नहीं, कमल का अटूट श्रद्धान कैसा होता है यह देखो/उससे सीखो। प्रतिदिन वह व्यक्ति सरोवर पर जाता था। वहाँ कमलों को देखता था।

आज रातभर पानी गिरता (वर्षा) रहा अब प्रातः कैसे घुमने जायेंगे। सुबह उठा - देखा सूर्य तो अपने तेज के साथ आ रहा है। वह देखता है लगभग 8-10 फीट पानी आया। अलग रंग को लेकर आया,

लेकिन यह कैसा वैचित्र्य है?

मैं सोच रहा कमलों की क्या दशा हुई होगी। परन्तु वो इतनी ऊपर कैसे आ गये। शायद टूटकर आ गये होंगे। टूटकर नहीं पानी के साथ आये हैं। जैसे-जैसे पानी बढ़ा वे भी ऊपर तथा पानी के घटने पर वे भी नीचे चले जाते हैं। सुन रहे हो? बताओ कल वाले और आज वाले उदाहरण में कितना अन्तर है?

इस ढंग से इसका सम्बन्ध पानी के साथ रहता है। 8-10 फीट पानी आ गया पर पानी तो पानी में ही रहेगा और ये (कमल) पानी के ऊपर ही रहेंगे। ऐसे ही मेंढक की दशा होती है। ये सब विचित्रकारी घटनायें हैं। यानि कमल की भांति हम अपने जीवन को बनायें "कहीं भी रहें देव गुरु शास्त्र से अपना संबंध बना लें। ओफ्फो हमेशा-हमेशा सब प्रबन्धन होता चला जायेगा।"

चाहे आप रत्नत्रय के साथ जाओ अथवा देशसंयम अकेले सम्यग्दर्शन के साथ जाओ, तीर्थंकर प्रकृति के साथ जाये सबकी अलग-अलग व्यवस्था हो जाती है। आप भी कहीं भी जाते हैं तो पहले व्यवस्था बना लेते हो। आने-जाने का रिजर्वेशन पहले से ही हो जाता

है। अटूट श्रद्धा होती है तब व्यवस्था होती है।

भगवत् बनने की क्षमता मेरे में है यह सदैव याद रखें उसे हमेशा-हमेशा बढ़ाते रहना चाहिए। रोओ नहीं - अब कैसे टाले इस प्रसंग को? वह पानी में रहता है फिर भी जल से असंपृक्त रहता है, इसीलिए वह सड़ता, गलता नहीं। कीचड़ गंदा होता है पर कमल --। पंकरुह कहते हैं - कीचड़ में रहकर भी कीचड़दार नहीं होता है। पंक में रहता है फिर भी पंकज कहलाता है।

नीर में रहकर भी नीरमय नहीं होता। अपना अलग अस्तित्व रखता है। तभी तो भ्रमर उसके चारों ओर आकर मंडराते हैं। ऐसा ही रत्नत्रयधारी होता है। चारों ओर से व्यवस्थायें अपने आप होती चली जाती है। जल में भिन्न कमल की भांति यह भक्त स्वर्गों में भी जाता है तो वहाँ के वैभव को देखकर प्रभावित नहीं होता। यही सोचता है ये सब आराधना का फल है। जब तक मैं मुक्त न होऊँ अपनी इस आराधना को अटूट बनाकर रखूं। इसे अपना सौभाग्य समझे। एक भाग्य होता है, एक अहो भाग्य होता है पर ये सौभाग्य है मतलब सौ-सौ भाग्य है। कौनसा चाहते हो, बोलो? अपनी-अपनी कूवत के अनुसार जो चाहिए ले लो। इस हजारे उदाहरण को याद रखीयो। दो दिन का है, लेकिन एक नहीं है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

15-8-18 "कब सोना और कब उठना?" प्रातः

आज तो पुरा ही समय ले लिया। हम बहुत संक्षेप में किन्तु दो दिन का जो विषय था उसी का उपसंहार करना चाहते हैं। कमल की बात कल भी एवं परसों भी चली, आज भी उसी कमल से आप सभी को पाठ मिलेगा। समझदारी के साथ में सुनिये बहा ही आनन्द आयेगा। सूर्य प्रकाश की ओर आने वाला है मतलब वह प्रभात बेला में हैं। आप तो उस समय सोये रहते हैं किन्तु कमल उस सूर्य के आने की प्रतिक्षा में हाथ जोड़कर स्वागत हेतु खड़ा रहता है।

जहाँ कहीं नहीं तालाब (सरोवर) में सूर्य की उदयावली के साथ अपनी खुशबु बिखेर देते हैं। उस खुशबु से प्रातःकाल / भोर में सभी जनता विभोर होकर उठती है। केसर की सुवास से जाग्रत हो वह भगवान का नाम लेती है। फिर वह कमल दिनभर उस सूर्य नारायण के साथ ही रहते हैं, मतलब जाग्रत रहते हैं, सोते नहीं आप लोग दिन में भी सो जाते हैं।

कितनी भी प्रखर किरण क्यों न हो। कमल कभी सूर्य नारायण का साथ नहीं छोड़ता। प्रतिक्षण उसके स्वागत में तैयार रहता है। प्रातःकाल उगते ही फिर जैसे-जैसे सूर्य का प्रवास होता चला

जाता है।

अन्तिम मंगलाचरण भी वह हाथ जोड़कर करता है। जैसे ही सूर्यनारायण ढल जाते हैं। वह भी अब 12 घण्टे के लिए खिलता नहीं - खुलता नहीं। आप - रात भर चरते ही रहते हो। कमल रात में भोजन नहीं करता। ऐसी भक्ति / ऐसा समर्पण हमारा होना चाहिए। कमल तो फिर भी रात में सो जाये पर आप सोते हुये भी भगवान का दर्शन करते रहे, यह हमारी भावना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण

"बाहरी चमक से दूर"

आचार्य श्री चर्या पक्ष को लेकर प्रतिपल सतर्क रहते हैं। खजुराहो में विराजमान थे। 17 जुलाई को डॉ० सं० स्वर्णिम वर्ष का समापन दिवस था। भक्तों की भावना थी एक भारत के नक्शे का सिंहासन नया स्वर्ण पालिश से सजा रखा गया। गुरुवर जैसे ही भक्ति में आये उस सिंहासन पर नहीं बैठे, पुराने वाले सिंहासन पर बैठे। दूसरी घटना 2 मुनिराजों का दिक्षा दिवस था। सभी कमरे सजाये गये। आ० श्री का कक्ष भी सजाया गया। प्रातः काल उठते ही बोले ये क्या है? एक महाराज ने उपस्थित ब्रह्मचारी जी को धीरे से कहा इन्हें हटा दो। आ० श्री ने उस ब्र० को मना कर दिया। हम महाराज लोग ही पिच्छी लगाकर दूर किये। आ० श्री की मुस्कराहट चहरे पर थिरकी।

स्वतंत्रता दिवस
15-8-18 "उद्यम करो - उद्यम नहीं" प्रातः

आप लोग थोड़े से संकेत में ही कितनी जल्दी और कितने लोग मंच पर आ जाते हैं। अब जाने में थोड़े-थोड़े जा रहे हैं। मंच पर जो आये वो अनुशासन वाले बताते हैं। सही है न? अब सुनो। एक व्यक्ति जो कि प्यासा था, वह कुयें की ओर जा रहा था। हाथ में एक घड़ा ले रखा था और रस्सी भी ले रखी थी। अब रस्सी घड़े पर बांधकर धीरे-धीरे छोड़ता है। धीरे-धीरे घड़ा पानी तक पहुँच गया।

इसके उपरान्त उस गहरे कुयें में थोड़ी सी रस्सी और ढील छोड़ दी ताकि घड़ा भर जाये। घड़ा जब जल से भर गया तो...। अब मेहनत तो करना ही है। रस्सी जो गिर्री के ऊपर से डाल रखी थी। दोनों हाथों से रस्सी को धीरे-धीरे ऊपर खैंचता है। वह घड़ा कुछ ही दूर लगभग 2-3 हाथ ही था रुक गया। अब छोड़ भी नहीं सकता। सुन रहे हो? (हाँ)

आज (वर्तमान) की हालत भी ऐसी ही हो गयी है। पहले तो पढ़ाई को सरल मानते हैं। विद्यालयों-महाविद्यालयों में पहुँच जाते हैं। अब कठनाई आने लगती है। इससे धीरे-धीरे वह साहस खोता जाता है। किन्तु अब क्या करें। धैर्य के अभाव में तो गड़बड़ ही होगा। तो वह रस्सी गिर्री के यहाँ आकर उलझ गयी,

क्यों? मुकभाटी में देख लेना।

चुंकि गांठ थी, इसलिए वह गिर्री में फंस गयी। कैसे करेंगे? खेंच भी नहीं सकते उठा भी नहीं सकते। परन्तु धीरे-धीरे युक्ति से वह अपने दांतो के माध्यम से गांठ खोल देता है। गांठ खोलकर घड़े को ऊपर ले लिया। रस्सी के बीच गांठ पड़ना ठीक नहीं माना जाता। पहले तो ध्यान दिया नहीं, इस कारण वह गांठ बाधा उत्पन्न कर देती है।

आप लोग आज क्या मनाने आये हो? [स्वतंत्रता दिवस] मतलब उद्यम करने को स्वतंत्र हो गये। उद्यम नहीं उद्यम करने को स्वतंत्र माना जाता है। आप समझते हो उद्यम एवं उद्यम में क्या अन्तर है? हओ तो कह दो। [हओ] हमारे कहने से? अन्तर बताना है आपको। आजादी के 70 साल से भी अधिक हो गये। क्या कहें? दादा कहें या लाला कहें? स्वतंत्रता का अर्थ हम उद्यम लेते हैं।

सही दिशा में पुरुषार्थ करने पर ही यह हासिल होता है। रस्सी में गांठ तो इस तरह सुलझाना पड़ेगा। दूसरा कोई नहीं आयेगा। युक्ति पूर्वक साहस/धैर्य पूर्वक स्वयं को ही करना होगा। जो मेहनत से प्राप्त हुआ उसका आपको ही ध्यान रखना होगा। हमने भी जीवन में गांठ लगायी इसीलिए निर्ग्रन्थ नहीं हो पाये। ग्रन्थि कर्मों की पड़ी हुयी है। बंधन से मुक्त

होने हेतु सही पुरुषार्थ करना है।

"जिस लगन से उद्यम करते हो, उसी लगन से उद्यम करोगे तो जीवन सार्थक हो जायेगा।" हमें लड़ना है तो कमियों से लड़ना होगा। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं लेना चाहिये। अपना ही करना स्वच्छंदता कहलाती है। अपने-अपने को छोड़ना पड़ेगा - सपने को छोड़ना पड़ेगा। बंधन को स्वीकारना होगा। उसे अलग करने हेतु उद्यम करना होगा, हाथ के साथ कार्य करना होगा।

मन-वचन-काय की चेष्टा को संयत करना पड़ेगा। थोड़ा भी हिलेंगे तो गड़बड़ हो जायेगा। फोटोग्राफी वालों से पूछना, वे पूरा हिल जायेंगे किन्तु कैमरे में कभी भी स्पंदन नहीं होता। उसमें स्पंदन हो जाये तो गड़बड़ हो जायेगी। मेहनत खराब हो जायेगी। आपको जो रास्ता मिला है, उसमें इधर-उधर नहीं जा सकते। गति भले ही कम हो जाये अथवा बढ़ा भी सकते हैं।

यह सावधानी बरकरार रखनी होगी। ज्यादा तो हम नहीं कहना चाहते। स्वतंत्रता के दिन परतन्त्रता की ओर नहीं जाना चाहते। आप कहाँ जा रहे हो? यह ध्यान रखना होगा। हमारा उदाहरण याद रखना। जैसे उसने सावधानी से गांठ खोली, वैसे आप भी जीवन में जो ग्रन्थियाँ पड़ी हैं, उन्हें धीरे-धीरे खोलते जायें। अहिंसा परमो धर्म की जय।

16-8-18 "बाधक नहीं- साधक बनो" प्रात:

दीपक जल रहा है तो क्या- क्या काम हो रहा है? इसके बारें में सोचें। एक तो यह है कि दीपक जल रहा है- ये कहना कहाँ तक उचित है? तेल जल रहा है और दीपक जल रहा है कह रहे हैं। दीपक में जो तेल जल रहा है, उसी के फलस्वरूप प्रकाश चारों ओर मिल रहा है। अब उस दीपक की लौ को देखो, वह युं-युं हो रही है मतलब उसमें स्पंदन है, वह डांवाडोल है।

हवा के कारण वह कभी इधर तो कभी उधर हो रही है। ऐसा ही हमारा मन भी आयु कर्म के साथ चल रहा है। उसमें स्पंदन हो रहा है। आयु कर्म के निषेक प्रतिक्षण उस तेल की भाँति जल रहे है (निकल रहे हैं)। जो कोई भी प्रकाश प्राप्त हो रहा है, वह इसी आयु कर्म के कारण दिख रहा है। इसकी सीमा कहाँ तक है तो जबतक आयु कर्म का तेल रहता है। हमारा यह जीवन एक प्रकार से कर्मों के आधीन होने के कारण ही इसदशा को प्राप्त है।

हमारे संतो ने इसका उपाय बताया। एक दीपक है वह भी जल रहा है बिना बाती और बिना तेल। उसकी बाती युं-युं मतलब स्पंदन भी नहीं करती। उसको रत्नदीपक कहा जाता है। वह रत्नदीपक कभी भी हवा से स्पंदित (डांवाडोल) नहीं होता। आप सुन रहे

न ? [हाँ]

एक बात और कहूँ इस दीपक के लिए तो कहावत प्रचलित है - "दीया तले अंधेरा" किन्तु रत्नदीपक में ऐसा नहीं होता। उसमें दीया तले अंधेरा नहीं रहता। हमारा उपयोग तेल के दीपक जैसा है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वह उपयोग रत्नदीपक की भाँति हो जाये। जीवन सार्थक हो जायेगा। हमारी छाया से भी कई लोगों को पीड़ा हो सकती है, इसीलिये भगवान छाया रहित होते हैं। जब छाया ही नहीं तो बाधा का भी सवाल नहीं। हम सभी अभी बाधक हैं, इसीलिए साधक को संभालकर चलना चाहिए।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"ये कैसी आजादी?"

- आप स्वतंत्रता की बात करते हैं किन्तु स्वतंत्रता से बात नहीं करते।
- स्वतंत्रता दिवस मतलब एक दिन के लिए स्वतंत्रता मना लो। हथकरघा दिवस, हिन्दी दिवस इन सबका आप समर्थन कर सकते हो, मैं कभी भी समर्थन नहीं कर सकता। ये सब एक दिन के नहीं।
- भाषा जो देश की रीढ़ होती है। उस अपेक्षा आज भी भारत गुलाम बना हुआ है। इसे मुक्त कराना अति आवश्यक है।

[आ० श्री जी]

18-8-18 "आओ बचें कषाय रूपी तापमान से" प्रातः

तापमान दो प्रकार के होते हैं। महाराज हमने तो एक ही प्रकार का सुना था फिर दो प्रकार के कैसे? वो ही तो समझना है। गर्मी से तो सब लोग परिचित हो जाते हैं, पर दूसरे ताप के बारे में इन लोगों को जानकारी नहीं उसको भी समझना है। दो प्रकार के तापमान ऐसे है- दो प्रकार की सेक इत्यादि कर सकते हैं। एक गरम जल से सब जानते हैं किन्तु बर्फ से भी सेक होता है। तुलना करने पर ज्ञात हुआ कि गर्म की अपेक्षा ठण्डी सेक तेज होती है।

ठण्डी सेक के लिए अलग प्रकार की शक्ति चाहिये। बर्फ की सेक हर कोई सहन नहीं कर सकता। गर्म को तो कोई भी सहन कर जाता है। इसलिये गरमा-गरमी तो फिर भी ठीक है। ठण्डे होना ठीक नहीं माना जाता है। गुस्सा उतार दो तो पारा नीचे आ जाता है। पर ठण्डा सेक कहाँ तक प्रभावित है अनुमान नहीं लगा सकते। आचार्यों ने नरकों में दो भेद किये। तापमान की अपेक्षा ऊपर के नरकों में तो उष्णता होती है पर नीचे के नरकों में शीत प्रारम्भ हो जाती है।

सप्तम नरक में तो इतनी शीत सहन करना कठीन हो जाता है। उदाहरण ये दिया जाता है। लौह पिण्ड जो सुमेरु बराबर है गरम नरकों में गया पिघलना प्रारम्भ कर देता है- पानी हो गया। धीरे-धीरे

नीचे के नरकों में वह पानी पुनः गोला बन गया।

आप लोगों को सोचना है। गुस्सा वाला तो ऊपर के नरकों में रह जायेगा। राग के घनत्व वाला तो नीचे के नरकों का फाटक खोलेगा" ये उदाहरण इसलिए दिया कि क्रोध एवं मान गरम तापमान की भांति है एवं लोभ और माया बर्फ के समान है। माया का अर्थ तो कहते हैं न उनकी माया वो ही जाने। लोभ तो पाप का बाप ही क्या दद्दा है।

जीवन भर चार कषायों के अतिरिक्त कुछ घटित होता ही नहीं। सुबह से शाम तक यही लीला है। आत्म के अहित विषय-कषाय कहा गया है। कषाय पर तो नियन्त्रण सीधा कर सकते है। दर्शन मोहनीय गुप्त रूप से काम करती रहती है। उसे भी पकड़ना चाहे तो पकड़ सकते हैं, जो आपके श्रद्धान को बिगाड़ने वाली है।

इस सेक से बचने हेतु आपको पुरुषार्थ करना है, तभी बच सकते हो। हमारे पास 4-5 दिन का प्रोग्राम लाये थे, उसमें व्यस्त रहा। सोचा था आज कुछ -- किन्तु वह भीड़ पूर्ववत बनी हुयी है। दूर-दूर से संबंध तो बना ही है। आ जाते हैं। इतना ही पर्याप्त है। दो प्रकार के तापमान को याद रखना और जहाँ-जहाँ से आये हैं उनतक भी पहुँचा देना ताकि उनकी भी सिकाई हो जायेगी।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

19-8-18 "थोड़े से भी पूरा हो सकता है काम" प्रातः

अभी तक हमारी धारणा में थी कि जब विशेष भीड़ आये तो रविवार समझना किन्तु अब तो रविवार का स्मरण ही नहीं रहता। क्योंकि सोमवार हो या मंगलवार हो या फिर अन्य कोई वार हो, वे बार-बार आ भी रहे हैं पर आज कौन वार है, ये समझ में नहीं आ रहा।

आज रविवार है तो हम यही कहेंगे कि रविवार तो मध्याह्न का वार होता है सुबह में नहीं। बाकी आप लोग तैयारी से तो आ ही गये हैं। अभी से क्यों आ गये? हम भी समोशरण को ढूंढ रहे हैं, कहीं मिल जाये। समोशरण से मतलब नहीं बस उसमें थोड़ी सी जगह मिल जाये। हम तो यही चाह रहे हैं, आप भी यही चाह रहे हैं, अच्छी बात है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

कोशिश करो

व्याख्यान -

आ० श्री रात्रि में जिस तख्त पर शयन करते हैं संध्या भक्ति के बाद से प्रातः भक्ति के पूर्व तक उसी पर रहते हैं। आ० श्री का कहना है भोजन-पानी की मात्रा को शरीर एवं मौसमानुसार सैटिंग करके इस प्रकार किया जा सकता है क्यों कि रात्रि में संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवों के भी वध की संभावना है तो फिर क्षुद्र जीवों का क्या? "अमो" इस चर्या वाले को बहुत अच्छा मानता हूँ।

20-8-18 "विभाव से भी प्राप्त होता स्वभाव" प्रातः

आत्मा जब तक नहीं जागती तब तक इन सब चोरों का बाजार चलता रहता है, क्योंकि वो सब समझते है कि समझने वाला (जानने वाला) अभी सोया है। तो हमारा ही राज्य है। आप लोगों ने उन चोरों के हाथ राज सौंपा है अथवा सोचा अब हमें हमता नहीं अतः उन्हीं के हाथ में दे दो। हमारा भी निर्वाह और उनका भी निर्वाह हो जायेगा। किन्तु जब इस बहानेबाजी को छोड़ आत्मराजा खड़ा हो जाता है तो फिर तलवार की कोई आवश्यकता नहीं।

बस थोड़ी सी युँ निगाह उठा दी तो एक भी व्यक्ति इधर आने वाला नहीं है। आज तक यह सोने का सिलसिला टूटा नहीं। यह परम्परा अनादि से चली आ रही है और आगे भी चलती रहेगी जब तक सावधानी के साथ यह नहीं सोचेंगे कि मेरा क्या है? पराया क्या है? तब तक तो "जीव और पुद्गल नाचे यामें-कर्म अनादी है"। कर्म पर थोपकर किनारे मत होओ।

जीव नाच रहा है-कर्म उसे नचा रहा है। जीव का स्वयं नाचने का भी स्वभाव है तथा दूसरे का नृत्य देखना भी स्वभाव है। यदि सिंहासन पर बैठकर-देखना बंद कर दें तो नाचने वाले का मुंह भी उतर जाता है। वह प्रतिपल

यह भाव आता है कि मेरा नृत्य देखा जा रहा है या नहीं।
मैं अच्छा या बुरा
कैसा भी नाचूं पर सामने वाला देख रहा है यह महत्त्वपूर्ण है। जीव और पुद्गल नाचे.... यह समझदारी नहीं। जो समझदार है वह तो ऊँघ रहा है। इस नृत्य को करने से पूर्व एक बार सोच तो लेते। एक उदाहरण देता हूं। पानी का स्वभाव शीतल है। वह आग्नि को भी बुझाने की क्षमता अपने पास रखता है। मात्र इतना ही पाठ लेकर चलो वह अच्छा (ठीक) नहीं। ये उदाहरण भी इसीलिये दिया जा रहा है।
घर में आग लग गयी। चूल्हे पर एक हण्डा पानी जो गरम हो चुका है रखा है। वह व्यक्ति सोचता है कैसे करें? पानी तो गरम है और गरम पानी से आग बुझती नहीं, ठण्डे से बुझती है ये रट रखा है। "पानी से आग्नि बुझती है ये श्रद्धान कर ले।" अनंत काल से वह कर्म नचा रहा है किन्तु यदि स्वभाव पर दृष्टिपात करेंगे तो अनादिकाल का कर्म सब बुझ जायेगा।
इधर-उधर मत देख।
पानी गर्म होने पर भी आग को बुझाने के स्वभाव से वंचित नहीं है। इसी प्रकार कर्मों की बेड़ी-हथकड़ी सब कट सकती है, यदि आप स्वभाव की ओर दृष्टिपात करो तो। भक्तामर तो सब पढ़ते ही हैं-

उस पर श्रद्धान तो करलो।

आपकी भी हथकड़ी (बेड़ी) अलग हो जायेगी। ज्यादा पुरुषार्थ करने की जरूरत ही नहीं। मात्र एक बार आँखे खोलने की आवश्यकता है। "यदि आप विभाव परिणाम के साथ भी भक्ति करते हैं तो भी भगवान बनने का सुअवसर आपको प्राप्त हो सकता है।"

कोई भी रुकने वाला नहीं है। जीव और पुद्गल कोई नहीं और कर्म तो रुकेगा ही नहीं आपको उन कर्मों से भागना ही उचित है। "भागने की भी कोई आवश्यकता नहीं बस स्वयं को जगाने की आवश्यकता है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

इर्यापथ "पाठशाला प्रबन्धन"

आ० श्री पाठशाला प्रबन्ध नामक पुस्तक पढ़ रहे थे। उन्होंने कहा ये सभी के लिये पठनीय है। आज की शिक्षा प्रणाली में यदि सुधार लाना चाहते हो तो इसमें लिखित बिन्दुओं को अपनाना जरूरी है। प्राचीन भारत का जो इतिहास था उसी पर आधारित यह पुस्तक है। आ० श्री ने उसमें लिखित सहशिक्षा का पुरजोर विरोध किया। जिसके परिणाम आजपुरे समाज को भुगतना पड़ रहा है। सहशिक्षा कहीं सभी योग्य नहीं। अतः शिक्षा के हर पक्ष को पुनः इतिहास की ओर लौटना होगा।

21-8-18 "कैसे खुलें गाँठ समय पर" प्रातः

किसी स्थान पर कोई कार्यक्रम होना था। उसके आदि मतलब प्रारम्भ में ध्वजारोहण होने जा रहा था। सब लोग उस ध्वजारोहण स्थल पर उपस्थित हो गये क्यों कि यह कार्य मुहूर्त से होना था। पण्डित जी ने भी सभी को अपने-अपने स्थान पर व्यवस्थित रूप से खड़ा कर दिया। जिस पात्र के हाथों ध्वजारोहण होना है, उसके हाथ में रस्सी पकड़वा दी और कह दिया कि जैसे ही मैं कहूँ आपको रस्सी खेंचना है।

ये कार्य बिल्कुल मुहूर्त सेवरना है। मंत्र उच्चारण आदि-आदि सब कार्य हो गया, अब जिस समय पण्डित जी ने ध्वजा खेंचने के लिए हाँ कहा, उस समय खेंचा। किन्तु ये क्या? उन्हें सोचना चाहिए। खेंचते ही गांठ पड़ गयी। अब गांठ पड़ने पर कितना भी खेंचो वह ध्वजारोहण नहीं होगा। क्या करें? वहाँ तक कैसे पहुँचा जाये? उस उलझन को सुलझाना जरूरी है।

योग से पाइप मजबूत था। एक व्यक्ति चढ़ा और 8-10 मिनिट में जो उलझन थी वह सुलझ गयी किन्तु मुहूर्त तो चूक गया। अब खेंचा तो वह पुष्पवृष्टि हो गयी। समय पर हम सोच लेते इसमें बाधा भी आ सकती है, तो उस ध्वजा में

जो रस्सी बंधी थी / गांठ लगायी गयी थी वह उल्टी लगी थी।

गांठ ऐसी होनी चाहिए जो खेंचते ही खुल जाये। "इसलिये आप लोगों ने जो भी अर्जित किया है, समय पर दान नहीं किया तो गांठ उलझ जायेगी।" क्यों ठीक कह रहा हूँ न? हुआ। अब देखो- सम्यग्दृष्टि जो भी अर्जन करता है / बांधता है वह साता का ही बंध करता है - पुण्यानुबंधी पुण्य को बांधता है। इसलिये उसकी गांठ समय पर खुल जाती है।

जो मुर्छा भाव के साथ अर्जित करता है, गांठ पर गांठ लगाता जाता है वह समय पर कभी भी खोल नहीं सकता। क्यों कि उसके पास पापानुबन्धी पुण्य है। जो समय पर कभी भी काम नहीं आयेगा। इसलिये ऐसे पुण्य का बंध मत करो जो विषय - निदान के साथ हो। जब तक है पुण्य का काम लो - छोड़ने का अवसर आये तो तुरन्त छोड़ दो।

अपने नाम से नहीं फिर तो दूसरे के नाम से कर दो। आप लोगों की हालत यह है कि बूढ़े होने के उपरान्त भी गांठ खुल नहीं रही है। इसलिए दद्दा जल्दी कर लो नहीं तो गड़बड़ हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

22-8-18 "संदेश देता सर्प" प्रातः

सर्प के पास पैर नहीं हैं और आप लोगों के पास पैर है। आप लोग जब धरती पर पैर रखते हैं तो पुरी संभावना रहती है कि दूसरे पर आपका वह पैर पड़ सकता है। अभिशय से, बुद्धिपूर्वक, संकल्प के साथ पैर रखने का भाव तो आपका नहीं है पर फिर भी पैर पड़ जाता है। बोलो- ऐसा होता है कि नहीं? आपको पश्चाताप होता है? यदि पश्चाताप होता तो पैर पड़ने की संख्या कम होनी चाहिए।

दूसरे पर आपका पैर जब पड़ता है तो उसकी क्या स्थिति [होती] हो जाती है यह सोचना चाहिए। केवल अपने ही बारे में मत सोचो। अपने निमित्त से दूसरे की ऐसी स्थिति इस पर विचार करना चाहिए। इसी प्रकार धर्म की बात करते हैं तो हमारे निमित्त से दूसरे को क्या कष्ट होता है? उसी को दूर करना जब से प्रारम्भ कर देते हो तभी से धर्म का श्रीगणेश हो जाता है।

जब धर्म प्रारम्भ हो गया तो उसे आगे भी जारी रखना चाहिए, क्यों कि इसी से दुकान चलती है। यह ऐसी दुकान की ग्राहक कभी बंद ही नहीं होते। रात में भी खिड़की से व्यापार चलता रहता है। मेरे निमित्त से कोई को दुःखन हो, यह सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। हम किसी का भी

उपकार करें या न करें पर मेरे निमित्त से दूसरे को कष्ट न हो। यह बहुत बड़ा धर्म है।

तो चाल की / गति की बात आती है। जिसके पास पैर नहीं वह कैसे चलता है? सर्प यदि सीधा चलता है तो उसकी गति कम होती है और यदि युं-युं (ᔓ) करता है तो गति ज्यादा होती है। युं-युं करने से आजु-बाजु में क्षेत्रफल बढ़ जाता है। बाहर जब हम चले जाते हैं तो उसी सर्प की भांति कठनाई बढ़ जाती है - गति मंद हो जाती है भीतर आने पर गति स्वयमेव ही बढ़ जाती है।

उसी सर्प से और भी समझना है। जो कोई भी रोजी-रोटी मिलती है उसे लेकर वह बिल में प्रवेश करता है। कैसे? सीधा ही प्रवेश करता है। बाहर चले जाते हैं तो मन-वचन-काय की प्रवृत्ति टेढ़ी-मेढ़ी हो जाती है, आत्मा की ओर आ जाते हैं तो सब ठीक-ठाक हो जाता है।

इसी प्रकार आत्म पुरुषार्थ को अन्यत्र भी करें जो अपनी ओर ही हमें लाये। आज तक आप अपने घर में आये ही नहीं तो आपकी बात हम क्या कर सकते हैं। सर्प की भांति सीधे हो जायेंगे तभी अपने घर लौट सकते हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

23-8-18 "कैसे हटायें मोह रूपी राजा को" प्रातः

जंगल की बात है। विहवान जंगल में सिंह रहता था, जो जंगल का राजा माना जाता है। जंगल में बहुत तरह के पशु रहते हैं, जिनका जीवनयापन उसके अंडर (अधीन) में होता है, क्यों कि वह राजा है। किन्तु उस राजा से भी यदि गलती हो जाये तो सब पशु मिलकर उसकी मिटिंग ले सकते हैं। मिटिंग का मतलब जानते हो?

तो एक बार एक भैंसा उस सिंह को दिखा, सिंह ने उस पर धावा बोल दिया किन्तु उस भैंसे तक नहीं पहुँच पाया। उसने जाकर अपने परिवार में मिटिन्ग कर ली। तय हुआ हाथोहाथ उत्तर देना है। चारों तरफ से चार टोलियाँ बना ली और आक्रमण करने के लिए आ गये। सिंह ने सोचा - ये पुनः आ गये। उस ओर देखा तो 10-20 एक साथ चले आ रहे हैं।

उसने सोचा इधर चले जाये पर उधर से चारों दिशा से पचासों भैंसे एक साथ उसकी ओर आ रहे हैं, अब वह जाये तो कहाँ जाये। एक पेड़ था, वह पेड़ पर चढ़ गया। वीरत्व दिखाने के लिए चढ़ा या बचाने के लिए चढ़ा, बोलो ना? वो वहीं पर अटका रहा, ये भी डरे रहे कि कहीं भाग न जाये। आप सब लोगों कि भी यही दशा

बनी हुयी है।

मोह की सेना ने आज तक आप पर शासन कर रखा है, जब कि सबसे कमजोर है तो वही है। आचार्यों का कहना है - मोह गया तो कोई बचता ही नहीं है। सबसे पहले उसी का क्षय होता है, उसके क्षय होते ही तीन घातिया कर्म भी नष्ट हो जाते हैं। इसलिये दौलत राम जी ने कहा है - "दाव यह मत चूको यहै" मोह पर प्रहार करना है तो पूरी शक्ति से धावा बोल दो।

वह मोह राजा बना बैठा है - आप कमजोर हो तो वह राजा बना है। यह युक्ति मालुम नहीं है - उन भैंसों से सीख लेना।

अहिंसा परमो धर्मो जय हो

ईर्यापथ में - अन्तिम परीक्षा - संलेखना

[आचार्य श्री जी ने कहा कि जीवन भर व्यक्ति साधना करता है वह पढाई के समान है किन्तु संलेखना उसकी परीक्षा है। सब कुछ दाँव पर लगा देना ही एक क्षपक (साधक) का लक्ष्य होना चाहिये।

"इसके लिए धैर्य और संकल्प रूपी गोली प्रतिदिन खाना चाहिए।" संलेखना की भावना प्रतिदिन भाओ। पूज्यपाद आ० भी कहते हैं हे भगवन्! अन्तिम समय मेरा कण्ठ अवरुद्ध न हो, बस तेरा नामस्मरण करता हुआ ही मैं यहाँ से जाऊँ।]

२५-८-१८ "अप्राकृतिक जीवन का नतीजा" प्रातः

आवश्यक और अत्यन्त आवश्यक तत्त्व के अभाव में सब कुछ मिला किन्तु प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती। क्यों कि जहाँ पर, जिस रूप में उसका अस्तित्व है उसका लाभ नहीं मिलता तो हमारा उद्देश्य भी पूर्ण नहीं हो सकता। जैसे- सिकोरे में मिट्टी-खाद आदि डालकर, उसमें कुछ बीज डाल दिये। समय पर पानी भी देता रहा। यह कार्यक्रम चलता रहा। उसके बाद उसमें अंकुर भी आ गये। पुरा सिकोरा भर गया। बल्कि ८-१० दिन भी नहीं हुआ वे उस सिकोरे से भी ऊपर आ गये।

अपने कोमल-कोमल पत्तों के साथ इसका विकास हो रहा है। अब जिस तिथी तक रखना था रखा फिर बाहर लाकर रखा। ये क्या हो गया? 1-2 घण्टे भी नहीं हुआ जैसे तो चक्कर खाकर गिर गये हो अथवा कोमा में चले गये हो। अभी तो जन्म हुआ था- अंकुरण हुआ- बड़े हुये और जो मिलना चाहिए था उसके अभाव में लुड़क गये।

पुरुषार्थ पूर्ण नहीं हुआ इसीलिये सफल नहीं हुये। पुरुषार्थ तो किया था पर पूर्ण नहीं- सही नहीं था। अब बाहर जो पौधे लगाये थे। वे सारे के सारे अंकुरित हुये और लहलहा रहे हैं। वे हरे-भरे हैं और ये पीले-पीले जैसे टी.बी. के मरीज

हो और उन्हें आई.सी.यु. में रखा हो।

वहाँ उन्हें ऑक्सीजन पर रखा गया। आई.सी.यु. का क्या मतलब है? I See you. आप यहाँ इसीलिये तो आये हैं। "जहाँ मन प्रफुल्लित हो जाये उसी का नाम I.C.U. है।" वह तो कृत्रिमता लिये हुये रहता है। तो वह बाहर वाला खिला हुआ है, अपने ध्रुव की ओर बढ़ रहा है। बाहरी हवा-पानी का लाभ तथा सूर्य नारायण की किरणें भी ले रहा है।

किरणों के अभाव में यह दशा होती है, "बाहर आइये तभी परम तत्त्व मिलेगा।" घर में कभी नहीं मिलने वाला। हमारे भगवान भी घर से बाहर निकले तभी केवल ज्ञान रूपी किरणें प्राप्त हुईं। भोजन करते हैं क्यों? ले तप बढ़ावन....। तप करना है इसके लिए शरीर चाहिए, शरीर हेतु भोजन आवश्यक है। किन्तु वह भोजन प्रसन्न चित्त होकर लो तभी तो।

यहाँ तो इस तरह होता है, अष्टमी करना है तो सप्तमी-नवमी किसी तरह निकालना पड़ती है। प्रसन्न भावों के द्वारा जो होता है वह अन्य किसी के द्वारा नहीं होता। आचार्य कहते हैं- पेट्रोल देते हैं- कितना? न कम न ज्यादा, अनुपात से देते हो। तभी रस आयेगा,

वही तप में सहयोग देगा।

"प्रसन्नता - विशुद्धि अनिवार्य है।"

समझ में आ गया आप लोगों को? तो वह पौधा जो बाहर था आकाश की ओर खूब तेजी से बढ़ गया तथा सूर्य आदि से पोषक तत्त्व भी ग्रहण करता गया। अपनी यात्रा को विकासोन्मुखी करता हुआ ऊर्ध्वता की ओर जाने लगा। ऐसा पौधा ज्येष्ठ में दिन के 12 बजे भी प्रसन्न रहता है। आप लोगों के हाल तो देखो।

हमेशा - हमेशा रोते ही रहते हो। कम मिले तो भी रोना - ज्यादा हो जाये तो भी रोना, डबल मिल जाय - मनचाहा मिल जाये तो भी रोना, दूसरों को और रुलाना। यहाँ तक कि घर के मेम्बर चिढ़ जाते हैं, चला जाये तो अच्छा है। इसलिये जो भी कर्म के उदय में मिलता है, अच्छे ढंग से सेवन करते जाओ। "कर्मोदय में ऐसा होता है, इस श्रद्धान को मजबूत बनाइये।"

इस उदाहरण के माध्यम से दोनों पौधों को याद रखीये। आपको कौनसा बनना है? हरियाली वाला बनने के लिए स्वयं को हरा - भरा होना होगा एवं दूसरों को भी हरियाली से भर दो।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

25-8-18 "क्या कहती है ढोलक हमसे" प्रातः

अभी आप पूजन कर रहे थे, साथ में पूजन बोली भी जा रही थी, उसी के साथ कुछ वाद्य भी बज रहे थे। उसका एक प्रकरण आपके सामने रखना चाहूंगा। वह यह है कि जब शिल्पी वाद्य को बजाता है। बार-बार उसकी वह तर्जनी और हथेली की कलाई का शब्द है। उन दोनों हाथों को उसने ऐसा अभ्यस्त कर रखा है, जिसे आप लोग तबला अथवा ढोलक बोलते है। मृदंग भी इसी का नाम है।

उसमें जो स्याही लगी रहती है, उसे वह शिल्पी अवश्य स्पर्श करता रहता है। हमने सोचा कि स्याही गिर गयी होगी - पर ऐसा नहीं है। हरेक शिल्पी मात्र आवाज ही नहीं उससे स्वर उभारने की कला जानता है। जब तक उसकी अँगुलियों का स्पर्श इस प्रकार से नहीं तब तक सही आवाज नहीं आ पाती है। इस प्रकार कभी आपने देखा है देखा करो। ये सब एकाग्रता के बिना नहीं होता। वह शिल्पी पूर्ण एकाग्रता से बजाता है।

और भी देखो। जब भी वह बजाना प्रारम्भ करेगा, उससे पूर्व वह अवश्य ठोकेगा। ऊपर से भी - नीचे से भी ठोकेगा। हरेक क्रिया को देखा करो तभी आनन्द आयेगा। आपकी दशा तो ऐसी है,

सुनते हैं तो भी एक से, दूसरे से निकाल देते हो।

वह शिल्पी का शब्द यदि ऊपर चढ़ जाये तो मस्तिष्क को और नीचे भी आ जाये तो हृदय को छु जाता है। कभी सोचा वह क्यों ठोकता है? रात भर सोया होगा? शिल्पी उसे लेकर हथौड़े से ठोकते हुये घुमाकर कसता जाता है। सब जगह से उसे परिक्षित करता है। आपके सामने वह शिल्पी भजन के पूर्व यह प्रक्रिया करता है।

आपको भी कभी ठोका-ठोकी करें तो - हओ वह देना चाहिए। उसके बिना लय नहीं आती। आज तो प्रलय हो रहा है। ठोके बिना स्वर नहीं उबरता। इसीलिए स्वामी समन्तभद्र ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार में एक कारिका के माध्यम से कहा - अनात्मार्थं बिना रागैः, शास्ता शास्ति सतां हितम्। वीतरागी कैसा होता है? जो सज्जनों के लिए हित का मार्ग प्रशस्त करता है।

यहाँ आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने अनात्मार्थं कहा - न आत्मार्थ इति अनात्मार्थ। स्वार्थ सिद्धि हेतु नहीं, पर के लिए करता रहता है किन्तु अपने लिए कुछ नहीं कर रहा है। ये ध्यान रखीये हरेक के सामने नहीं, जो हित चाहता है उसी के सामने रखता है। स्वार्थ को नहीं रखते हुये दूसरे के हित में जैसे मृदंग, बदले में कुछ नहीं चाहता बस आपकी तर्जनी

और हथेली से शब्द (स्वर) निकालता रहता है, ऐसे ही हमारी आत्मा तक पहुँच जाये।

आत्मा का हित किसमें है, उसे कैसे प्राप्त करना है, अभी तक क्यों नहीं हुआ इत्यादि प्रश्न स्वयं से करते रहना चाहिये। आपका सौभाग्य है जो जिनवाणी उपलब्ध हो गयी। उसे बार-बार देखेंगे तो भीतर में अलग बोध, अलग नाद उत्पन्न होगा। अनेकों शिल्पीयों के स्पर्श से यह नाद उत्पन्न हुआ है। इसमें तल्लीन होकर उसी के बारे में सोचा करो। इधर-उधर की बातें नहीं करो अन्यथा रोकना पड़ेगा, सोचा करो।

हजारों वर्ष ऐसे जिनालयों का निर्माण हुआ तभी आज आप इन क्षेत्रों (प्राचीन) पर धर्म-ध्यान कर रहे हो। आपको दिशा बोध देने के लिए उत्तंग खड़े हैं। कोई आये और हम उसे दिशा बोध दें। उनका उद्देश्य देखो। चाहे गर्मी की लू के थपेड़े हो अथवा शीतलहर, वर्षा का पानी हो या तेज हवायें सबके सब खड़े हैं।

यहाँ दशों दिशाओं से लोग आते हैं। ऊपर से भी। देव भी आ जाते हैं। ये आप भी अपना सौभाग्य समझ लो कि आप खजुराओ में आये हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रक्षाबंधन-रविवार
26-8-18 "कसकर पकड़ो देव गुरु शास्त्र की डोर को" प्रातः

प्रातः बेला में अभी श्रेयांसनाथ भगवान का निर्वाण कल्याणक के साथ पूजन सम्पन्न हुयी है। मध्याह्न में विधिवत कार्यक्रम रखा है, आप सभी लोग उपस्थित होंगे तो संभव है हम भी उपस्थित हो जावें। अभी प्रासंगिक थोड़े समय में बता देते हैं। एक बालक अपने हाथ में कुछ ले रखा है और हवा से बार-बार झटका भी दे रहा है। फिर भी भीतर से/हृदय की तरंगों का आनन्द ले रहा है।

वह सोच रहा है कि संसार में कहीं भी अभी इतना आनंद तो है ही नहीं, जिसका वह अनुभवन कर रहा है। हम उसका चित्रण नहीं कर सकते। चित्रण हेतु चित्र की जरूरत होती है। हमारे शब्दों से ही देखने का प्रयास करो। तभी आप उसका आनन्द ले सकते हैं। तो क्या दिख रहा है? वह क्या है जिसे कसकर पकड़े हुये है।

उसके हाथ में और कुछ भी नहीं, हाथ में डोर है, एक छोर पर दूर आसमान में पतंग है। आप लोग मात्र एक दिन के लिये यह दिवस मनाकर छोड़ देते हो। मुमुक्षु ऐसा नहीं करता।। वह तो देव शास्त्र गुरु के प्रति अपनी आस्था कि डोर को पकड़े रहता है। इसमें भी कमजोरी हमारे हाथ की है, डोर तो बहुत मजबूत है, बस आस्था पक्की होनी

चाहिए।

ईश दूर पर मैं सुखी, आस्था लिए अभंग,
समूल बालक खुश रहे, नभ में उड़े पतंग।

मोक्षमार्ग में और कुछ भी नहीं है। जब तक मुक्त नहीं होते तब तक केवल आस्था का खेल है। उसी आस्था जो देवगुरु शास्त्र रूपी डोर पर है उसी अनुसार चलना होता है। चलाने वाला कोई और है - चलने वाला कोई और है। बस उनका संकेत जिस ओर का हो उसी ओर जाना है। किधर जाना? तो अमूर्त में तो इधर ही कहा जायेगा।

मूर्त मेरा स्वभाव नहीं है। अमूर्त ही मेरा स्वभाव है। वह आँखों से देखने का सवाल ही नहीं उठता। इसीलिये मैं विज्ञान का कभी समर्थन ही नहीं करता - सम्यग्ज्ञान का समर्थन करता हूँ। हमारी आँख उस अमूर्तपने को पाने के लिए (सिद्ध) तरस रही है। अमूर्त पर विश्वास तो करो। उन सिद्ध परमेष्ठी को बार-बार नमस्कार करके बड़े-बड़े उपसर्ग भी जीते जाते हैं। उन उपसर्गों को जीतकर हम जीते रहें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष - "पर का नहीं - अपने दायित्व का सदैव स्मरण रखो। मैं यदि कर्तव्य परायण बन जाऊँगा तो किसी भी प्रकार से दुःखी अथवा गरीब नहीं रहूँगा।"

(प्रातः कक्षा में उठते ही)

27-6-18 "प्रदुषण फैलाता Mobile" प्रातः

आपको अपने विकास में किसी दूसरे के द्वारा नहीं स्वयं के द्वारा ही बाधा हो रही है इसी को आचार्यों ने आदान कहा है जिसे बहुत महत्व दिया है। इसहेतु कौटिल्य ने अपने आर्थिक विचार पुस्तक में लिखा कि जो धर्म-अर्थ-काम पुरुषार्थ को करता है तो उसका गृहस्थ जीवन अच्छा बनता है और मोक्ष पुरुषार्थ की भूमिका बनती चली जाती है। हमारे आचार्यों ने कहा साधक कारण के साथ बाधक कारण को भी देखना चाहिए। मात्र साधक को देखो और बाधक की ओर ध्यान ही नहीं दो तो कार्य नहीं होगा। तो उस पुस्तक में (कौटिल्य की अर्थनीति) क्या लिखा? वह सुनो! श्रमिक लोग जो श्रम करते हैं उनका परिसर कैसा होना चाहिए?

ये हम बाद में बतायेंगे कि कैसा होना चाहिए, पहले कैसा नहीं होना चाहिए उसका विश्लेषण किया गया। मतलब निषेधपरक कथन करने से विधेय तो अपने आप आ जाता है। जहाँ श्रम होता है, वहाँ जो ध्यान को स्थानान्तरण कर दें, ऐसे बाधक कारण नहीं होना चाहिए। खेलकूद इत्यादि नहीं होना चाहिए। जब छोटा था / पढ़ता था उस समय एक-आध पीरियड खेल का होता था, आज उसकी अवधी बढ़ती जा रही है। लगता है आजकल के बच्चे होशियार हो गये हैं [व्यंग्य]

श्रमिक का ध्यान उस ओर चला गया तो उसके काम में बाधा होगी। वादन, नृत्य,

गीत आदि श्रमिक के सामने नहीं होने चाहिये। जो बच्चे उछल-कूद (मनोरंजन) करते रहते हैं, वे भी उस परिसर में न जावें।

ज्यादा कुछ नहीं - उस पूरे परिसर को साफ-स्वच्छ रखना चाहिए। अन्यथा ये सब दूषण है- प्रदूषण है। आज इसी में ज्यादा खर्च हो रहा है। समय तो निकल जाता है पर जितना उत्पादन होना चाहिए, उतना नहीं होता। इसलिए अब ऐसा वातावरण तैयार करो जिससे उत्पादन का विकास हो।

पारा अपने स्थान को कब छोड़ता है? ताप के कारण वह ऊपर उठता है। संताप हो जाये तो वह और ऊपर उठ जाता है तथा ताप-संताप से भी ऊपर की मात्रा बढ़ जाये तो नीचे उतरना ही संभव नहीं है। आज ही कुछ ब्रह्मचारियों के मुख से सुना कि हमारे यहाँ जो काम करने वाले आते हैं, (हथकरघा में) वे कार्य करते हैं।

वे अपने साथ मोबाइल भी रखते हैं, इससे कार्य कम होने लगा। उनको मालूम नहीं कि काम कम क्यों हो रहा है, इनको मालूम हो गया निगरानी रखने से। इन्होंने सबसे कह दिया कि काम करते समय कोई भी मोबाइल का उपयोग नहीं कर

सकता।

शुरुआत में तो उन सबको लगा ये कैसे संभव है? इन्होंने कहा - हम जो कह रहे हैं उसे सुनो। उनका काम बढ़ गया, जब वेतन मिला तो बढ़कर मिला। वेतन क्यों बढ़ गया? पहले क्यों घट गया था? तो मोबाइल के कारण ऐसा होता है। आज ही उन लोगों से सुना। हम किसी कि भी बात को विधी एवं निषेध रूप में बताकर आपको दे देते हैं।

वहीं पर दूसरे ब्रह्मचारी ने कहा - जापान श्रमशील देश है किन्तु उस पर भी मोबाइल का प्रभाव पड़ रहा है। वैज्ञानिकों ने शोध किया। यहाँ हम प्रत्यक्ष ही देख रहे हैं। बच्चों पर तो सबसे ज्यादा प्रभाव मोबाइल का ही पड़ रहा है। मैं इस विषय पर बार-बार कहता हूँ "ऐसे अभिभावक जिन्होंने बच्चों को मोबाइल दिला दिया। वास्तव में वे अभिभावक नहीं - अभी भावुक हैं, जो ऐसा कर रहे हैं।"

थोड़ा सा बड़ा हो जाने दो सब ठीक-ठाक कर देगा आपको। आप काहे के बन्धु हो। बन्धु तो वही होता है जो हेय से बचा सके। पैसा ज्यादा हो गया है तो दूसरे स्थान पर खर्च किजिये। एक तो ऋण लेकर काम कर रहे हो और दूसरा इस प्रकार से दुरुपयोग, कैसे सुखी रहेंगे? बच्चा तो आपको ही दोष देगा। उनका तो बचपन है किन्तु आप तो पचपन के

हैं। आप तो अवकाश प्राप्त वाले हो गये हैं, फिर क्यों गलत मार्ग पर धकेल रहे हैं।

विदेश में तो माता-पिता अपने बच्चों को रखते ही नहीं - संस्कार कहाँ से आयेंगे। वे तो उसे Convent में डाल देते हैं- जिसे अनाथालय कहा जाता है। मतलब सनाथ होते हुये भी वह अनाथ हो जाता है। हेय क्या है? ये आपको बताना पड़ेगा। युवा न हो तब तक बाधाओं से बचाइये। इस उम्र आकृष्ट है उसे बाधा होती है-3, वह मानने को तैयार ही नहीं। परिणाम आप देख रहे हैं। पानी सिर के ऊपर से जा रहा है।

आचार्यों ने 2000 वर्ष पूर्व लिखा है इनसे बचिये, ये करिये ये उन्होंने नहीं कहा। यदि जो नहीं करना वही आप पर हावी होगा तो क्या होगा? जो बोया है उसे समझो। जिसे आपने बोया ही नहीं उसे जल्दी-जल्दी उखाड़ दो अन्यथा जो बोया वह बोना हो जायेगा। प्रत्येक साधक साधना करते समय सजग रहता है। आप बाधक कारण से बचोगे, साधक क्या है उसे अपनाओगे तभी साहस का प्रादुर्भाव हो पायेगा।

आप लोगों ने आचार्य उमास्वामी की कृति तत्त्वार्थ सूत्र तो जरूरी पढ़ी होगी। उसमें प्रत्येक व्रत की पांच-पांच भावनायें दी हुयी

है। सभी के अन्त में पञ्च-पञ्च लिखा है मतलब येही भावना है इस व्रत के लिए।

फिर उ-पसूत्र और लिखे हैं। वे पांच-पांच भावनायें विधेय थी और वे सूत्र नेगेटीव निषेध परक है। हिंसा-दिष्विहामुत्रापायावद्य दर्शनम् । 9/7 दुख-मेव वा ।10/7 आदि सूत्र हैं। मतलब ये है कि दोनों बातें एक साथ चलती है। बल्कि निषेध को सर्वप्रथम निषिद्ध कर देना। खरपतवार को पहले उखाड़ फेंको वह आपके पौधे को हानि पहुँचायें बिना नहीं रहेगा।

"जो लाभ-हानि की ओर नहीं देखता सफलता कभी उसकी ओर नहीं झांकती।" विफलता आपके सिंहासन अथवा सिर पर बैठेगी। यदि उसने लगाम अपने हाथ में ले ली तो आपको अनर्थ की ओर ही ले जायेगा। इसलिए जिस ओर आप जा रहे है उस दिशा का पूर्ण ध्यान रखें। आपका लक्ष्य क्या है, आप जा कहाँ रहे हैं अन्यथा अनर्थ ही अनर्थ घटित होगा।

मात्र पाँच मिनिट भी नहीं लगा। उन ब्रह्मचारीयों की बात जो अभी-अभी हुयी आपके सामने रख दी। यदि आपको अच्छी लगी हो तो सब तक पहुँचा देना। हमारा न कोई पत्र है न पत्रिका। आपने सुना है-समझा है, आप जहाँ से भी आये सब को पहुँचा देना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

28-8-18 लाड़-प्यार कितना? प्रातः

माँ के सामने एक लड़का जो कि लाड़-प्यार से पला है और कहता है आपने तो दिया ही नहीं-3। माँ कहती है बेटा जल्दी नहीं बनती, बनाने में समय तो लगता है। और थोड़ी देर में बन गयी उसे बुलाकर दे दीं। माँ उसे तस्तरी में देकर पुनः अपने काम में व्यस्त हो गयी। चुंकि लड़का लाड़-प्यार में पला था। उसका क्या परिणाम होता है, वही आपके सामने रख रहा हूँ।

लड़के ने उस तस्तरी को पैरों से युं करके जो भी इतनी देर में वस्तु बनी थी उसे बिखेर दिया। आवाज आते ही माँ ने उस ओर दृष्टिपात किया। माँ सोचती है- अरे! इसे एक बार कहने से नहीं दिया इसीलिये लात मार दी। हमारा समय भी चला गया और अभी दूसरा मांगेगा उसे भी नहीं दे पाऊंगी। चलो कोई बात नहीं है, गलती हमारी ही है।

लाड़-प्यार से ऐसा होता है। सबका प्रबन्धन कर सकते हो पर यह प्रबन्धन करना सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस प्रबन्धन को भी महाकाव्य की संज्ञा दी है क्यों कि यह छोटा-मोटा कार्य नहीं महाप्रबन्ध है। निरसता में भी रस का भाव होना चाहिए। ये निश्चित है जब तक अभाव सामने नहीं आता तब तक सद्भाव का सुख नहीं मिलता।

दुःख के बिना सुख का मूल्य पता नहीं चलता।

तो वह बालक रूठ कर उस ओर जाकर बैठ गया। माँ भी अपने कार्य के लिए दूसरे आंगन में चली गयी। अब यह लाड़ला बेटा- थोड़ी देर में इसे भूख लगने लगी किन्तु माँ को कैसे बोले? अतः धीरे- धीरे खिसकता हुआ आया। तस्तरी में तो कुछ बचा नहीं एक-एक नूकितियों को बीनकर खाने लगा। पानी भी पीना है। परन्तु गिलास कहाँ? माँ ने पहले ही उठाकर अलग किया था। धीरे-धीरे उसे भी लेकर पी लिया।

पानी पीकर वह लाड़ला धीरे से आकर बैठ गया। माँ ने उस समय भी नहीं देखा। उस बालक का ध्यान अपने पैर की ओर गया। देखा कि उसमें तो चोट लगी है, रक्त भी निकल रहा है। इसे कैसे दिखाऊँ, यह तो साहस का काम है। उसी समय अचानक पिताजी भी आ गये। वे बोले- कहाँ गये थे? सही- सही बताओ वह कैसे बतायें?

आप लोग सुन रहे हैं न? सच बताओ कैसा लग रहा है? आप सब ने भी बचपन में ऐसी नासमझी, रूठने की गलती, अभिमान की बातें करी, उनको याद करो। वह बच्चा पिताजी को क्या बतायें? माँ भी कुछ नहीं बोली नहीं तो बूंदी क्या गेहूँ का लड्डू भी बिखर जायेगा। पति पूछ रहा है-

पर माँ कुछ नहीं कहती, बता भी नहीं सकती।

आपको सब को सोचना तो यह है कि बालकों कि कमी कहाँ है और उससे भी ज्यादा कमी अभिभावकों की कहाँ है? "कभी भी बालकों को अनुपात से ज्यादा लाड़-प्यार नहीं करना चाहिये" अनुपात बिगड़ा तो पक्षपात की ओर चला जायेगा। अनुपात का प्रत्येक क्षेत्र में ध्यान रखना अति-आवश्यक है। वह बालक भी सोच सकता है/सोचता है कि हमें इस प्रकार की शिक्षा नहीं दी, उसी का आज यह दुष्परिणाम है।

आज तो तुफान नहीं सुनामी आ गयी है। संस्कारों को कैसे बचाओगे जो भव-भव तक काम आते हैं। "जनोऽतिलोलोऽप्यनुबन्ध दोषतो..... कथं सुखे संसजतीति चाऽब्रवीत्।" स्वामी समन्तभद्र स्वामी कहते हैं कि इर के मारे विषयों पर नियन्त्रण की बजाय विवेक से जो नियन्त्रण होता है वही सही अंकुश माना जाता है।

ये गलत संस्कार हानिकारक ही नहीं भव-भव में रुलाने वाले हैं। इसलिये पंचेन्द्रिय विषयों एवं पाप के ऐसे संस्कारों को छोड़ दो- बड़ा उपकार होगा। ऐसा नहीं कि खिला दिया, पीला दिया, मनोरंजन करा दिया ये सब ठीक नहीं। संकटग्रस्त अवस्था में आपके संस्कार मात्र ही काम में आते हैं, आप द्वारा

दी गयी उन सीखों से उससे पार हो जाता है।

ये सब क्षेय संस्कार दाता को जाता है। क्षेय किसे मिले ये बात नहीं है। औरों के विषय में जो सोचता है वही संस्कार दे सकता है। आप ये ध्यान रखें कि कभी हम भी नाबालिक थे। "शिक्षा वही कहलाती है जिससे भविष्य कभी अंधकारमय न हो।" इसकी आधुनिक शिक्षा में एक किरण भी देखने को नहीं मिल रही।

उस प्रकार की शिक्षा हेतु हमेशा तत्पर रहना चाहिए। इसका समय पर प्रबन्ध करलो अन्यथा बाद में आप भी एवं संतान भी पश्चाताप करेगी। ऐसा क्यों हुआ? बच्चा सुधता तभी है जब आप 1-2 बार कान नहीं पकड़ते हो। महराज कान टूट जायेगा तो? ध्यान रखो! कोई रोग न हो इसलिये कान छेदते हैं और आप टूटने की बात करते हो।

वह भी तब छेदा जाता है जब कोमल-कोमल होता है। एक बात और अंगोपांग छेदने से भूत-पिशाच का प्रभाव नहीं पड़ता, ऐसा भी हमने सुना था। जो इस प्रकार कान नहीं छेदता था उसका नाम कनछेदी रख देते थे ताकि उसके नाम से भूत आदि का प्रभाव न पड़े। आज भी कई तरह के हेयरींग आदि पहनते हैं ताकि भूत न लगे, अब

पहना रहे हैं, पहले कान छेद देते तो कितना अच्छा होता।

भारतीय संस्कृति इसी का नाम है। ऐसे बचपन में सभी के प्रायः कान छेदते थे। टूट जाये तो कोई बात ही नहीं। वह बड़ी चली जाये तो पश्चाताप ही नहीं होगा। इस बच्चे का जो इरादा था, सामने रखा। आज तो बच्चों को ही क्या बड़ों को भी (माँ-बाप) भी शिक्षा की जरूरत है। साहित्य के अभाव में एवं परियमी सभ्यता के कारण ऐसा हो रहा है।

इस सुनामी को तो फिर भी रोका जा सकता है पर इसे कैसे रोकें यह विचारणीय हो गया है। यदि अभी नहीं बदल पाये तो ये युग का महादोष माना जायेगा। सभी को पश्चाताप करना पड़ेगा। कर भी रहे हैं। उसी दिशा में पुनः जाना होगा, जो प्राचीन शिक्षा प्रणाली थी।

पुरानी एक पुस्तक मिली - "पाठशाला प्रबन्धन"। इस विषय पर कई पुस्तकें हो सकती है परन्तु ये कुछ अलग हटकर है जो इतिहास की ओर ले जाने का संकेत देती है। उसका बारीकी के साथ आलोड़न किया गया, उसे अपनाये तो संस्कारित होना दूर नहीं। इतना ही पर्याप्त है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

31-8-18 "आओ जानें मूल्य बहुमूल्य का" प्रातः

किसान समय-समय पर अपने खेत में फसल उगाकर जंगल में बाँटकर स्वयं भी काम में लेता है। ऐसा ही एक प्रसंग शास्त्रों में आता है जो आपके सामने रख रहा हूँ। तो वह किसान प्याज की खेती करने वाला किसान है। उस खेती को कोई हानि न पहुँचायें इसके लिए खेत के चारों ओर बाड़ लगाता है। बाड़ लगाने के लिए खेत में जो पेड़ (चन्दन के) थे उनको काटकर बाड़ लगाना था।

उसके मित्र ने पूछा- ये क्या कर रहे हो? ठीक ही तो कर रहा हूँ, जिसे मैं चाहता हूँ उसकी रक्षा कर रहा हूँ। इसीलिए एक-एक टहनी तोड़कर लगा रहा हूँ। अरे! इसकी कीमत इतनी है, क्या ये तुम नहीं जानते? दूसरा उदाहरण वह दिया- जो अपने हाथ में बहुमूल्य मणी ले रखा है। उसने कौवे (काका) का काँव-काँव स्वर सुना जो अच्छा नहीं लग रहा था, कोयल होती तो फिर भी ठीक था।

उस व्यक्ति ने रत्न को लेकर फेंक दिया, कौवा रत्न लेकर चला गया। एक को बर्तन माँजना था, इस हेतु राख चाहिये थी। राख के लिए घर के जितने भी बहुमूल्य पदार्थ थे जलाकर राख प्राप्त कर ली। उससे बर्तन माँज रहा है। अड़ोस-पड़ोस वालों ने देखा। अरे! इसका भाग्य फूटा है।

वह बोला - समय पर जो काम करना है वह मैंने किया।
ऐसा क्यों किया? तो "शास्त्रों में लिखा है जो बहुमूल्य का मूल्य नहीं समझता वह इसी प्रकार दुरुपयोग करता है।" ऐसे सभी लोगों में आप भी शामिल हैं। जो पंचेन्द्रिय विषयों के चक्कर में बहुमूल्य जीवन को गँवा रहे हैं। खपा रहे हैं। क्या आप उससे भी अधिक मूर्ख नहीं कहलायेंगे। मूर्ख ही नहीं मूर्ख शिरोमणी की उपमा दी जायेगी।

इस प्रकार आचार्यों ने हमारी भीतर की आँख खोलने के लिए बाहर में ऐसे-ऐसे प्रसंग, शिक्षाप्रद उद्बोधन अथवा उदाहरण दिये हैं। हम जानते तो हैं, तो क्यों लगा रहे हो? क्या करें महाराज लेकिन, ये लेकिन क्यों लगाया? इसीलिये "जानबूझकर अंध बने हो- आँख पर बाँधी पाटी" ये बिल्कुल सत्य है। बच्चे तो आँख-मिचौली खेलते ही हैं पर आप उनसे भी कम नहीं हैं।

अपनी आँखों को बंद करके विषयों की ओर दौड़ लगा रहे हो। ये बहुमूल्य रत्न जैसा जीवन मिलना बहुत कठिन है। गले में चैन क्यों पहने हो? हाँ। शरीर तो महा घिनावना है, फिर मूल्य किसका? ये समझना ही सम्यग्ज्ञान है। वह सम्यग्ज्ञान अभी आपसे कोसों दूर लगता है।

इसलिये दूर-दूर से आये हो।

इस बात को जहाँ कहीं से भी आये हो वहाँ भी अपने मित्रों को- सबको बता देना। इतना तो उपकार कर ही सकते हो। वो कहेगा- तुम्हारी आँख तो खुली नहीं, हमारी खोलने आये हो? तुम सुन लेना, कोई बात नहीं है। उसकी भी आँख खुल जाये, ये भावना रखना।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

इलाज किसका?

"आन्टी का कहना है आज हर बात में हेलोपेथी के पिछे भाग रहे हैं, जब कि वास्तविकता यह है कि उसमें रोग का सही निदान (जाँच) ही नहीं हो पाता फिर जो औषध है वह भी सही नहीं है। सब "चूल में लट्ठ" जैसी हालत है। वर्षों हो जाते है दवाई खाते-खाते पर रोग ठीक नहीं होता, क्यों? जो बात पहले कहते है (शोध) स्वयं ही उसे गलत बताने लगते है। विज्ञान की यही दशा हँसी का पात्र बनती है। इन सबसे बचकर हमारी प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार (आयुर्वेद) ही हमें बीमारीयों से छुटकारा मिल सकता है।

हरित क्रान्ति के माध्यम से विदेशी बीज एवं विदेशी खाद, कीटनाशक को भारत में लाया गया जो आज अभिशाप बन गये है। कई प्रजातियाँ ही लुप्त हो गयी है। अब पुनः लोग इस ओर अपने कदम बढ़ा रहे है।"

1-9-18 "कैसे करें धार्मिक अनुष्ठान?" प्रातः

अभी आप लोगों को बहुत कम समय में अपने उद्देश्य को समझना है क्यों कि आपके पास कम समय है और मेरे पास तो वैसे ही समय है ही नहीं। इसलिये कम समय में दोनों का काम हो जाये। देखो! गुब्बारा जानते हो? छोटे बच्चे खेलते हैं। दो बच्चों को दो गुब्बारा दिये गये एक नीला था दूसरा पीला था। उन्ही बच्चों के सामने फुलाया गया। उन बच्चों से कहदिया, तुम हाथ नहीं लगाना।

धीरे-धीरे फुलाना प्रारम्भ कर दिया। जैसे तो उनमें जीवन आ गया हो। दोनों को फुलाकर उनके मुख ज़ोर से बांध दिया गया। अब एक गुब्बारा तो वहीं पर परिक्रमा करने लगा, हवा के कारण। दूसरे को हवा नहीं भी लगी तो भी वहीं पर उछना प्रारम्भ करदिया। ऊपर छत तक पहुँच गया। अब पीला गुब्बारे वाला कहता है- हमारा गुब्बारा तो ऊपर गया ही नहीं।

तात्पर्य यह है कि एक गुब्बारा ऊपर उठ गया, दूसरा ऊपर नहीं उठा। जो ऊपर उठ गया उसका मुल्य अलग है, जो नहीं उठा उसका मुल्य अलग है। इतना अवश्य है एक तीसरा गुब्बारा और था, उसमें हवा ही नहीं भरी गयी क्यों कि उसमें छेद था। आप सुन रहे हो ना? (हाँ) हमारा उपदेश तो यहीं पूर्ण हो गया। दूसरा ऊपर नहीं उठा क्यों कि मुल्य

तो दिया पर पुरा नहीं दिया।

जो ऊपर की ओर गया उसमें गैस भरी हुयी थी, वह गैस गुब्बारे को ऊपर तक ले जाती है। ठीक इसी तरह आप सभी धार्मिक अनुष्ठान करते हो पर कुछ लोग तो खेद के साथ करते है, उन्हें कुछ भी लाभ नहीं होगा। दुसरेकी पुण्य परिक्रमा लगाने लगता है किन्तु तीसरा छत तक चला जाता है। इस प्रकार तीनों की अलग-अलग स्थिति होती है। आप इसी प्रकार की गैस भरीयो इस गुब्बारे में ताकि ऊपर तक उठ जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

~~संस्मरण~~ "अंत सबका राख है"

"केशलोंच हेतु आचार्य श्री बैठे थे। मैंने राख एवं पेपर रख दिया। जो अखबार था उस पर आर्टिकल था "विश्व का सबसे मँहगा घर" अलग-अलग बिन्दुओं में उस घर की बहुत सारी विशेषताएँ बतायी हुयी थी जैसे - 84 करोड़ की कार, 2.15 करोड़ की साइकिल, 80 लाख के जूते आदि-आदि। आ० श्री उसे देखने लगे तो हम लोग भी पढ़ने लगे क्यों कि आ० श्री कभी अखबार पढ़ते ही नहीं है, कोई कुछ सुना देता है तो सुनलेते है। हम लोग उस घर को देखकर थोड़े आश्चर्यचकित थे पर गुरुजी तो गुरुजी है- उन्होंने कहा- "अंत सबका यह राख होना है" और केशलोंच शुरु कर दिये।"

रविवार

2-9-18 प्रातः

[अब तो टाइम बहुत शोर्ट बचा है। अभी ब्रह्मचारी (A.K Jain) जी अपने सत्याग्रह के साथ मारक में बोल रहे थे। किन्तु वे उसमें कुछ शब्द लगाकर के कह रहे थे - अजी, हाँजी, जी हाँ। इसके बिना बोल ही नहीं सकते। संबोधन करने हेतु इन शब्दो को लगाना आवश्यक है। आज तो रविवार है आप लोग बहुत दूर-दूर से आये हो मध्याह्न में जल्दी आ जाना अन्यथा दूर ही बैठना पड़ेगा, तभी देख लेंगे।]

3-9-18 "घनत्व भावों का" प्रातः

रविवार के दिन प्रवचन के लिए कहा गया था। आप आज भी रविवार मना रहे हो तो हम कैसे करेंगे? ये तो जबरदस्ती का सवाल हो गया है, फिर भी आकर बैठे हो तो पंक्ति से उठाना ठीक नहीं माना जाता। आसमान से पानी गिरता है। चूंकि यहीं से पानी वाष्प के रूप में आसमान की ओर जाता है। परन्तु वह ऊपर से नीचे की ओर ही आता है।

ये पक्का है उसे धरती पर गिरना ही है। अब चमत्कार क्या होता है देखो? भावों का अतिशय क्या वह देखो? तो वह पानी नीचे गिरा प्रारम्भ हुआ। ऐसी जगह जहाँ विहवान जंगल, जहाँ पर ऊँचे-ऊँचे घने पेड़ ही पेड़ है। देखते ही देखते! सारा पानी नीचे की ओर आया ही नहीं। कहाँ गया?

वह पानी पत्तों पर गिरकर बर्फ बन गया और वहीं जम गया। पानी को नीचे तक आना था किन्तु उसमें इतना घनत्व आ गया कि वह बिच में ही पत्तो पर चिपक गया। इसीप्रकार आत्मा में भी ऐसे परिणाम घटित हो जाते है, जहाँ चारों ओर प्रलय होता है वहीं पर जय-जयकार भी हो जाती है। इसलिए अपने भाव बढ़ाइये। विषयों में तो भावों को सदैव बढ़ाते ही रहते हो। अभी एक बालक को अर्घ्य चढ़ाते समय गोद में लाये, (प्रभात शाह-पोतेको)। शायद अर्घ्य में ही चढ़ाने वाले हो, ऐसे नजर आ रहे थे। संस्कार इसी को कहते हैं। इसीलिये यहाँ तक पहुँचा है। हमारे बर्फ के उदाहरण को याद रखेंगे। बर्फ की तरह आत्मा के भावों में भी घनत्व लाने की ओर दृष्टिपात करें। ऐसे संस्कार जल्दी-जल्दी मिलें, इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण "क्षायोपशमिक भाव"

"बम्बई के जयसुख भाई की संलेखना चल रही है। प्रतिदिन आ० श्री द्वारा संबोधन होता है, मैं वहीं उपस्थित रहकर देखता रहता हूँ। आ० श्री ने कहा-संलेखना में आत्मा का बल बलजोर हो रहा है एवं इन्द्रियों का बल कमजोर हो रहा है, इसी को क्षायोपशमिक भाव कहते हैं।"

5-9-18 "मुक्ति जिससे, फिर भुक्ति की क्या बात?" प्रातः

प्रतिदिन हम स्वाध्याय से पूर्व ही बाहर चले जाते थे (जंगल), आज ऐसा सोचा अभी शांत है, वर्षा का माहौल नहीं है अतः बाद में चले जायेंगे। जैसे ही स्वाध्याय पूर्ण हो गया, वो कहता है मैं आ गया हूँ। अब क्या करें? फिर हमने सोचा कि चरणाभिषेक से ही काम हो जाये, नहीं हम तो मस्तकाभिषेक भी करके ही मानेंगे। ऐसा भी होता है, "हम बचना चाहें तो बचा नहीं सकते।

स्वाध्याय लगभग 1 घण्टे से ज्यादा देर चला तब एक बूंद भी नहीं आयी। वह भी डटकर प्रतिक्षा करता रहा। जैसे आप सब अपने-अपने आंगन में प्रतिक्षा करते हैं। बाद में चालु हो गया, अभी भी नहीं रुक रहा है। अभिषेक करते रहो पर ये भी तो देखो कितने लोगों से कराया जावे। अभी एक बच्चा श्रुतनायक के अभिषेक का गंधोदक लाया। हमें ले लगा हमने ले लिया।

वह बहुत प्रसन्न हो गया। ऐसे ही आप सब अपनी-अपनी भक्ति में लगे रहें। कैसा लग रहा है? ये क्षण ऐसे हैं- "देवगुरुशास्त्र की भक्ति में लगाये गये क्षण कभी फालतु नहीं जाते" बस आप चाहना बंद कर दो तो बहुत मिलेगा। किन्तु मांगना नहीं। जब मुक्ति ही मिलती है तो भुक्ति की क्या बात करते हो। हाँ!

अहिंसा परमो धर्म की जय।

5-9-18 "समझाना नहीं समझना" प्रातः

संसारी प्राणी की हालत बहुत गंभीर है। इसको समझाना बहुत कठीन है। समझना तो फिर भी सरल है पर समझाना तो बहुत ही कठीन है, इसलिये कि जिसको समझाना है, वह स्वयं दूसरों को समझाने में लग जाता है। आप लोग यहाँ आये हैं, समझकर समझाने के लिए या समझकर जीवन में उतारने के लिए। बोलो? अभी तक उतरा नहीं, कैसे पार होगे।

यह इसलिए मैं कह रहा हूँ कि पल-पल यह स्खलन की ओर ही चला जाता है। जैसे-पानी चढ़ाव में तो नहीं किन्तु उतार में यूँ ही चला (सहज) जाता है। इसलिये जीवन को ऊपर उठाने के लिये बहुत पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है। एक बार आपको इसमें रस आने लग जाये तो फिर ज्यादा संकेत की आवश्यकता नहीं।

जैसे शुरुआत में बच्चों को विद्यालय भेजा जाता है। कैसे भेजा जाता है? घण्टी से पूर्व ही घर आने की तैयारी कर लेता है। किन्तु धीरे-धीरे सब समझ में आने लग जाता है। जब 12वीं कक्षा में आ जाता है तो फिर कहने की जरूरत नहीं। पिताजी कहते हैं- बेटा दुकान संभाल लेना, वह सोचता है- दुकान में क्या संभालना? एक आध दिन तो अच्छा लगा फिर बाद में पिताजी- हमें विद्यालय जाना है या दुकान। दोनों बातें तो हो नहीं सकती।

पिताजी - पहले विद्यालय जाओ।

मतलब ये बात है कि विद्यालय में जाना है ये समझ बच्चे में स्वयं की है। ये भी मालुम है कि ये तो छुटने वाला ही है अतः जितना समय बचा है उतना यहाँ से ले लो। आने वाली पीढ़ी के लिये वही पूंजी हो जायेगी। ऐसे ही आपको समझना है। समझकर दुकान को भी संभालना है। विद्यालय छुट जाने पर फिर दुकान पर ही जाता है वहाँ भी उन बातों को काम में लेता है। समझ जाओ।

किन्तु वास्तविकता यह है कि जब तीर्थंकर अथवा केवली भी समझाने के लिये पर्याप्त नहीं तो हम क्या समझायेंगे। इसलिये जो पांच प्रकार का स्वाध्याय होता है वह स्वयं के लिये है पर के लिये नहीं। किन्तु धर्मोपदेश को सब दूसरे लिए समझते हैं, जब कि वह स्वयं के लिये उपदेश है। ताकि संसार की इस फिसलन में कहीं पैर फिसल न जावें। कीचड़-कादे वगैरह जमी रहती है, स्वयं को संभालना आवश्यक है, दुनिया को संभालने की जरूरत नहीं। दुनिया की तो विपरीत चाल रहती है।

अपने स्वयं को ही समझाकर एवं समझकर उपयोग में लाने की जरूरत है। पिताजी भी कहते हैं- अब लड़का समझदार हो गया है। धीरे-धीरे उसे भी समझ में आ जाता है। विद्यालय में बूढ़ों को ही रखें क्यों कि

उन्हें अनुभव है। समझा भी सकते हैं, स्वयं समझ भी सकते हैं। ये ही एक मात्र जीवन का सार है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

6-9-18 "अतिक्रमण नहीं प्रतिक्रमण करो" प्रातः

अब बताओ आप लोगों ने द्रव्य चढ़ाया। उसके साथ गुण को भी चढ़ाया, उसके साथ पर्याय को भी चढ़ाया। अब आपके पास रहा ही क्या? [आशिर्वाद] सब कुछ तो चढ़ा दिया। द्रव्य चढ़ाया तो मैं आपसे यह पुछना चाहता हूँ कि अपने द्रव्य के साथ तो ठीक है, पराये द्रव्य के साथ कैसे रहेंगे? ऐसी स्थिति सभी के लिए सोचनीय है। अब चढ़ा दिया - चढ़ा चुके। वह मंगल द्रव्य था पर अब उस ओर दृष्टि जाती ही नहीं।

उसी प्रकार सब संसार को छोड़ना है। सब छोड़ना चाहते हैं तो दो बातें हैं - यदि धीरे - धीरे मोह को तोड़ोगे तो धीरे - धीरे मिलेगा, सब छोड़ोगे तभी सब प्राप्त कर सकते हो। एक साथ छोड़ नहीं पाते क्यों कि गांठ बंधी हुयी है। जिनका विवाह हुआ उनको पुछ लो। जब फेरे पड़ते हैं उस समय जो पल्ला होता है एक - दूसरे का उसमें गांठ बांध दी जाती है। अब एक नहीं खिसक सकते, दोनों आयेंगे। क्यों ठीक कह रहा हूँ न?

ब्रह्मचारी जी बतायेंगे (इर्व में शादी A.R.Jain)

बाकी सब तो इन्हीं को पुछना पड़ेगा। उस गांठ को ज्यादा

कसकर नहीं बांधा जाता मतलब जब चाहे उसे खोल सकते हैं।

जब छोड़ना ही है तो घर से वह बाहर निकल जाता है। धीरे-धीरे स्वामित्व को छोड़ता चला जाता है। इसी प्रकार का अभ्यास करता रहता है। मेरा साम्राज्य मेरे पर है, पर वे साम्राज्य करना अच्छा नहीं, ये इतिहास है। एक व्यक्ति हमारे सामने दुर्लभ-दुर्लभ इतिहास की बात हमारे सामने लाकर देता है, उसी में से एक बात कह रहा हूँ।

15 हजार वर्ष का इतिहास खोलकर देख ले भारत ने किसी भी राष्ट्र पर अतिक्रमण नहीं किया, हाँ दूसरे राष्ट्र ने यदि भारत पर अतिक्रमण किया तो ये प्रतिक्रमण कर लेता है। ये सिद्धान्त है भारत का। मुनि-आर्यिकाओं को प्रतिदिन तीन बार प्रतिक्रमण करना ही होता है। मतलब मात्र प्रतिक्रमण का पाठ नहीं किया जाता, भावों से प्रतिक्रमण करते हैं। कहा भी गया है- "कृतदोष निराकरणं प्रतिक्रमणम्"।

दोषों को दूर करने के लिए प्रतिक्रमण किया जाता है। ये संस्कार भारत में ही है। इसलिये गांठ पर डबल गांठ नहीं बांधो अपितु उस गांठ को थोड़ा सा ढीला करो। आप अकेला अवतरे- दो अर्थ है इस पाठ में - एक तो स्वयं अकेले ही जन्म लिया, अकेले ही जाना है। बुरा कुनबा साथ

नहीं जा सकता।

(दूसरा जो अकेला हो जाता है वह तर जाता है।) जैसे एक राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र जाते समय बीजा बनवाया जाता है। बीजा से ही उस राष्ट्र में प्रवेश मिलता है, यहाँ की मुद्रा यहीं रह जाती है। इसी प्रकार आत्मा के गौरव के साथ रहना है तो अभी से अपनी तैयारी करना शुरु कर दो। 15 हजार वर्ष तक भारत ने अतिक्रमण नहीं किया, जंगल में भले ही रहना पड़ा किन्तु किसी के सामने हाथ नहीं फैलाया, मांगा नहीं, न ही छीना झपटी की।

किन्तु हम अपने इतिहास को देखें। हमारा इतिहास ही ऐसा है, यह छीना-झपटी से ही आया है। अब तो इसे छोड़दो। यह बिल्कुल सीधा रास्ता है। इसमें भटकना है ही नहीं। जंगल में तो भटक सकते हैं, भटकते हैं पर यह तो सीधा है। महाराज हमें दिखता नहीं? परिग्रह छोड़ने पर दिखेगा। इतना ही पर्याप्त है।

आओ द्रव्य चढ़ा दिये। स्व द्रव्य पर दृष्टि डालो। बाहर जो निगाह जा रही है वहाँ से अपनी दृष्टि हटाओ तभी स्व के भीतर का दिखेगा। "संसार से आँखों को फेर देना मात्र ही प्रतिक्रमण है।" इसे अवश्य ही ध्यान में रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जयार्नं

7-9-18 "स्वयं सेवक बनो - नेता नहीं" प्रातः

देव गति में वैसे स्वर्गों की अपेक्षा संख्या 16 है। बाद में विशेष देव होते हैं जिन्हें अहमिन्द्र ही माना जाता है / होते हैं। अब पहले स्वर्ग से आगे-आगे के स्वर्गों के देवों का रूप, लावण्य, स्पर्श, द्युति यानि कान्ति आदि-आदि बढ़वारी होता है। "उपर्युपरि" कहा। सुन रहे हो? (हाँ) कौनसे स्वर्ग जाना चाहते हो? तय कर लो। वहाँ से लौटकर इधर ही आना पड़ेगा। अब एक प्रसंग हम बताना चाहते हैं।

वे सुगन्ध से भरपूर रहते हैं पर उससे भी तृप्त नहीं होते हैं। केसर भी रहता है वहाँ पर। आज आप लोग केसरिया पहनकर आये हो ना? पानी में केसर घोल दिया। गन्धोदक नहीं बना? क्यों? गन्ध भी है और उदक तो है ही। फिर उस केसर से क्या मतलब है? उस केसर में गन्ध है ही नहीं जो यहाँ पर है। तप की सुगंध। यहाँ जब अभिषेक करते हैं तो सौधर्म इन्द्र में पहले कलशी में ले लेता है।

यहाँ पर गन्धोदक है, वहाँ गन्धोदक क्यों नहीं बनता? वो भी देवता है, यहाँ धरती के देवता हैं। इस धरती के देवता के द्वारा थोड़ा सा भी जल स्पर्शित हो जाये वह गन्धोदक बन जाता है। उसके सामने अन्य किसी भी खुशबु की आवश्यकता नहीं रहती। भगवान का स्पर्श पाते ही वह क्षीरधारा

सुगन्धित धारा में परिवर्तित हो जाती है।

इसलिये वह इन्द्र भी बार-बार कहता है जल्दी बुलाओ। वहाँ क्यों गये थे? महाराज हमने सोचा वहाँ अच्छा लगता है। अच्छा तो यहीं हैं। तभी तो स्पर्शमात्र से वह जल की धार सुगन्धित हो जाती है, फिर दूसरे द्रव्य की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इसलिये कभी भी पंचेन्द्रिय विषयों की बात मत करो, यहाँ तो ये सब यूं ही बिखरे पड़े हैं।

तपस्या से जो सुरभि फूटती है, सो वह स्वर्ग के देव भी उस गंध को पाते ही भ्रमर की भांति आ जाते हैं। आज विदिशा से लोग आये हैं। हम आप लोगों से मतलब नहीं रखते, हम तो शीतलनाथ से मतलब रखते हैं। मध्यप्रदेश में मात्र एक ही क्षेत्र ऐसा है जहाँ शीतलनाथ भगवान का गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणक हुआ। समोशरण भी आया। सब कुछ हो गया, अब रहा क्या?

ऐसे उस शीतलनाथ भगवान के क्षेत्र से जनता आयी है। फिर भी जनता चुनाव लड़ती है। मैं बनूं - मैं बनूं होड़ लग जाती है। अच्छी बात है - क्यों लोकिन बनकर भी सेवा करके जीवन को कृतार्थ करना चाहिये। आप कभी भी क्षेत्रों के अधिकारी नहीं बनना, सेवक बनना। हमसे आकर बोलना - हम तो सेवक हैं। सौधर्म इन्द्र भी जन्म कल्याणक मनाकर गया। ध्यान रखना। उससे

भी बढ़कर आपका जन्म है।

यह धार्मिक स्थान है, यहाँ हार-जीत की कोई बात ही नहीं। इसमें हारकर भी जीत है, और जीतकर भी हार है। भगवान के चरणों में अपने को किन्नर मानकर सेवा करो। उनकी क्या सेवा करोगे। ये तो आप द्वारा स्वयं की ही सेवा है। स्वयं सेवा से बढ़कर कोई दूसरी सेवा नहीं होती।

इसी से शब्द की सेवा सेवी, धर्म की सेवा भी तभी होगी। धर्म की सेवा करना चाहते हो तो सभी आपस में मिलकर रहो। धर्म के नाम पर सभी एक होकर काम करो। शीतलनाथ के मन्दिर में बहुत विलम्ब हो रहा है, अब विलम्ब नहीं करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

संलेखना टिप्स - (जयसुख भाई की समाधी/संलेखना पर)

(1) अपने किये गये अनर्थों को याद करो।
(2) संसार एवं शरीर का चिंतन करें अर्थात इनके स्वभाव को याद करने से वैराग्य दृढ़ होता है।
(3) संलेखना के पांच अतिचारों का बार-बार स्मरण करें, उससे बचे।
(4) शरीर के भीतर मल न जमने दें। ऐसा ही निर्दोष पथ्य ग्रहण करें।
(5) मन को मजबूत रखें, उसके दास न बनें।

संवेग

□ "जगत काय स्वभावौ वा वैराग्यार्थम्" इस सूत्र को याद रखो। वैराग्य दृढ़ होता है।

○ आरोग्य का मतलब आपका वैराग्य कैसा है? वैराग्य यदि दृढ़ है तो आरोग्य तो बढ़ेगा ही बढ़ेगा।

○ उधार की पूंजी नहीं लगाना अर्थात लोन लेकर पूंजी मत लगाना। संलेखना अथवा मोक्षमार्ग में तो स्वयं का उत्साह ही कार्यकारी होता है।

○ अशुचि भावना का चिन्तन करते रहो। गुजराती में दोहा सुनाया - बड़े खुश हुये।

○ आज आ० श्री ने णमोकार मन्त्र चत्तारि दण्डक सहित क्षपक से सुना। आ० श्री ने कहा दिन में 2-3 बार इसे बोलें, जिससे कण्ठ अवरुद्ध न हो। कण्ठ को काम में लेते रहे एक दिन तो बोलना वैसे ही बन्द हो जायेगा।

□ गरम पानी पीने से आँतो की भी सिकाई हो जाती है।

○ भाव विशुद्धि होना अति आवश्यक है - बाहरी ऐसे सभी निमित्तो से दूर करदेना चाहिए। इसीलिये आ० श्री ने परिवार की महिलाओं, यहाँ तक कि प्रतिभास्थली वाली दोनो बहनों को भी दूर रहने को कह दिया।

○ चतुर्थ काल के श्रावक से भी ज्यादा पंचम काल के श्रावक की निर्जरा हो रही है, क्यों कि यहाँ कोई फैसेलीटी है ही नहीं।

○ edit करना है - C.A हो आप। लेखा - जोखा रखते रहो, क्या-2 हो रहा है। ○ प्रतिपल नया - नया अनुभव हो रहा होगा?

(ये सभी Tips 1-9-18 से 20-9-18 तक के हैं)

21-9-18 संलेखना गतिविधी -

- मौसम अच्छा है - द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के अनुसार काम कर लेना चाहिए।
- मनुष्य से मनुष्य नहीं बनते (व्रती)। वहाँ तो संयम छुटने वाला है। देव बनने पर विदेह की यात्रा खुब (युंही) होगी। वहाँ सीमन्धर स्वामी के दर्शन होंगे।
- आज तक एक ने भी याद नहीं किया, वहाँ पर जाने पर सब भूल जाते हैं।

22-9-18

- बुद्धिपूर्वक उपवास लिया। उत्साह के साथ।
- आर्यिका ने समवशरण की महिमा बतायी। भगवान पंचांगुल अधर में रहते हैं। यहाँ तो सब परोक्ष रूप से करते हैं, वहाँ साक्षात् (प्रत्यक्ष) दर्शन मिलेंगे। हाँ! यहाँ का स्वाध्याय - चिंतन - मनन वहाँ काम आयेगा।

23-9-18, अनन्त चतुर्दशी, रविवार, ब्रह्मचर्य धर्म,

- आज बोलने में बाधा हो रही थी।
- उपवास उत्साह के साथ लिया।
- मध्याह्न 3:30 बजे के लगभग उल्टी श्वास चलना। बुद्ध मुनिराज जो मंच पर नहीं गये थे। कक्ष में पहुँचकर संबोधन और निर्मल भावों के साथ हवर्गारोहण करना।
- उत्कृष्ट द्रव्य, उत्कृष्ट क्षेत्र, उत्कृष्ट काल एवं उत्कृष्ट भाव होना।

खजुराहो - पर्युषण
"दस धर्म - प्रवचन"

15-9-18 उत्तम क्षमा धर्म मध्याह्न

- गृहीत मिथ्यात्व - अगृहीत मिथ्यात्व में अन्तर है - याद रखें।
- यशोधर मुनिराज - श्रेणिक द्वारा गले में सर्प - डण्डे कुत्ते - मुक्त प्रयोग।
- कर्म गेंद की भांति है जो टकराकर हमारे ही पास आना है।
- निमित्त में असली (वास्तविक) निमित्त हमारे अपने परिणाम है। उसी के आधार पर कहाँ नरकायु - कहाँ तीर्थंकर प्रकृति बंधा।
- मुनिराज की क्षमा - आँख भी नहीं खोली - "विपाकोऽनुभव"
- कर्मोदय में ज्ञानी पीड़ित होता है पर अज्ञानी - कर्म का उदय मानकर स्वीकार कर लेता है।
- नेता बनने के उपाय - ये ही क्षमादि दस धर्म है।
- धन्य है वे - जिन्होंने क्षमा को ओढ़ा नहीं - क्षमा को जीया है, प्राण के रूप में धारण किया है।
- भावों की मजबूती आने पर कर्मों में पिघलाहट होती ही है।
- हमें मात्र वाचन नहीं करना है - अपने भावों के द्वारा पाचन करना है।
- हम बहीखाता नहीं - खाता वही - वही है। उसे देखकर अनुयोगद्वार को आने पर कलेजा फट जाता है, उस समय मोक्षद्वार खुलता है।
- ये अनादि का चक्र बाधि अन्तर = निरन्तर चल रहा है।
- उत्तम क्षमा का मतलब दूसरे के क्रोध को ठण्डाई आदि की तरह पी जाना है।
- क्षेत्र का प्रभाव - नरक में - अच्छे कार्य में उत्साह रहता ही नहीं। (स. सि.), फिर भी किसी अपेक्षा देवों से अच्छे, कैसे - नारकी सूक्ष्म नहीं - एकेन्द्रिय से आगे पंचेन्द्रिय नहीं। मात्र गर्भज ही होंगे। गर्भज के लिये बहुत पुण्य चाहिये। पुण्य उसे मिलता है पश्चात्ताप से - दुबारा नहीं करेगा। देव (सौ. - ईशान) एकेन्द्रि भी होते हैं।
- मोह के द्वार जब तक बंद नहीं करोगे तब तक मोक्ष के द्वार नहीं खुल सकते हैं।

० "परे मोक्षहेतु" तो "अपरे मोक्षहेतु" यह जिनवाणी का वाक्य है।
० ऐसे प्रशस्त कर्म को बांधिये जिसमें निकाचितपना पड़ जाये। निकाचित का मतलब जिसके उदय में अपने भावों को मोक्षमार्ग में लगा सके।
० आयु कर्म के लिए मध्यम लेश्या स्थान माना है। अतः ज्यादा वर्षा भी नहीं - अल्पवर्षा भी नहीं। आप कुशल किसान बनिये। विश्व कल्याण की भावना रखें। कषाय को कूड़ा कहा है।
० चलना भी पति पर क्रोध नहीं - मतलब क्रोध प्राणी का स्वभाव नहीं। यह नैमित्तिक भाव है। प्रतिकूलता में बरस जाते हैं।
० अब हम ज्यादा देर न करें - जो क्षण मिले हैं उनका प्रयोग करें। जो आदर्श है उस मार्ग पर चलें।
० कल की चिन्ता से हृदयावली में अनेक प्रकार के निबेकआ जाते हैं। आपके साता का उदय था आरी माइक काम कर गयी

15-9-18 उत्तम मार्दव धर्म मध्यांह

० जब तक हम जिसे चाहते हैं, उसका उपाय भी (रास्ता) सही होगा तभी प्राप्त हो पायेगा।
० दोष एवं गुण को जानना जरूरी है। उपाय एवं अपाय दोनों को जानकर हेय - उपादेय को ग्रहण करें।
० हम जैसा सोचते हैं, वैसा ही परिणाम निकलने वाला है।
० कदम अन्यत्र न रखें। कहाँ रखें? पद चिन्हों पर पांव रखकर आगे बढ़ना चाहिए। अपने यहाँ शाश्वत तीर्थ सम्मेद शिखर में २० तीर्थंकर के चरण नहीं बने हैं - चरण चिन्ह बने हैं। उन चिन्हों से हम भी उसे पा सकते जिसे उन्होंने पाया।
० इसे आप कुछ देकर खरीद नहीं सकते - खरीद नहीं तो बेच भी नहीं सकते। चलते नहीं अब तो उड़ते हैं। उड़ने के लिए भी तो रास्ता चाहिये।
० आज सभी पढ़े लिखे किसी न किसी के चक्कर में आकर चक्कर लगा रहे हैं। परिक्रमा लगाओ चक्कर नहीं

0 शाश्वत तीर्थराज की परिक्रमा की जाती है इसे चक्कर नहीं कहा। समझो इस रहस्य को।

0 मार्दव का अर्थ है- कोमल मृदुभाव: इति मार्दव:।
यथा- स्वर्ण, वह बहुत कोमल होता है।

0 स्वर्ण की परख कैसे- कसौटी से, तोड़कर भी परखकर। स्वर्ण थोड़ से टूटता नहीं- फैलता चला जाता है जिसे वर्क कहते हैं आप लोग। 0 स्वर्ण का मृदुत्व ही उसका धर्म है।

0 सुनते हैं- कुन्दन में सोने के साथ सुगन्ध भी होती है। सोने पे सुहागा। "कुन्दकुन्द का कुन्दन" कुन्दन का मतलब पेड़ा भी यह नहीं तो समयसार की सुगन्धी से मतलब है।

0 मृदुता को हम देख भी सकते हैं, पा भी सकते हैं उसे जीवन में उतार सकते हैं। प्रत्येक के प्रति कोमल बनोगे तब।

0 गुणग्राहयता तभी आयेगी - ये हमें चोरी ही सीखाता है।

0 विनय सीखाता है मार्दव 0 गुणीषु के लिए पक्षपात हो जाता है।

0 पूर्व की वह सुगन्धी कहीं खो गयी, मात्र साहित्य में ही दर्शन होते हैं। चाहे - शिक्षण हो अथवा व्यापार हो।

0 मार्दव धर्म अपनाने के लिए हमें प्रदर्शन से बचना चाहिये।
उदाहरण → "जो नदी बड़े पाट को लेकर होती है जल्दी सूख जाती है। दूसरी नदी का पाट छोटा उसकी गहराई बहुत होती है उसमें मौका देखकर नौका भी चला सकते हैं।"

मार्दव धर्म हमें बहुत गहराई तक ले जानेवाला होता है। किसी भी तीर्थंकर अथवा महापुरुष में मानी नहीं था, पर आज उलटा हो रहा है। विपरीत जाना मनुष्य ने स्वभाव बना लिया है। इसे मन वचन काय कृत कारीत अनुमोदना से त्याग कर दिजिये।
"हम जो बाहर दिख रहे हैं वह हम नहीं हैं ये विश्वास गाढ़ा कीजिये। यदि विश्वास गाढ़ा नहीं हो रहा तो समझ लिजिये अभी धर्म आया ही नहीं है।"
सही दिशा में व्यय करो- अपव्यय न करो तभी बड़े हो सकते हैं। बड़े लोग कभी भी धन को छुते भी नहीं थे। आज...

० राज कोश रखते थे। मान नहीं प्रमाण था उनके पास। प्रमाण का मतलब परिमाण होता है।
० छाती कूटकर बोलने वाले - तीर्थंकर हमारे हैं - आप सोचो उस वेश के हो या नहीं। हाँ नाम तो रख सकते हो - महावीर - शान्ति -
० मान भीतरी परिग्रह है, बाहरी नहीं इसलिये इसे महाव्रती को छोड़ देना चाहिये। ० चक्रवर्ती भरत (भारत) नहीं छोड़ पाया।
० क्षेत्रों पर जाने से - दर्शन से हमें उन तीर्थंकरों का इतिहास याद हो आता है, अपनी तुलना उनसे करके आगे बढ़ते हैं।
० इसलिए अनुकरण करो - तभी दूसरों पर प्रभाव डाल सकोगे।
० आप तौलिये - कम मत लिखिये। असत्य से काम नहीं सत्य से ही काम होगा। मृदुता से ही काम बनेगा, कठोर मत होइये।
० आप हँसी-मजाक में नहीं, गम्भीर होकर बोलिये एक ही बार में असर पड़ेगा। ० नदी को किस ओर प्रवाहित करना है, यह जानना जरूरी है - उत्तर में मत मोड़ो, पूर्व में तो कुबेर का खजाना होगा
० आप जी रहे हैं, पर आप में धर्म जी रहा है या नहीं।
० खुशबु शपथ से नहीं बतायी जाती, वह तो प्रयोग करते जाओ कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।
० धर्म जीवन्तता का नाम है। बहता पानी मीठा रहता है, समुद्र में मिलते ही नर्मदा बड़वा में खारी हो जाती है
० आपकी मृदुता कैसी है - लवणमिश्रित अथवा लवणाकर
० मीठा पानी हल्का होता है - चना भी सीज जाता है, अन्यथा गुरली - राजस्थान में गोरड़ (गोल्ड़) मूंग रहते
० कालमान के अनुसार दश लक्षण धर्म पोथी में रखते हैं। दस दिन उसे याद कर लेते हो।
० तिपाई पर प्रतिनिधी (कैमरा) लगा रखे है - वह सुनता नहीं है। विदेश भी जा रहा है - ① तीर्थंकर कौनसे विदेश गये। ② घर में होली हो और विदेश में दिवाली मना रहे हो, क्या स्वीकारोगे। इसलिए मौन हो जाइये। ० खान-पान, पहनावा रहन-सहन पर विचार से चर्चा। ० स्वाभिमान हो, समालोचना।

□ ज्ञानसागर जी महाराज का तभी आशीर्वाद मिलेगा जब पुण्य सौंचेंगे।
○ मार्दव से हम जीवन को तभी अलंकृत कर पायेंगे।।०००

16-9-18 रविवार उत्तम आर्जव धर्म मध्याह्न

○ आर्जव धर्म का परिचय कैसे देऊँ और किसे देऊँ यह प्रश्न हो
○ सीधे बने बिना कोई भी आत्मा सीजित नहीं है। (बुंदेलखंड)
○ कोई भी गुरु देख लेते हैं होनहार शिष्य को - कहीं माल निर्यात न हो जाये। भद्रबाहु की कथा प्रसंग - 14 कांच की गोलियों एक के ऊपर एक रखना - गुरुजी द्वारा देखना / अंतिम श्रुत केवली - गुरुजी ने भी सुनाया। अन्न पान में समय गुरु कहकर बतायी।
○ अंश जैन (संदेश Rajk) को जुनियर साइंटिस्ट - 11 वर्ष में उपाधी मिली
□ पढ़ना - लिखना - श्रवण - स्मरण ये बाह्य हेतु हैं पर अन्तरंग हेतु का भी क्षय-उपशम - क्षयोपशम होना जरूरी है।
□ आप मन को कानों में बिठाकर (दुकानों में नहीं) सुनें तब कार्यसिद्ध
□ ऊहापोह करो - मिथ्यात्व का अपोह करो। अर्थ की ओर ध्यान रखो
□ हम टेढ़े हैं - पहले इसे स्वीकारना होगा। भले ही विमान से आये हो। आर्जव को सुनने के लिए वि - मान होना आवश्यक है। आर्जव की प्रमाणिकता वि-मान पर आधारित है।
○ दस धर्म अलग - अलग नहीं, एक के साथ दूसरे का संबंध है। डोरे की भांति हैं तभी मणी बंधे हैं।
○ मैं पापी हूँ, दुरात्मा हूँ, महामूर्ख शिरोमणी हूँ ऐसा रोते हुये स्वीकार करो तभी प्रभु बन सकते हो।
○ बालक के पास बहुत क्षमता है, बस गलत संगती से बच जाये। इसीलिए बीज शरद फल भोगवे - किसान पहले से ही अलग रख देते हैं
□ आर्य संगति की आज बड़ी आवश्यकता है। कुछ लोगों का कहना है कि आर्य बाहर से आये हैं। आप हाँ कह सकते हैं पर जिनवाणी नहीं।
। राष्ट्रपति के ड्राइवर के पास जाना चाहते हो - गुणी के साथ रहने से गुणी तक पहुँच सकते हैं।
। पूर्वजों ने जो इस विश्व की अनोखी निधी को रखा। आज स्वर्णिम की आप सभी ने संकल्प लिया।

० पहिले की प्रशस्ति - जो जिर्णोद्धार करेगा मैं उसका दासानुदास रहूँगा। क्या ये स्वर्ण अक्षरों में लिखने लायक नहीं है। संभव है इसीलिए इस क्षेत्र का नाम "स्वर्णोदय" रखा गया है।
० लाखों जीव जिसके माध्यम से तर गये है। उसे बनानेवाले ने ऐसी भावना रखी। और कुछ भी नहीं चाहा।
० समूह में बहुत शक्ति होती है - इसलिए समय रहते कुछ कर लो। "कलहौ एकता बलम्" = कलीकाल में एकता ही बल है।
० आप बीड़ा उठा लो तो सब संभव है। हम तो केवल आशीर्वाद, भावना ही दे सकते हैं।
० हम कैसे करेंगे - चिंता न करो, देवों द्वारा भी व्यवस्था होती है, यहाँ वर्षों बाद इतनी वर्षा हुयी है। कोई आगे भर हो जाये वो साथ देने को तैयार है।
० मनुष्य ऐसा है जो सभी मर्यादायें पार कर सकता है। इसलिए आगे भर हो जाये, देव तो साथ देकर अहोभाग्य मानते हैं। आप तैयार हो जाओ - सहयोग करने वालों की कमी नहीं
० आप भी पुण्य का उपयोग कर लो। पुण्य होने पर भी उपयोग नहीं करोगे तो मात्र पछतावा ही हाथ लगेगा।
० देव जल्दी प्रभावित नहीं होते, क्यों कि वितराग प्रभु के पास रहते हैं न। हाँ पर आप उदास मत होइये।
० श्रावक का भाग्य था जो चातुर्मास मिल गया। अब उस दास के शिलालेख के सामने जाकर संकल्प तो लो, हम इस कार्य को करेंगे।
० दिल पवित्र हो जाये तो देखो कार्य क्यों नहीं होगा?
० यथा राजा तथा प्रजा → आप आज्ञा कर दें तो हम सब करने को तैयार है। हस्तसाल के राज में यह हुआ था।
० आप राजा को बनाने वाले हैं - अपने गौरव को मत भूलो।
० पुण्य कार्य में लगना महान तपस्या का फल है।
० भगवान के दरबार में झाड़ू लगाना - वो झाड़ू नहीं पिच्छी से कम नहीं है।

o पुण्य की स्थिति समोशरण की तरह है। कब बिखर जायेगा वह पुण्य इसलिए काम में ले लो अन्यथा कुछ भी शेष नहीं रहेगा!
o गाइड का भी पुण्य है जो आपकी भाषा उन्हें, उनकी भाषा आपको समझाता
o अन्त में उदाहरण - सुई में धागा पिरोने की (एकाग्रता के साथ)
o सूत्र को आत्मा में पीरो दो। उद्धार हो जायेगा।
o वचन बहुत कमजोर होते हैं, पर गतिविधी को बहुत देने वाले होते हैं।

17-9-18 उत्तम शौच धर्म महियाल

o बाहरी स्वच्छता के साथ भीतरी स्वच्छता भी हो तभी भारत विश्व के लिए दर्पण का काम करेगा।
o आइना भी दर्पण का नाम है - धूल होने पर मुख नहीं देख पायेगा।
o आरोग्य के बिना वैराग्य टिक नहीं सकता। आरोग्य के साथ वैराग्य की ओर देखने वाला भारत ही है।
o शरीर कभी भी शुद्ध नहीं - उदाहरण - मिट्टी की दीवार को पानी से जितना धोयेंगे उतना ही मिट्टी निकलती जायेगी।
o जैन दर्शन बाहरी स्वच्छता के साथ भीतरी स्वच्छता का भी ध्यान देता है।
o श्रमण तो नहाते ही नहीं - ये गलत धारणा है - धूप (सूर्य) स्नान, Sun light, वायु स्नान। आप ये करते ही नहीं इसीलिये रोगी है।
o दवाई विलायत से आती है - विलायत मतलब फोरेन (फोरन उत्तर देशिया)
o Re-cycle → साइकिल अच्छी है Re-cycle अच्छा नहीं।
नदियों को जोड़ दो आपस में - बहता पानी - रमता योगी
रमते पवनवत् → वायु की भांति बहते रहो। चिपको नहीं।
o लौकी को अमृत कहा है - अनुभूत भी किया है। आयुर्वेद में भी स्वीकारा
o सिंथेटिक दूध का सेवन। भारत उपदेशक बन गया - स्वयं नहीं स्वीकरता
o धाय, माता - पिता द्वारा सिर में तेल आदि से मेहनत की तब बालक के सिर में काले-काले घुंघराले बाल आते हैं - (शांति बाबा)
o देश की किसी को चिंता नहीं है - उपदेश क्या करेगा?
o गृहता के कारण - प्रशासन का ध्यान ही नहीं है। दवाइयों का अंधाधुंध प्रयोग। चिकिन सुविधा, स्नायुपक्षु.
o डॉ. अनिल सिंघई - सागर (M.D.) का उदाहरण - पलारव जभा ओपन हार्ट सर्जरी होना है। 5% भी बिल नहीं बनी।

० मैं सोचकर आया था - इसे तो परोसना ही है। इसको सब तक भेजेंगे।
० संविधान किस काम का है? ऐसे लोगों को (डा०) कभी भी छोड़ना नहीं चाहिए।
० शुद्ध मच्छ एवं तंदुल मच्छ - उत्तम संहनन दोनों पर दृढ़ता का भाव होने से ३३ सागर तक दुःख प्राप्ति, १६ वें स्वर्ग में देव भी।
० नेताओं के पास भी ये सब बिन्दु भेज सकते हो। तभी शुचि आयेगी।

□ ५ □

18-9-18 उत्तम सत्य धर्म मध्याह्न

० सतयुग हो या कलयुग सत्य बिना कुछ नहीं हो सकता, असत्य को कभी सत्य बनाया नहीं जा सकता है।
० सत्य के लिए संघर्ष होना आवश्यक है, असत्य से जीवन चल नहीं सकता
० सत्य को कहा - दिखाया नहीं जा सकता आस्था से / महसूस किया जा सकता है। संकल्पित हो जाता है।
० कन्नड़ भाषा में कहावत - अर्थ - कानों से सुन लिया आंखों से देख लिया फिर भी मुख से बोलने से पूर्व सोचो तभी सत्य का पालन हो सकता है। न्यायालय में भी इसका प्रयोग - इंटेन्शन / अभिप्राय
० संकल्प पूर्वक हिंसा का त्याग करो - तभी तो पानी छानकर पीता है और धरती को ऐसे ही पिलाता है, क्यों की वह शक्य नहीं है
० सप्तम प्रतिमाधारी तक वर्षाकाल में धरती पर हल चलाता है, क्यों कि आरम्भ का त्यागी नहीं है।
० किसी के लिए हानि / आपत्ति आ जाये ऐसा सत्य मत बोलो।
० सत्य के लिए पौराणिक कथा सुनाता हूँ - एक सेठ जी दो पत्नियाँ - एक के सोने गाय के सींग में बच्चा → प्रत्यक्ष है पर सही नहीं → पंचायत - 1 माह बाद - उबलते तेल में से गोला निकालना गाय के द्वारा - सत्यमेव जयते - पशु भी सत्य का पालन करता है।
० हृदय में पीड़ा हुये बिना आंखों में से पानी नहीं आ सकता है।
० दिल को साफ करने की कोशिश करो / उसी को अभिप्राय कहते हैं।
० महाव्रती हो नहीं बोलोगे तो चलेगा। इधर-उधर की बातों पर ध्यान न दें।

० एक शब्द से क्या नहीं हो सकता - महाभारत ही होता है।
० तीर तो निकल गया - वाणी का घाव - पूर्व कोरी तक वह दाग दिखेगा।
० सफेद झूठ नहीं - झूठ तो काला ही होता है।
० बोलो कैसे बोलें - पांच भावना के अनुसार बोलो।
० सत्य का पालन वही कर सकता है जो संयम का पालन करता हो तभी "सत्यमेव जयते" सिद्ध होता है।
० गांधी जी - जो धन आपके पास है उसके आप मालिक नहीं, जनता की धरोहर है।
० भारत का रुपया डॉलर के सामने नीचे जा रहा है, उदाहरण - पानी में चाँदी का सिक्का पहले डालते थे तो वह डाइरेक्ट नहीं यु-यु पलटता हुआ नीचे जाता है।
० अमेरीका से अपने को क्यों नाप रहे है। यहाँ का इतिहास देखो - क्या कमी हो गयी है कैसे पूर्ण हो सकती है उस ओर प्रयास करो। आज वह भी विकासशील श्रेणी में आ गया है।
० राजस्थान की सर्दी - दीवाली का लाइ कोट पहनकर ही चढ़ाते हैं। सर्दी जो खा लेता है वह गर्मी को पचा सकता है। एक व्यक्ति बगलबन्दी पहनकर आया - जितना चाहे इतना दाइट कर लेता है। ऐसा ही अपने देश में करीये।
० विजय सत्य की ही होती है - असत्य की विजय नहीं होती, भले ही संघर्ष करना पड़े।
० आज सत्य की घोषणा में इतना काल व्यतीत की वह भी असत्य हो रहा है।
० अब भैया पालन ही कर लो। वे भी संयमासंयम का पालन, आपका घर उससे सुरक्षित रहता है।
० शास्त्रों में घर में पशु भी सूतक - पातक पालन करते थे।
० अब आने वाले समय में इतनी औपचारिकता भी नहीं - हम भी उसी स्वर्ग में जाकर मिल लेंगे। यहाँ तो अच्छे से मिले नहीं।
० यदि न्यायालय में कोई व्यक्ति जायेगा ही नहीं तो क्या होगा? सोचो।
० सर्वोच्च न्यायालय के गौवध के फैसले को बदलना - सब संभव है।

० अग्नि-परीक्षा होती है। हमेशा तैयार रहिये। विद्यार्थी तैयार रहता है।
० सत्य की मर्यादा होती है- ज्यादा कहना भी ठीक नहीं।

29-9-18 उत्तम संयम धर्म मेहयाल

० नदी तटों का उल्लंघन करती है- समुद्र कभी अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करता।
० जैसे नदी में बाढ़ वैसे ही आत्मा में भी असंयम की बाढ़ आगयी है।
० आज आप असंयम की बात सुनने के लिए तैयार हैं- हे असंयमी, धन्य है। फिर भी संयम की बात सुनना भी शुभ लक्षण है।
० बड़े लोग भी इस संयम को नहीं हो पाते छोटे लोग (हम में) भी तैयार हो जाते हैं। कमजोर भी बलजोर होता जाता है।
० उदार भाव वाला है- औदारिक शरीर, उद्धार भी इसी से संभव है।
० शरीर कभी असंयमी नहीं होता, असंयमी होता है तो मन होता है।
० लगाम, अंकुश, नकेल-ऊँट, नत्थी-पाड़ा - ये सब बस में हो जाते हैं पर मन को बस में करना बहुत ही कठिन है।
० मन को बाहर ही रखा जाता है, उसे भीतर ला ही नहीं सकते। उपयोग को स्थिर करने हेतु उसे बाहर ही छोड़ा जाता है।
० आप मन वाले हैं इसीलिये मनमाना कर रहे हैं। मैं नहीं समझा सकता, हाँ कथंचित् मैं अपने मन को समझा सकता हूँ।
० मन को किसी का परिचय मत देओ। अपरिचित बना दो, बालकवत्। बालक को सोरठा नहीं समझ में आता।
० बहुत दुर्लभ है संयम मार्गणा - अनन्त जीव हैं पर उसमें देव असंख्यात संयम का लेशमात्र भी ग्रहण नहीं कर सकते।
० क्षायिक स. द. मर सकता है/मरता है पर क्षायोपशमिक स.द. भी संयम के साथ हो तो मरण नहीं हो सकता क्यों कि संयम मार्गणा में मरण नहीं होता।
० तप के बिना ऋद्धियाँ प्राप्त नहीं हो सकती (पहले द्वीपायन को मुनि बनाओ फिर द्वीपायन को हम देख लेंगे।
० काल सबको घुमाता है- स्वयं घुम्मकड़ नहीं है। इसी को काल-विजय कहते हैं।

○ "मैं मुनि हूँ" ये भावना/संकल्प अन्तिम समय तक उसे जाग्रत बनाती है। ऐसी ही प्रज्ञा-प्रतिष्ठा की जाती है।

○ द्विपायन मुनि की कथा।

○ नशा मतलब गहलभाव - प्रमत भाव। अप्रमत होना जरूरी है।

○ विपरित ज्ञान इसी का नाम है - "विनाशकाले विपरीत बुद्धि"

○ शराबी के पास गालियों के कोश अपने आप ही आ जाता है।

○ सामने वाला होश में हो तो भी जवाब मत देओ फिर होश में न हो तो जवाब देना ही नहीं।

○ भाव परिवर्तन से लेश्या भी शुभ से अशुभ में परिवर्तन हो जाती है।

○ जब दीपक संयमित रहता है तो प्रकाश करता है और यदि भभक जाये तो कोई नहीं बच सकता।

○ द्विपायन मुनि का चित्र - दो अंगुली दिखाते हुये - जैसे हमारे ही ओर देख रहा हो - एक मन्दिर में देखा था।

○ आस्रव के उदय में पानी भी पेट्रोल का काम करता है।

○ अज्ञान हमारे वर्तमान काल में भी अंधकार फैला देता है।

○ चतुर्थ में मरण आगे थोड़ा सा भी ऊपर (संयमासंयम) हो गये, अब मरण नहीं हो सकता; ये अकाट्य नियम है।

; असंयमी हो आप - मेरा आशिर्वाद भी काम नहीं करेगा, क्योंकि आप मत-उन्मत्त हो। मन वाले होकर मत्तवाला बन जाता है।

चतुर्थ गुणस्थान वाले के पेच (नट-बोल्ट) ढीले रहते हैं, प्रतिभा आदि ले लो जिससे ढीला पेच टाइट हो जाये।

; जहर बिक रहा है, आप खरीद रहे हैं। एक करोड़ लीटर दूध है 50 करोड़ लीटर के पकवान बन रहे हैं। दीवाली के लिए अभी से। क्या हो रहा है? ये प्रज्ञापराध है।

) केवल स्तुति/भक्ति से काम नहीं, कर्त्तव्य करना जरूरी है तभी काम होगा। ○ भारत को गारत में गिरने से रोको।

सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने कहा - "साक्षरता - नागरिक नहीं।

छोटे थे तो - गोली खरीदते उसी के साथ नोट का बंडल (चूर्ण) भी मिलता था।

अनुपात से वर्षा चाहते हो तो - संयम धारण करो, निर्मल मन हो - भ्रष्टाचार न हो।

० सम्यग्दर्शन को सुरक्षित रखना चाहते हो तो कुछ न कुछ संयम धारण कर लो, अन्यथा भगवान के भरोसे तो हो ही। 8/10/0

20-9-18 उत्तम तप धर्म मध्याह्न

० जो मिलता है उसमें संतुष्ट नहीं होता – गर्मी में सर्दी अच्छी लगती है। आदत्या होने पर प्रतिकूलता में भी अनुकूलता दिखती है।

० प्रतिकूलता में प्रभावित न हो इसके लिए अपने भीतर आ जाओ।

० तीर्थंकर भी जो उत्तम संहननधारी है वे भी क्षुधा के प्रतिकार को स्वीकारा

० "मनोनुकूल - आज्ञा दूं कैसे देदूं - बंधा विधी से"

० उस समय वे (रत्नत्रयधारी) भी एक देशव्रत के धारक हो जाता है, जैसे कुन्दकुन्द ने कहा - उन्होंने भी पूर्वाचार्यों से ग्रहण किया।

० इच्छा हो गई वह तप में बाधा डालेगी। "इच्छा निरोधः तपः"

० प्रतिकूल अवस्था में आगम के अनुकूल मैंने यह संकल्प लिया है, इसे आजीवन पालन करूंगा। ऐसा नहीं कि – आयु अन्तर्मुहूर्त बची है अवधीज्ञान से जानकर दीक्षा लेकर केवलज्ञान पा लो नहीं कर सकता।

० आहार के विषय में लेना क्षम्य है पर पंचेन्द्रिय विषय अक्षम्य है। आगम के अनुसार संयम (तप बढ़ाने हेतु ले रहे हैं)

० तपसा निर्जराश्च ← इच्छानिरोधस्तपः, निर्जरा मोक्षश्च हेतुः

० निश्चय (2) नय से नियम लिया (1) तो दृष्ट क्यों? तीर्थंकर (3) भी जानते हैं कि व्यवहार क्या है और निश्चय क्या है?

० लें तप बढ़ावन ← हेय मानकर नहीं लेते। मूलाचार में लिखा है- सर्वज्ञ से यही प्रवाह चला आ रहा है।

० नमः सिद्धेभ्यः" "सिद्धो वर्ण समाम्नायः" वेद भी है श्रुत भी है।

० आहार यदि नहीं करते हैं तो प्राण संकट में आ जायेंगे। अकाल मरण का दोष लग जायेगा।

० भेद-विज्ञान हेतु ज्ञान से पहले भेद को जानो।

० जैसे आज विज्ञान का आविष्कार (इंडेक्शन) बर्तन नहीं तपता सामग्री गरम हो जाती है वैसे ही शरीर को तपाना उद्देश्य नहीं भीतर आत्मा को तपाना है।

0 ध्यान अशुद्ध पारीणामिक भाव है पर उसका लक्ष्य शुद्ध है।
0 स्वाध्याय करो पर आगम अनुसार करो, कृपा होगी अपेक्षा
0 उपादान कारण आभ्यन्तर तप है उस हेतु बाह्य तप भी आवश्यक है।
0 "यस्य न संशय - - तद्व्रतमाचरितस्यं, तुला मा रोहति शरीरमनसि।
0 एक बार में सोना शुद्ध नहीं - 16 बार्री का सोना - 16 बार तप देना पड़ेगा तब स्वर्णपाषाण से प्राप्त स्वर्ण शुद्ध होगा, यही विधी है - चाहे तीर्थंकर भी क्यों न हो।
0 आग्रह - दुराग्रह - सत्याग्रह - हठाग्रह से मुक्त होना आवश्यक है।
0 जीव्हा इन्द्रिय को जीतकर आजीवन रसों का त्याग कर दिया वृषभनाथ भगवान आदि ने।
0 कर्म विजेता बाद में इन्द्रिय विजेता पहले - मनोविजेता पहले आप नेता बनना चाहते हो।
0 कुछ लोगों की मानसिकता है - अन्तिम समय तक भोजन की इच्छा तो बनी रहती है, निःप्रतिकार इसमें कैसे लगायें? शरीर साथ नहीं दे रहा तो इच्छा की पूर्ति हेतु व्यंजन अथवा जो पचे नहीं ऐसा भोजन न लो। हल्का - सुपाच्य (खिचड़ी आदि) लेकर भी उस मुख की इच्छा की पूर्ति हो सकती है।

21-9-18 उत्तम त्याग धर्म मध्याह्न

0 आज का त्याग धर्म दयोदय - दया के लिए / अहिंसा के लिए है।
0 नेपाल में 1 लाख गायों (पशु) की बली, परिणाम - भूकम्प से पूरे नेपाल में तबाही आयी थी - वेदना समुद्घात होता है।
0 नेपाल सरकार ने आगे से ऐसी हरकतों पर रोक लगा दी।
0 जब अति हो जाती है तब इति हो जाती है और अथ का प्रादुर्भाव हो जाता है।
0 वेदना होने पर ही संवेदन होता है। चाहे विश्व में कहीं भी रहो।
0 षट्खण्डागम में आया है - 10 बज गया उस समय जो ध्यान में बैठे हैं उन्हें निरन्तराय आहार मिल जाये (मिले) ऐसी भावना आप यहाँ से पढ़ेंगे सकते हैं।

० सबसे ज्यादा क्षमता मनोवर्गणा के अन्दर हुआ करती है।
० स्वसंवेदन के साथ दूसरे के प्रति भी संवेदन होना चाहिये यही को सक्रिय सम्यग्दर्शन कहते हैं।
० एक मत ऐसा भी - यावत् जीवं सुखी जीवेत् ..... यहाँ भी हो सकते हैं।
० अभय दान के मुख्य दाता हैं केवली भगवान। मन-वचन-काय से किसी जीव को बाधा हो ही नहीं सकती।
० उसका कष्ट कैसे भी दूर हो, - ऐसा भाव करते ही आपका कष्ट स्वयमेव ही दूर होता जायेगा। कुछ भी नहीं करना, भावना कर ही सकते हो।
० जो मिला है उपयोग कर लो - पुण्य का संचय तभी होगा अन्यथा लेकर तो जा ही नहीं सकते।
० रत्नत्रय के जो धारक हैं उसका निर्दोष पालन करते जायें, ज्ञान बढ़ता जावे तप के द्वारा जल्दी-जल्दी मंजील को पायें। ऐसी भावना से भी अपना पुण्य बढ़ा सकते हैं।
० आत्मा की रक्षा इन्हीं भावनाओं से कर सकते हैं। औषधआदि प्रदान।
० पुण्य ही आपको अगले भव में भी विषयों से बचा सकेगा। वह तो उत्तरोत्तर बढ़ता ही जायेगा। फेंक नहीं सकते। बदले में कुछ नहीं चाहता तभी विषयों से बचायेगा।
० अब सक्रिय हो जाइये, निष्क्रिय होना जीव का स्वभाव नहीं है।
० हम दूसरे पर उपकार नहीं, दूसरे के निमित्त से अपने ऊपर उपकार कर रहे हो - "स्वस्यातिसर्गोदानम्", सक्रिय सम्यग्दर्शन है।
० न भूत की स्मृति न अनागत ..... समयसार की गाथा है।
० आपको ध्यान लगाना नहीं आ रहा कोई बात नहीं, धन पैसा नहीं कोई बात नहीं - बस 10 बजे इस प्रकार के भाव तो कर ही सकते हो।
० जब तक उठ-बैठ रहे हो तो दान दे लो बाद में तो आप भी शरीर के दास हो जायेंगे।
० बाहुबली - 1 वर्ष तक उठे ही नहीं, कैसे प्राप्त किया इस काय को - पूर्वभव में औषधदान। वैय्यावृत्ति की उसी से कामदेव सा शरीर अतुल बल मिला
० इस काया को विषयों में न लगाकर विषयातीत बनने में लगाओ।

□ पहले वैद्य लोग गांवों में जाकर, घर जाकर इलाज करते थे आज डॉक्टरों की क्या हालत? क्या भाव करेंगे वे? मात्र पैसा-पैसा। सेवा की भावना तो समाप्त सी हो रही है।
□ 8-10 लोगों से शुरुआत आप सात्विक धन के उपयोग से यहां तक पहुंच गये। महान् स्वार्थी है आप लोग - इतना बड़ा लाभ हेतु कर रहे हैं।
□ आप पशुओं के लिए करते हैं तो वे भी आपके लिए कर रहे हैं, दुआ कर रहे हैं। वे बोल नहीं पा रहे पर उनके बोल अनमोल हैं, आंखों से करुणा बरसाते हैं। कई गुना असर आप पर पड़ता है।
□ ऐसा सम्यग्दृष्टि व्रती नहीं भी बना तो भी स्वर्ग ही जायेगा। दीर्घ काया ही मिलेगी। बलवान की अलग बात है।
□ पशुओं की सेवा व्यर्थ नहीं - वे वहां पर आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। सर्वप्रथम विदेह आदि में समोशरण में लेकर जायेंगे। वहां गाय भी सिंह भी बैठा है - नरसिंह ही सिंह बना है।
□ आत्मा सबकी एक है, श्मशान दो नहीं होते एक ही में राजा-रंक सबकी एक ही दशा होना है।
□ धारणा पक्की हो तो पारणा की क्या बात। बहुत प्रसन्न।

□-□-□

22-9-18 उत्तम आकिञ्चन धर्म मध्याह्न

□ कल त्याग हो गया, कुछ भी शेष नहीं रहा। कल अर्जन (उत्तम) हो जायेगा।
□ कुछ भी नहीं है। आप दूसरों को ही देखते रहते हो। फिर भी आपसे अधिक खुश रहते हैं। जो हमारे पास है वह आपके पास है ही नहीं।
□ तीर्थंकरों के पास सब था - फेंका नहीं, मुख मोड़ लिया। फेंकने से लग सकती है। सब ध्यान रखना होता है।
□ संघ में यदि ऐसी आचार संहिता लग जाये तो हमेशा के लिए आकिञ्चन्य का पालन होना चाहिये।
□ आकिञ्चन्य वाले जो स्वाध्याय करते हैं, वह ग्रहस्थी (असंयमी) तीन काल में नहीं कर सकते हैं। असंयम औदयिक भाव है। औदयिक भाव के साथ रहकर क्षायोपशमिक भाव का अनुभव करना चाहते हो, तीन काल में नहीं।

- तीनों की अभिन्न दशा रहा - दो उत्पन्न भी हुये हैं या नहीं अज्ञान जाने। इसलिये एक चिन्दी भी हो तो भी अकिंचन नहीं आ सकता।
- प्रत्याख्यान के कारण आकिंचन धर्म टिक रहा है। आत्मा असंयम से बचेगा।
- चैलोपसृष्टि मुनिश्रेष्ठ, मोहिने मुनि के लिए विशेषण रहा पर इन्हें समन्तभद्र स्वामी ने कहा - "प्रत्याख्यान तनुत्वेन" भी रहा।
- सोना खोने पर सन्तुष्ट हो जाते हो। सोने को शान्ति नाश है। शान्ति धारण कर लो। बिगड़ो नहीं।
- वस्त्र रौद्रध्यान का ही एक प्रकरण है। ध आत्मा में लगता नहीं है।
- छोड़कर आये हो पर बार-बार हाथ कमर पर - चाबी के गुच्छे पकड़ते हैं
- मुनिजी - जो परिग्रह से मुक्त है, उसके चारों ओर भय लगा तो परिक्रमा लगाती ही रहती है।
- भगवान की छाया नहीं पड़ती। उससे तो बचो उसकी छाया से भी बचो अन्यथा भूत लग जायेगा। हमारे पास आ जाना उतार देंगे।
- आपके दिल की बात तो कहलवा लेते हैं पर हमारे दिल की बात कह लेते नहीं हैं।
- आचार्य धरसेन → पुष्पदन्त - भूतबली की परीक्षा - बेला - मंत्र सिद्धि
- अभिन्न दस पूर्व एवं भिन्न दस पूर्व, 700 विद्यायें खड़ी हो जाती हैं - देख लिया।
- आकिंचन हुये बिना विद्यायें सिद्ध नहीं, हो गयी तो ऐसा रिलक्सन जैसे हेलीपैड में होती है।
- धारणा बनाने के बाद तपस्या सरल हो जाती है।
- इस प्रवचन को अन्तरंग पहुँचा देना - जो 4 बार स्वाध्याय करते हैं। कुन्दकुन्द का नाम लेकर घर की बात मत करो। घर में रखो नहीं तो भव-भव में भटकेंगे। पक्की बात है। आकिंचन में ऐसा ही कथन होता है। मीठा खा-खाकर तो ये हालत हो गयी
- गृहस्थो मोक्षमार्गस्थो कहा है वह मोहि मुनि की अपेक्षा कहा है। मुनिराजों के सामने तो आप श्रावक बनकर ही आओ।
- दौलत राम जी की छहढाला प्रवचनसार - समयसार आदि कुन्दकुन्द, समन्तभद्र आदि सब की बात को ही समर्थन कर रही है।

○ प्रत्याख्यान के अभाव के साथ संयम की सुगन्ध कभी भी नहीं आ सकती इसीलिये आर्यिका भी संयमी नहीं है। उत्कृष्ट पंचम गुणस्थान ही है।

○ नाग्न्य एवं स्त्री परिषह जय बता रहे हैं कि दिगम्बर मुनि ही इसके हकदार है। वस्त्रधारी नहीं।

○ ख्याती पूजा-लाभ से यदि विद्या सिद्ध कर रहे हैं तो सचित परिग्रह रखने का दोष लगेगा। चाहे पंचम काल हो या चतुर्थ काल हो।

○ चांई (कांटे से) का मतलब मुंह से आवाज ही ऐसी ही आती है चांई। इसलिए निःशल्यो व्रती वही है।

○ दयोदय संवाद में - गाय के सींग के बीच बालक लेटा हुआ, वह उससे प्रेम कर रही है। गो-वत्स प्रेम।

○ रावण के साथ ही रामराज्य हुआ करता है। ध्यान रखो।

23-9-18 उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म महोत्सव

○ गृहस्थ आश्रम में प्रवेश क्यों? धर्म का प्रवाह अक्षुण्ण बना रहे।

○ अन्य तीन गतियों में विवाह नहीं, मनुष्य में ही मात्र यह होता है - धर्म इसी पर टिका है, इसीलिए तीर्थंकरों ने इसे स्वीकारा।

○ अहिंसा - शाकाहार - पहनाव - आचरण ये सब गृहस्थ आश्रम में ही पालन कर आगे बढ़ते हैं।

○ शिक्षा पद्धति संस्कारों को हटाने में कार्य कर रही है। पश्चिमी हवा अब पूर्व में आ गयी है। "पाठशाला - प्रबन्ध" आदर्श पुस्तक है।

○ एक महिला ने 80 बार विवाह सम्बन्ध स्थापित किये।

○ बौद्ध धर्म विदेश में क्यों जैन धर्म क्यों नहीं? श्रावक वहाँ जाकर अपने धर्म को सुरक्षित नहीं रख सकते। यहाँ रखकर ही आप इसकी खुशबु विदेश तक भेज सकते हैं।

○ वस्त्र - भोजन - पानी अहिंसक नहीं रहे तो संस्कृति कैसे जीवित रहेगी

○ वासना अनिवार्य नहीं संतान का होना अनिवार्य है।

○ "विवाह वासना के लिए नहीं उपासना की एक पद्धति है।"

○ संयम के बंधन के बिना इस ब्रह्मचर्य का पालन नहीं हो सकता

o "जे कम्मे सूरा - से धम्मे सूरा" 4 पुरुषार्थ का पालन करना है।
o गृहस्थ के 22 नहीं 2200 परिषह हैं।
o "बैरिस्टर चम्पत राय जैन" "जैन लॉ" पुस्तक सरकार के सामने रखी - हम अपनी अहिंसा पद्धति को सुरक्षित रखना चाहते हैं - विवाह पद्धति के बारे में उसे सर्वप्रथम लिखा।
o Convent - कॉन्वेन्ट = अनाथ बच्चे जहाँ रहते हैं। मैं कभी भी अब Convent के लिए आशीर्वाद नहीं दूंगा - ध्यान रखना।
o प्रतिभास्थली को हिन्दी माध्यम करना - (मातृभाषा), अंग्रेजी माध्यम का भ्रमजाल पढ़ो। पट्टी जैसी पढ़ा देते हैं वैसे ही बोलने लग जाता है।
o मन-वचन-शुद्धि से क्षीमान् ने कह दिया कि हाथ बढ़ा देते हैं चाहे ब्रह्मचारी हो, ब्रह्मचारी हो, शिक्षिका हो अथवा अशिक्षा हो।
o संघर्षमय जीवन का उपसंहार हर्षमय होता है।
o बीज स्वस्थ फल ..... अब बीज नहीं - विदेशी खेती की बात।
o धान्य - फल - पशुओं के बीज खत्म हो गये अब मनुष्य भी कहाँ से ही आयेंगे / मिलेंगे।
o जमाने की बात ही नहीं जमाने वाला चाहिये - गुरिया सैना
o आंखें अब-2 नहीं - 8-8 हो गयी - ऊपर-नीचे का अलग, दायें-बायें, पास-दूर, ऊप-छाप, दर्शन का अलग (चश्मा) प्रदर्शन का अलग है।
o दूरदर्शन नहीं दूर दृष्टि रखा करो।
o T.V. चैनल इनके सामने ही बैठा रहता है। बिना थैली ही व्यापार हो रहा है। वायदा - बाकायदा
o भारत बनेगा नहीं - आपके विचारों / क्रिया से ही समाप्त हो जायेगा।
o समलैंगिक विवाह - क्या होगा? o पाठशाला - प्रबन्ध हेतु विज्ञापन कर सकते हैं।
o अंधेरा है / मार्ग लम्बा है तो एक टिमटिमाता दीपक भी आपको मंजिल पर पहुँचा देगा।

- उस दीपक में तेल डालो पानी नहीं, उसे बुझने न दें।
- चार आश्रम में चार पुरुषार्थ चलने हेतु, प्रयोग है।
- सन्यास की सुगन्धि का पान करना चाहते हो तो स्वर्गोदय पर ही रहने लग जाओ।
- विमान से - विदेशी लोग भी यहाँ रहने हेतु आ जायेंगे।
- हमारे यहाँ संकल्प तो लिया जाता है बाद में विकल्प में ढलक जाते हो। शान्तिनाथ भगवान से प्रार्थना - संकल्प - विकल्प में परिवर्तन न हो।
- पूर्वजों से आप पीछे मत रहना - हाँ पीछे मुड़कर अवश्य देखना जिससे भटक न सको।
- Fast food अभिशाप है - वरदान नहीं।
- गुरुकुल प्रणाली पुनः सीखो। विदेशों में स्वतंत्र नहीं है
- सरकार भी तैयार है - आप वापस लौट आइये, हम आपको व्यवस्थित करेंगे।
- उड़ना भूली ... वाली तभी खुश जब कदम इस ओर बढ़ेंगे
- श्रम करने वाला ही सुखी रह सकते हो। नौकरी में नहीं
- बिमारी कटु देशुई से ही ठीक। यह भोजन न समझकर औषध समझेंगे।

0 0 0

5-8-18 रविवारीय प्रवचन मध्याह्न

दो दिवसीय चिकित्सा (प्राकृतिक एवं योग) शिविर

- चिकित्सा किसकी - कब - किस विधा से यह महत्वपूर्ण है।
- मू॰चा॰ → वही मुनि मो॰मा॰ में बढ़ सकता है जो स्वस्थ रहता है।
- ऐसी औषध क्या काम की जो कचरा से भी खराब हो।
- भारत में मृत्यु का भी स्वागत होता है। औषध मृत्यु को जल्दी (अकाल) में नहीं आने देगी।
- आयु बढ़ा नहीं सकते पर सही उपयोग करें तो पूर्ण कर सकते हैं।
- हम 'चिरायु का आशीर्वाद नहीं देते - पूर्णायु का देते हैं।
- निमित्त मरण एवं समय पर मरण दो प्रकार की मृत्यु बतायी। उदा.- तेल वाले गैस टंकी का दिया।
- भोजन करने से ही जीवन एवं भोजन से ही मरण भी होता
- उद्दण्डता इसलिये क्यों कि यहाँ दण्ड नहीं है। दण्ड नीति खुलती नहीं समय पर।

○ चिरायु-दीर्घायु का उदाहरण - पेट्रोमेक्स का
○ उत्तम संहनन धारी वाले तीर्थंकर आदि को दीर्घ जीवन होने से अकाल मरण नहीं होता।
○ पथ्य सही हो मिलकर पथ्य असति हो मिलकर - पथ्य से सियाती भी वैद्यों की आ. नहीं, पथ्य नहीं तो भी वैद्यों की जरूरत नहीं है।
○ चिकित्सा व्यवसाय हो गया। बिल बनता है - बिल्ला बन जाती है। अब लोन लेकर चुकाते रहे।
○ इनका व्यवसाय नहीं चल रहा होगा इसलिये मुफ्त चिकित्सा दे रहे हैं - ऐसा नहीं है। विश्वास में लाने हेतु ये निशुल्क (मुफ्त) कर रहे हैं।
○ पैसों एवं भाग्य से हार जाने पर व्याप्ति (रोगी) कहता है भगवान अब तो उठा ले।
○ हाई डोज (हाई लेवल) लेने के उपरान्त कोई औषध कार्यकारी नहीं।
○ इस प्रकार का आहार न ले जो आपसे विपरीत हो।
○ औषध वहीं से प्रारम्भ करें जिसकी शुरुआत से लाभ हो। शुरू में हाई डोज नहीं।
○ आपके पास इतनी संख्या में रोगी (2000) आने से उनको जरूर बाजार में तकलीफ हो रही होगी। अब इकट्ठा सामना कीजिये और अपना कार्य और अधीर लोगों तक पहुँचे ऐसे करना चाहिये।
○ बीमार होना केवल बाहरी वातावरण से ही नहीं कर्म उदय में भी बीमार होता है।
○ एक वैद्य है रिष्ट समुच्चय - ① नाक की आगी नहीं दिखती - 6 माह के अन्दर, ② कर्णफूल से भी मृत्यु करीब

③ जीभ फटना - काली हो जाये तो समझना इलाज की जरूरत नहीं।

- हिस्टेरिया रोग - कभी ऊपरी बाधा नहीं। कर्म का उदय होता है तब ऐसा भी होता है। इसके प्रतिकार की विधी अलग है। भूतियोग बोलते है - साधना चाहिए इसके लिये।
- आयुर्वेद → आयु का वेद (जानकारी) है तभी वह आयुर्वेद कहलाती है।
- केवल यंत्र से परिक्षण करना / मानना पूर्ण नहीं। नाड़ी से पता लगाना - राजवैद्य ही कर पाते है। यह भारतीय चिकित्सा पद्धति में होता है।
- वात-पित-कफ के दोष से ही रोग होता है। इसके बिना करना भगवान भरोसे जैसा है।
- विदेशी चिकित्सा का निदान ही गलत है - रोग तो है - हरकत-निद्रा - भूख आदि। बिना निदान के चालु हो जाते है।
- रोग का ज्ञान नहीं - दवाई चालु कर दी जाती है - माने प्रयोग कर रहे हैं।
- आयुर्वेद - प्रा० चि० - योग आदि का अब प्रचलन पुनः हो रहा है - विदेशी चिकित्सा पद्धति के दुष्परिणाम के कारण।
- Exp- मस्तिष्क ज्वर बताया, हमने साफा / पगड़ी लपेट बंधायी। नींद नहीं 10-15 दिन से। बांधते ही ½ घंटे में निद्रा आ गयी।
- अर्द्ध रोग हरी निद्रा - सर्व रोग हरी क्षुधा।
- भूख खुलने से पूर्व आपको खुलना नहीं है। आप खुल गये तो पुनः रोगी बन जाओगी।
- आरोग्यप्रद वस्त्र है - हथकरघा के वस्त्र। पट्टी, लपेट आदि भी से आयेगी।
- वस्त्र बनते समय ही औषधीय प्रयोग - वस्त्र पहनते ही रोग दूर। मलेरिया - पीलिया आदि।

○ वस्त्र मात्र लज्जा दूर हेतु ही नहीं रोग दूर हेतु भी पहने जाते है)

○ जीव्हा वासना का साधन है और पेट संचालक है।

○ वासना का दास जीव्हा भी शक्ति शोषण कर सकता है

○ वर्षा में पित्त - पैरों में, सर्दी में पित्त - हाथों में, गर्मी - सिर में।

○ पैर हो गरम - पेट रहे गरम, सिर हो ठण्डा
वैद्यजी महाराज आ जाये घर दिखा दो डण्डा।

○ व्यवसायिकरण को हटाते ही वैद्यजी भी सुखी - दुनिया भी सुखी - रोगी भी सुखी हो सकते है।

○ शरीरं माद्यं खलु धर्म साधनम् = धार्मिक क्षेत्र में भी शरीर साधन है।

○ युवा अवस्था में असाध्य रोगों को निमन्त्रण देते है।

○ वैद्य जी भी लोभ छोड़े। आधी से शोषित न हो।

○ शुद्धाचार - आधा भोजन कीजिये - दूगना पानी पीव।
तीगुना श्रम, चौगुनी हंसी - वर्ष सवा सौ जीव।

○ रोने वाले रस का स्वाद नहीं ले सकते।

○ पांच तत्त्व में आकाश तत्त्व भी है - आकाश की तरह शून्य - रिक्त होना चाहिए पेट तभी स्वस्थ रहेगा। चार आना खाली।

○ सोयाबिन के बिस्किट - डबलरोटी - पाव रोटी

○ हाथ रोटी हजम नहीं पाव रोटी कैसे खा रहे हो। बनता देखेंगे तो यहाँ आकर त्याग नहीं करेंगे।

○ Simple रोटी मिल नहीं रही डबल रोटी खा रहे है।

○ ऐसी रोटी भक्षण योग्य क्या छुने लायक भी नहीं है)

○ भारत में तो आटे की मर्यादा बतायी। दूध चारों गति में आहार है। नरक में भी हो सकता है।

○ सिंहनी 6 महिने तक तामसिक आहार से दूर - मात्र दूध पीती है।

- सोया - बीन = डब्बे का दूध चिरायु क्या कुछ भी आयु नहीं रख पायेगा।
- चिकित्सा भी विचिकित्सा (घृणा) योग्य है।
- करुणा के आधार पर भी चिकित्सा होती है।
- अभ्यदान का प्रतिक है- हाथ इस तरह से मुद्रा में।
- खेल भी ऐसे जिनसे स्वस्थ- व्यसन रहित हो।
- आप अपने को संभालो नहीं तो बच्चे अपको...
- मूलाचार अनुसार- गरम पानी से- कच्चा पानी नहीं। चौबीस घंटे भोजन से योगी एक बार से स्ववरहित कर सकता है।

12-8-18 रविवारीय प्रवचन

- रोग का प्रतिकार दो तरह से - मानसिक एवं शारीरिक होता है। मानसिक इलाज पहले हो शारीरिक बाद में होता है।
- मानसिक परिवर्तन हमेशा चलता ही रहता है- करंट की तरह पंखा-लाइट चले या न चले करंट तो वहाँ विद्यमान है ही।
- प्रवचन धार्मिक विषय होने पर भी मानसिक-शारीरिक दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण है।
- ग्राम शार्दूल कहलाता है कुत्ता - अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है।
- चील का पांव सर्प द्वारा पकड़ना - एक मनुष्य द्वारा लाठिया से उस चील को छुड़ाना। सर्प उस व्यक्ति को मारने की सोचना।
- वैरी को एक बार छोड़ दे तो वह सेना तैयार करता है। सेना किसके लिए - शत्रु कौन? इसे पहले देखो।
- पार्टी के कारण चुनाव नहीं - राष्ट्र के कारण चुनाव होते हैं।
- पक्ष- विपक्ष नहीं राष्ट्रीय पक्ष हो।
- पार्टी में एक ही पक्ष होगा- पक्षी दो पंखों से ही उड़ सकता है। एक पंख से उड़ नहीं सकता।

० पैर, आंख, फेफड़े, किडनी दो में से एक हो तो काम चल जायेगा। किन्तु एक पंख टूटा पक्षी कभी भी उड़ नहीं सकता। [विधानसभा भी इस बात से गुंप उठी]

० घुसियान - पाकुड़ के बीच सड़क की तरह - दो की सीमा में होने से वो करे या हम करें। किन्तु रेल पटरी ने ऐसा नहीं। प्रत्येक पटरी को चैक करना तभी रेल चलती है।

० अखण्ड राष्ट्र है उसी का राज है।

० लोकतंत्र को लोभतंत्र में परिवर्तन मत करो।

० मलेरिया की दवाई कड़वी ही होती है। औषध की कोई पार्टी नहीं होती।

० आलोचना नहीं, उसके लिए आपको सोचना है, इसी से उनका निस्तार होगा।

० पेट की खबर बिना ही खा रहे हैं तो बिमार पड़ेंगे।

० जो उद्योगपति हैं - व्यापारी हैं उन पर निगरानी हेतु शासन-प्रशासन होता है किन्तु आज तो शासन-प्रशासन स्वयं ही उद्योगपति - व्यापारी हो गया।

० सेवा-चिकित्सा के सभी संस्थान उन्हीं लोगों के हो गये।

० कल्प के साथ जब सामान्य दवा भी हो तो कायाकल्प हो जाता है।

० भारत में ऐसा ही शासन आये जो कायाकल्प कर दे। तभी ताजगी - उमंग - आनंद आयेगा।

० रोग के कारण को जड़ से समाप्त करना अनिवार्य है।

० वह चील उस सर्प को ले गया - वही चील जिसे मत दान दिया था।

० धीरे बोल रहा हूं कहीं विधानसभा तक न पहुँच जाये।

० कायाकल्प में एक ही चीज कुछ नहीं लेना बस लेना है तो भगवान का नाम लेओ।

- अलौकिक प्रणी भी लौकी के सामने घुटने टेक देगा।
- इंजेक्शन लौकी - क्या तौलिक है? देश को दिया जाये तो न जाने देश कितना आगे पहुँच जायेगा।
- Reserve Bank of India, India का रीजर्व बैंक मतलब स्वतंत्रता से पूर्व ही भारत मिट गया। Indian Bank, Indian air lines, Ind. Petrol Pump ये सब भारत को हटाने का तरीका था।
- गड्ढे में रोड है Border पर। जनहित के लिये कार्य हो तभी उद्देश्य पूर्ण होगा।
- सब जगह महंगाई आ गयी तो हमारा आशीर्वाद भी महंगा हो गया है।
- गुरुजी ने कहा - जो लोकहित में काम करे उसे ही आशिर्वाद देना।
- आशिर्वाद की बजाय प्रवचन दे दिया। निष्पक्ष होकर एक - एक पंक्ति दी है।
- पुराने रोग से जल्दी छुटकारा पाना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

15-8-18 स्वतंत्रता दिवस [किश्तोपरांत] मध्याह्न,

- गौरव को खो दिया, देश - सत्ता - आत्मा को खो दिया शेष कुछ बचा ही नहीं।
- मान्यता पर आधारित है। स्वाभिमान कुछ बचा ही नहीं। वह स्वाभिमान जागे यही प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।
- आपकी आजादी मात्र एक दिन की हो गयी, हिन्दी दिवस, हथकरघा दिवस, मदर डे, फादर डे एक - एक दिन के लिए - मैं इसका संमर्थन नहीं कर सकता आप करो तो करो।
- आप स्वतन्त्रता की तो बात करते हो स्वतन्त्रता से बात नहीं करते हो।

० हमें आजादी मिली कहाँ? किस रूप में आजादी मिली? क्या कभी विचार किया? आप स्वीकार कर लो मैं तो स्वीकार नहीं करता।

० भोपाल में 2 घण्टा से अधिक समय इसलिए बोला हूँ, फ्लैट होगी - सुन लेना।

० अब जाग्रती लानी होगी। परिवर्तन लाना होगा।

18-8-18 मोक्ष सप्तमी मध्याह्न

० लौकिक व्यक्ति अलौकिक की चाह तो करता है पर लौकिकता से दूर नहीं होता। यह बहुत दुरूह कार्य है।

० जो दुख के कारण है वे ही सुख के कारण बन जाते हैं उदा- विष खाने से व्यक्ति मरता है पर मात्रा बिल्कुल थोड़ी-थोड़ी ले तो औषध का काम करता है।

० भेद जब तक आराधना नहीं होगी। स्वाध्याय मुक्ति का मार्ग हो सकते हैं पर मुक्ति हेतु साक्षात् कारण नहीं होते।

० अग्नि परीक्षा दिये बिना माटी पात्र का रूप नहीं लेती। (विदेशी देवता को पहले बाहर निकालो तब इस मिट्टी के बर्तन) देवता की स्थापना होगी। यह अकेला ही सभी विदेशी देवता को बाहर कर देगा।

० अनुसंधान सही दिशा में करना इसी को कहते हैं।

० अनुकूल तापमान मिलने पर वह बहने के स्थान पर गहने का रूप ले लेती है। चाहे मिट्टी हो या सोना।

० तवा तभी बना जब तपा है तपस्या का प्राकृत शब्द है।

० मिट्टी के बर्तन औषध प्रयोग रूप में आये हैं।

० जो प्रयोग से विमुख वही विश्वास नहीं करता है।

० प्रसन्नता के वचन सुनकर भी मन में तरंग उत्पन्न न हो।

० प्रज्ञा परिषह एवं अज्ञान परिषह दोनों ही वरदान हैं।

० अपने अध्ययन के साथ तुलनात्मक अध्ययन होना चाहिए।

० विश्वास के कारण - सिंहनी का दूध जो मात्र स्वर्ण पात्र में रह सकता है उसे गाय का बछड़ा पी रहा है और गाय का दूध सिंहनी का बच्चा पीता है। उसे कुछ भी नहीं होता।

० दूध शाकाहार है मांसाहार नहीं। ऐसे भी पेट पत्थर को चुना बना है।

० विज्ञान का मतलब कसना नहीं कसकर के इतिहास पढ़लेना। कस= सत्व, कसौटी का पत्थर, कसरत करने पर ही प्राप्त होगा।

० विज्ञान की प्रयोगशाला में तप एवं परिषह है ही नहीं।

० धातु के बर्तन- तांबा- चांदी- पीतल के प्रयोग से शरीर में उन तत्वों की पूर्ति भी हो जाती है।

० अग्नि ठोस वस्तु को भी पानी बनाने में योगदान देती है

० जिस दिन अग्नि समाप्त उस दिन धर्म समाप्त- अन्न समाप्त हो जायेगा।

० हीरा सबको काट सकता है- पर अग्नि उस हीरे में भी प्रवेश कर जाती है। किन्तु अग्नि कर्म को नहीं काट पाती है।

० कर्मों को समाप्त करने की क्षमता मात्र साधना में ही है, पार्श्वनाथ भगवान ने वही किया।

Hey! ममता से भी - समता की क्षमता - अमिता मानी"

० तप से डरने वाला निर्जरा नहीं कर सकता।

० जहाँ बैठे वहीं पर मोक्षमार्ग एवं मोहमार्ग दोनों हो सकते हैं, क्या चाहते हो?

० आज निर्वाण कल्याणक पर्व दिन का आपका कार्यक्रम था - हम तो घोषणा करते ही नहीं। आपका क्या विश्वास - लड्डू चढ़ गये और गाड़ी में चढ़ गये।

० परिषह जय तभी जब संकल्प पूर्वक व्रतों को अंगीकार करें। भगोनी नहीं तपाना दूध तपाना है।

० सोना भी उस मिट्टी के मुट्ठी (बी) में पानी-पानी हो जाता है।

० निर्जरा होते देख सकते हो- आँखों से ही नहीं प्रत्येक अंग से देख सकते हो। आसन लगाकर बैठ जाओ- घुटने से नागिन (अमाता)

कुण्डली मारकर बैठी थी अब जा रही है। उसे रोको मत।
० सोने को पसीना नहीं आता- हां सोने के स्वामी पसीज जाता है।
० आग की नदी को भी तैरकर आये हैं ये पात्र [मिट्टी]
० पर की परीक्षा नहीं स्व (आत्मा) की परीक्षा कर लो।
० बजाकर देख लो- सारे गम दूर हो जायेंगे।
० नामकरण - "अग्नि परीक्षा" आ० श्री के मुख से।
० अनिल जैन - रोहतक द्वारा मिट्टी के बर्तन का डेमो।

19-8-18 कलामसाहब पर रविवारीय प्रवचन मध्याह्न

० योग्यता - सम्पत्ति और सामर्थ्य का उपयोग नहीं दुरुपयोग अपव्यय हो रहा है। देश इसी अपव्यय से ग्रसित है।
० सत्ता - सुन्दर - टीकाऊ बनने हेतु अपव्यय को रोकना होगा।
० आरोप - प्रत्यारोप की होड़ है।
० सत्ता के मद में आज दुरुपयोग हो रहा है। देखादेखी भी हो रही है। नकल भी कर रहे हैं, विदेशी नकल।
० क्या कर रहे हैं? क्या करना चाहिए निर्णय नहीं कर पा रहे।
० खेल में भी एकाग्रता एवं स्थिरता की बहुत आवश्यकता है।
० उदाहरण - तरंग से पहले धोबी के पछाड़ने की आवाज आती है।
० हम अपने उपयोग (सुनने - देखने की अपेक्षा) को और कहीं ले गये तो दोनों ही आपको ज्ञात नहीं हो पायेगी।
० आपका ध्यान निर्णयात्मक नहीं है- मौसाजी की बेटी।
० खिड़की से चन्द्रमा एवं टहनी दोनों एक साथ आती हैं; दूरी की अपेक्षा दूर है तो लेट आये मैं नहीं मानता।
० यहां मन की भी चिकित्सा होती है। आपका मन जिससे दुखता है - मैं ले लूंगा तो मेरा भी मन दुखने लग जायेगा।

- मन का दुखना - कारण एक ही पड़ौसी की मेजील उथपि है
- मन पागल बनता है। हम पागल नहीं - इसी गलत निर्णय से दूसरे को पागल समझता है।
- संग्रह की बात वहीं पागलपन आ जाता है। भारत संग्रह नहीं करता
- भारत को अब यह नहीं सोचना कि वह विकासशील नहीं विकसित है ऐसा मान लेना चाहिए। मन का दर्द समाप्त - संग्रह वृत्ति समाप्त हो जायेगी।
- अमेरिका के बराबर कभी नहीं बन सकोगे - (रु उसके पास 10 गुना अधिक। ये ही पागलपन है।
- कलाम साब = भारत को अब विकसित मान लेना चाहिए
- कूकर की सीटी सुन लेते हो - पेट की सीटी क्यों नहीं सुनते
- अब भोजन सामग्री नहीं विकार सामग्री है।
- कॉन्वेन्ट पद्धति को छोड़ो। अनाथ आश्रम में भेज रहे हो। गुरुकुल समाप्त
- सीटीजन - शहर वाले - सीटी बज रही है।
  गंवार - गांव वाले - ग्वारपाठा / ग्वारफली खाने वाला
- कॉन्वेन्ट - फादर बोलते हैं - उसका तो कोई पिता है नहीं। राष्ट्रपिता को याद करो
- बाइबल इंगलिश में नहीं हिब्रु में लिखी गयी है। इंगलिश में लिखने पर दोषित एवं समाप्त कर दिया।
- मेधावी लोग शिक्षक बनकर राष्ट्र हेतु योगदान देंगे।
- चौके में घुसो नहीं - प्रवेश करो निवेदन पूर्वक।
- एक आचार्य को आहार - 100 मुनि बराबर पुण्य ये गलत धारणा है।
- पित्त के उभार में स्वप्न - राक्षस - भूत प्रेत आदि की आकृति स्वप्न आयेंगे। वात में स्वप्न - उड़ता ही जाता है - सदगति, मन के लड्डू खाता रहता है। कफ वाले के स्वप्न - पानी में डूबता रहता है - तैरता नहीं है।

○ आज शक्ति का अपव्यय हो रहा है- कारण है-गलत निर्णय - गलत श्रवण से हो रहा है।

○ एक रविवार के बाद दूसरा रविवार - कैसेट में पुराना डीलिट हो जायेगा। ~~[illegible]~~ की बात ही नहीं डीलीट हो रही है।

○ जो बाहर पढ़कर भी आये - पर काम पैतृक/बरसा कर रहे हैं वे आशीर्वाद के पात्र हैं। नौकरी से बहुत श्रेष्ठ है।

○ शक्ति - दुर्बलताओं के अपव्यय में उसमें आपके संकल्प इरादे कारण हैं।

○ कलाम - जीवन में आदि से अन्तिम तक शाकाहारी ही रहे मुसलमान से शाकाहार का संबंध क्यों नहीं हो सकता है। सेव - हमारे साकार क्षुधा को शांत किया (आश्चर्य है)

○ III छात्रों को बढ़ा सकते हैं पर आरक्षण को स्थान न दिया जाये। आरक्षण से योग्यता का पूर्णतः का नाश हो जाता है। प्रमाण पत्र का कोई महत्व नहीं।

○ ~~[illegible]~~ कभी नहीं किया क्योंकि था ही नहीं।

○ आज का नागरिक कल का राष्ट्रपति हो सकता है, जैसे आज का भक्त कल का भगवान हो सकता है। आप भगवान के मार्ग में तो चल ही सकते हैं।

○ एकान्त में सुनो - बार-बार सुनो तो वह हृदयग्राही हो जाता है।

26-8-18 रक्षाबंधन पर्व - रविवार

मध्याह्न

- आज का दिन काल द्रव्य को स्मरण कराते हुये इतिहास की ओर ले जाता है। चित्रण करता है वह चित्र जो घटित हुआ।
- वर्ण एक गुण है वर्णन अक्षर की ओर ले जाता है। अक्षर से अ क्षर का बोध नहीं होता है। न क्षरं इति अक्षरं।
- ज्ञान कभी मिटता नहीं - अज्ञान मिटता है। आज का दिन उसी अज्ञान को मिटाने वालों को याद करने का है।
- सुमिरन करने से ही सुमरण होता है। बृजभाषा में सुमरण कहते हैं - स्मरण करना।
- अकम्पन मुनिराज (आचार्य) ने 700 को संबोधा - तैयार हो जाओ। अवसर आया है - काया जर्जर हो गयी है। जरसा - बुढ़ापा आया है - निर्जरा करा देता है।
- ज्ञानवृद्ध और ध्यान वृद्ध जो होते हैं - कर्म को भी वृद्धावस्था प्राप्त करा देते हैं।
- जब विभक्ति सीख रहा था - जरा के रूप याद करने में बहुत कठनाई हुयी थी। अलग ही प्रकार से चढ़ाते हैं।
- पंक्तियाँ - अर्घ्य वितरण - आरती स्तुति - निंदा में समता।
- कर्म निर्जरा नहीं काल निर्जरीत हो रहा है - यदि मजबूरी में बिना श्रद्धा के तप करते हैं तो।
- गुरु ने ऐसे मृत्यु महोत्सव रूपी हार ने पहनने का सौभाग्य प्राप्त कर लिया। काल को भी हराने वाला हार है।
- अजर-अमर होने हेतु काया एवं सांसारिक वस्तुओं में समता रखना आवश्यक है।
- कायोत्सर्ग = काहे का उत्सर्ग है काय का उत्सर्ग होता है।
- 27 श्वाच्छोश्वास से भी कम समय में, कायोत्सर्ग उतने में भी 9-2=11 हो जाते हैं।

- कायोत्सर्ग में तन-मन में हलचल नहीं - काय से निरीह वृत्ति होनी चाहिए। अन्यथा कभी भी मूर्छा लग जायेगा।
- शरीर को पराया समझने वाला ही संलेखना कर सकता है। 2-3 भव अधिक हो तो 7-8 भव में कल्याण हो जायेगा।
- सम्पर्क छूट जाये तो भीतर नहीं घुस सकता। बटन बंद कर दिया। लाइट फिटिंग भले ही पड़ी रहे पर कनेक्शन मतलब बटन बंद है।
- आप लोग चतुर हैं - जिस दिन जिसे याद करना है उसी को करते हैं। विष्णुकुमार मुनि को आज ही क्यों याद करते हो? बीच में भी कर सकते हो।
- जब अड़ोस-पड़ोस के समान काया को समझते हो तभी सही कायोत्सर्ग होता है।
- काया को आपा मानकर चलते हैं, यही संसार का कारण बनता है।
- रक्षाबंधन अकेले में नहीं - कलाई एवं लच्छी दोनों चाहिए।
- विष्णुकुमार मुनि की निरीहता तो देखो - तद्ऋद्धि और सिद्धि होते हुये भी वो प्रसिद्धि से बहुत दूर थे।
- एक मंत्र से भी मंत्र सिद्ध और आशा फेरने पर भी मंत्र सिद्ध नहीं हो पाता इसे हमेशा याद रखो।
- आज घड़ी लगाकर बैठते हैं कि मंत्र सिद्ध हुआ या नहीं, कभी नहीं होगा।
- राजा कभी भी गलत प्रतिज्ञा से नहीं बंध सकते। प्रजा की रक्षा प्रथम कर्तव्य है। भूल हो जाती है। परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं।
- सम्यक् के 8 अंगों द्वारा हम कर्म निर्जरा कर मुक्ति पा सकते हैं।
- तीर्थंकर प्रकृति चाहने से नहीं होती तथा किसी प्रकार निर्जरित भी नहीं उदय क्षय से ही जाती है।

- सारी प्रकृतियाँ अलग हो उमास्वामी महाराज ने तीर्थंकर प्रकृति को अलग रखा। ये विशेष प्रकृति है।
- अन्त में प्रायश्चित क्यों? - दोष यही था कि तेरी एवं मित्र दोनों को समान मानना था पर नहीं माना किन्तु उन्हें एवं राजा को जगाना था। विक्रिया का प्रयोग भी किया।
- किसी के प्रति बैरभाव नहीं रखना - समभाव रखना।
- प्रवचनसार में - गुण एवं पर्याय में समानता बनी रहती है। ये महत्वपूर्ण है। द्रव्य के ही अनुसार गुण-पर्याय होगे।
- सभी महाराज 8 दिन में उत्तीर्ण हो गये। विष्णुकुमार मुनि अनुत्तीर्ण रह गये। पूरक परीक्षा देकर फिर उत्तीर्ण हो गये।
- उनसे हमें प्रेरणा मिलती है - ये करुणा है, दया है।
- काल द्रव्य प्रत्येक द्रव्य के परिणमन में सहायक है, काल स्वयं भी अपने परिणमन में भी सहायक है। स्व एवं पर दोनों पर अनुग्रह करता है। इसी कारण आप सब मिलकर मनाते हैं।
- विष्णुकुमार मुनि से पूर्व भी वात्सल्य अंग था। दृष्टांत एवं दार्ष्टांत दोनों होते हैं। गाय भी थी एवं बछड़ा भी था। भैया का विकास हो रहा है। आप लोग उसे कर रहे हैं।
- उत्साहित होना चाहिए - उत्सुकता नहीं।
- ईर्यापथ में - उत्सुकता - रीदंभदिरं च बोसरे"
- रत्नत्रय की विशुद्धि बढ़ाना चाहते हो तो उत्साहित हो - उत्सुक नहीं। (जल्दी-जल्दी कार्य नहीं करना)
- ऐसे भी मुनिराज 6 महिने उपवास पारणा के दिन एक दाना - बूंद लेकर आये। अपनी तो डोली ही उठ जायेगी। धन्य है वे मुनिराज।
- निश्चय स.द. के अंग में प्रविष्य - अकम्पनाचार्य, व्यवहार/सराग स.द. में विष्णुकुमार मुनि प्रविष्ट हुये।

2-9-18 रविवारीय प्रवचनांश मध्याह्न

KRITI GROUP

० जब अति होती है तो इति प्रारम्भ हो जाती है। अथ का प्रारम्भ हो जाता है।

० तिर्यंचों ने भी धर्म धारण कर काया कल्प किया है, करते हैं, परन्तु मनुष्य काया का दास बना है।

० दया का मतलब ही है याद करो तो दया जरूर आयेगी। एक मारी एक रप से बोलती है।

० मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए नीचे देखकर चलता है, पर यदि नीचे जीवों को बचाकर चलो तो कुछ चलना सार्थक होगा।

० गाड़ी में Gear तो है पर Beam से काम लो।

० आँख बंदकर चलोगे तो एक्सीडेन्ट होगा ही। हमारे आशिर्वाद से आ रहे थे क्या? अनकन्ट्रोल (Fast) चलाते हो क्या? (अमित पड़ीया आदि 4 लोगों का हादसा के पास एक्सीडेन्ट नयी गाड़ी पूरी फिट गयी - पर खरोंच तक नहीं आयी)

० मनुष्य होकर भी नियन्त्रण विहीन है, पशु होकर भी नियन्त्रण में (परीधी में) ही चलते हैं।

० देवों की संख्या असंख्यात है, मनुष्य संख्यात ही है।

० मनुष्य अण्डर में रहना नहीं चाहता, अण्डर में रखना चाहता है, ये ही उसकी अण्डर स्टेण्डिंग है।

० R. M. गंगवाल द्वारा एक साथ गुरुपूर्णिमा को एक लाख लोगों को शाकाहार बनाना होय काम नहीं पर चारों ओर हाहाकार होता है तो शाकाहार ही एक शरण है।

० अमरचन्द दीवान को खिलाई जलेबी एवं पिलाया दूध।

० भगवान केवल प्रासंगिक ही याद करने के लिए नहीं रहें कहीं भी जाओ उन्हें कभी मत भूलो जिन्हें आदर्श माना है।

- शेर भी पैदा हुआ तब 6 महिने तक माँ का दूध ही पीता है। माँस को 6 महिने सूंघने भी नहीं देती। बाद में मांस खाना प्रारम्भ करता है।
- हवीस बैंक में पैसा रखना - राष्ट्र पर जिसे विश्वास नहीं उस पर कभी विश्वास मत करना।
- सुन रहे हो - नरसिंहो। सिंह की कथा सुनो।
- शेर पीता नहीं - चम्मच की भांति लेता है। उसके लिए भी देशी घी से तैयार जलेबी - चासनी युक्त है।
- भारतीय संस्कृति का व्यंजन है जलेबी - इंजेक्शन से चासनी नहीं भरी जाती है।
- अमर चन्द दीवान आज भी अमर है। सिंह भी 6 महिने तक दूध पीया हुआ है। वह भी माइ का लाल है, माइक-लाल नहीं।
- ऐसे -2 लोग हुये है - जीवदया के लिए। दिवाना मत बनो - दिवान से प्रेरणा लेओ।
- "रक्षक ही भक्षक बन रहा है तो तुम कहाँ जाओगे।" सारे हिरण एक आवाज में खड़े हो जाते है। तुम राजा हो, हम खाजा है।"
- परिश्रम से पसीना बाहर आ जाता है, साहित्य को निर्माण किया। सिंहवृत्ति वाले थे वे हरावड़ भी। मांगते नहीं, सेवा करते थे। दीनहीन नहीं होते थे।
- उनका जीवन बिका हुआ है - बिका हुआ नहीं है।
- तिर्यंचों का पालन विशेषतः आर्यखण्ड के मनुष्य करते हैं - भूदेव (ब्राह्मण) कहते है उन्हें।
- अब आँख ही नहीं रोंगटे भी खड़े नहीं क्योंकि वे भी सूख गये हैं। कान सुनने में अक्षम हो गये है।

o अभी शोध हो रहा है - मांस खाने वालों के लिए - उनके लिए कृत्रिम ~~हिंसा~~ मांस (स्पर्श - गंध - स्वाद) तैयार किया जा रहा है। पर खबरदार - भाव तो मांस खा रहा हूँ ये ही रहेगा। ये ~~आप~~ आपको अधोगति लेकर जायेंगे। मैं इसका कभी भी समर्थन नहीं कर सकता।

o अण्डा शाकाहार - दूध मांसाहार कहा जा रहा है ये कौनसी संस्कृति है। सोचो तो।

o पहले कॉलेस्ट्रोल को कन्ट्रोल हेतु घी बंद कर रिफाइंड तेल आया। अब उसी तेल को जहर कहा जा रहा है। ये सब विदेशी कम्पनीयों के द्वारा हो रहा है। बस अर्थ के पिछे अनर्थ कर रहे हैं।

o सुन रहे हैं - सारी दवाइयाँ बंद हो जायेगी। क्यों सारी क्षमता दवाई खा चुकी है। अघोषित मृत्यु हो गयी है।

o आज के युगीन श्रावक इन सब झंझा बातों से मुक्त रहें। कारण - भारतीय शिक्षा प्रणाली से दूर होने से ही रहा है।

o भारतीय भाषा - भारतीय भाव तभी संस्कृति बचेगी।

o माइक - प्रथम श्रावक है हमारा एक - एक वाक्य सुनता है और छोड़ देता है आप ऐसे पोलपट्टी वाले न बने।

o आपका कर्त्तव्य ही आपका परिचय दे देगा। अगर चंद दिवान ने वही किया।

क्षमावाणीपर्व

२५-९-१४ "स्वर्णोदय - तीर्थ दिलायेगा मुक्ति" प्रातः

हमने पुराण ग्रन्थों में पढ़ा - देखा और गुरुओं के मुख से सुना कि व्यापारी लोग देश - विदेश में व्यापार करने हेतु जाते थे। बड़े - बड़े सेठ - साहूकार सभी दूर देश गये। हीरा - माणिक - पन्ना - मोती आदि का व्यापार करने जाते थे। किन्तु ये ध्यान रखना - वर्षों तक वे वहाँ व्यापार करते और वर्षों बाद पुनः अपने घर लौटकर आ जाते थे।

इसी प्रकार भारत वर्ष के विभिन्न भागों से ये व्यापारी "स्वर्णोदय तीर्थ क्षेत्र" में व्यापार करने आये हैं। स्वर्णोदय तीर्थ में सौदा करने आये हैं। जब तक मुक्ति न मिले तब तक लाभ लेते रहें। हमारी भावना भी ऐसी ही है, सभी को मुक्ति मिले।

अहिंसा परमो धर्म की जय

संस्मरण - "भूख की पूर्ति"

पं. मूलचन्द जी लुहाड़िया द्वारा आ० श्री को प्रश्न - "जरासिरजायां च निस्प्रतीकारे..." इसमें निःप्रतिकार का क्या मतलब है। जब भूख अच्छे से लग रही है तो फिर समाधी की बात कैसे?

आ० श्री - पण्डित जी भूख लगना मतलब इस भूख की इच्छा को समझ लेना ही समाधी की ओर बढ़ना है। जब आपका शरीर आपके कन्ट्रोल में नहीं है तो इससे बढ़कर और क्या चाहिए? भूख की पूर्ति के साधन अनेक होते हैं (ऐसे साधनों का प्रयोग करें जो शरीर का शोधन करें - मल उत्पन्न न करें।"

25-9-18 "मूल मंत्र है, देखो - देखो" प्रातः

बात ऐसी है अभाना वालों की शिकायत आयी है, लेकिन इनकी शिकायत को सुनेगा कौन? सही-सही बताओ संघ के साधु अभाना कितनी बार आये हैं? गिनती नहीं हैं। ये बात अलग है शिकायत के साथ हम ही नहीं, वो भी (पूर्वज) चले गये। जो है उनको बता दो। जो पुराने लोग हैं वे जानते हैं महाराज कई बार इधर से आये और चले गये।

उस समय निकले तो भोजन के लिए बचने का अन्य कोई रास्ता नहीं था। यहाँ तक की दमोह भी नहीं गये (दमोह बीच में आ गया ये अलग बात है। सागर, जबलपुर भी बीच में आ गया, क्या कर सकते हैं? बताओ? शिकायत अच्छी लगत है महाराज। कोई विश्वास नहीं करेगा आपकी शिकायत पर। ये भी ध्यान रखो - गर्मी निकाली है अभाना में। सागर तो बाद में गये - पटेरा - दमोह - कुण्डलपुर - अभाना दो-दो महिने रुके हैं।

आर्यिका को भी मालुम नहीं है, इसलिये कह रही है, उन्हें भी कह देना - इतिहास पढ़ा करो। इनके कहने से कह रहे हो। शाहगढ़ भी छूट गया है। हम तो पहले झमारा की बात अन्त में गोरझामर की बात करते हैं। आप लोगों को अपने गाँव के नाम मालुम नहीं, हमारे पास आइयो हम सब बता देंगे। मैं तो शिकायत सुनता ही नहीं। कितना भी खिला दो, ये मुख तो

बनी ही रहती है।

बुन्देलखण्ड की शिकायत को कोई नहीं सुनेगा। पर्याप्त दिया है हमने। ये बात अलग है कि भूख ज्यादा है। हमारा भी एक ही सूत्र रहता है- देखो-देखो। सर्वप्रथम अपनी आत्मा को देख लेते हैं। स्व को पहले देखो, पर को बाद में देखो। गुरुदेव का भी हमको यही मूलमंत्र मिला है। उन्हें कभी भी भूल नहीं सकते। सब उन्हीं के निमित्त से हो रहा है।

चप्पा-चप्पा, पांव-पांव हम आप सभी के गांव-गांव गये हैं। जैसे नेता लोग वोट मांगते हैं। हम मांगते नहीं इसीलिये अनगिनत मिलते हैं। बरस रहे हैं, गिनने की जरूरत क्या? आपके यहाँ मशीन आ गयी। किसान फसल उगाता है, समय पर पानी बरस जाता है आपको को भी चाहिए उस किसान की तरह कभी भी प्रमाद नहीं करना चाहिए। फिर देखो अपने आप ही मिलता चले जायेगा।

भगवान से प्रार्थना की जाती है याचना नहीं। आप लोग भगवान से कह सकते हो हमारी शिकायत बड़े बाबा के यहाँ जरूर करना। हम उनकी सुन लेंगे - आपकी नहीं सुनेंगे। हम उनसे पूछ लेंगे बाद में देख लेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

संस्मरण - "गाड़ी मेरी है"

(1) "वैयावृत्ति कर रहे थे। मैंने कहा- आचार्य श्री आजकल हरी सब्जी-फल पर इतना किटनाशक, प्रेटीसाइड एवं युरिया का छिड़काव होने लगा कि हर व्यक्ति को कब क्या बिमारी हो जाये पता ही नहीं लगता। [इसी समय संतोष सिंघई कुण्डलपुर एवं पंकज पारस चैनल इनको कुछ बिमारी हो गयी थी] फिर मैंने कहा - एक महाराज श्री (निस्पृहसागर जी) ने 15 दिन हरी का त्याग किया, पेट सम्बंधी समस्त रोगों में लाभ हुआ। आचार्य श्री ने तुरन्त कहा - यही तो हम आप लोगों से कहते हैं - ये गाड़ी मेरी है, इसका आपको ध्यान रखना है। हर कोई सा तेल डालकर इस गाड़ी को आप खराब नहीं कर सकते। इसे घासलेट से चलाने का प्रयास मत करो। कौनसी क्वालिटी का तेल डालना यह आपको ज्ञात होना चाहिए।"

(2) करुणा की पराकाष्ठा

"एक महाराज जी ने आकर बताया आज आहार में जीव जैसा लगा - किन्तु निर्णित नहीं हो पाया, मैंने दबाकर देखा वह दबा नहीं। आहार के उपरान्त बैठने पर पता चला कि वह जीव ही था। आचार्य श्री ने कहा - देखो कभी भी जीव की शंका होने पर उसे दबाकर मत देखो, अन्यथा यदि वह घायल (मरणासन्न) होगा तो आपके हाथ से तो मर ही जायेगा।"

(3) "दशलक्षण पर्व चल रहे थे। इस बार तत्त्वार्थ सूत्र का व्याख्यान मुनिमहाराज जी को करना था। जैसे ही मंगलाचरण होता आ० श्री एक-एक शब्द सुनते भी थे। स्वयं कक्ष में पढ़ते भी थे। किसी से भी बात नहीं करते थे। सब लोग यदि कक्षा में बैठे हैं तो वे किसी की तरफ नजर भी उठाकर नहीं देखते ऐसा ही अन्य मुनिराज श्री प्रवचन हेतु भेजने पर करते हैं मतलब आ० श्री स्वयं इतने व्यवस्थित रहते हैं कि सभी लोग प्रवचन अथवा class में जाकर बैठें।"

(4) एक बार आ० श्री ने कहा (किन्हीं विद्वान की टिप्पणी पर) तत्त्वार्थ सूत्र का बिल्कुल शुद्ध उच्चारण आप भी नहीं कर सकते फिर अन्य पर टिप्पणी नहीं करना चाहिए।

(5) "बात खजुराहो के अध्यक्ष जी की दुकान "कुबेर" की है। गुरुजी के साथ हम लोग शिल्प कलाओं को देखने गये। वहाँ एक झन्कार यन्त्र देखा। वाइब्रेशन की आवाज इतनी तेज आती थी। आ० श्री ने कहा - देखो शब्द सोच समझकर प्रयोग में करो। अन्यथा वह ध्वनी कहाँ तक जायेगी पता नहीं।"

o मूर्ति बन रही थी - उन्होंने पूछा - आ० श्री कैसी मूर्ति है। आ० श्री बोले - पूछ क्यों रहे हो? क्यों कि भगवान को बेचा नहीं जाता। व्यवसाय हेतु पूछोगे तो हम कुछ नहीं कहेंगे।

o गुफा जैसी है - सम्मोहन जैसा लगता है।

0 कला की अद्भुत-अद्भुत कृतियाँ आन्टी को दिखायी। आन्टी ने कहा- ये ही भारत का इतिहास है। इस कला को सभी अपने जीवन में प्रयोग करने लग जाये तो आज किसी के आगे हाथ फैलाने की आवश्यकता है ही नहीं। कला बहत्तर पुरुष की, तामें दो सरदार। एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार।

0 एक पेटी ऐसी बतायी जिसमें जब दुल्हन की विदाई होती है तो वह उसके साथ भेजी जाती है, उसमें वस्त्र आदि एवं कीमती गहने आदि रखकर भेजे जाते हैं। थे। आन्टी ने तुरन्त कहा जो उन सभी लोगों के लिए नया नाम था - मंजुषा कहते हैं इसे।

0 वहीं पास में एक पेन्टर (आर्टिस्ट) था, उसने बताया एक परिवार में कुत्ता था वह मर गया। बच्चे उसके लिए जिद करने लगे। इसने हुबहु वैसे ही कुत्ते का चित्र बना दिया। बच्चे खुश हो गये। आन्टी ने कहा - इसीलिए तो कलाकार को हर कोई चाहता है।

कुछ हटकर -

0 तत्त्वार्थ सूत्र में तत् शब्द कितनी बार आया?
33 बार
इसी प्रकार च शब्द 63 बार आया है।

0 पुरे त. सू. में झगड़े का झ शब्द ही नहीं है, इसीलिये यह कृति दिगम्बर-श्वेताम्बर दोनों बिना किसी मतभेद के मानते हैं।

28-9-18 "सभी दूर से आये हैं" प्रातः

मैं समझता हूँ आप लोग बहुत दूर से आये हैं, दूर से आये हैं तो सब लोगों की व्यवस्था में मैं भी भाग लेता रहता हूँ। हमारे यहाँ सबकी एकसी व्यवस्था रहती है। किसी के साथ भी भेदभाव नहीं किया जाता है। जब बीच में कोई आ जाता है तो व्यवधान आता है/होता है। सभी को दर्शन मिलें, ये हमारी भावना है।

आज पालकी (विमानोत्सव) में महावीर भगवान का विहार होना है, तो मैं समझता हूँ भगवान के इस विहार में हम भी शामिल हो जायें। (तालियाँ) किन्तु इतना अवश्य ध्यान रखना। सभी लोग व्यवस्थित रहना। आप लोगों को धार्मिक सभा इत्यादि में ऐसे ही आनन्द लेना चाहिए। यदि सभी खड़े हो जायेंगे तो पीछे वाले को दुःख तो होगा। नहीं होगा? [होगा] इसलिए पर की पीड़ा को भी समझना चाहिए। सभी लोग बहुत दूर से आये हैं, याद रखीयो।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष - "विश्व के सारे राष्ट्र चाहते हैं कि भारत अपनी मातृभाषा में काम करें पर विडम्बना है कि भारत ही नहीं चाहता है कि उसका काम मातृभाषा में हो वह तो विदेशी भाषा के पीछे पड़ा है।"

पालकी उत्सव

28-9-18 "अपने दोषो को निर्मूल करना है-मोक्षमार्ग" मध्याह्न

आज रविवार नहीं है फिर भी रविवार से बढ़कर जनता एकत्रित हो गयी। पूर्वजो ने इस तिथि-मिति के दिन (तीज) ऐसा कार्यक्रम रखा है, जो आज वर्षो बाद भी चला आ रहा है (व्यस्तता के बाद भी एक वर्ष में इस दिन जनता यहाँ आ जाती है। ये आस्था के बिना संभव नहीं। ऐसी आस्था पूर्वजो के पास कितनी थी बताने की आवश्यकता नहीं हैं। ऐसा कार्य उन्होंने किया जो प्रवाह चलता आ रहा है।

नदी बहती रहती है, यदि वर्षा न होगी तो वह सूख जायेगी। वर्षा होती है तो वह बहती रहती है, उसी से वह अखण्ड रूप से समुद्र से मिली हुयी रहती है। इसीलिये समाज के अग्रणी-गणमान्य लोगो का स्मरण किया जाता है। हम सभी सदोष है फिर निर्दोष कौन है? आचार्य समन्तभद्र स्वामी शान्तिनाथ भगवान की स्तुति करते हुये कहते है-

स्वदोष शान्त्या विहितात्म शान्तिः, शान्ते विधाता शरणं गतानाम्,
भूयाद् भव-क्लेश भयोप शान्तयै, शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः॥

हे भगवन् आप ही मेरे लिए शरण है। आप तो चले गये पर आपका कार्य अभी तक जीवित है, आगे भी रहेगा। उसी से हमको प्रेरणा मिलती रहेगी।

हम लोगो को अंधकार में भी उजाला मिलता रहेगा। हम मोह अंधकार में फंसे है,

आपके उस उजाले से अपने दोषों को निर्मूल करना है।

वैसे भी "अपने दोषों को निर्मूल करना ही मोक्षमार्ग है।" पर के दोषों को नहीं देखना। वह तो कोशकारों ने छिद्रान्वेषी दृष्टि कहा। अपने छिद्र देखो- पर के नहीं। अपनी आत्मा की शान्ति करोगे, तभी होगी जब स्वदोष का निवारण करोगे। इसी का सभी पर प्रभाव पड़ जाता है। दूसरे पर प्रभाव पड़े इस हेतु भी नहीं कर रहे, हम तो अपनी शान्ति अथवा विश्व शान्ति हेतु कर रहे हैं।

अपने दोषों के निर्मूलन से ही यह सम्भव है। उन्हें किसी के द्वारा बताने की भी जरूरत नहीं है वे आपको ज्ञात हैं। पर्युषण के बाद अभी रविवार आया नहीं किन्तु यहाँ तो प्रतिदिन ही रविवार हो रहा है। प्रबन्धक कह रहे हैं कि महाराज- इतनी जनता तो हमने यहाँ कभी देखी ही नहीं। जहाँ-कहीं भी जाओ धारा का महोत्सव होता ही रहता है। पर्व के उपरान्त जो तीज आती है उस दिन यहाँ सभी लोग इकट्ठे होते हैं।

सभी की अपनी-अपनी तिथि होती है। सुना है गुना-अशोकनगर आदि में तो दो-दो महिने तक यह चालु रहता है। वे लोग सबसे बाद में रखते हैं, ताकि सभी लोग आ सकें। हमारे पास भी आकर निवेदन करते हैं- "हमारे यहाँ मेला होना है कोई संघ भेज दो।"

हम कहते है अशोकनगर में वैसे ही जनता कॉफी है, यदि बाहर से और आ जायेगी तो क्या होगा?

गुना में भी यही हाल है, हजारो घर है। इस प्रकार सभी लोग इसे मनाते है। स्वदोषशान्त्या..... - "दूसरे के अस्तित्व को नकारना ये बहुत बड़ा अपराध है।" अशान्ति का मूल कारण यही है- दूसरे के अस्तित्व को नहीं स्वीकारना। यही अज्ञान हम लोगो के जीवन में फैले हुये है। वे इस प्रकार की साधना करके गये, उसका प्रकाश आज भी उपलब्ध हो रहा है।

ये बात अलग है कि हम उसका उपयोग कहाँ तक करते है। यहाँ की कमेटी ने बहुत बड़ा दायित्व अपने कंधो पर लिया है। उन सभी ने अवसर का लाभ उठाते हुये, [आने वाली पीढ़ी क्या कहेगी?] कार्य किया। अपने स्वयं हेतु एवं आने वाली पीढ़ी के लिए भी उनके मन में आ गया। जो जिनालय है उनकी रक्षा करते हुये इन्होने यह किया है। इसको पुरे के पुरे चौकड़े ने स्वीकारा है। तथा सभी ने अपनी क्षमतानुसार इसमें जलाञ्जली भी दी है।

इसका नाम "स्वर्णोदय" सभी ने स्वीकारा है, अब नाम के अनुसार काम करेगी। इस क्षेत्र से लगे 5-6 जिला (सतना - छत्तरपुर - पन्ना - टीकमगढ़ - करनी आदि) जनपद है। यह ऐतिहासिक नगरी होने के

इसका महत्त्व अलग है।

सभी सात्विक जीने वाले लोग थे। कई बार प्रवचनों में कहा- महाराजा हस्तसाल के समय जैसे बड़े बाबा के यहाँ सारी जनता ने दायित्व उठाया। सागर सम्भाग से जुड़ा है। आज बड़े बाबा के नाम से जाने जाते है। ऐसे ही यहाँ भी सबने दान देकर इस क्षेत्र का विकास करना चाहते है। दान दिया नहीं बल्कि अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग कर लिया। हम भी इनके भावों से जुड़े।

इसी प्रकार पपौरा गये थे, वहाँ टीकमगढ़ की जनता ने किया। बीच में बैद्या जी - मात्र पाँच दिन ही रहे पर वे भी चातुर्मास से कम नहीं हैं। अभी भी आये थे- महाराज! एक दौर और हो जाये। इन लोगों से कहना है- "समय कम लेकर काम बड़ा करना है।" बड़ा मतलब अभिमान की अपेक्षा नहीं कह रहा। सभी ने संकल्प लिया है। इन लोगों ने कहा - अध्यक्ष आदि की आवश्यकता नहीं है।

अभी जुलुस में घण्टाई मन्दिर गये थे। "खण्डहर बता रहे हैं कि अपने जमाने में कितना बुलंद होगा।" काल में सबको समाना है। अब कालजयी बनने हेतु कार्य करो। अच्छा लगा। आप लोगों ने परम्परा का निर्वाह करते हुये यह कार्य किया। जनता तो आती रहती है-जाती रहती है। यह क्षेत्र पुलकित है आगे भी हरा-भरा बना रहे, इन्हीं भावों के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रविवार
30-9-18

स्वर्णोदय तीर्थ का शिलान्यास

(मुख्यमंत्री शिवराज जी एवं वित्तमंत्री जैन जी)

- कभी-कभी बिना कहे भी मंगलाचरण किया है, आप वही किया है।
- 35-36 वर्ष पूर्व इस क्षेत्र पर आना हुआ है।
- हजारों वर्ष के उस वातावरण को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। वे मूक जिनालय कह रहे हैं- हमें पीछे भी देखना है।
- हमें नया पथ नहीं बनाना है, जो बना है उस पर चलना है।
- मैं चरणों की अपेक्षा जो चरण चिन्ह को ज्यादा महत्व देता हूँ। उन चिन्हों से ही पता चलता है हमें अनुचर होकर चलना है समानता से नहीं चल सकते।
- मैं साथ चलने का आशीर्वाद नहीं दूंगा, पीछे ले आते हो तो मैं मना थोड़े ही करूंगा। राजपथ बन जायेगा। अखण्ड भारत को ये खण्डहर बता रहे हैं। खण्डहर बताते हैं कि इन्हारते - - । सन्यासियों के मार्ग पर चलना है।
- चैत्र का वातावरण - हमेशा सुख का वातावरण रहता है चैत्र में।
- 5 वर्ग रहते हैं व्यसन में क कह दिया तो पांचों ही आयेंगी।
- एकजुट होकर रहें - पंजा की मुट्ठी बन जाती है।
- शिवराज जी नाराज नहीं करते - राजी नाराजी - नाराज सा लगा - - -
- हर बात में समर्थन नहीं। सोच-विचारकर स्व स्वीकार जिसमें कल्याण हो वही करते हैं। उदाहरण- चतुष्पद में से एक पक्ष का चयन, तीन को अभी नहीं जायेंगे आगे।
- अहिंसा के लिए मर जाना भी अमर होना है। मर जाते हैं। पैर वहीं रखें जहाँ जीव न हो। कांटे पर भी पैर नहीं रखना।
- अहिंसा की रक्षा हेतु हिंसा भी अहिंसा है।
- कांटे को निकालने के लिए सुई रखना हथियार नहीं है।

4-10-18 "कैसे करें विधान?" प्रातः

पूजन करने वालों को समझना चाहिए कि हमने स्थापना कर दी है। हमें लाकर यहाँ बिठाते हो तो आप सभी को भी अनुशासन में रहना है। सिद्धचक्र विधान कर रहे हो, एक बार स्थापना कर दी अब बीच में अन्य इधर-उधर की कोई भी बात नहीं बोलना चाहिए अन्यथा काहे का विधान। संकेत तो बाद में देंगे, पहले इन बातों को ध्यान रखो।

जब तक अर्घ्य पूर्ण नहीं हो तब तक बोलना नहीं चाहिए। ऐसे विधान होता ही नहीं है। आज से इन सब बातों का ध्यान रखना है। व्यैक्तिक विधान है पर सभी लाभ ले सकते हैं। मन में प्रशस्त भाव रखना चाहिए। जितने भी दिन लगे- पूरे दिन मात्र धार्मिक चर्चा सुनना और सुनाना चाहिए। पूजन में इधर-उधर की बात करना मतलब संविधान में ही गड़बड़ कर दिया। उसका कोई महत्त्व नहीं रहेगा।

इसका महत्त्व पहले समझो। जो असिद्ध थे, सिद्ध हो गये उनकी महिमा कही जा रही है। भले ही व्यैक्तिक विधान, फिर भी आप सब भी बहती गंगा में हाथ धो सकते हैं। ऐसे विधान बार-बार तो होते नहीं। सभा-भवन भी खूब बड़ा बना हुआ ही है, शांति के साथ आकर बैठ जायें। आज तो पहला दिन है, प्रारम्भ की क्रियायें हो गयीं। आप सभी को ब्रह्मचारी लोग जैसा

कहते हैं इसी अनुसार शान्ति के साथ इस पुरे अनुष्ठान को सम्पन्न करना है।

मैना सुन्दरी के बारे में भी आप सभी को चिंतन करना चाहिए। प्रसिद्ध एवं सत्य घटना है। जो भी उलझने हैं, चाहे शारीरिक हो अथवा मानसिक हो। सब उलझने कर्मों की उलझन के कारण ही है। इन आठ दिनों में असिद्ध से सिद्ध पामर से पावन बनाने की प्रक्रिया आप सब के सामने आ रही है। इसे ध्यान से करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"बायस चलना शुरु करें"

" जिस प्रकार किसी व्यक्ति की हड्डी टूट जाने पर प्लास्टर बांधा जाता है। दो तीन महिने बाद खोला गया। अब उससे कहा जाता है- चलो। वह कहता है चला नहीं जाता। उसके हाथ में लकड़ी की छड़ी दे देते हैं, अब इसके सहारे से धीरे-धीरे चलना शुरु करो। वह व्यक्ति धीरे-धीरे चलता है और पुनः पूर्ववत् दौड़ने लग जाता है।

ठीक इसी प्रकार भारत की दशा है। विदेशी हवा ने इसको जख्मी कर दिया, जब भी वह उसे छोड़ना चाहता है तो कष्ट का अनुभव होता है किन्तु वह कष्ट कुछ ही समय का है उसके बाद पुनः प्राचीन भारत - सोने की चिड़िया हो सकता है।"

6-10-18 "समझो फण्डा Mobile का" प्रातः

आप लोग इस स्थान पर सिद्धचक्र मण्डल विधान हो रहा है, उसमें शामिल हो रहे हैं। यहाँ पर असिद्ध से सिद्ध बनने की प्रक्रिया बताई जा रही है। एक-एक दिन पूजन-पाठ के साथ यह व्यवस्थित कर रहे हैं। यह धर्म सभा है। पहले ही आपसभी को अवगत करा दिया था कि यहाँ केवल धर्म की ही कथा हो। अन्यत्र तो दुनिया की कथा करते ही हो यहाँ तो मात्र धर्म की ही बात होना चाहिए।

किन्तु आज अशुद्ध जीवन शैली का ये परिणाम हो गया कि दोनों ही स्थान समान हो गये। फिर भी हम अपने विचारों से इस धार्मिक स्थान के विचारों को दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। इन्हीं भावों को लेकर आपसे कह रहा हूँ। बड़ी-बड़ी कम्पनी के 6-7 लोगों की बात है। पत्रिका के माध्यम से कल ही हमारे पास किसी व्यक्ति ने पहुँचाया था। जो पहुँचाने वाले हैं वे उसे स्वीकार करते हैं या नहीं ये तो वो ही जाने? अन्यथा मात्र हमारे लिए सूचना देने जैसा होगा।

फिर भी आपसे कह रहा हूँ। कोई न कोई व्यक्ति टिकिट प्राप्त करता है, उसकी चुनाव में अवश्य ही जीत होगी। पर ये स्थान रखना हमारी टिकिट प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है। सोच लो- विचार कर लो। तो वह ये है कि विश्व के बड़े नामी

लोगों के नाम है।

अखबार भी रात्रिकालीन नहीं भास्कर की बात है। चन्द्रमा नहीं भानु-भास्कर के उजाले में लिखा है। आप बिना चश्मे भी इसे आसानी से पढ़ सकते हैं। उसमें लिखा प्रसिद्ध Mobile कम्पनी के इन व्यक्तियों के बच्चे इसको छुते भी नहीं हैं। ताली एक हाथ से कैसे बजेगी क्यों कि दूसरे हाथ में तो आपके Mobile है। पहले mobile नीचे रखो तब ताली की आवाज आयेगी। हमारा उत्साह बढ़ रहा है किन्तु इसे लाने के बाद भी काम हुआ क्यों नहीं।

वे सभी लोग कहते हैं कि हम पालन करेंगे तभी बच्चों पर प्रभाव पड़ सकता है। सारे के सारे बच्चे mobile के इस अखण्ड व्रत का पालन कर रहे हैं। घर में ही व्यापार हो रहा है किन्तु इन लोगों ने उसे हाथ भी नहीं लगाया। बड़ी विस्मयकारी घटना लगती है। शाकाहारी हो या मांसाहारी सभी पर इसका प्रभाव पड़ेगा। बाद में लिखा है - हम अपने बच्चों को बिगाड़ना नहीं चाहते। दूसरे के बिगड़ जाये तो हम क्या करें?

शासन को भी इन सबमें साथ देना चाहिए। अन्यथा यह महान अपराध माना जायेगा। अब किताब को ढूंढा जायेगा (what is this) क्यों कि laptop में ही किताबे (जिनवाणी) रखने लगे है। वो शुद्ध कभी रहता ही नहीं है। अब पुनः लौट रहे हैं। आप तो बीच से ही वापस

लौट आइये।

आप वहाँ तक जा नहीं पाओगे। फिर लौटने की तो बात ही नहीं। आजादी के 70 वर्ष ही ज्यादा हो गये, विदेश नीति के कारण यह हो गया। अब पुरुषार्थ करने की आवश्यकता है। अब अर्घ्य भी कैसे चढ़ रहे हैं, क्या पता? Mobile ही चढ़ाने लग गये। हम लोगों के चरण में भी अर्घ्य की जगह पेंसिल, पेन, Note Book आदि चढ़ा देते हैं, पुंज कहाँ गया? क्या है ये सब?

ये उपकरण नहीं। उपकरण तो वही है जो उपकार करे। "उपकारं करोति इति उपकरणं" जिनवाणी चैनल जनवाणी हो रहा है। ये सब आय का स्रोत नहीं होना चाहिए। इन सब के लिए मैं आशीर्वाद नहीं दे सकता। जिनवाणी कह रहे हो पर वह जिनवाणी है कहाँ? उस जिनवाणी को तो रत्नों की पिटारी में रखने योग्य है। आंखे खोलो - भीतर की आँख खोलने हेतु कहा गया है।

"आगम चक्खु साहु" कहा है। उस आगम का बहुमान करो। इसका क्या बहुमान रहा - देख रहे हो। सर्वोच्च न्यायालय में शपथ लेते हैं - गीता आदि पवित्र ग्रन्थों पर हाथ रखकर शपथ लेते हैं। क्योंकि सत्य की रक्षा करना है। सत्य बोलने को कहा। उस सत्य को जन - जन तक पहुँचाना चाहते हो तो आप प्राचीन पद्धति पर लौट आइये। इसी पद्धति से बहुमान को सुरक्षित

रख पाओगे, अन्यथा सब समाप्त हो जायेगा।

मैं तो इसका समर्थन नहीं कर सकता। बच्चे पढ़ना भूल गये हैं। पढ़ाई क्या है? समझ नहीं पा रहे हैं। विदेश से लौट कर आ रहे हैं, कटु सत्य है, इसे स्वीकार करो। जो मिठाई है इसे मत बिगाड़ो। आपका बिगड़ गया तो बिगड़ गया किन्तु अब आने वाली पीढ़ी (बच्चों) का तो सुधारो। उन 5-6 व्यक्तियों ने तो अपने परिवार का सोचा, आपने क्या सोचा। वह मूल में साधन-सामग्री है ही नहीं। इसीलिए रिजल्ट आने पर कहते हैं- ये पढ़ाई में कमजोर है। कारण यही mobile है।

लेकर बैठ जाते हैं। दिमाग, आँखें, बुद्धि सब खराब फिर स्वास्थ्य तो खराब हो ही रहा है। अब इसी कारण बीमार तैयार हो रहे हैं, बच्चों को बिगाड़ रहे हैं। आपको ये वचन कटु अवश्य लग रहे होंगे पर ये मेरे वचन नहीं हैं, कल जो मुझे पढ़ाया था उसी को आपके सामने रख रहा हूँ। मुझे कहना तो नहीं चाहिए पर साहस के साथ हमने आपके सामने रखा। क्यों कि आप भी साहस के साथ उसी ओर भाग रहे हैं तो हमें भी साहस के साथ कहना तो पड़ेगा, ताकि आप गलत मार्ग में जाने से रुक जायें। फिर भी किसी को गलत लगा हो तो क्षमा कर देंगे।

अहिंसा परमो धर्मः की जय।

7-10-18 "लेश्या हो छिले गोले की सी" प्रातः

कोई आकुलता न करें, मध्याह्न में रविवार है, सुबह नहीं। फिर भी आप लोग आकर ऐसे बैठ गये हैं जैसे पंगत में बैठे हो। पंगत में आने पर कुछ न कुछ परोसना ही पड़ता है। मध्याह्न में यदि चाहोगे तो देख लेंगे अन्यथा उपवास तो करना ही है। तो आप लोगों ने श्री फल देखा होगा। दुकान पर श्री फल लेने जाते हैं। दुकानदार से पूछा- क्यों आपके पास श्री फल नहीं हैं क्या? दुकानदार कहता है- आप भीतर आये तो बाहर में आपको श्री फल नहीं दिखे क्या?

आप उनमें से जो भी लेना चाहे ले सकते हैं। वह व्यक्ति नींबू बराबर एक छोटा सा कंकड़ उठाकर एक ढेर में से एक श्री फल उठाता है, टु-टु बजाकर रख देता है। दूसरा भी उठाकर वैसा ही करता है, उसे भी रख देता है, तीसरा उठाता है- उसकी आवाज में कमी आती है। दुकानदार कहता है- भैया हम भी बाहर हैं, तुम भी बाहर हैं, भीतर भगवान है इसलिए ज्यादा ठोका-ठोकी मत करो।

आपकी आस्था हो तो पैसा दे देना। कोचीन से आये हैं। बिल्कुल शुद्ध माल है। फिर वह व्यक्ति कंकड़ को अलग कर देता है। अब श्री फल

को युं-युं करके बजाता है।

भीतर बैठा गोला खेती फल कहता है - हमारा तो नरेंद्री मतलब देह से भी कोई मोह नहीं है। दमोह वाली सोच लो। उस नरेंद्री के साथ जब वह चिपका था तो भीतर से पानी की आवाज आती थी, पानी सूख जाता है मतलब भीतर से अलगाव हो जाता है। वह गोला कहता है मैं सूख गया हूँ। फिर इसके उपरान्त वह गोला काम में आता है।

सिद्धचक्र विधान में काम आता है। ऐसी स्थिति में भी अभी थोड़ा का कबूतर रंग का छिलका बचा है, उसे भी छील-छालकर हमारे सामने रख दिया है। अब वह गोला बिल्कुल सफेद-शुक्ल लेश्या का धारक है। उसकी भीतर-बाहर दोनों ओर से शुक्ल लेश्या है। आप बाहर से तो शुक्ल पर भीतर से नहीं है। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि इस गोले का अनुकरण करके भीतर - बाहर दोनों ओर से शुक्ल हो जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विशेष -

- हरी को भजो, लेकिन हरि का तो त्याग ही करो।
- "आन्टी की विशेषता है कि वे कोई भी कहानी सुनाते है तो कहते हैं कि यह कहानी हमने दूसरी कक्षा में सुनी-पढ़ी थी। दूसरी कक्षा उनकी बहुत विराट है।"

8-10-18 "चेतन रत्न मिले वह गाँव कैसे? प्रातः

आप लोग हमारे समय को ले लेते हो ये गड़बड़ करते हो, आज हमने संकेत कर दिये हैं। अभी ब्रह्मचारीजी कह रहे थे खुरई गाँव से लोग आये हैं। और भी गाँव से लोग आये हैं। किन्तु हम कहना ये चाहते हैं कि जहाँ से चेतन रत्न मिले हैं उसे गाँव कह दो ये ठीक नहीं। वहाँ से महाराज मिले, आर्यिकायें मिली, ब्रह्मचारी- ब्रह्मचारणी तथा प्रतिभास्थली में भी बहने हैं। कई उम्मीदवार अभी लाइन में हैं।

जहाँ से चेतन रत्न, वो भी भी चढ़ा-चढ़ाकर गये, ऐसो महाराज। मांगने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती। बिल्कुल व्यवस्थित दुकान रखना चाहिए ताकि इसी प्रकार आगे भी चलती रहे। समय तो पर्याप्त हो गया। वैसे भी खुरई वालों को हमने कई दिन नहीं कई महिने दिये हैं- वाचना की है। फिर माताजी- महाराज जी को तो चातुर्मास हेतु भेजते ही रहते हैं। थोड़ा सा अन्तराल पड़ जाता है तो शिकायत सुनने को मिलती है। हम भी सुन लेते हैं, क्यों की पुराना ग्राहक है, कहाँ जायेगा। अब नये ग्राहक भी बनाते जाइये। पुराने एवं नये यहाँ तो सब आते ही रहते हैं। अपनी तो हॉलसेल की दुकान है, खूब चलती है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

9-10-18 "कर्णप्रीय हो ध्वनि" प्रातः

यहाँ भीड़ आ रही है। आपकी ध्वनि सब सुन रहे हैं फिर इतनी तीव्रतर ध्वनि रखने की जरूरत क्या है। ध्वनि यंत्र का प्रयोजन इतना ही हो कि वह कानो तक पहुँचे / सुनने लायक हो। जो शब्द सुनाई पड़ रहे हैं उनका अर्थ भी समझ सके इसी का नाम ध्वनि है। इतनी तीव्रता के साथ बोलेंगे तो अर्थ कभी समझ में आ ही नहीं सकता।

हमारे इस प्रवचन का यही सार है। पूजन भी जब पढ़ते है तो यही ध्वनि रहनी चाहिए। मैं पूछना चाहता हूँ अभी सभा-मण्डप में सबको सुनाई दे रहा है या नहीं? अच्छे से दे रहा है। इससे तेज रखते हो तो वह ध्वनि का अपव्यय है। किसको सुनाना चाह रहे हो। देवों को तो सुनना है ही नहीं। हम पहले भी इस विषय पर पर्याप्त बोल चुके हैं।

कई स्थानों पर कहा। बाहर में जो काम करने आये वे भी प्रभावित होते है। कोई मरीज है, बुखार आ रहा है ऐसे में सहन करने लायक वाणी होना आवश्यक है अन्यथा कानो में ऊँगली डालकर बैठ जायेगा। प्रवचन भी तभी सुन पाओगे। आपको समझ में आ रहा है ना? बोलो ना? [हाँ] समझ में आ जाय। बच्चे हैं उनको बताना आवश्यक है। कम उम्र में कानों पर और ज्यादा प्रभाव पड़ता है। आचार्यों ने यही कहा कि वाणी ऐसी

हो जो कानों को भी मधुर लगे/लाभप्रद हो।

भगवान की वाणी ऐसी ही होती है - आबाल-वृद्ध सभी लाभान्वित होते हैं। सामने प्रतिनिधी खड़े है (कैमरे) वे भी सुन रहे है, उसमें सब भर रहे हैं, आप बाद में भी उसका लाभ ले सकते हैं। हमारे इतने धीरे बोलने पर भी आप सब लाभान्वित हो रहे हैं, यदि तेज बोलेंगे तो वह अपव्यय की कोटी में आयेगा।

वैसे ही सरकार हरबात में कटौती कर रही है। पूजन-विधान इत्यादि में मन-वचन-काय की चेष्टा को सीमित बनाकर चलें। जब उसमें अवहेलना हो तो अपने आपको दण्डित करें। परीक्षा के काल में ये ध्वनियाँ विद्यार्थीयों के लिए बाधा उत्पन्न करती है। जब कि यह सिद्धचक्र विधान तो सभी के लिए सुभिक्ष में कारण है। ध्वनि कम रखने से उसमें मनोज्ञता भी आ जायेगी। उससे सभी अधिक लाभान्वित होंगे। इस सिद्धचक्र का लाभ सभी को मिले इसी हेतु यह विधान रखा है।

संसारी प्राणी कर्म के वेग को समझ नहीं पाता है। इसी कारण वह परेशान होकर यहाँ-वहाँ कहीं भी चला जाता है। इस विधान का उद्देश्य यही कि किसी को भी कष्ट न हो, विश्व-शांति हेतु यह अनुष्ठान सम्पन्न हो रहा है। घर

में शान्ति होगी तभी विश्व में शान्ति होगी।

इस सिद्ध चक्र विधान का भी यही अर्थ है। सिद्ध बनने की प्रक्रिया यहीं से प्रारम्भ होती है। अपावन से पावन बनने की प्रक्रिया है। क्यों कि जो आज अपावन है वह अपावन ही बना रहेगा ऐसा है ही नहीं। हाँ! यदि एकबार पावन बन गया उसके बाद पुनः अपावन नहीं होगा। अब कुछ भी करने की आवश्यकता है ही नहीं।

आपको इन आठ दिनों में भावों की अपावनता को हटाकर पावन (शुद्ध) बनाने की प्रक्रिया यहाँ बतायी जा रही है। सिद्ध-चक्र-मण्डल-विधान का प्रयोजन भी यही होना चाहिए। चक्र का अर्थ समूह है। आप भी सिद्ध बन सकते है, इससे यह ज्ञात हो गया है। समय भी आपका हो गया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - आ० श्री शारीरिक पीड़ा को मानसिक आदेश द्वारा सहज दूर कर देते हैं। बहुत पहले उन्हें पायस की शिकायत हुई। महावीर जयन्ती पर महावीरजी पहुँचना था। गंगानगर की तरफ किसी स्थान पर थे। आ० श्री दो बार में चलकर 50 K.m. की दूरी पार करके महावीर जी आ गये। इससे वेदना और बढ़ गयी किन्तु कुछ ही समय में दूर भी हो गयी।

10-10-18 "क्या हो उद्देश्य विधान का?" प्रातः

प्रायः करके सिद्धचक्र विधान अष्टाह्निका के निमित्त को लेकर होता है। क्यों कि 8 दिन का यह विधान होता है। इस अपेक्षा से इसी विधान को चुन लेते हैं। अब इसमें जो पूजा करते हैं उनका नियम एक-आध बार का है। मतलब शाम का तो आप जानते ही होंगे हम क्यों विधान करें। शुद्ध जल लेकर भी / एकासन भी कर सकते हैं। एकासन का नाम छोटा उपवास माना जाता है।

अब वस्त्र में केसरिया वस्त्र पहनते हैं। शुद्ध केसरीया का तात्पर्य यह है कि केसर का रंग चढ़ाया जाता है। वह बहुत जल्दी सूख जाता है तथा वह धीरे-धीरे उड़ भी जाता है मतलब रंग से अंतरंग की ओर चला जाता है। मार्ग प्रशस्त हो जाता है। जो कषाय रूपी गाढ़ा रंग लगाते हैं उनका समझो अभी भीतर से रंग हल्का नहीं हुआ है। गोम्मटसार आदि में मुनिमहाराज के लिए संज्वलन कषाय हेतु हल्दी का रंग कहा। वह बहुत जल्दी उड़ जाता है, संसार में अटकाने वाला नहीं है।

इसी तरह आप लोग भी सिद्धचक्र विधान इसी उद्देश्य से करना है जिससे कषाय कम से कम हो सके। यह विधान आत्म तत्त्व हेतु बीज का अंकुरण करने का साधन है। मुनि राज भी इसी प्रकार

साधना करके मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

ये संक्षेप में आप सभी को इसकी महत्ता बतायी। लोगों की यही धारणा मात्र रहती है कि इससे तो केवल पुण्य कर्म का ही बंध होता है। ऐसा है ही नहीं। आचार्यों का कहना है कि णमोकार मंत्र आदि शुभ अनुष्ठान से तत्काल बंध की अपेक्षा असंख्यात गुणी निर्जरा होती है। पाप कर्मों की निर्जरा होती है। इसलिए पंचपरमेष्ठी की आराधना करो।

चलते-फिरते-भोजन करते समय भी णमोकार मंत्र की आराधना कर सकते हैं। णमोकार मंत्र के द्वारा ~~क्षम~~ प्राप्त कर सकते हैं- कितना बड़ा सौदा है यह। बैठे-बैठे कर सकते हैं। धारणा तो पक्की बना ही सकते हैं। धारणा करके वर्तमान की आराधना को मत भूलो। इसलिए णमोकार मंत्र को हमेशा याद रखें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Note:-

"जब आहार के समय मुनि महाराज को भी असंयमी कहा। फिर संयमासंयमी की क्या बात? मैं तो संयमासंयमी को असंयमी ही मानता हूँ। प्रत्याख्यानावरण के उदय में तो यह मानने में कोई विरोध है ही नहीं।"

11-10-18 "आराध्य के भी आराध्य की हुई आराधना" प्रातः

लगातार एक सप्ताह से सिद्धचक्र महोत्सव को प्रारम्भ करके आज समापन कर रहे हैं। इन 8 दिन में आप सभी ने यह जाना कि अपावनदशा से पावन दशा को पाने के लिए कितनी साधना करनी पड़ती है। पूजन में आपको सब ज्ञात हुआ। इस पूरे विधान में आरम्भ से उपसंहार तक पंचपरमेष्ठी की आराधना की। पंचपरमेष्ठी की आराधना णमोकार मंत्र से प्रारम्भ होती है।

इस विधान का नाम सिद्धचक्र विधान है। वास्तव में इसमें सिद्धों की ही आराधना की गयी है। अरहन्तों से भी उत्कृष्ट सिद्ध है, उन्हें प्राप्त करने की विधी इस विधान में बतायी है। वे सिद्ध अरहन्तों के भी आराध्य है, आराध्य के भी आराध्य है। इसमें स्वरूप का चिन्तन एवं स्वरूप का ज्ञान कराया अब पुनः नीचे संसार में जाना ठीक नहीं।

जब साध्य की सिद्धि हो गयी तो कुछ शेष रहता ही नहीं। ऐसे सिद्ध जिन्हें नमस्कार करने वाले अरहन्त भी है। प्रश्न उठता है कि फिर णमो अरिहंताणं प्रथम में क्यों रखा? व्याख्या करने वाले है। सिद्ध व्याख्या करने लायक बचे ही नहीं, शरीर ही समाप्त तो सशरीर वाले अशरीरी की क्या व्याख्या करेंगे। उन्होंने भी सिद्धत्व को ही ध्येय बनाया। स्पष्ट है अरिहंत अन्तिम पड़ाव नहीं, वे भी इस सिद्धचक्र विधान में उनकी आराधना करते हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

12-10-18 "द्रव्य चढ़ाओ - बिखराओ नहीं" प्रातः

प्रायः करके आप लोग पूजा आदि में चावल ही चढ़ाते हो, ज्वार - बाजरा - मक्का आदि नहीं चढ़ाते। क्यों? ऐसा इसलिए करते हो क्यों कि चावल के अलावा इन सब को योनिभूत सचित्त कहा जाता है। इनमें बीजत्व की शक्ति पायी जाती है। मतलब यदि इनको खाद - पानी - हवा आदि मिल जाते हैं तो ये अंकुरित हो जाते हैं। इसीलिए मुनि महाराज के आहार में यदि साबुत अनाज का कण आ जाता है तो वे अन्तराय भी कर सकते हैं।

इस प्रकार यह चावल अथवा अनाज हमारे भी काम आता है और आपके भी काम आता है। अब मैं ये पूछता हूँ कि चावल की खेती होती है या धान की खेती होती है। चावल पर जब तक छिलका लगा है तभी तक उसमें अंकुरित होने की क्षमता है। छिलका अलग कर दिया अब वह धान नहीं, चावल हो गया उसमें उगने की क्षमता नहीं रही। इसको ही अज कहते हैं।

अज का अर्थ ऐसे धान जिसमें अब जन्म लेने की शक्ति नहीं रही। क्यों की योनिभूत सचित्त को कभी भी देवगुरु शास्त्र के चरणों में नहीं चढ़ाना चाहिए ये अर्थ था। इसी को "अजैर्यष्टव्यम्" जिसमें अंकुरण की क्षमता न हो वही हवन इत्यादि के योग्य है। बहुत महत्त्वपूर्ण

है ये। कालान्तर में इसमें विकृति आ गयी।

जैन धर्म-दर्शन में जीवों को तो बचाया ही जाता है, जिनमें उगने (अंकुरित) की शक्ति है उस पर पाँव भी नहीं रखते, क्यों की बीजत्व नष्ट हो सकता है। पूजा आदि में ऐसे ही द्रव्य को काम में लेते है। जैन शास्त्रों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर आप सब स्पष्टतया समझ सकते हैं।

आप सभी से यही कहना है कि जब द्रव्य चढ़ाते हो तो उसे इस तरह नहीं चढ़ाओ, बिखरना नहीं चाहिए। पैरों में नहीं आना चाहिए। पूजन तो करते हो, कैसे की जाती है थोड़ा सा सीख लो बाकी सब तो ठीक है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

संस्मरण - "सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश श्री A. R. मौलचो ने ब्र. A. R. जैन (अहिंसाआर्मी) के सामने प्रश्न किया कि आज बूढ़े माँ - बाप को तो रोटी खिलाता ही नहीं फिर इतनी सारी जो बूढ़े पशुओं की राशि होगी उसे कौन खिलायेगा? आचार्य श्री ने छाती ठोककर कहा - मेरे गुरु का आशीर्वाद है सबकी पूर्ति हो जायेगी। आज यह वट वृक्ष (ज्योतिर्मय-महासंघ) उसी का उदाहरण है।" ब्र. A. R. जैन ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले को परिवर्तन करवाया। फैसला था - "बूढ़े एवं अनुपयोगी पशुओं को जीवन समाप्त कर देना उचित है।" आचार्य श्री के आशीर्वाद से इसमें सफलता मिली।

13-10-18 "आओ बने हल्के - भारी नहीं" प्रातः

सागर का जल सूर्य प्रकाश के द्वारा तपता है और सूर्य की ओर ही यात्रा कर लेता है, चुंकि वह पहले विशाल सागर के रूप में था, तपन के कारण वह तपकर वाष्प के रूप में परिवर्तित हो गया, फिर ऊपर जाकर क्षेत्र परिवर्तन से बादल का रूप ले लेता है। फिर वह पुनः पिघल कर नीचे की ओर आता है। यह नीर की यात्रा का वर्णन हुआ।

ये ध्यान रखना जब भी नीर नीचे से ऊपर की यात्रा करता है तो हल्का होता जाता है और ऊपर से नीचे की यात्रा में वह भारी होता जाता है। सुन रहे हैं आप लोग? (हाँ) तो आप सभी के सामने उस नीर का वर्णन किया। नीचे से ऊपर गया वाष्प के माध्यम से, ऊपर से नीचे आता है मतलब गिरता है वर्षा के द्वारा। पानी गिर रहा है, गिरने का अर्थ ही पतन होता है।

क्या नीचे आना अनिवार्य है? बोलो? कैसे करेगा? हम बताते हैं, वह नीचे गिरने को हो गया, क्षेत्र परिवर्तन या काल परिवर्तन के कारण वह गिरा किन्तु उसके इस गिरने को भी रोका जा सकता है। वह पानी बूंद-बूंद करके नीचे आया, एक वृक्ष के पत्तों पर वे बूंदें गिरी वह बर्फ बन गया। सघन हो गया। अब वह उसी पेड़ पर अटक गया - नीचे नहीं आ पाया। इसके लिए

उस नीर का सघन होना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

इसीलिए जो नीचे आना चाहिए था वह नीचे नहीं आया। गिरा भी किन्तु गिरा भी नहीं दोनों बातें हैं। इसी को "तत् परिणामः" कहा। परिणाम का अर्थ भाव है। आत्मा तो गिरता ही रहता है किन्तु यदि चाहे तो वह गिरने को रोक भी सकता है। रुका क्यों? भावों से /परिणामों से गिरने को बचा भी सकते हैं। इसी का नाम ऊर्ध्वगमन है।

अपने आप को भारी होने से पहले बचाओ। दो प्रकार से भारी हो सकते हैं एक शरीर की अपेक्षा से भारी, दूसरा पैसों के कारण भी भारी होते हैं। आप कौनसे प्रकार के भारी होना चाहते हैं; क्या पता? हम तो ये चाहते हैं कि आप हल्के हो जायें भीतर से भी बाहर से भी....।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

संस्मरण - "बात कुण्डलपुर महामहोत्सव की है। उस समय (वर्ष- जून २०१६) एक पत्रिका द्वारा किसी विद्वान द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द को श्वेताम्बर सिद्ध करने के लिए बहुत से उद्धरण पेश किये जा रहे थे। हमने गुरुजी से कहा- आ० भगवन् अमुक द्वारा इस प्रकार किया जा रहा है उन्हें रोकने का प्रयास नहीं कर सकते क्या? गुरुजी ने अपनी सहज मुस्कान के साथ उत्तर दिया - क्यों नियमसार में क्या पढ़ा है?- नाना जीवा नाना कम्मा ----! मतलब जिन्हें समझना ही नहीं उनको समझाना व्यर्थ है।"

सद्भावना सम्मेलन
15-10-18 "हलचली अथ के द्वारा" प्रातः

सुनने में आया है सब जगह की रेलगाड़ियाँ जो यहाँ आ रही है उनमें जगह नहीं मिल पा रही है। ये आप ही का दोष है जो इतनी भीड़ में आ रहे हैं। क्या करें बताओ? चुंकि रविवार का प्रवचन तो मध्याह्न में होना है किन्तु सुबह में ही इतनी भीड़ बैठी है - प्रबन्धक क्या करेंगे? उनसे पूछ लो। जब प्रबन्धन ही फेल हो जाये तो बिना कहे ही शान्ति के साथ बैठ जाना चाहिए - शान्ति के साथ सुन लेना चाहिए।

अभी भी 2-3 व्यक्ति खड़े है, आपही के लिए कहा जा रहा है। आप सुनेंगे तो प्रचार-प्रसार तो अपने आप हो जायेगा। आप प्रचार-प्रसार करेंगे तो फिर व्यवस्था तो फेल होगी ही। पर्व के पूर्व ही यह निर्धारित किया था। हमने सोचा - रविवार तो है ही, भीड़ में काम हो जायेगा। किन्तु आपलोग दूर बैठकर भी दूरबीन से देखते रहते हैं। चारों दिशाओं से यहाँ लोग आ गये।

"जब अति हो जाती है तो इति हो जाती है, इति के बाद अथ की ओर कदम बढ़ते हैं।" यहाँ क्रिया से ज्यादा भावों का महत्त्व होता है। मोक्षमार्ग में भावों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। ध्यान रखो जब मोक्ष का पथिक अपना एक कदम अथ के इस छोर पर रखता है,

तो दूसरे छोर पर जहाँ होती है, वहाँ भी हलचल मच जाती है।

यहाँ से वहाँ तक करंट पास हो जाता है, बस इसके लिए तैयारी करनी पड़ती है। यह लोकतंत्र है, जनता का देश है, जनता के द्वारा ही शासित है। नेताओं को चुनाव, आप ही के द्वारा लाया गया। करने वाले कौन है? (जनता) बस अब आपको जागने की जरूरत है। सूरज के आने के पूर्व ही प्रबन्ध हो जाता है। भोर होते ही भाव विभोर हो जाते है।

अभी हथकरघा की बात चल रही थी, जनता के भाव, विभोर थे। उमंग-उल्लास है। युवक-युवतियाँ यदि नौकरी की ओर न भागें, हाथ का स्वागत करें तो रखने का स्थान नहीं मिलेगा। ध्यान रखो- हाथ को जीवन में कभी भूले नहीं। हाथ से ही श्रमण अथवा श्रावक बन सकते हैं। हाथ नहीं तो कोई मोक्षमार्ग को भी प्राप्त नहीं कर सकता। जब मोक्षमार्ग नहीं होगा तो उस तरफ हलचल भी नहीं मच सकती है। वहाँ सब सुरक्षित है।

हजारों-लाखों नदियाँ भी यदि सागर में मिलती जायें तो सागर में सब प्रबन्ध है। इतना अवश्य है कि सागर में मिलने से पूर्व नदी को मीठा होना पड़ता है। ये हलचल कहाँ तक जा रही है? मात्र देहली, बम्बई आदि स्थानों पर ही नहीं, अब जेलों में भी यह आवाज पहुँच चुकी है। मध्यान्ह में उन्हीं लोगों के मुख से आप

सब लोग सुन लेना।

नौकरी मिले या न मिले वस्त्र तो प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए। जेलों में भी वस्त्र तो आवश्यक है। पंचमकाल का अंत हो उससे पूर्व ही सभ्यता का परिचय सबको कराना अति आवश्यक है। उस मार्ग पर चलना है, जिस पर भ्रमण नहीं होता है। यदि चाहते हैं तो स्वयं अपनी सेवा प्रारम्भ कर दो। स्वयं द्वारा सेवा होगी तो कहना ही क्या? राष्ट्रीय सेवा इसी का नाम है।

इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को सक्रिय होना पड़ेगा। वैशाखी के माध्यम से आप चल भी नहीं पायेंगे। यदि पांवों में बल है, यात्री दमदार है, हौसले बुलंद है तो यात्रा पूर्ण करके ही छोड़ता है। फिर यदि वह अकेला भी है तो चिंता नहीं। आप सब लोग तो बहुत उमंगे लेकर आये हैं। आपको कैसा लग रहा है? आप भी हमसे पूछ सकते हैं, महाराज! आपको कैसा लग रहा है? तो मैं कहना चाहता हूँ कि आप सबकी प्रशंसा से भी बढ़कर मेरी प्रशंसा है। ऐसी प्रशंसा प्रत्येक व्यक्ति के भीतर आये।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विद्वत संगोष्ठी से → "सिद्धान्तों एवं आगम के आधार को कायम रखकर ही शिथिलाचार को दूर सकते हैं। अन्यथा सब कुछ नष्ट हो जायेगा। मूलाचार रीढ़ है।"

15-10-18 "64 प्रहरी पीपल है - हथकरघा" प्रातः

वैसे कल काफी सुना चुके हैं, फिर भी बैठे हैं तो सुनो! क्या सुनाये? दुकानदार ग्राहक को पूछता है कि नहीं - क्या चाहिए? हमने जो समझा वही बताते हैं। एक व्यक्ति (खादी ग्रामोद्योग के चेयरमेन श्री दत्तात्रयजी) कल भी समय दिया था। आज भी उन्होंने समय दिया। उसमें (बैठक में) मैं भी शामिल हो गया। सुना 30-35 वर्ष हो गया, लौटकर पुनः यहाँ आये हैं। सुबह का भूला शाम को घर आ जाये वह भूला नहीं कहलाता है। कई लोग लौटकर आ जाते हैं।

जब अनुभव हो जाता है तो इसी तरह घटित होता है। शब्द मात्र से अर्थाभिव्यक्ति नहीं होती, शब्द के बिना भी हावभाव इत्यादि से बोध हो जाता है। वैसे भी हम सम्यग्ज्ञानी हैं, "सम्यक् ज्ञान में जिज्ञासा कम अनुभव ज्यादा होता है। हम तो अनुभव के पक्ष में रहते हैं। अनुभव तभी संभव है जब गति हो। गति के बिना प्रगति कैसी? उन्नति कैसी? आज गति के अभाव में प्रगति / उन्नति की बात हो रही है।

ये सब ठीक नहीं हैं। कुछ लोग जिज्ञासा रख रहे थे, वे जवाब दे रहे थे। एक जगह बहुत ही अच्छा सुना। "अनुभव हेतु सुनना ही होता है - सुनाना नहीं।" कानों से सुन सकते हैं पर feeling तो भीतर से ही होता है। एक उदाहरण याद

आ गया।

64 प्रहरी पीपल होती है। क्या है यह? बाजार से पीपल खरीद कर 64 प्रहर तक उस पर घन पटकते है। एक दिन में 8 प्रहर [आठों याम] होते हैं, मतलब एक सप्ताह तो चाहिए। तब 64 प्रहरी पीपल तैयार होगी। "आज यंत्र का युग है, मंत्र का युग तो है नहीं" उसने हिसाब लगाया - एक प्रहर में इतनी चोट पड़ती है, तो 8 प्रहर में इतनी तथा 8 दिन में इतनी चोट होगी। बस बटन दबा दिया।

इधर हो हन, मनोमन उत्पादन चालु हो गया। ये भारत का विकास हो रहा है - हओ। ये 'विकास' नहीं - विनाश है। जो औषध बनना था वह बनी ही नहीं। चोट के गिनने मात्र से नहीं, चोट कैसे पड़ना है, किस भावों से पड़ना है ये बहुत महत्वपूर्ण है जो मशीन (यंत्र) से असम्भव है। अखण्ड भक्तामर के पाठ की तरह है ये, कोई एक व्यक्ति ही नहीं कर सकता - बदलते रहते हैं तब होता है।

उन्होंने कहा रिद्म्ब अंग्रेजी में बोलते है मतलब लय के अनुसार चोट होना चाहिए। हाथ को प्रशिक्षण है, दृष्टि को प्रशिक्षण है, स्पर्श में भी प्रशिक्षण है। "ये शिक्षण नहीं प्रशिक्षण है।" तब जाकर वह महिनों नहीं वर्षों के ज्वर (टाइफाइड) को भी बाहर निकालने के काम आता है। नहीं तो आपको

ही बाहर निकाल देगा।

श्मसान यात्रा पहुँचा देगा। कौनसी यात्रा निकालना है? हमें तो महाराज! खजुराहो की यात्रा निकालना है। हथकरघा में क्या-क्या गुण है ये बताने की आवश्यकता नहीं है। "6 पहरी पीपल का काम करता है हथकरघा।" यंत्र तो रोगी बना देता है। पहले ठीक हो जाओ - 70 वर्ष हो गये हैं। अभी भी स्वास्थ्य बिगाड़ ही रहे हो।

एक लय से चलोगे - थकोगे नहीं।" शारीरिक व्यायाम भी होगा एवं भीतरी आयाम भी होगा। भीतरी आयाम कैसे? इससे नेत्र ज्योति बढ़ेगी। सामने वाला कहता है - आपके कहने से मैं थोड़े मानूंगा। हओ। कैसे घटित हो सकता है - सुनो। जब आई फ्लू सब ओर फैल गया था। डॉक्टरों ने कहा महाराज बिना चश्मा के तो काम नहीं होगा। हमने सोचा - अभी-अभी मुनि बना हूँ और चश्मा? ये तो ठीक नहीं। भीतर देखेंगे तो ज्योति अपने आप बढ़ जायेगी। हमने वही किया।

फिर कहा गया - ये ट्यूब तो डालनी होगी अन्यथा [हमने प्रयोग नहीं किया] एक ने ये त्रिफला पानी एवं आई-कप है, इससे ठीक हो जायेगी। फिर Eye एक्सरसाइज बतायी गयी। 9 एक्सरसाइज का अर्थ स्वयं की एक्सरसाइज वह तो मैं करता ही

है। क्या करना है बुद्ध?
इसमें गर्दन नहीं हिलाना और आँखो को यूं-यूं (ऊपर-नीचे, दांये-बांये) करना, तो हथकरघा में और कुछ नहीं होता, ये ही होता है। हम पैसे नहीं लेते। बस! इनका भी उद्धार हो जाये ये भावना जरूर करते रहते है। हथकरघा में ये ही भाव होते हैं।
अहिंसा परमो धर्म की जय।

सद्भावना सम्मेलन के Notes- निशान्त
मुख्य अतिथी खादी ग्रामोद्योग के Chief दत्तात्रय ने कहा- महावर
हमें हथकरघा के निम्न 5 लाभ है-

1. Eco friendly — स्वस्थ पर्यावरण
2. Family friendly — स्वस्थ परिवार
3. User friendly — स्वस्थ प्रयोगकर्ता
4. Revenue friendly — स्वस्थ पैसा
5. Fashion friendly — स्वस्थ पसंद

विशिष्ट अतिथी - उ०प्र० के आगरा / लखनऊ के जेलर - विजय कु. जैन
0 अब आप उत्तर प्रदेश को भी उत्तम प्रदेश बना दिजिये आ० श्री आपकी कृपा होगी। (दो वर्ष की सर्विस)
0 यरवदा जेल अधिक्षक - उमाटी पंवार (पूना) =
यरवदा जेल को सलमान खान एवं अब्दुल कलाम के नाम से नहीं गांधी, नेहरू, तांत्या टोपे आदि के नाम से जानो।

16-10-18 "कैसे हो भविष्य मीठा?" प्रातः

आपने सुना होगा, सब लोगों को ज्ञान भी होगा, पता भी होगा कि सागर का पानी खारा होता है। क्यों ठीक कह रहा हूँ न मैं? [हाँ] सभी सागर के पानी खारे ही होते हैं ऐसा नहीं है। क्षीर सागर भी होता है। वहाँ से पानी लाकर भगवान के सिर पर धारा कर दी जाती है। आप लोगों के पास खारा पानी का सागर है, उसे क्षीर सागर का मीठा पानी बना दिया जावे।

क्यों आप चाहते हैं या नहीं? फोकट में कैसे होगा? हम ये कहना चाहते हैं कि सागर संग्रह करता रहता है, उसमें से थोड़ा भी निकालना प्रारम्भ कर दो वह मीठा होना शुरु हो जाता है। जितनी भी नदियाँ सागर में मिलती हैं वे कभी भी खारी नहीं होती - मीठी होती है। सागर की प्यास बहुत है। उसकी प्यास बुझाने के चक्कर में स्वयं भी खारी बन जाती है। सागर कभी भी तृप्त नहीं होता।

आप लोगों ने धन का अर्जन एवं संग्रह किया। इसके खारेपन को मिटाकर मीठा बनाने का और कोई भी उपाय नहीं। जहाँ पर भी उपयोग हो रहा है उस कार्य में थोड़ा भी आपने दिया वह खर्च नहीं विनियोजन है। दान देते ही दो नम्बर का एक नम्बर में हो जाता है। इसके लिए सरकार भी मना नहीं कर सकती। इसके लिए हमारा तो सदैव आशीर्वाद

रहता है।

एक पन दो काज नहीं २०० काज हो जाते हैं। इते भी तथा उते भी दोनो जगह ठीक हो जाता है। बिना कहे ही इस प्रकार का कार्य करते रहना चाहिए, भविष्य अवश्य मीठा हो जायेगा। भगवान ने कहा इनको ऐसा ही आशीर्वाद देते जाना, मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी इसी तरह आगे बढ़ते जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"धारणा बदल दो"

ईर्यापथ शक्ति के पूर्व आचार्य श्री जी ने एक-दो मुनिराज जो बीमार चल रहे थे उनको केन्द्रित करते हुये कहा कि भोजन कैसा करें? इस विज्ञान से परिचित हुये बिना मोक्षमार्ग में आरूढ़ ही नहीं हो सकते। आप बार-बार बिमार पड़ रहे हैं मतलब आपकी पाचन शक्ति कमजोर हो गयी है। मेवा आदि को ताकतवर एवं दलिया को बीमार लोगों का भोजन मानना यह गलत धारणा अब बदल दो। भगवती आराधना आदि ग्रन्थों में बिल्कुल व्यवस्थित दे रखा है। दलिया बनाने का तरीका ठीक होना चाहिए। सेककर बनाना प्राकृतिक तरीका नहीं। एक-एक दाना फूल जाये ऐसे, थूली बोलते हैं। मैं औदारिक शरीर को औदारिक आहार ही देना अच्छा मानता हूँ। इसे पूछ ले भी मट्ठा ले भी ले सकते हैं। यह थूली बाजरा-मक्का-ज्वार की भी बनती है। इसलिए धारणा बदलो।"

17-10-18 "ठुकराओ मत - गले लगाओ" प्रातः

आप लोग देखो तो सही, हम बैठे रह गये और हमारे समय का लूट लिया गया। हम किस पर केस करें, बोलो? फिर भी हम ने सोचा कि आपको जो समय दिया उसका आप उपयोग करते हैं। आपने देखा होगा सम्यग्दर्शन पहले नम्बर पर रखा फिर उसके बाद सम्यग्ज्ञान को रखा। तर्क यह है कि आस्था है तो ही पैरों को आज्ञा दे सकता है - चलो। आस्था नहीं है तो चल नहीं सकता है।

सम्यग्दर्शन के कितने अंग होते हैं? 8 अंग होते हैं। एक - एक अंग में कौन - कौन प्रसिद्ध हुआ? बोलो? पहला निशंकित अंग - उसमें कौन प्रसिद्ध हुआ? कौन डाकू? अंजन चोर प्रसिद्ध हुआ और साहूकार बैठे रह गये। खड़गपुर से आये हो। कह रहे थे - महाराज किसी ने चोरी की - किसी ने डाका डाला - किसी ने दुराचार किया तभी वह जेल गया। अब आप उनको बाहर आ जाये ऐसा चाह रहे हैं।

सुनो हम चोरी के कार्य को गलत मानते हैं इसलिए वह उससे छुड़वाना चाहते हैं। चोर को डाटेंगे नहीं। नफरत चोरी - डाका से करो चोर से नहीं। इसलिए हमारा धर्म अपावन को पावन बनाना सिखाता है। गरीबी मिटाना है तो चोरी - चपाटी समाप्त कर दो - साहूकारी नहीं। उसको थोड़ा सा धन चाहिए था इसलिए

चोरी कर दी।

आप दुकान लगाकर भी चोरी कर रहे हैं। खड़गापुर वालो! समझ में आ रहा है न? बाहर निकलो। ये काम बनिया नहीं कर सकता एक क्षत्रिय ही ये काम कर सकता है। इसीलिए रत्नकरण्ड-श्रावकाचार में प्रथम अंग में अञ्जन चोर को रखा। आ० समन्तभद्रस्वामी ने रखा, इन्हें और कोई भी नहीं मिला।

इस ग्रन्थ में आप लोगों को नीति-न्याय बताया जा रहा है। आस्था को मजबूत बनाना चाहते हो अथवा एकाग्रता कैसी हो तो अंजन चोर को देखो। उसने ठान लिया यह मंत्र इतना ही है, ऐसा ही है, न्यून नहीं है, बिल्कुल सही है, इस जैसा मंत्र तीन लोक में दूसरा नहीं है। इसी आधार पर अंजन चोर ने प्रसिद्धि प्राप्त कर ली। अब आप अर्थ निकालते रहो।

समय तो पर्याप्त हो गया है। पहले ही आप लोगों ने लूट लिया। वैसे हम कभी भी लुटते नहीं, लूटते हैं। आपने तो हमारे 5-7 मिनिट लिये हमने तो थोड़े समय में भी 5000 लोग बैठे हैं 5000 मिनिट ले लिया। हमारा काम तो हो ही गया।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नँ

Note- "Invest हो Vest नहीं, चाहे धन हो या समय" आज्ञा

18-10-18 "कषाय कितनी? वॉट जितनी" प्रातः

आप लोगों ने सुना होगा - अनुभव में भी आया होगा, क्यों कि प्रतिपल आपके व्यवहार में काम आता रहता है। आपके यहाँ सूर्य प्रकाश कम और आपके द्वारा उत्पादित प्रकाश / लाइट बोलते हैं वही होता है। 'हैलोजन' - हैलो - जन ले लो। अब जहाँ उत्पादन होता है, वहाँ से घर में लाइट आ जाती है।

वह लाइट Direct घर में नहीं आती Indirect ही आती है। अब घर पर भी लाइट ऐसे नहीं; वायर फीटिंग से आगे बढ़ती है। मैं पूछना यह चाहता हूँ कि लाइन एक ही है, हमें जिस समय पढ़ना है, उस समय उतना प्रकाश मिल जाता है, जिस समय उतने तेज प्रकाश की जरूरत नहीं तो उसे बंद करने दूसरा बटन दबा देते हैं उससे 0 वॉट का बल्ब जलने लगता है। आप सोचते हैं इसके द्वारा बिजली का अपव्यय न हो। इतनी तेजी से दौड़ने वाला करंट उस छोटे से बल्ब के द्वारा भी बाहर आ रहा है, ऐसा नहीं कि उसे उखाड़कर फेंक दें।

वह बल्ब 0 Wt का है तो भी कहता है, यह मेरा कार्यक्षेत्र है, No एडमीशन - Without परमीशन। यहाँ तो मेरा ही राज्य - कानून है। तुम चाहे तभी आ सकते हो। पधारो सा। आप भले ही बड़े हैं फिर भी आपकी अभी कोई आवश्यकता नहीं

हैं। ऐसा क्या होगया? इसमें क्या विज्ञान है?

विज्ञान इतना ही है कि जब ऋण एवं धन का समायोजन होता है तब प्रकाश बाहर आता है, नहीं तो नहीं हो सकता, इसीलिए वह दीपक की भांति ही टीमटीमाता रहता है। इससे आँखों पर भी विपरित प्रभाव नहीं पड़ता। हम चाहेंगे तभी यह हो सकता है। उसी के पास में (एक-आध फीट) एक बड़ा बल्ब जल रहा है। पंखा चल रहा है। इसीलिए हमारे यहाँ कहा गया कि अपव्यय एवं व्यय दोनों हमारे ही हाथ में हैं।

सरकार भी क्या करेगी? वह तो मीटर लगा दी है। एक-एक सेकेण्ड का बिल सावर रख देगी, Recovd कर लेगी किन्तु अपव्यय को तो आप ही रोक सकते हैं। उसी प्रकार कषाय रूपी करंट (जनरेटर) बहुत पावरफुल है। अज्ञान द्वारा उपयोग करोगे तो सब समाप्त कर देगा। उस अज्ञान में हमारा आशीर्वाद भी काम का नहीं। क्यों कि आप जैसा करोगे वैसा ही हमारा आशीर्वाद कार्य करेगा।

करंट का उपयोग यदि यद्वा-तद्वा करोगे तो दिवालिया हो जाओगे। महावीर भगवान तो दिवाली को मोक्ष गये, आप आज ही दीवालिया घोषित कर दिये जाओगे। इसलिए जिस प्रकार लाइट का उपयोग नहीं, उसी प्रकार कषाय का भी

उपयोग नहीं करो, अपने आप ही ०% से चला जायेगा।

यदि आप उपयोग नहीं करेंगे तो नहीं आयेगा, इसी को शिक्षा कहते हैं। शिक्षा है तभी दीक्षा का महत्व है। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे माथा / बुद्धि ठीक बनी रहे। माथा ठण्डा रहना चाहिए, यदि गरम हो गया तो समझ लेना भगवान का बुलावा आ गया। तो ऐसी शिक्षा ग्रहण करें। कहा भी है - पैर गरम - पेट नरम और माथा ठण्डा, वैद्य जी आवे तो उन्हें दिखा दो डण्डा।

आप स्वस्थ रहेंगे तो भीतरी आत्मा भी स्वस्थ रहेगी। तभी आनन्द का अनुभव कर सकते हो। मनुष्य जीवन में इधर-उधर की बातों से जितना बचोगे उतना ही भीतरी एवं बाहरी सरकार भी ठीक रहेगी। सरकार तो वैसे ही हाथ जोड़कर कहती है - हमारे लिए तो बस आप ही हैं। आप तो पहचान ही गये होंगे? पांच साल का ये करामात रहता है।

हम कहते हैं कि आप सही-सही काम करो तो हम आपके साथ हैं अन्यथा हमें कठोरी करना भी आता है। फिर हम ० वोट से भी कम कर देंगे। यदि ऐसा नहीं करते तो तीन काल में उन्नति / कल्याण सम्भव ही नहीं हैं। उन्नति हेतु शिक्षा की पद्धति ठीक हो, यह वर्तमान शिक्षा पद्धति से सम्भव नहीं है। इस बात को

स्वीकारे बिना कभी भी सुखशान्ति नहीं।

संतो ने पहले से ही इस तरह के संकेत दिये हैं। जब मर्जी हो तब स्वीकार कर लेना - करना तो होगा। भगवान भी समझते है, अभी तो बुद्धु (पागल) बना हुआ है। जब समझदार होगा, तब समझ में आ जायेगा। तो हमारे ० वॉट के उदाहरण को याद रखना।

हेलोजन का करामात तो आप ही देख लो। उसके प्रकाश से इर्द-गिर्द गरम हो जाता है। माथा भी गरम होने लगता है। फिर वह चिकित्सालय की ओर जाता है। "भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि आप चिकित्सालय की ओर न जाकर जहाँ प्रभु रहते हैं उस आलय की ओर आ जायें।"

अहिंसा परमो धर्म की जय।

विद्वत् संगोष्ठी से -

० मूलाचार हमारा न्यायालय है। न्याय पथ का प्रदर्शक है। संविधान है। एक सेकेण्ड भी हम उसको भूलेंगे नहीं। मूलाचार लाक्षणिक ग्रन्थ है। लक्षण के बिना लक्ष्य कैसे मिलेगा?

० जयपुर को तो हम जैनपुर बोलते हैं।

लक्षण कभी भी पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर नहीं बांधे जाते।

० पसीना तो आना ही चाहिए। बस वह तन तक ही सीमित न रहे मन तक भी पहुँचना चाहिए। (विद्वत् वर्ग से)

19-10-18 "खतरनाक कौन? युग या आप" प्रातः

आप लोगों को कई बार इस प्रकार का विचार आता होगा कि हमने तो अपने जीवन काल में, जब से बुद्धि मिली / समझ में आया तब से किसी का भी अनर्थ किया नहीं, करवाया नहीं, अनुमती भी नहीं दी बल्कि अपने व्यवहार को हित-मित-प्रिय (मिष्ट) रखा फिर जीवन में इस तरह के विपरीत संयोग क्यों मिल रहे हैं। जीवन तो बिल्कुल साफ-सुथरा है, फिर अनुभव में कुछ और आ रहा है। आखिर ये क्या है?

हमारे संतों ने कहा कि आबाद में किसान भूमि को समतल करके, साफ सुथरी बना देता है (जमीन तैयार कर दी बस बीज बोना है। अब वर्षा होना प्रारम्भ हो गयी। सुन रहे हो? [हाँ] वर्षा से उस साफ-सुथरी जमीन में घास उग आयी। किसान कहता है - ये क्या है? हमने तो जमीन साफ की बीज तो बोया ही नहीं है फिर ये कहाँ से आ गये। उस जमीन में ऐसे बीज पहले से ही विद्यमान हैं, आपको यह ज्ञान नहीं है।

अब बीज बोना है तो पहले उस घास-फूस को उखाड़कर फेंक दो। [लाइट-फोटो लेने पर] ऐसे ही कर्म कर रहे हो, इसका क्या फल मिलेगा पता नहीं? विवेक के साथ कर्म करोगे तो फल अच्छा मिलेगा, विवेक से हीन तो फल भी वैसा ही मिलेगा। इसी प्रकार किसान अतीत में जो बोया

था, उसका फल भी भोग रहा है।

माथा बनक जाता है। इसलिए बुद्धिपूर्वक उसे कम करते जाना एवं आगे से साफ सफाई रखना यही अध्यात्मका फल है। इसे समझे बिना अध्यात्म का रहस्य भी नहीं समझ पायेंगे। स्वयं पाप कार्य को छोड़ेगा तभी दूसरे को भी उपदेश दे सकता है तभी संस्कारित कर सकता है। जो बीज बोया है वह फलदायी हो जाये, यह शिक्षा आज दी ही नहीं जाती।

पहले माता-पिता घुट्टी में ही ऐसे संस्कारों को पिलाते थे। आज घुट्टी में फास्ट फूड आ गया। आप खिला-पिला रहे हैं। क्यों कि इससे आपका समय बच जाता है। किंतु नतीजा यह है कि विषय-कषाय के अतिरिक्त जीवन में कुछ भी नहीं है। (ऐसे में भविष्य अंधकारमय पक्का है) सात्विक चीजों को यदि नहीं खायेंगे-पीयेंगे तो आप अहिंसक कैसे सिद्ध होंगे। इसीलिए आप पर गुरु वचनों का भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

आप खतरनाक हो गये हैं, युग कभी खतरनाक नहीं होता। अब योग्य पुरुषार्थ करो, श्रम करो, ऐशो-आराम छोड़ दो तो भविष्य सुखमय होगा अन्यथा सुख नहीं मिलेगा। समय तो पर्याप्त हो गया है। जैसे किसान बीज बोता है - स्वयं के लिए भी एवं जो बच जाता है वह दूसरों को दे देता है वैसे ही स्व एवं परहित दोनों का हित हो ऐसा कार्य करें।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

शरद पूर्णिमा

२५-१०-१८ "शरद पूर्णिमा का संदेश" प्रातः

आषाढ़ में काली-नीली अनेक प्रकार की घटायें चालु हो जाती हैं और श्रावण में झड़ी लग जाती है। इस प्रकार आषाढ़ की चौदस से शरदपूर्णिमा तक तीन महिने हो गये। चातुर्मास का यह समय बहुत भक्ति-भाव से व्यतीत हो गया। यहाँ पर वर्षा बहुत कम होती है लेकिन इस वर्ष वर्षा की मात्रा अच्छी हो गयी। अब वह वर्षा की मात्रा का अच्छी होने का मतलब धर्म की वर्षा भी अच्छी हो गयी।

श्रावकों की सबसे प्रिय वस्तु - जिससे सबसे अधिक मोह होता है, वह धन होता है उसकी भी वर्षा अच्छी हो गयी। "धन का त्याग तभी संभव है, जब कोई दूसरा धन दिखे।" इन लोगों को दूसरा धन दिख गया, इसलिए उस नश्वर धन का त्याग कर दिया। श्रावण में जो काले-काले बादल थे सब बरस गये, अब शरद ऋतु प्रारम्भ हो गयी। वे काले-काले बादल सफेद हो गये।

शेष जो कुछ भी बचा था वह पाप मल दूर हो गया। शुक्ल लेश्या आ गयी। वर्षा में जो पानी आता है वह लाल-लाल सा होता है, क्यों कि उसके साथ कचरा भी आता है। ज्यों ही शरद ऋतु प्रारम्भ हो जाती है, नक्षत्र बदल जाता है। अगस्त नक्षत्र माना जाता है। उसका [कार्य] ज्योतिष शास्त्रों में परिणाम

बताया कि जो भी अप्रशस्तता है, वह सब प्रशस्तता में परिणत हो जाती है।

नदी-नालों में पानी तो भरा रहेगा किन्तु अब वह साफ-सुथरा हो जायेगा। कुओं तक में पानी साफ / निर्मल हो जाता है। अब जो दृष्टि पहले ऊपर तक ही रहती थी वह नीचे गहराई तक चली जाती है। यह अगस्त नक्षत्र का परिणाम है, सब शांत होकर बैठ जाता है। कल से कार्तिक चालु होने वाला है, आज यह पूर्णिमा का दिन अन्तिम दिन है।

कुछ ऐसे शुभ दिन होते है, जिनमें मुहूर्त पूछने की भी जरूरत नहीं होती। ये शुभ नक्षत्रों में भी और शुभ माने जाते हैं। सामने दिवाली है जो भगवान महावीर स्वामी के जीवन में घटित हुआ, अपने जीवन में भी घटित हो जाये। आज की यह पूर्णिमा कहीं भी जाओ सब जगह मानी जाती है। जैसे-अक्षय तृतीया आदि है- अन्त हो सकता है पर शुभ मुहूर्त है वैसे ही शरद पूर्णिमा को शुद्ध / पवित्र दिन माना जाता है।

बूढ़ी पड़वा भी इसी तरह सभी शुभदिन के रूप में जानते है। ऐसी तिथियाँ हमें और अधिक प्रशस्ता की ओर ले जाती है। अब आप लोगो के पास मात्र 15 दिन रह गये हैं। स्थापना हुयी थी, वह

निष्ठापन्न के रूप में सामने आ रही है।

यहाँ की गर्मी भी प्रसिद्ध है तो सर्दी भी यहाँ की प्रसिद्ध है। दिवाली पर लोग कोट पहनकर लाड़ चढ़ाते हैं। अब होशियार हो जाइये। यह जाग्रति का घण्टा है। इससे वातावरण बन जाता है। उल्लास के साथ पालन करते जाइयेगा। आपका यह प्रशस्त मार्ग और प्रशस्त बनता जायेगा। शुभ्रता की ओर ले जायेगा। हमारे जीवन में भी बाहर-भीतर श्वेत/शुक्ल लेश्या हो, आत्म तत्त्व की प्राप्ति हो इन्हीं भावनाओं के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

"उत्साह हो - उत्सुकता न हो"

"खजुराहो में शहीदों के सम्मान में एक कार्यक्रम रखा गया था। सभी परिवारों के वंशज - [महाराणा प्रताप, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे, भगत सिंह, मंगल पाण्डे, सुभाष चंद्र बोस आदि] शाम को आन्टी के साथ बैठे थे। हम चार-पांच महाराज भी वहीं थे। कार्यक्रम के कर्णधार संकल्प जैन ने अतिथियों से कहा कि आप आन्टी का कुछ संस्मरण सुनायें। हम लोगों में भी सुनने की उत्सुकता थी किन्तु आन्टी का जवाब बहुत ही सटीक एवं सही था। उन्होंने कहा- अभी बताने से बात का महत्त्व कम हो जायेगा, कल मंच पर ही सबके सामने आप लोग रखना।"

25-10-18 "जाना न पड़े - जाना पड़े" प्रातः

सांसारिक प्राणी और मोह से प्रभावित होने के कारण कुछ ऐसी चीजें है जो नहीं चाहते हुये भी घटित होती है। कोई भी प्राणी ऐसी महिमा को छोड़कर नहीं जाना चाहेगा फिर भी उसे जाना पड़ता है "जाना पड़ता है इसमें बाधा नहीं लेकिन आना न पड़े।" भूख लगे तब तक तो पेट मांग करता है, पेट भरने के बाद ---। धीरे-धीरे संख्या घट रही है। चार महिने तक यहाँ बहुसंख्यक थे वे अब अल्पसंख्यक हो रहे हैं।

चूंकि सामने दीवाली है वो भगवान महावीर स्वामी की तिथी है क्यों कि उनका उससे संबंध जुड़ा हुआ है। तो क्या समोशरण में भी इस तरह संख्या कम हो जाती है? नहीं होती हैं। वहाँ साक्षात् भगवान विराजमान है फिर भी समोशरण में आना भी और जाना भी होता रहता है। वह देखने में नहीं आता। देवों द्वारा संख्या पूर्ण होती रहती है। अच्छे - अच्छे लोग / श्रावकों को भी समोशरण छोड़कर जाना पड़ता है।

ऐसा क्यों होता है? मैं सोचता हूँ, उत्तर यह है कि हम जब कभी विश्राम अवस्था अथवा चिंतन में खो जाते हैं तो भगवान सामने है फिर भी वह चित्र / वह दृश्य गायब हो जाता है। ध्यान रखना - भगवान को देखते - देखते कभी भी केवलज्ञान नहीं होगा। चित्र गायब होगा तभी आप निर्विकल्प हो पायेंगे। आँखे भले

ही खुली रहें पर देख नहीं रही।

आप समझते होंगे निर्विकल्प दशा में चले जाये तो फिर वापस आ जाते होंगे। आ जायें किन्तु बिना इस अवस्था के श्रावक श्रेणी कभी भी नहीं बना सकते। महाराज- हमारी तो अभी अनुश्रेणी बन रही है। किन्तु जब यह संसारी प्राणी बार-बार इस प्रकार के संस्कार डालता है तो एक न एक दिन वह पिघल ही जाता है।

ऐसे संस्कार डालते जायें इन्हीं भावनाओं के साथ कि आप भले ही चले जाओ, क्यों कि जाना पड़ता है किन्तु आना पड़ता है ऐसा नहीं। देवों में भी यह होता है। वहाँ अधिनस्थ देवों को इन्द्र की आज्ञा अनुसार जाना पड़ता है परन्तु जब वे देखते हैं कि हमारे स्वामी भी इन्हें नमस्कार कर रहे हैं तो इस दृश्य को देखकर उन्हें सम्यत्व की प्राप्ति (जिन महिम दर्शन) हो जाती है।

जिनेन्द्र भगवान के दर्शन से कई का कल्याण हो जाता है। इसलिये उन्हें भी जाना पड़ता है, वहाँ जाने पर उद्धार हो जाता है। फिर भी कुछ एक रह जाते हैं। समोशरण की शोभा तो उनसे भी है। आना-जाना तो लगा ही रहता है। इसे देखकर हमें दूसरे की चिन्ता नहीं, अपने को जल्दी-जल्दी पार होने की सोचना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

26-10-18 जाना कहाँ? प्रातः

गाड़ी तो वही है किन्तु संकेत पट्टिका बदल रही है। इसी कारण कभी उस गाड़ी को सागर की तो कभी ललीतपुर की अथवा कभी देहली की कह देते हैं। किन्तु गाड़ी तो वहीं घूम रही है। गाड़ी की सवारी भी बदलती रहती है किन्तु ध्यान रखो गाड़ी तो एक ही है, वह सरकारी गाड़ी है। इसीप्रकार ये यात्री भिन्न-भिन्न नाम बदलकर हमारे सामने आ रहे हैं।

हम कहाँ जा रहे हैं, पता है न आपको। आपको कहाँ जाना है- वहाँ का हम टिकिट दे देंगे। जहाँ से भी आये हो तो क्या पता टिकिट से आये हो या फोकट में आये हो? यहाँ से जाना होगा तो आपको टिकिट तो लेना ही होगा। कहाँ जाना है- इसे जरूर याद रखो। आये कहाँ से हो? [शिवपुरी से] हाँ ये हुई कहा। शिवपुरी जाना है तो वहाँ का टिकिट लेओ।

इस प्रकार सब स्टेशन भूल जाना। मात्र ये याद रखना कहाँ जाना है? कब से आये, कब जाना, ये सब कुछ नहीं, जहाँ जाना है उसे मन में ले लो, वहीं पुहुच रहे हैं। पुहुचना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमोस्तु

Note- "आ० क्षु० से किसी ने कहा मात्र शीट सीधी करने का नाम सामायिक नहीं। गुरुजी ने युक्त जवाब दिया- मात्र भीड़ इकट्ठी करने का नाम स्वाध्याय (प्रवचन) नहीं।"

रविवार
28-10-18 "कैसे बढ़ायें आँखो की ज्योति?" प्रातः

आप लोग उस मण्डप (बड़ा पाण्डाल) में गये थे। हमने कहा कि हम तो यहीं पर बैठेंगे। आपने कहा संख्या बहुत है। हमने कह दिया - रहने दो, हम तो यहीं पर रहेंगे। कारण तो सुनो - वह मण्डप बहुत बड़ा है, हमें बहुत दूर बैठा देते हो, आपको भी दूर से ही दर्शन मिलते है। हमें पता ही नहीं चल पाता कि ये खड़े है, या बैठे हैं। अब आप ही बताओ कि यदि आपकी बात सुन लेते तो ये गड़बड़ होता न?

कैसा लग रहा है यहाँ? कौन खड़ा है, कहाँ पर खड़े है, कैसे है ये सब वहाँ नहीं होता, दर्शन पास से होना चाहिए। हमने सोचा 2 मिनिट लगती है तो लगे - प्रवचन तो रोज ही सुनते है। ठीक है - अब सुनो! सूर्यनारायण बहुत दूर रहते है; यदि उन्हें पास में बुला ले तो क्या होगा। दूर रहेंगे तो अनुपात से प्रकाश मिलता जायेगा। कभी - कभी वर्षा ऋतु में घटायें छा जाती है, सूर्यनारायण का दर्शन नहीं फिर भी आह्लाद होता है। अंधेरा जैसा होने पर भी एक-एक कण उष्मा के हमें प्राप्त होते रहते है। इसी से काम हो जाता है।

उसको देखते ही सुबह से वनस्पति आदि सब खिल जाते हैं। अंधकार तो दूर भाग जाता है। इसी प्रकार सत्संगति के करने से सारे के सारे प्रमाद दूर हो जाते हैं। समझ रहे हो या नहीं? हओ तो

कह दो। बुन्देलखण्डी होकर भी हमें सीखना पड़ेगा क्या? [ललितपुर] अब बुन्देलखण्ड का ही विस्तार होता जा रहा है।

कहीं भी रहो भाग्य तो अपने आप ही खुलता जाता है। भगवान कहीं भी रहे इससे कोई प्रयोजन नहीं। आप पुरुषार्थ भर करते जाओ। पुरुषार्थ से ही भाग्य खुलता है। पुरुषार्थ को कभी गौण नहीं करना। आज सरकार के सामने बहुत बड़ी समस्या तेल की है - गरीबी की एवं रोजगार की समस्या है। यदि अभी भी नहीं जागे तो समस्या तो बढ़ती ही जायेगी।

सौर ऊर्जा का प्रयोग करोगे तो तेल की समस्या खत्म हो जायेगी। अभी सुना कि इससे तो रोजगार जैसी समस्या भी खत्म हो रही है। अम्बर चरखा चलाने के लिए अब बिजली की कोई आवश्यकता नहीं। यह बिल्कुल प्रदूषण मुक्त भी है। सौर ऊर्जा के माध्यम से कार्य करने पर पैसा खर्च कम होता है, आय अधिक होती है।

आज यंत्रो का युग आने से खर्च ज्यादा आने लगा। पहले इस तरह की प्राकृतिक ऊर्जा से ही काम हो जाता था। अब आपको दिन में भी जब सूर्यनारायण का प्रकाश है तब भी कृत्रिम प्रकाश चाहिये। ये प्रमाद है या नहीं - विचार करो। दिन में भी लाइट जलाकर रखने

हैं, इसीलिए सबको दूसरी आँख आ गयी।

दूसरी आँख का मतलब जानते हो न? [चश्मा] नीचे भी एक आँख जो बहुत छोटी होती जा रही है फिर ऊपर बड़ी-बड़ी आँख - भैंस जैसी लगती है। इससे तो आप दीवालिया हो रहे हो। उसको बुला रहे हो - अब भुलाओ। विदेशी जीवन शैली के कारण ये सब हो रहा है। अब तो प्राकृतिक-सहज-सरल जीवन जीओ तभी भगवान के निकट पहुँच सकते हो अन्यथा भगवान से दूर हो जाओगे।

कभी भी रात में आँखों से काम न लेना। सूर्य प्रकाश में जितना जरूरी है उतना लेलो शेष समय उन्हें आराम दे दो। चिन्तन की धारा खुलेगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हमें भी आराम से ऐसा ही उपदेश मिला है और ये भी कहा है कि इन्हें भी वही उपदेश दे देना। हमने वैसा ही किया है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

"मैं किसी से बंधता नहीं"

आ० श्री कि यह विशेषता है कि वे कभी किसी से बँधते नहीं। इसीलिए उनका सूत्र है कि कभी भी वचन मत दो - प्रवचन दे दो जरूरी हो तो। शहीदों के परिवार जनों का सम्मान का कार्यक्रम स्वराज-सम्मान रखा था। किन्हीं ने कहा 1.30 बजे से कार्यक्रम प्रारम्भ होगा, आ० श्री ने कहा हम जब

सामायिक पूरी कर लेंगे तभी आ पायेंगे। वे अपने निर्धारित समय 1.45 पर ही उठे तथा शौचादि से निवृत्त होकर ही मंच पर गये।

② आज बड़े पाण्डाल में पूरी भीड़ बैठ चुकी थी। रविवार का दिन - प्रतिभास्थली के बच्चे - बहने सब थी किन्तु आ० श्री को छोटे मण्डप से ही प्रातःकाल की पूजनादि सम्पन्न करानी थी, नहीं गये। सभी लोग उठकर छोटे पाण्डाल में आये। नहीं जाना तो नहीं ही जाना।

③ चन्द्रगिरी में ड० वाँ संयम स्वर्णमहोत्सव मनाया गया। दो दिन बड़े पाण्डाल में कार्यक्रम हो गया। तीसरे दिन आ० श्री छोटे पाण्डाल में जाकर बैठ गये। पूजन ही तो करना है, यहाँ से भी हो सकती है। ऐसा कहकर वहीं पर सब कार्य सम्पन्न हुआ।

④ खजुराहो में संयम स्वर्ण महोत्सव का समापन। आचार्य भक्ति में नया स्वर्ण पालिश युक्त सिंहासन लगाया। आ० श्री उस पर नहीं बैठे, प्रतिदिन वाला पुराना सिंहासन आया तभी बैठे।

⑤ कई बार बेरीकेट आदि की व्यवस्था होने पर से इधर से न जाकर दूसरी तरफ से चले जाना। मेरे से कहा भी कि ये क्या है मुझे बांधने का प्रयास क्यों करते हैं। ▫▫▫

29-10-18 "जीवन जीना सिखाती भ्रामरी वृत्ति" प्रातः

आपने भ्रमर को देखा होगा वह प्रातः उठकर अपनी प्रिय वस्तु की गवेषणा हेतु चल पड़ता है। बहुत सारे जंगलों को पार करता हुआ वह चला जाता है। उपयुक्त भोजन न मिलने से वह चला जा रहा है। आप सुन रहे हो? [हाँ] जब उस भ्रमर को ज्ञात हो जाता है कि यहाँ इस बाग-बगीचे में उपयुक्त भोजन है, तब वह उस ओर चला जाता है।

भ्रमर बता रहा है कि चर्या कैसी हो? वृत्ति कैसी हो? व्यवहार कैसा हो? उससे पाठ ले सकते हैं, उपदेश ग्रहण कर सकते हैं। वह बगीचे में गया परन्तु उस पुष्प पर बैठा नहीं। क्यों? क्यों कि वह जानता है कि "प्रिय वस्तु को कभी भी धरोहर नहीं लेना चाहिए।" वह हाथ भी नहीं लगाता। बल्कि मधुर संगीत ही सुनाता है और आप? हल्ला सुनाते हो। सोचो क्या कर रहे हो?

इतनी कोमल-कोमल पांखुड़ी है उनसे मकरंद का सेवन करता है किन्तु उन पांखुड़ीयों को कभी धरोहर नहीं लगता है। इसीलिये आचार्यों ने शास्त्रों में मुनियों की भिक्षावृत्ति के लिए एक उदाहरण ही बना दिया। भ्रामरी वृत्ति का पालन करना चाहिए। भ्रम भी उत्पन्न न हो और आपको देखकर डर

भी उत्पन्न न हो।

जो नियमावली का पालन नहीं करता उससे नहीं लेंगे। हाँ! दुत्कारा भी नहीं जाता। इस प्रकार श्रावक के पास जो कुछ है, उसी के गृह में जाकर लेते हैं। यह भ्रमर का उदाहरण हमने दिया। अब दूसरा उदाहरण देते हैं- गंध तो उसका भी विषय है, वह भी चार इन्द्रिय ही है, वह मक्खी है। वह जिस किसी भी वस्तु पर जाकर बैठ जाती है।

कफ में भी बैठ जाती है। कई बार तो उसी में फंसकर अपने प्राण भी गंवा देती है। उसे इतना तो सोचना चाहिए था कि यह भी मेरी ही तरह चार इन्द्रिय जाति का जीव है फिर भी मेरी दशा ऐसी है। इसीलिए कुछ लोग कहते हैं- मक्खी की तरह क्यों भिनभिना रहे हो। मतलब भ्रमर का संगीत होता है, और मक्खी का भिनभिनाना। वह पाठ दे रहा है, मक्खी कोई पाठ नहीं दे रही। कुछ लोग उससे ले लेते हैं। मक्खी विषयासक्त होती है भ्रमर विषयासक्त नहीं होता।

किसी को भी धक्का न देकर अपना काम कर लेता है। आप भी मनवचन काय की ऐसी ही चेष्टा करें जिससे किसी का अहित न हो। गृहस्थ अवस्था में रहकर भी जीवन अच्छे से व्यतीत कर सकते हो। और ऊपर उठ जायें तो श्रमण बन जाते हैं। हमारे दोनों उदाहरण भ्रमर एवं मक्खी को याद रखेंगे

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

30-10-18 "आओ करें जिनवाणी सेवा" प्रातः

मानो आप लोग प्यासे हैं, तो प्यास को बुझाने के लिए जहाँ पानी हो वहाँ तक पहुँच जाते हैं किन्तु वहाँ जाने के उपरान्त पानी भी देखने को मिला, पीने को भी मिल सकता है किन्तु कोई एक व्यक्ति उसी तरफ से पानी लेकर आ रहा है। वह आपको देखकर यह अनुमान भी लगा लेता है कि ये प्यासे हैं, तो वह पानी पिलाना चाहता है लेकिन आपके पास पीने का साधन (पात्र) नहीं है। अब क्या करें?

प्यासे तो हैं आप। उसके पास पानी से भरी मटकी भी है। वह सोचता है कि कोई न कोई पात्र होता तो अच्छा होता। कोई बात नहीं अब आप भी कर पात्री बन जाओ। मटकी बड़ी है उसका मुख भी बड़ा है। क्या करें अनियन्त्रण जैसा हो रहा है, धार भी कैसे हैं। हाथ में आयेगा नहीं उछलकर नीचे चला जायेगा। यदि अनुकूलता नहीं मिल पायेगी तो आप पी नहीं पाओगे। इस प्रकार हमारे भगवान ज्ञान के सागर हैं। वे पिलाना भी चाहे मगर आप पी नहीं पाओगे।

धार चाहिए। इसी धार के लिए उन्होंने गणधर परमेष्ठी को अपने पास में रख रखा है। उन्होंने एक लुटिया रख-रखी है, उसके माध्यम से एक-एक को धार करके पिला देते हैं। आप भी 1-2 लुटिया की जगह 3-4 गिलास पी लेते हैं। इस प्रकार आचार्यों

ने हम लोगों की हालत को देखकर आज तक लाने का पुरुषार्थ किया।

संस्कृत - प्राकृत में शास्त्रों का निर्माण कर युगीन भाषा के माध्यम से बदल-बदलकर हम लोगों तक पहुँचाने का बहुत बड़ा काम किया है। हमारा कर्त्तव्य होता है कि हमें भी इसी प्रकार का पुरुषार्थ करना है। अपने स्वयं के लिए भी एवं दूसरों पर भी उसका उपयोग करना ही चाहिए। वह अच्छे ढंग से अंगुली बना लेगा आप उसी में डालते जाओ पात्र नहीं भी होगा तो उसका काम हो जायेगा। किन्तु प्राथमिक दशा में बिना पात्र नहीं डाल सकते।

जैसे छोटा लड़का रहता है, उसे एकदम गिलास से नहीं दिया जाता है। एक शीशी के द्वारा देते हैं उस शीशी (बोतल) पर निपल होती है उस निपल में सूई चुभोकर एक छेद करते हैं। कभी देखा है कि नहीं [हिओ] छेद बड़ा हो तो वह बच्चे के गले में हसका का कारण बन सकता है। आप सभी ऐसे ही हसके से ऊपर उठकर आये हैं। तब जाकर आपका लालन - पालन - पोषण हुआ है।

आप हमेशा हसके को याद रखें। हंसी - मजाक भी मत करो एवं डांट - डपट भी मत करो। पहले किसी भी प्रकार से भीतर तक पहुँचा दो फिर चाहे आप कान भी पकड़ सकते हो। तभी जो कर्ज ले रखा है उसका ऋण उतरेगा। आगे जाकर देना तो होगा, यहाँ

नहीं दे पा रहे हो तो कोई बात नहीं।

अपने पुरुषार्थ पूर्वक ढूंढो, कौन प्यासा है? ढूंढ-ढूंढकर उन्हें जो आपको मिली है, वह सामग्री उपलब्ध कराना है। ये आपका कर्तव्य है। तत्त्वार्थसूत्र में कहा है- "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" इसे आप लोग पत्रिका में तो छाप देते हो, पालन कितना करते हो? ये आप ही जानते हो। इसका मतलब भी यही है जो मिला है उसे अन्य लोगों तक भी पहुँचा दो। हमारे उदाहरण को याद रखेंगे निवल-बोतल एवं उसके ढक्कन को भूलना नहीं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

धर्मानुराग

उदाहरण-

"जयसुख भाई बम्बई वालों की समाधी चल रही थी। आचार्य श्री जी प्रतिदिन संबोधन करते थे। एक दिन कहा- परिवार-मित्रों के प्रति राग नहीं होना/करना। संलेखना के अतिचारों में मित्रानुराग भी रखा। उन्होंने प्रश्न किया आपके प्रति तो राग रख सकता हूँ, वह तो प्रशस्त राग है। आचार्य श्री तुरन्त बोले- वह धर्मानुराग है।"

"प्रसन्नता"

"एक दिन आचार्य श्री ने कहा कि आहार के समय प्रसन्नता रखना चाहिए। संघातन क्रिया कहलाती है- उस समय जो भी कण आते हैं उनसे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। ये सोचें ये आहार मेरी संलेखना में साधक कारण होगा। धारणा बनायें- पहले से मुझे आराम हो रहा है।"

31-10-18 "Well Come नहीं Well-Go" प्रातः

छोटा आपका लड़का है, अभी वह घर की कोई परिस्थिति से अवगत नहीं है। घर में भले ही रहता हो। बस उसे भूख और प्यास लग जाये तो अपने संकेत दे देता है। संकेत कई प्रकार के हो सकते हैं, जाकर के रसोई घर के सामने खड़ा हो जायेगा और किसी के घर में नहीं आपके ही घर में। वह मेरा-तेरा कुछ नहीं जानता। अब खा लिया तो आपके घर से भी कोई मतलब नहीं।

खाने के बाद नींद आ गयी - सो गया। उठा तो हठ करता है - खेल खिलौने के लिए। मिल गये तो नाचने लगा। आपने एक गुब्बारा दे दिया। आपको मालूम तो है ही गुब्बारा क्या होता है? जब उसके साथ खेलने लगा तो गुब्बारा फूट गया। वह फूट-फूटकर रोने लगा। "आश्चर्य यह नहीं कि गुब्बारा फूट गया आश्चर्य इस बात का है कि जो 1-2 घण्टे भी नहीं चलता वह 4-5 घण्टे चल गया।" पिताजी बच्चे को समझाते हैं।

वह तो फूटना ही था। फिर तुम क्यों फूट-फूट कर रो रहे हो। आप लोगों को इससे सीख (पाठ) लेना चाहिए। शरीर भी एक हवा भरा गुब्बारा ही है। जब तक काम लेना है ले लो। इसके फूटने में कोई आश्चर्य नहीं, आश्चर्य तो यह है कि इतने दिन यह बिना फूटे कैसे टिक गया। आप जानते

है, शरीर का स्वभाव कैसा है?

नवद्वार लवें निशिवासर....

फिर भी आत्मा वहाँ पर कैसे टिकी है, यह आश्चर्य है। इसका क्या तन्त्र है, रहस्य है, कैसे आश्रित है ये सब आज की शिक्षा में कुछ नहीं बताया जा रहा है। माता-पिता भी और बच्चे भी सभी अंधकार में हैं। बस कमाते जाओ - कमाते जाओ। किसके काम आयेगा ये पता ही नहीं। पहले ऐसी शिक्षा दी जाती थी - पाप-पुण्य क्या है? नीति - अनीति क्या है? अब... कुछ नहीं।

आज अर्थशास्त्र क्या है? ये अर्थशास्त्री को पता नहीं। इंजीनियर बनने वाले को इंजीनीयर का मतलब पता नहीं है। जब ऐसी दशा होती है (गुब्बारा फूटता है) तब पता चलता है। गुब्बारा फूटा नहीं ये तो ठीक ये क्षतिग्रस्त हो जाये तो कैसे ठीक करना ये भी आज किसी को ज्ञात नहीं हैं। क्यों की शिक्षा में बताया ही नहीं जाता। इसलिये वह बच्चा ही नहीं बड़े भी फूट-फूटकर रो रहे हैं।

आप भी जब यह पूरने को होता है तो हमारे सामने आकर रोते हो। पहले आत्मा के बारे में शिक्षा अब वह नहीं होने के कारण ऐसी स्थिति बनी हुयी है। ध्यान रखो - अस्पताल तो खूब बनाये जा रहे है, पर वे भी एक सीमा तक ही व्यवस्था

कर सकते हैं।

संख्या बढ़ेगी तो भीतर जो मरीज है उन्हें कहेंगे पहले आप बाहर हो जाइये। हमारी एक सीमा है। इसमें सरकार भी क्या करेगी? फूट-फूट कर रोने के अतिरिक्त कुछ नहीं बचेगा। इसलिए आपको क्या करना है, कैसे करना है, सोचो। अब तो खूब अनाथालय खुल रहे हैं। किसलिए? अवकाश प्राप्त माता-पिता के लिए। रहो एक कमरे में- कोई भी पूछने वाला नहीं।

बंदी के समान - बंदी को तो फिर भी पूछा जाता है पर इनको पूछने वाला भी नहीं। आत्मा अकेली थी-है- रहेगी ये किसी को ज्ञात नहीं है। जो आत्मा को जानता है वह इस रहस्य / रस तंत्र को समझता है। इसीलिए वह कहता है कहा जाना हो तो आज ही जा सकते हो। अब Well Come नहीं हम तो Well-Go रहते हैं। जाना चाहता है तो अभी जा। ये ज्ञान है तो जीवन अच्छा नहीं तो गली में घुमने वालों की तरह जीवन जीने का कोई मूल्य नहीं है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

"देशा मन की"

"आ० श्री ने कहा तुम थोड़ा आँख तो दिखाओ - मन को। अपने आप ठीकाने आ जायेगा। नहीं आये तो मरोड़ दो कुचल दो फिर देखो कैसा कहना मानेगा। चौके में तो संयत रखना अतिआवश्यक है अन्यथा आपको बिमार कर देगा।"

श्रमदान शोरूम उद्घाटन

5-11-18 "बिन्दु से सिन्धु - मतलब - श्रमदान" प्रातः

बूंद - बूंद के मिलन से जल में गति आ जाय।
सरिता बन सागर मिली, सागर बूंद समाय॥

यह यात्रा है जल की, जब जल एक बूंद के रूप में रहता है तो ओस होता है, वहीं का वहीं रह जाता है परन्तु यदि दूसरी बूंद सहयोग दे, यह भी प्रार्थना करता है कि तुम मेरे साथ आ जाओ। दोनो मिल जायें तो अपने आप ही यात्रा प्रारम्भ हो जायेगी। उस मिलन के बिना यात्रा प्रारम्भ नहीं हो सकती। तो बूंद - बूंद के मिलन से जल में गति आ जाती है।

यही गति उसकी उन्नति में कारण होती है तथा प्रगति तो अपने आप ही होने लग जाती है। तो वह बूंद अब एक रेखा बन जाती है। इसी का नाम सरिता है। यह सरिता अब रुक नहीं सकती क्यों कि एक के पीछे एक जुड़ती चली जा रही है। जुड़ती चली जा रही है। चलते - चलते वह सागर में जाकर विशाल रूप धारण कर लेती है। लोगो ने सागर से पूछा - सागर! तेरा परिचय क्या है?

सागर कहता है - मेरा परिचय क्या, मैं तो एक बूंद में समाया हुआ हूँ। यदि बूंद आपस में सहयोग न दे तो मैं इतना बड़ा नहीं हो सकता था। इकाई का परिणाम बहुत छोटा होता है। परन्तु ये ध्यान रखना - नदी का पानी मीठा एवं सागर का पानी खारा होता है। इसलिये

संग्रह करना ठीक नहीं, चाहे दिल्ली वाले हो या फिर बॉम्बे वाले हो।

श्रम से ही जल मीठा होता है इसे मत भूलो, इसी कारण प्रत्येक जन उसे पीना चाहता है। इसीलिए इसका नाम श्रमदान दिया। इस श्रम के बारे में तो जितना कहो उतना कम है। श्रमण संस्कृति के जितने भी उन्नायक हुये है वे सब इसी श्रम के कारण हुये हैं। उन सबका श्रम इसमें निहित है। प्रत्येक व्यक्ति जड़ न बने - चेतन बने। इसी क्रम में हम सब के बीच बहुत दूर से श्रमकरके पैदलयात्री भी यहाँ आये हैं।

श्रमण संस्कृति के उपासक तो करपात्री एवं पदयात्री ही होता है। आज ये पदयात्री बनकर इस पवित्र तीर्थ स्थल पर आये हैं। आज एक और कड़ी जुड़ रही है - एक हजार वर्ष के लिए सहस्रकूट जिनालय का यहाँ शिलान्यास होने जा रहा है। हमने भी कहा - "शुभस्य शीघ्रं" जल्दी करो। पहले होना था पर श्रमदान के कारण रुकना पड़ा हो शायद। दिल्ली वाले भी ध्यान रखें - गाड़ी स्टेशन पर भले ही आ जाये पर जब तक सीटी नहीं बजेगी तब तक आपको भी रुकना पड़ेगा।

सहस्रकूट भी मन्दिर है। समोशरण के ठीक सामने हैं, दानदाता भी खड़े हैं। इतना अवश्य है कि श्रम के बिना कोई भी योजना पूरी नहीं हो सकती। केवल धन से भी काम नहीं होता - चेतन का

अवदान होना जरूरी है।

अनेक लोग मिलकर कार्य पूरा करते हैं। बूंद अकेली नहीं। यात्रा प्रारम्भ होगयी, कितने लोग मिलेंगे पता नहीं। इतिहास से पाठ ले। इतिहास इण्डिया के नाम से नहीं भारत के नाम से है। "उस भारत के इतिहास में ही भारत का भविष्य गर्भित है।" पुराने भारत से भी ज्यादा काम होगा, इसी भावना के साथ!

[1140 पदयात्री दक्षिण से] अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

5-11-18 "सबका परिचय एक - सच्चिदानन्द" प्रातः

आप लोग अपना परिचय देना चाहते हैं, जो आपका है ही नहीं। संतो ने हमें बताया कि आप इसके पहले भी थे, अभी हैं, और आगे भी रहेंगे भविष्य में। इसलिए आप सत् हैं। सत् के साथ ही साथ हम जानने - देखने वाले हैं। यहाँ जितने भी लोग बैठे हैं - एक भी ऐसा नहीं है जो जानने वाला एवं देखने वाला न हो। बोलो? है न (हिओ) तो सत् के साथ आप चित् भी हैं। इन दोनों के साथ आपमें एक बहुत बड़ी कमी है - आनंद नहीं है। आनंद क्या बाजार से खरीदकर लायेंगे? नहीं ला सकते। जो आपके पास है उसमें संतुष्टि नहीं है, इसी कारण आनंद नहीं है। तो आपका परिचय वास्तव में क्या हो गया? सत् है - चित् है और आनन्द है। वर्तमान में आनन्द नहीं इसीलिये रो रहे हैं। तो सच्चिदानन्द ही हमारा - तुम्हारा - इनका - उनका - सबका परिचय है। तो अब ध्यान रहेगा - तुम हम सबका परिचय क्या है? सच्चिदानन्द! अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

6-11-18 "शिक्षा भी वीतराग संतों से" प्रातः

आज चौदस का दिवस है और वैसे आज बड़ा प्रतिक्रमण - सांवत्सरिक जो एक वर्ष में होता है। इसका हम सबने पाठ - मनन और प्रायश्चित के साथ किया। हमने सोचा था सब जनता दिवाली में व्यस्त हो जायेगी। किन्तु यहाँ तो आप लोगों ने स्थान ही बदल दिया। मन लग रहा है न? इसे ही छोड़ दो मन को अपने आप लग जायेगा। ये एक बहुत शुभ लक्षण है। अब आप लोगों को प्रतिज्ञा कर लेना चाहिए।

विदेह क्षेत्र में हमेशा तीर्थंकर विद्यमान रहते हैं, उनका दर्शन जल्दी हो जाये। मैं सोच रहा था समोशरण में सब लोग बैठकर पूजन - दर्शन करते हैं किन्तु यहाँ तो आप लोगों को ऊपर की ओर देखना पड़ रहा है। ये भी अच्छा है जो ऊपर देखेगा उसको कभी भी सर्विकल की बीमारी नहीं आयेगी। आरोग्य चाहिए अपने सब को। हमारे क्षण आनंद के साथ - ध्यान के साथ व्यतीत हो रहे हैं।

संसार में अनन्त काल हो गया। अब एक बार सबको गौण करके संसार में जो लाभ इन वीतराग संतों को मिला उसकी प्राप्ति हमें भी हो। यदि इस ओर ही हमारा लक्ष्य है तो उनकी आराधना करें। वीतरागी एवं वीतराग मार्गियों में एक - दूसरे को लगाते चलें जायें। जैसे - बैंकिंग में धन राशि को लगाते हो इसी प्रकार अपना जीवन भक्ति में व्यतीत करें। भविष्य में अवश्य ही

हम भी उस पद को प्राप्त कर सकेंगे, जिसे हमारे वीतराग संतों ने पाया है।

अपने जीवन को उच्च बनायें, इसी प्रकार हम साधर्मी की ओर भी देखें। पूरा तो कभी छोड़ा ही नहीं जाता किन्तु पंचेन्द्रिय विषयों को गौण करके - स्वार्थ को भुलाकर उनकी ओर भी ध्यान दें। तब लगेगा हमारा यह जीवन सार्थक है। ज्यादा तो नहीं कहता क्यों कि ½ घण्टे से आप यूं ही व्यवस्थित बैठे हैं। ऐसे ही चौके में भी रहा करो ना। ध्यान रखो - आप लोगों के चौके में जाते हैं, उस समय न जाने आप कहाँ खो जाते हैं?

हमारे चौके में कोई हो-हल्ला नहीं होता, सभी का निरन्तराय आहार होता है। होता है या नहीं - बोलो? हओ तो कह दो। इसी प्रकार आपके चौके में भी जो कोई भी आये उसका निरन्तराय आहार करायेंगे। इसी तरह आपका ध्यान निरन्तर बढ़ता चला जायें।

अहिंसा परमो धर्म की जय। ॐ

"भक्ति हो - अविवेक नहीं"

"समाज के वरिष्ठ समाजसेवी ने आज्ञी से कहा कि अभी बाहुबली में महामस्तकाभिषेक सानंद सम्पन्न हुआ परन्तु मुझे बहुत भारी पीड़ा है, जो मेरी श्रद्धा को भी हिला रही है। वह यह कि वहाँ पंचामृत अभिषेक हुआ वह चारों ओर जमकर दलदल बन गया। असंख्यात जीव-कीड़े बिलबिला रहे थे। चाहते तो उसी समय पानी से साफ करा सकते थे। सरकार भी इसके लिए मना नहीं करती। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। आज्ञी को भी सुनकर ठीक नहीं लगा।"

दीपावली

7-11-18 "तुने खूब दिया भगवान" प्रातः

समय तो काफी हो चुका है। भगवान मुक्त हो गये और हम भी अब मुक्त हो गये। प्रातः की बेला में ही संघ के साथ चातुर्मास गतियाँ हो गयी इसलिये अब मुक्त है। ठीक कह रहा हूँ न? [श्रो] अभी आप सभी मिलकर भगवान का अभिषेक, शान्तिधारा एवं पूजन कर रहे थे, साथ ही आज निर्वाण लाड़ू भी चढ़ाया। बदले में क्या मांगा? भगवान से कुछ मांगना नहीं बल्कि ये कहो कि आपने बहुत दे दिया है।

मेरी झोली भी छोटी पड़ गयी। भगवान से मैं प्रार्थना करता हूँ कि जब झोली ही छोटी पड़ गयी तो अब वह झोली ही इनसे अलग हो जाये। निकल जाये। इसलिए अब भगवान से मांगो मत। मांगना अच्छा नहीं माना जाता। आप लोग कहते हैं न - "बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख" इसलिए जो मिला है, जितना मिला है उसी में सबको खिलाओ - पिलाओ, नहीं मिला तो भगवान की भक्ति करो। इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय। "टिकिट क्यों? धार्मिक स्थलों पर जाने के लिए, दर्शन के लिए टिकिट नहीं होना चाहिए। यह भारत के लिए शोभास्पद नहीं है। इसलिए इस ओर प्रत्येक नागरिक को ध्यान देना चाहिए।"

8-11-18 "कैसे करें जीवन का संवर्द्धन एवं संरक्षण" प्रातः

पहले बच्चों को ये समझाते थे हर कार्य में, क्या पहले - क्या बाद में, किसको छोड़ना - किसको जोड़ना, इसके उपरान्त और क्या - क्या करना? ये सब बातें बचपन से ही माता - पिता और गुरुओं द्वारा बतायी जाती थी। आज बतायी जाती है या नहीं ये आप ही जानो। फिर भी बताना योग्य है। उसी में से एक बात हम आप सभी को बताना चाहते हैं। बताऊँ?

आम लगे हैं, पकने से पूर्व जब आम पकाव की ओर होते हैं तो बागवान ये जानता है कि कब - किसको उतारना है। जो पकाव की ओर है यदि उसको नहीं उतारेंगे तो वह पेड़ पर यूं ही नष्ट हो जायेगा। अब ऐसे आम को वह उतारकर घास-फूस इत्यादि में ऊभा देता है। पहले प्रयत्न के आम का रंग हरा रहता है। आप जानते हो या नहीं? केरी पहले खायी जाती है फिर जब वह पक जाता है तो पीला हो जाता है।

उसी को हम बताना चाहते हैं। अब वह आम पेड़ पर जहाँ लगा था डण्ठल पर टूटने के उपरान्त भी उस डण्ठल की निशानी रहती है। खाया है या नहीं? जानकारी रखनी चाहिए, वहीं से चूसा जाता है। ऐसे नहीं कि जहाँ - कहीं से ही खाने लग जाओ। अब जहाँ से चूसा जाता है उस डण्ठल को पहले निकाल देते हैं। अभी तुरन्त नहीं चूसते। जल्दी नहीं करो। वहाँ कुछ

रस निकलता है। तोड़ बोलते हैं इसे।

अज्ञान के कारण यदि उसे चूस लेगा तो होठ काले पड़ जाते हैं। मानो तेजाब डाल दिया हो। अब उसे दबाकर पानी जैसा पदार्थ निकलता है - वही विषाक्त होता है, उसके बाद अमृत तुल्य रस की प्राप्ति होती है। ठीक इसी प्रकार इस जीवन का संवर्द्धन एवं संरक्षण भी करना होता है। स्वाद भी लेना होता है, स्वाद के साथ जीना भी चाहते हैं। आपही बताओ - जीना चाहते हो या जलाना चाहते हो? देखो हमने कह दिया।

"जो व्यक्ति भाषा को ही भूल जाता है वह भावों को भी भूल जाता है।" बाजार में जाते हो तो भाव भी ध्यान रखना चाहिए। सामने वाला कहता है - पहले पैसा लाओ - मौलिक चीज है हमारे पास। धर्म कहते हैं - उसे पैसों के लिए तोला नहीं जा सकता। उसका मूल्य नहीं - वह तो अनमोल है। भारत इन सब बातों को भूलता जा रहा है - भूलो नहीं। पैसों के पिछे कभी भी धर्म को बेचा नहीं जाता। तो आप सब हमारी इस तोड़ की कहानी को याद रखना। पहले तोड़ को बाहर निकाल दो बाद में अमृत का स्वाद आयेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

Note - "अन्यवचन का प्रयोग करके आप स्वयं को एवं दूसरों को बचा सकते हैं। अहिंसा की रक्षा हेतु अन्यवचन का प्रयोग करें।"

प्रातः विहार

9-11-18 "गरीबनगर नहीं राजनगर है" राजनगर प्रातः

यह अवसर अपने को दोबारा मिला है। इस नगर में लगभग 30-35 वर्ष पूर्व मैं भी संघ का आना हुआ था। उसमें निमित्त था खजुराहो जहाँ से हम आये हैं, वहाँ का पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव होना था। हम आये थे। उस समय वर्षा का योग नहीं था लेकिन सर्दी का समय था और सर्दियों में मावठ होती है। उस समय नीचे यह राजनगर था और ऊपर बादलों का नगर था। हमने सोचा- बादलों का नगर क्या करने वाला है, क्या पता?

वहाँ जाने के उपरान्त एक-दो दिन ही निकले किन्तु इधर राजनगर में वर्षा तो उधर बमीठा में भी वर्षा, चारों तरफ वर्षा ही वर्षा किन्तु खजुराहो... देखो ध्यान रखो - श्री मानों - श्री मानों सर्दी का समय - जनता आकुलित न हो इसलिए - यह भगवान की बात है और भक्तों की बात है। हमने सुना है भगवान किसी के नहीं होते हैं। लेकिन भक्तों के तो हो ही जाते हैं।

सब तरफ 10-10 किमी. तक ओलावृष्टि किन्तु वहाँ कुछ भी नहीं हुआ। ये गरीबों की नगरी नहीं राजनगर है। जो होनहार भगवान है, जितनी भी मूर्तियाँ सामने बैठी हैं, इन सबमें भगवान बनने की शक्ति विद्यमान है। आप ही के बारे में कह रहा हूँ, वहाँ कहाँ बैठे हो अपने स्वभाव को पहचानो। एक-दूसरे की पहचान करलोगे तो जान पाओगे कि सबकी पहचान एक ही है। हमारी-

तुम्हारी, इनकी-उनकी, मनुष्य-तिर्यञ्च सबकी आत्मा एक है, यही महासत्ता है।

आत्मदृष्टि रखोगे तो आपको रंग-रूप नहीं रंगहीन, गंधहीन, आकारहीन सब अनुभव में आने लगेगा। एक आत्मा से दूसरी आत्मा में तुलना करोगे तो जानोगे कोई भी अन्तर नहीं है। आपमें एवं हममें अन्तर नहीं, हममें एवं भगवान में कोई अन्तर नहीं। बस भक्ति करो वही भगवान की सही पहचान करा सकती है। भगवान की पहचान - अपने स्वयं की पहचान करायेगी। कराये इसी भावना के साथ।

अहिंसा परमो धर्म की जय हो

छतरपुर
11-11-18 "कमजोर को बनायें बलजोर" प्रातः

छतरपुर आने का यह तीसरी बार है। चूंकि इससे पूर्व खजुराहो स्वर्णोदय की ओर जाना था। यहाँ के लोगों ने भी खूब लाभ लिया। सुबह आये और शाम को वापस चले गये किन्तु इस बार ऐसा नहीं हुआ यहाँ मुकाम कर लिया। यहाँ के लोगों ने भाव रखा - ऐसा करना चाहते हैं। हम शक्ति अनुसार कार्य करना चाहते हैं। हमने सोचा जिससे अहिंसा की उपासना, निस्पृह की आराधना हो सके, अपने जीवन को सार्थक बना सकें कुछ ऐसा करें।

खजुराहो जो अन्तर्राष्ट्रीय स्थल है, वहाँ भी कर्मठता के साथ सभी लोगों ने किया। ध्यान रखो - धन देना तो आसान है, किन्तु समय देकर

यात्रियों की व्यवस्था करना इतना सरल नहीं।

इन लोगों को आनन्द तो आया होगा? क्यों? 1-2 दिन हो गये पुरी की पुरी जनता छतर की ओर अर्थात छतरपुर की ओर ही आ रही है। रविवार को लेकर पूछ रहे थे- हमें क्या मालूम रविवार कहाँ होगा? तो ये हमने आपके सामने रखा। समाज को वाद-विवाद, राजनीति, विसंवाद से बचाने का इससे अधिक अच्छा उपाय नहीं है। अब इस कार्य को पूर्ण सौहार्द के साथ, आपस में मिलजुलकर करना है। आपस में मन मुटाव न हो।

सौहार्द एवं वात्सल्य भाव के साथ बच्चों को भी साथ लेकर करें। शासन-प्रशासन के साथ ही अनुशासन में बंधकर काम करें। अहिंसा के अनुबन्ध में बंधकर रहें। हम आप लोगों से और कुछ नहीं चाहते इंडिया के नाम से गड़बड़ी हुयी है, उसे हटाना है तथा भारत को लौटाकर ले आओ। भारत में अनेक धर्म के अनुयायी रहते हैं फिर भी सभी एक हैं। सभी अपनी क्षमता अनुसार इस कार्य को करें।

जो कमजोर है उसे भी सहयोग देकर बलजोर बनायें। मान लो तन-धन से नहीं कर पा रहे हो किन्तु सद्भावना के रूप में तो कर ही सकते हो। अभी आप लोगों ने नामकरण के बारे में कहा- एकदम तो हम कुछ नहीं कहेंगे। हम बंधेंगे- आप कहाँ तक बंधते हैं, यह देखते हैं। देखो। हम तो प्रवास के दौरान हैं- मध्यकाल में देखो। आप बंधकर एकजुटकर कार्य करेंगे तो कार्य जल्दी- जल्दी पूर्ण होगा। राजा

छत्रसाल के राज में रहते हो। थोड़ी सी मुट्ठी खुलकर लो सब काम हो जायेगा।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

सहस्त्रकूट जिनालय शिलान्यास

11-11-18 "जय-जय अतिशय क्षेत्र" मध्याह्न

लोगों को जोड़ने की भी जरूरत नहीं पड़ती, वो ही बात यहाँ ड़ेरा पहाड़ी में घटित हो गयी। इस ड़ेरा पहाड़ी पर सब लोगों को "चढ़कर आना पड़ता है - चलकर नहीं।" हम भी यहाँ चढ़कर के आये हैं। दो बार चढ़ा दिया और उतार दिया। तो यहाँ प्रातःकाल आज आप लोगों ने संकल्प लिया। उसके बाद चर्या (आहार) हो गयी। सब लोगों ने प्रातःकाल में उत्साह के साथ इसमें भाग लिया था। बहुत दूर-दूर से भी लोग यहाँ उपस्थित हुये हैं। सब अपने-अपने आँगन में बुलाने का भाव तो रखते ही हैं।

यहाँ के लोग हमारे पास पहले भी कई बार आये थे। महाराज! हम बुन्देलखण्ड में ही हैं, किन्तु बुन्देलखण्ड में रहते हुये भी दूर हैं। कल हमने सोचा था कि दूसरा रास्ता भी है आगे जाने का, वह कुछ कम भी पड़ रहा था। किन्तु यहाँ की भूमि का कुछ अलग ही पुण्य है, मुड़ना पड़ा। हम ही नहीं इनको (योगसागरजी आदि 6 मुनिराज) भी इधर ही आना पड़ा। कुछ न कुछ अतिशय तो है। प्रातःकाल ही यहाँ के लोगों ने नामकरण के लिए निवेदन किया था। तो हमने सोचा - जय-जय

अतिशय क्षेत्र की जय।

अतिशय क्षेत्र तो था ही, जय-जयकार और हो गया। इस क्षेत्र का दर्शन कर भक्त अपने जीवन को सार्थक बनायेंगे। हम भगवान के स्वरूप को कभी भी भूला नहीं सकते। अच्छे-अच्छे संत लोग भी उन्हीं के स्वरूप को याद रखते हैं। हम भी ऐसे वितराग प्रभु को याद करेंगे साथ ही आने वाली पीढ़ी को-बच्चों को भी संस्कारवान बनायेंगे। इसीलिए यहाँ आप सब यह जिनालय बनाने जा रहे हैं।

ये जिनालय ही है जो हमारे संस्कारों की श्रृंखला/परम्परा को अक्षुण्ण रूप से आगे बढ़ा रहे हैं। इनके माध्यम से हम सब अपने इस दुर्लभ जीवन को सार्थक बनायेंगे। इसी भावना के साथ पुनः एक बार और जय-जय अतिशय क्षेत्र की जय।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

रात्रि विश्राम - देरी

रास्ते में परौंदा ग्राम में जैन मन्दिर जी दर्शन किये।

"भावों पर विश्वास"

"खरगापुर में आर्यिका प्रशान्तमती माताजी थी। संघ का प्रवेश हुआ। माताजी ने गुरुजी की आहार चर्या का नजारा देखा। ईर्यापथ में कहा- आर्यीजी आप कैसे आहार कर लेते हैं। आर्यीजी ने जवाब लाजवाब दिया- मैं तो जिसभी दाता के यहाँ जाता हूँ। वह दाता (पूरा परिवार) एक ही भावना करता रहता है- "कैसे भी निरन्तराय आहार हो जायें" बस इस भावना से मेरा काम हो जाता है। मुझे उनकी भावनाओं पर विश्वास होता है।"

पहाड़गाँव

12-11-18 "गाँव है सच्ची पाठशाला" प्रातः

इस पहाड़ी इलाके में भी जनता के संस्कार को देखकर ऐसा लगता है कि बड़े-बड़े नगरों की जनता इनसे आकर सीख ले। अभी हम आ रहे थे तो एक-दो सज्जन ने हम लोगों को आते हुये देखा। उन लोगों ने मन में नमोऽस्तु करने की सोची किन्तु पैरों में जो चप्पल थी, उन्हें पहले उतार दिये फिर नमोऽस्तु किया। उसके बाद आगे दो छोटे-छोटे बच्चे अपने घर के व्यक्तियों को बता रहे थे - "भगवान आ गया"।

इन सब बातों को देखने से लगता है कि आप बड़े-बड़े विद्यालय भले ही खोल लो, ये कभी उनमें जाये भी नहीं फिर भी माता-पिता, भाई-बहन को देखकर अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, भाषा आदि बोलना सीख लेते हैं। इससे स्पष्ट है - "भीतरी आत्मा सब जानने एवं देखने वाला है।" आप सब यहाँ रहकर भी जीवन यापन कर रहे हैं। अहिंसा का पालन करना चाहिए। महापुरुषों ने उसी अहिंसा धर्म का उपदेश दिया।

अहिंसा से आपसी वैमनस्य, भाईचारे में बदल जाता है। इसी से सबको सद्गति की प्राप्ति होती है। इस अहिंसा से ही बड़े-बड़े महापुरुष मुक्त हो जाते हैं। गाँव वालों से कहना है - आप गाँव में / पहाड़ों में रहते हो, कहीं भी रहो कोई बात नहीं, बस राम-लक्ष्मण को याद करो। कष्ट के समय भी उन्होंने कभी किसी भी जीव

को मारा नहीं।

सदैव दया भाव रखा। किसी के साथ कभी भी छीना-झपटी, मारा-पीटी नहीं की। यही आप सबके लिए जीवन को सुखी बनाने का सूत्र है। आप लोग खेती बाड़ी करते हैं। खेतीबाड़ी के साथ पशुपालन भी किया करो। परन्तु उन पशुओं को कभी भी छोड़ना नहीं। दूध नहीं दे रहे - बूढ़े हो गये तो छोड़ दिये-यह उचित नहीं। माता-पिता भी बूढ़े होने पर अब कोई काम के नहीं ऐसा कहकर छोड़ते नहीं हैं।

जिन्होंने हमें पाला-पोसा अब समय आया तो छोड़ दिया। उपयोग में नहीं आ रहे तो छोड़ दिया ये सब गलत है। उन पर दया करके उनका पालन करना चाहिए। यदि आपसे पालन करते नहीं बन पाता है तो जहाँ पर भी गौ-शालायें चल रही हैं, उनको देकर आप पशुओं का प्रबन्ध कर सकते हैं। आगे भी इसी प्रकार की सात्विकता जो इस गाँव में है उसे याद रखेंगे। जो महापुरुष हुये हैं उनको याद करेंगे। दिन में श्रम करेंगे, रात में भगवान का भजन करके शयन करेंगे। इस सब बातों को याद रखेंगे।

हाँ-हाँ पहाड़ और गाँव दोनों हैं। अभी पाँव-पाँव चलकर यहाँ आये हैं।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

12-11-18 "सब धर्मों का सार-अहिंसा" मध्याह्न 11.30

एक ही मात्र धर्म है जो कि व्यापक है, वह अहिंसा धर्म है। जो कोई भी मजहब है, कोई भी जाति हो, कोई भी धर्म हो सबमें मात्र एक ही अहिंसा धर्म है। जब पशु एवं पक्षीयों में भी अहिंसा धर्म का पालन किया जाता है तो फिर मनुष्यों में तो अवश्य ही होना चाहिए। किन्तु अज्ञान होने के कारण, संसार के चक्कर में व्यक्ति भूल जाता है फिर भी महापुरुषों का योग पढ़कर के एवं सुनकर के अहिंसा को अपने जीवन में स्थान देना चाहिए।

जैसे राम को 12 वर्ष का वनवास हुआ था, राजकीय वैभव होने के उपरान्त भी सब कुछ त्याग करके वन में चले गये। हमने देखा नहीं रामचन्द्र जी को किन्तु सब जानते है कि वे वनवास में रहे। उस दौरान कई प्रसंग ऐसे आये, जहाँ पर हिंस्य पशु रहते है ऐसे जंगल में वर्षों व्यतीत किया। रहते हुये भी कई बार भोजन नहीं मिला अथवा समय पर भोजन नहीं मिला फिर भी कभी भी उन्होंने किसी जीव को मारकर भोजन नहीं किया।

सुन रहे है। आप जल्दी में उतावली कर जाते है। अभी कई युवक आये थे - उन्होंने अण्डा - माँस - मछली एवं शराब का त्याग किया। इनका सेवन बहुत बड़ा पाप माना जाता है। जीवों को बचाना ही हम सबका धर्म है। यदि आपका भी उसमें नम्बर आ जायेगा तो फिर कौन बचायेगा? क्यों कि

आज वो कमजोर है आप बलजोर। एक दिन आप कमजोर होंगे वो बलजोर तो बच नहीं पाओगे।

जब वह मारकर आपको खायेगा तो क्या होगा? सोचो? हमारी संस्कृति में बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी हुये उन्होंने भी इनका सेवन नहीं किया। पुरुषार्थ करो, श्रम करो। शाकाहारी बनो। जो शाकाहारी बने है ऐसे रामचन्द्र जी आदि महापुरुषों को याद करो। याद का उलटा ही दया है। जो कमजोर है उस पर दया करो। जो व्यक्ति अर्थ की अपेक्षा निर्धन है उसे भी ऊपर उठाने का पुरुषार्थ करो। सहयोग करके ऐसा कर सकते है।

सभी मिल जुलकर कार्य करें। सौहार्दपूर्ण एवं वात्सल्यपूर्ण वातावरण के साथ ही आगे विकास किया जा सकता है। ऐसा व्यवहार करो जो स्वयं हम अपने लिए चाहते है। सुबह भी हमने कहा था - अभी फिर से गाँव वासी निवेदन करने लगे तो यह 5-6 मिनिट का उद्बोधन दे दिया। जो संकल्प लेना चाहते है, वे लाइन से लेते जायें।

रात्रि विश्राम - ईशानगर स्कूल अहिंसा परमो धर्म की जय।

ईशानगर जैन मन्दिर जी दर्शन कर 2 K.m. दूर स्कूल में रुके।

Notes - "आज्ञी का सिद्धान्त है "प्रयास करो - परेशान न हो" यदि 1-2 बार प्रयास किया नहीं हो पा रहा है तो सभी को अभी थोड़ा रुक जायें। "Just Wait at the Gate" कुछ समय बाद फिर पुरुषार्थ करें कार्य अवश्य होगा।"

पचेर
13-11-18 "गरीब कौन? श्रीमान् कौन?" प्रातः

यह अवसर जो एक प्रकार से शहरों के कोलाहल में रहना पड़ता है, उसकी अपेक्षा बहुत अच्छा है। वहाँ के लोगों का मन इतने दबाव / प्रभाव में रहता है कि वह तनाव में ही बना रहता है। यहाँ टेंशन ही नहीं / इसलिए औषध लेने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ती है। समर्थन है या नहीं। ये सीधा रास्ता होने से और भी अच्छा हो गया, यहाँ घुमाव नहीं हैं।

हाँ इतना अवश्य है कि कई लोगों के सम्पर्क सूत्र टूट गये हैं। पूछते हैं- कहाँ जा रहे हो, हम कह देते हैं- मोक्ष जा रहे हैं। ठीक है न, जाना तो मुक्ति ही है। आप सब भी उसी का प्रशिक्षण कर लो, गाँव में तो प्रशिक्षण की कोई आवश्यकता नहीं। आप लोगों ने जो शिक्षण प्राप्त कर लिया उसके कारण यह दशा हो गयी है। संसारी प्राणी दुःख से मुक्त होकर सुख को प्राप्त करना चाहता है, किन्तु सुख किससे प्राप्त होगा यह नहीं समझ पा रहा है।

शहर के कोलाहल से इधर आने पर कैसा लग रहा है? अच्छा। किन्तु ध्यान रखो "छोड़ना एवं छूट जाने में बहुत अन्तर है।" अभी आपने बुद्धिपूर्वक छोड़ा नहीं है, कुछ समय के लिए छूट गया है। इसीलिये तो ऊपर की जेब में अलग - नीचे की जेब में अलग, पीछे की जेब में अलग (mobile) चारों दिशाओं

से सम्पर्क सूत्र बना रहता है।

इसलिए हम जल्दी से हाँ नहीं कहते हैं। कहाँ से आये हैं मालुम है। हमारा आशीर्वाद तो सब जगह है - हम कभी कटौती करते ही नहीं हैं। फ्री है। इस निमित्त से (विहार में) ज्ञात हो जाता है, क्या छोड़ना होता है। नहीं तो छुटना तो है ही। आप स्वयं छोड़ेंगे तो जल्दी - जल्दी भव कम होते चले जायेंगे। मैं तो हमेशा कहता हूँ - "आप शहर से आये हैं अतः आप गरीब है एवं ये गाँव में रहते हैं इसलिये श्री मान् है।"

कारण इन्हें कभी औषध खाने की जरूरत नहीं। आप एक दिन भी बिना औषध के रह नहीं सकते। इन्हें समझाने की कोई आवश्यकता नहीं, इनकी श्रद्धा इतनी बलवती होती है। ये सीमित में अपना जीवन अच्छे से बिताते हैं और आप असीम की ओर ही दौड़ लगाते हैं। देहली हो या सूरत अब उनको महानगर भी छोटे लगने लगे हैं। इसी कारण से उनमें टेंशन (तनाव) बढ़ रहा है। वे सम्पूर्ण विश्व से अपना सम्बन्ध बनाना चाह रहे हैं।

तो आपको संसार बढ़ाना है तो देख लो और यदि घटाना है तो भी रास्ता है। Short cut भी है। यदि मुक्ति चाहते हो तो आज से ही प्रशिक्षण प्रारम्भ कर दो। कर्म सिद्धान्त पर विश्वास

करो, आपका विश्वास कभी टूटेगा नहीं।"

आयु कर्म समाप्त हो जायेगा तो पुराना सब संबंध भी समाप्त हो जायेगा फिर नये सिरे से कार्य प्रारम्भ हो जाता है। आपको बात तक नहीं होगा, सब परिवार कहाँ चला गया कोई पता नहीं। जो व्यक्ति चला गया उसे कोई विकल्प नहीं, यहाँ पर रोना-धोना चल रहा है। ये ही मोह है। मोह को छोड़ना है। इसके लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर लग जाना - संबंध हटा लेना होता है।

विस्मरण करना आवश्यक है - स्मरण में आना एवं स्मरण में लाना दोनों में बहुत अन्तर है। इसीलिए आचार्यों ने सम्बन्ध तोड़ने को कहा है। इस प्रकार आजका यह यहाँ आना हुआ - अब खड्गापुर आ रहा है। यह सीधा रास्ता है - रास्ता बताने की जरूरत नहीं। आहार जी में हम लोगों ने चातुर्मास किया है। मुवई - पवई - महरौनी आदि सब पड़ते हैं। बलदेव गढ़ नहीं गये थे।

उस समय जतारा हो गया था - खड्गापुर नहीं हो पाया था। सब ओर श्रावक बिखरे हुये हैं। आपको आना - जाना मुश्किल न हो इसलिए... हम तो कहीं से भी आ - जा सकते हैं। अन्यथा आप आना न छोड़ दें। रास्ता ही नहीं होगा तो, आओगे कैसे? आपको अच्छा लग रहा है तो हमें भी अच्छा लग रहा है/आनंद आ रहा है।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

खरगपुर

1 नवम्बर 18 "तपस्या का फल है सद् आचार-विचार" प्रातः

प्रशान्तमती माताजी (प) संघ मिलन

ऐसा लग रहा है, कैसा लग रहा है- बताओ? दुनिया की सारी प्रसन्नता एकत्र होकर यहीं पर आ गयी है। भारतीय संस्कृति के अनुसार धन-दौलत, ऐशो-आराम की सामग्री बिछी रहती है, उसका नाम सम्पदा नहीं जाना जाता किन्तु आत्मा जो भले ही बाहर देखने में नहीं आती, शरीर में है उसकी ही बात की जाती है। उस भीतरी वैभव को देखने के लिए ही जनता तरसती है। दर्शन पाने हेतु अपनी आँखों को बरसा देती है।

वह जानती है कि ये क्षण जीवन के बहुत दुर्लभ क्षण होते हैं। यह तो निश्चित है जीवन में संयोग एवं वियोग तो होते ही रहते हैं परन्तु संतों का संयोग अथवा वियोग (विहार) दोनों ही वैराग्य का कारण हुआ करता है। इसीलिए संसार के लगाव को समाप्त करके उस अविनश्वर प्रभु के प्रति अपना लगाव कर देता है। 84 लाख योनियों में मनुष्य योनि का प्राप्त होना बहुत ही दुर्लभ है।

फिर उसमें भी सद् आचार-विचार का मिलना पुण्य योग से नहीं, यूं कहना चाहिए महान् तपस्या का फल है। अभी रास्ते में ही हमने दो-तीन बार सुना- क्या सुना? भूले से हीलेलई हमने खबरीया.... । अभी तो आये भी नहीं फिर भी खबर ले ली। पहले इधर से (बाजु से) ही आये भी

गये भी किन्तु छोड़ दी नगरिया....॥

आप सोचो तो भलेही भूल से ही सही लेलो भी खबरिया। इस छोटी सी पंक्ति ने हमें झकझोर दिया। किसने लिखा पता नहीं। आप सबने भी सुना होगा। आप ध्यान दो या न दो हम तो ध्यान देते ही हैं। आपके एक-एक शब्द पर ध्यान देते हैं। प्रत्येक शब्द के पिछे भाव भरा रहता है। भगवान ने ध्यान नहीं दिया, हम तो ध्यान देते हैं। हम ध्यान देकर ढूंढ भी निकाल लेते है।

भगवान ने भी खबर लेली पर हमको आकर के नहीं बताया कि हमने खबर ले ली। गुरु खबर भी लेते है, और आकर के भी पुछते है/पुछताछ भी करते है। फिर भी जो भी मिला है उन्ही से मिला है। उन्होने यही कहा-आपको मिला है- आप भी बांटते जाओ। धार्मिक भावों को भाना बहुत ही दुर्लभ है।

इस बार उस क्षेत्र में जहाँ- 30-35 वर्ष पूर्व गया था किन्तु यह पट्टी पुरी की पुरी छुटी हुयी थी/वहाँ जाने पर लगा कि पुरा का पुरा भारत ही मर रहा है। न कोई तिथी - न कोई वार बचा ही नहीं, रविवार को भी भूला दिया। ऐसा लगता था, अब रविवार आयेगा ही नहीं। ये तो (आज) रविवार का भी रविवार है। कल ही सुना था। खुशखबरी है। वैसे हम पहले बोलते नहीं पर आज सुना देते है- सुना दे?

हिओ]

आज मध्याह्न में हमारा विहार नहीं है। खुशखबरी है या नहीं? अब जो भी मध्याह्न में कार्यक्रम रखा है उसे संतोष एवं उत्साह के साथ अच्छे ढंग से सम्पन्न करेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। बुं

संस्मरण - "मेरे घर आये भगवान"

"संघ पचेर पहुँचा। सूरत के नीरज-संजय गढ़िया ने आचार्यश्री का पड़गाहन किया। पड़गाहन करके लगभग 500 मीटर दूर जिस घर में चौका लगा वहाँ लेकर गये। निरन्तराय आहार हुआ। बाद में पता चला जिस घर में आहार हुआ उसमें कभी भी आलु-प्याज तक नहीं बना, न ही कोई सदस्य बीड़ी-सिगरेट पीता था। इसी विशुद्धि का परिणाम की गुरुजी का पड़गाहन उसी घर में हुआ। रात्रि 9.30 बजे के बाद ही तय हुआ सूरत उसने खाली करके अपना मकान श्रावकों को दे दिया। उसे लगा कि आज भगवान मेरे घर पर पधारे हैं।"

Notes-

- श्रावक द्वारा जो आहारदान दिया जाता है उसमें विधी-द्रव्य दातृ पात्र का बहुत महत्व है।
- सर्वार्थसिद्धि में आया आश्रयदान शब्द गुरुजी के लिए प्रेरणादायी हो गया। जिससे इतने लोगों को हथकरघा के माध्यम से आश्रय मिल गया।

[हथकरघा - संतभवन - पिच्छी परिवर्तन]

15-11-18 "नियामक नहीं है काल" मध्याह्न

हमने प्रातःकाल इसीलिये निषिद्ध कर दिया था कि भोजन भी नहीं कर पाओगे। यदि मध्याह्न में विहार हो जाता तो क्या करते? ये कार्यक्रम पहले से तो निश्चित था नहीं, लेकिन अनिश्चित भी कभी-कभी समय पर निश्चित हो जाते हैं। आज के कार्यक्रम को लेकर - मैं ये करूं - मैं वो करूं किन्तु कार्य शुरू होने पर अनिश्चित सा रहता है, पर हो जाता है। कैसे हो जाता है? तो भीतरी वस्तु ऐसी ही है, बाहर बातें करते रहते हैं।

प्रायकर भजन में सुनते हैं - "ऊपर वाला पासा फेंके नीचे चलते दांव" हम इसे ऐसा समझते हैं "भीतर वाला पासा फेंके बाहर चलते दांव"। कर्मों का खेल ऐसा ही है। राजा-रंक बन जाता है रंक, राजा बन जाता है किन्तु दोनों में समान (चौथ) मानने वाला ठान ले तो प्रभु बनने में देर नहीं लगती। आप क्या टिकिट बेचने वाले हैं? भीतर ऐसी शक्ति है उसकी यदि अभिव्यक्ति हो जाये तो आँखे खुल जाती हैं। मैं करने वाला हूँ कौन? अथवा मैं करता हूँ ये अज्ञान है हमारा, इसी से हमको बचना है।

अभी संत भवन बनाने का संकल्प लिया, पिच्छी परिवर्तन का कार्यक्रम तो निश्चित ही था। जो भी कार्य करने का संकल्प किया है, उत्साह के साथ समय पर पूर्ण भी करना है। आगे बढ़ने का प्रयत्न किया है ये सराहनीय है। पहले से परिणाम नहीं बताते किन्तु जो प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी

होता है वह परिणाम की ओर नहीं देखता।

वह कहता है इतना तो आना ही पड़ेगा। जो कर्तव्य के क्षेत्र में कटिबद्ध हो जाता है तो परिणाम क्यों नहीं आयेगा बल्कि पहले भी आ सकता है।" काल कोई भी नियामक नहीं होता। काल रहता अवश्य है परन्तु उसका उपयोग करना अपने पर आधारित है। इस प्रकार सोचते हैं तो हो जाता है, नहीं सोचते तो नहीं होता। बादलों के लिए भी ऐसा ही होता है- जहाँ पर उनके अनुकूल वातावरण मिला वर्षा कर देते हैं, विपरीत परिणाम हो तो ओलावृष्टि भी हो जाती है।

वर्षा होती है तो सब ओर खुशहाली हो जाती है, ओलावृष्टि हो तो उजाड़ हो जाता है। "हम किसी भी प्रकार से किसी को भी नियन्ता न मानें, स्वभाव पर दृष्टिपात करें।" इसी स्वभाव से जो चाहते हो वह मिल सकता है। मिलता है। कूबत को जितनी बाहर निकालोगे उतने ही परिणाम सामने आते जाते हैं। पुराण ग्रन्थों को पढ़ने एवं सुनने पर रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

"जिन साधनों के द्वारा कार्य होना है उसके लिए हमने प्रयत्न ही नहीं किया।" कोई बात नहीं- जब जागे- तभी सवेरा। जगाने से भी नींद नहीं खुलती, खुल भी जाये तो हाँ कहकर टाल देते हैं। यहाँ महाराज भी- कई आर्यिकायें भी आई परन्तु विशेष खर्च करने से ही होता है। अभी एक लिस्ट में 5-6 व्यक्तियों के नाम पढ़े

जिनके अंत में सिंघई लगा था।

यह एक विशेष पद है। जो अपने ही द्रव्य से प्रतिष्ठा कराकर गजरथ चलवाता है उसे सिंघई की उपाधि दी जाती है। उन सिंघइयों से कहना है- काम तो कुछ किया नहीं फिर भी... बजते जा रहे हैं। लोग बजाते हैं- ये बजते जा रहे हैं। पूर्वजों ने आदर्श काम किया उसे याद करें। और कुछ नहीं- ये हमारा काम नहीं किन्तु उसके लिए जागरण हेतु यह अवसर प्राप्त हुआ है।

जब अखबार इत्यादि में आता है- लोग सुनाते हैं कि आपही के बच्चे जिनको लोन लेकर पढ़ाया आज उनकी क्या स्थिति है। जो नहीं कर पाते- हमारे लाने दे हो। लाने बुन्देलखण्ड शब्द है हमें करन नहीं देत। करन नहीं देत या करत नई, कौन सो अच्छो लगत है। ऐसे व्यक्तियों ने ही आज यह संकल्प लिया है। यदि व्यवस्थित करेंगे तो 4-5 महीने में ही लोग आतुर हो जायेंगे। बस मात्र संकल्प लेने एवं कटिबद्ध होने की आवश्यकता है।

इससे पहले जब विहार किया था तो हटा जा रहे थे, उस समय बाजना गये थे। वहाँ भीमकुण्ड है। हमने वहाँ सामायिक की है। दो-दो सौ व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं इतना स्थान है। उसका इतिहास सुनते हैं- पाण्डव जब आये थे तो भीम ने पानी हेतु अपनी गदा पटक दई/मार दओ। पानी फूट गओ। (हंसी) आज भी नीला-नीला

पानी वहाँ देखने को मिलता है।

विदेशी लोग आते हैं। पानी नीला का मतलब उसमें प्राणवायु की अधिकता थी। आज भी बच्चों का नाम भीम रख लेते हो। कमर कस लो तो मांगने की जरूरत नहीं, प्रभावित होकर सभी लोग देते हैं। आपके हाथ में है, कर सको तो देख लो। नहीं तो आना-जाना तो लगा हुआ ही है। हमेशा से संतों ने प्रेरणा दी, जनता भी उनके संकेतानुसार चलकर कदम बढ़ाती है तो आगे बढ़ जाती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय की बात है, जनता इतनी सक्रिय थी। एक वर्ष में एक अरब मीटर कपड़ा निर्यात किया गया। उस समय कितने हथकरघा थे कोई हिसाब नहीं। 30 करोड़ से भी कम जनता थी परन्तु श्रमशील थी। भारत में कहा जाता है जनता ठान ले तो कुछ भी असंभव नहीं था। आज इण्डिया आ गया तो भारत का नाम ही लुप्त हो गया।

अभी भी संकल्प ले सकते हैं, अतीत को सामने ला सकते हैं। ये सब तभी जब घर का अपना व्यक्ति करें, वेतन (Paid) वालों के भरोसे नहीं होगा। महाराज तो आयेंगे-चले जायेंगे। [किस की चर्चा] हम कभी भी हुआ नहीं कहते और ना कभी करत नइया। कुछ लोग कह रहे थे- चमत्कार हो गया। चमत्कार नहीं- चित्चमत्कार है। भीतर की कूवत को बाहर लाये-माँगे नहीं अवश्य इतिहास के वे क्षण पुनः लौट आयेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

15-11-18 बंधु कौन ? प्रातः

संस्कृत में सूर्य को कमलबंधु कहा है। बंधु का अर्थ आप लोग जानते ही हैं। घर-गृहस्थी में जो बंधु होते हैं, वे व्यवस्थित नहीं किन्तु जो कैसी भी स्थिति में हो हीत के बारे में सोचता हो सही मायने में बंधु वही होता है। तो कमल जो धरती पर तालाब में है वह कहाँ और सूर्य कहाँ जो आसमान में हैं। इन दोनों का कभी मिलना तो होता ही नहीं हैं। बहुत सोचता रहा - कमल का कोई बन्धु है तो वह है - सूर्य नारायण। कैसे ? सूर्य दूर रहता है फिर भी कमल खिल जाते हैं / खुल जाते हैं; और 12 घण्टे तक खिले रहता है।

भ्रमर भी मकरन्द पीने हेतु मण्डराते रहते हैं, जैसे श्रावकगण साधुओं के सामने मण्डराते रहते हैं। जब सूर्य सायंकाल को अस्ताचल की ओर चला जाता है, त्यों ही कमल भी .... मुरझाता नहीं, जो आलोक / प्रकाश / प्रताप पाया उसी को भीतर समेट लेता है। फिर रात्रि में वह कभी नहीं खिलता / अब दूसरा एक क्या अनेकों सूर्य भी आ जाये तो भी वह नहीं खिलता क्यों कि उसे मालुम है हमारे सूर्य नारायण तो ऊपर है।

इसलिये वह दिन में ही खिलता है। इस प्रकार बहुत दूर होने पर भी उसका सूर्य से सम्बन्ध बना रहता है। कवियों द्वारा एवं शास्त्रों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि दूर होने के बाद भी जैसे ही उस सूर्य की किरणें कमल को मिलती हैं, उसकी एक-एक कली में जान आ जाती है। बस ताप एवं प्रताप

(प्रकाश) चाहिए।

"सूर्य की किरणों में आतप होने से जो स्पर्श होता है उसमें जान बनी रहती है।" अन्य प्रकाश में यह बात नहीं है। यदि यह संबंध टूट जायेगा तो कमल भी खिल नहीं पायेगा। इसी प्रकार हमारा संबंध भी धर्म से सदैव बना रहे। गुरु से - प्रभु से अथवा वितरागता से जो जगत के हितकारी हैं उन्हीं से संबंध बनाने में हमारा हित है। "क्षेत्र की अपेक्षा कितनी भी दूरी हो - भावों की दूरी ही दूरी कहलाती है।" भावों की निकटता होना अति आवश्यक है।

इसलिए जब कभी भी आपके यहाँ साधु-संत, साध्वी आदि आ जाये तो हमेशा - हमेशा लाभ लेते रहें। प्रत्यक्ष में भी एवं परोक्ष में भी लाभ लें। कई बार तो प्रत्यक्ष से भी परोक्ष में और भावना उमड़ती है। महिनों / वर्षों से यह भावना उमड़ती रहती है। उसका स्वाद / उसका आनंद अलग ही है। बस! आ रहे हैं - आने ही वाले हैं, प्रतिक्षा में इसतरह से क्षण व्यतीत हो जाते हैं। वे क्षण ही हमें बहुत शक्ति प्रदान करते हैं।

उनके प्रति आस्था / गौरव / बहुमान भरा रहता है। इसी प्रकार आपको चाहिए - जो क्षण मिले हैं उपयोग कर लें, आगे का तो कोई भरोसा है ही नहीं। आस्था सदैव बनी रहे। जो सौभाग्य हमें मिला है वह सबको मिले / सबके दुख दूर हो, सभी बंधन से मुक्त हो इन्हीं भावों के साथ, आज महामस्तकाभिषेक सभी लोगों ने उत्साह से किया।

रात्रि - सरकनपुर (श्रमन्दिर हैं) अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

मँजना

16-11-18 मांजना लेकिन क्या? प्रति:

(2 मान्दिर) पहले आप लोग ये बताओ, फिर हम बाद में बतायेंगे। कोई भी व्यक्ति अपने घर में अथवा पंगत में भोजन करते हैं तो, जिस भी बर्तन में खायेंगे-पीयेंगे उसके उपरान्त क्या करना पड़ता है? मांजना पड़ता है। अन्यथा बदबु आने लग जायेगी। प्रत्येक व्यक्ति के यहाँ मांजते है। "तो इस गांव का नाम भी मांजना है।" मांजते रहिये - मांजते रहिये। लेकिन ये ध्यान में रखियो - मांजने के लिए तो कह दिया पर क्या मांजना और क्या नहीं मांजना।

भजन में सुनाते है आप ही लोग- "क्या तन मांजना रे, एकदिन मिट्टी में मिल जाना" इस तन को कितना भी माँजते रहो फिर भी एक दिन जिस मिट्टी से आये उसी में मिल जायेंगे। इसलिए "बर्तन तो मांजना किन्तु तन नहीं मांजना" तन से तो खूब काम लेओ। इस छोटी सी पंक्ति ने बहुत बड़ा उपदेश दिया है। "तन से काम तो लेना परन्तु तन को मांजना नहीं।" आज हरेक व्यक्ति इसी को माँजने में लगा हुआ है।

इस तन के द्वारा भगवान का भजन तो करो। श्री जी को भी प्रति दिन मार्जन (भजन) करते रहो। उसी के स्वरूप आपको अपना स्वरूप देखने को प्राप्त हो सकता है। वे प्रभु तो अपनी यात्रा पूर्ण कर चुके हैं, फिर भी हम उनके पीछे लगे रहेंगे तो एक दिन अवश्य ही उनको प्राप्त कर लेंगे। यही भक्ति हमें भी सोचने को बाध्य

कर देती है।

बहुत अच्छा। आप सभी यहाँ वीतरागता का मन्दिर बनाने जा रहे हैं, तो अपने तन को एवं मन को माँजो। जीवन के एक-एक क्षण उस वीतरागता की आराधना में व्यतीत हो। संक्षेप से मैं यही कहना चाहता हूँ। इस पट्टी पर (छतरपुर से बंधा जी का मार्ग) पहले हम कभी नहीं आये। आप लोग यहीं रहते हैं। हमारे लिए तो ये नया रास्ता है, लेकिन आप भी नया रास्ता खोज लो तो अच्छा होगा।

विश्राम - झिलमिल (अहिंसा परमो धर्म की जय।)

"अर्थपूर्ण हो शब्द"

संस्मरण

संघ का विहार हो रहा था। इसी मँजना ग्राम में प्रवेश होना था। मंगल प्रवेश के पूर्व एक डी.जे. में भजन जैसा चलने लगा। आधुनिक भजन था। आन्टी ने हम लोगों से कहा- इन पंक्तियों का क्या अर्थ है। न ही अर्थ है, न ही भाव है, न ही संगीत है, न ही शब्द अच्छे हैं। फिर भी लोग सुने जा रहे हैं, यही अज्ञान है। अतः शब्द ऐसे उच्चरित हो जिनमें अर्थ गाम्भीर्य भी हो।" अन्यथा वह मात्र ध्वनि-प्रदूषण का कारण होते हैं।

आन्टी जी कि यह विशेषता है कि वे सामने वाले के प्रत्येक शब्द पर गहराई से ध्यान देते हैं। शब्दों में कितना वजन है, वे तुरन्त जान लेते हैं। कई बार उनके मुख से "शब्द-प्रयोग" के विज्ञान के बारे में सुना। इसीलिए आन्टी का एक-एक शब्द जिनवाणी हो जाता है।

धामना
17-11-18

"सीख देती प्रकृति" प्रा०

संसार में पेड़-पौधों से लेकर के और भी प्रकृति किसी न किसी प्रकार से मानव के लिये विशेष रूप से सहयोग देते रहते हैं। जैसे- "परोपकाराय दुह्यन्ति गाव" पर के लिए उपकार के लिए ही गाय- भैंसे दूध देती रहती है। किसान के लिए भी खेती आदि में तथा खाद इत्यादि से सहयोग करती है। बदले में कुछ नहीं चाहती, आप लोग तो धरना आदि पर बैठते हैं यदि वो कभी धरना करदे तो संसार का क्या होगा, पता नहीं।

परोपकार में ही अपना जीवन बिताती है। खाती क्या है / देते क्या हो? रूखा-सूखा, घास-फूस खाती है और पानी पीती है बदले में आपको देती क्या है- भूसा? नहीं- अमृत तुल्य दूध। सोचो- विचार करो। आपका पालन-पोषण किसने किया? आपके पैरों में जो कूबत आयी है वह उसी की देन है। फिर "परोपकाराय नदन्ति नद्यः" नदी पहाड़ों की चोटी से निकलती है और जो भी मार्ग में आता है सबकी सेवा करती चली जाती है। साफ-सुथरा पानी सबको देती है, सबकी प्यास बुझाती है।

आपके वस्त्रादि को पवित्र (साफ) बनाती है। गर्मी को उतार देती है। क्या नहीं करती सब काम करती है, फिर भी कभी रुकती नहीं। एक दिन भी वह आपके घर में नहीं रुकी। बहती- बहती चली जाती है और सागर में मिल जाती है। सागर खारा होता है परन्तु नदी तो सबको मीठा ही

जल पीलाती है।

आपको पानी चाहिए तो नहीं आपकी प्यास तो तृप्त कर देती है। वह आपको पानी देती है परन्तु आप लोग दूसरों की आँखो में पानी लाते हैं। देख लो आपके जीवन एवं उसके जीवन में कितना अन्तर आ गया। इसके बाद परोपकाराय वृक्ष सबकी गर्मी मिटा देते हैं। उसकी छाया में किसके बैठने का मन नहीं होता है? सबका होता है। छाया में बैठते ही पवन (हवा) चलने लगती है, वह वृक्ष ऊपर से एक आम गीरा देता है। आप उसे भी खा लेते है। वृक्ष को कभी बदले में कुछ चाह नहीं होती हैं। वह उपकार में ही अपना समस्त जीवन लगा देता है। हवा चलती है, यदि हवा/वायु न चले तो क्या होगा.. सोचो तो...। जिन्दगी उसी हवा पर आधारित है। हवा पर तो नहीं है न? हवा कहाँ-कहाँ से बहती हुयी आ रही है। वह लोग-सब्जी, नदी-नाले, गाय-भैंसे इत्यादि को लेकर बहुत सहयोग देती रहती है।

आप इन सबका अहसान तो मानिये। सहयोग न भी दे सको कोई बात नहीं किन्तु असहयोग (दुरुपयोग) तो मत करो। इसलिए इन सभी से क्षमा मांगे। मैं तो निकम्मा हूं, ये सभी बड़े काम के हैं। भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आपका भी भला हो एवं सभी लोगो का भला हो।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

विशेष- मारवाड़ी एवं पहलवान को दीक्षा बहुत सोच-समझकर देता हूं।" आन्टीजी (दीगौड़ा दर्शन दिये) रात्रि विश्राम - बेम्होरी

"बंधा जी क्षेत्र"

18-11-18 "खिलौना नहीं जिन्दगी है ये" प्रातः

सुनो! सुन रहे हैं आप? एक कान से या दोनों कान से? एक कान को बंद करके सुनो ताकि कुछ भीतर ले जाओ। आप लोगों के ऊपर कुग्गाओं की माला लटकायी गयी है। मैं सोच रहा था, इतने सारे गुब्बारे यहाँ लगाये गये हैं। अब बताओ इन गुब्बारों की क्या जिन्दगी है? क्यों लटकाये? यदि फूट जाता है तो आप कहते हो, बेटा - ये तो फूटने के लिए ही है। इसी प्रकार आपकी जिन्दगी की बात है।

इसलिये भरोसा कभी भी मत रखो। सांस पर भरोसा रखो किन्तु गुब्बारों पर कभी भरोसा नहीं रखना। श्वांस कब निकल जाये और गुब्बारा फूट जाये पता नहीं। अतः हमेशा अपने सामने ये गुब्बारे रखो। "बच्चों के लिए भले ही खिलौना है किन्तु अपने लिए तो जिन्दगी का सवाल है।"

अहिंसा परमो धर्म की जय। नमो

"जवानी लौटती नहीं"

बिहार में वेश्यावृत्ति चल रही थी। आन्टी से पुछा तेल लगाये या घी? तेल लगाना था, घी नहीं। आन्टी ने कहा कौनसा तेल है। हम लोगों ने कहा - चन्दबला, महानारायण एवं बला ऐसे तीन थे। आन्टी ने पुछा वातनाशक तो महानारायण ही न? हम लोगों ने हाँ भर दी। आन्टी ने व्यंग्य में हम लोगों को बहुत बड़ी शिक्षा दे दी - "कोई सा भी तेल हो, ऐसा तेल अभी तक बना ही नहीं जो बूढ़े को जवान बना दे।" हम सब निरुत्तर थे।

"मन्दिर शिलान्यास"

18-1-18 "बंधा जी में मिट्टी बन गयी सोना" रविवार मध्याह्न

अब देखो कोई भी व्यक्ति जो मुमुक्षु / मुक्ति की भावना रखता है। चाहे वह श्रमण हो अथवा श्रावक हो, हरेक व्यक्ति की इच्छा का केन्द्र मोक्ष है। उसके लिए कुछ भी चुकाना पड़े, तैयार रहते हैं। दुर्लभ वस्तु जो इष्ट होती है उसके लिए सब कुछ चुकाने को तैयार है। सांसारिक वस्तुओं का क्या चुकाना। वह तो मिट्टी की भाँति है। जो मिलता है वह मिट्टी नहीं वह तो...। चाहे सोना हो या पीला अन्य कोई भी पदार्थ सब मिट्टी ही है।

अब देखो चाहे पैरों में पहन लो तो भी वह मिट्टी है, हाथ में भी मिट्टी, गले में- मिट्टी, कानों में कुण्डल- वे भी, नाक में भी, बाजु में बाजुबंध बांधते हैं वे भी मिट्टी। इस प्रकार ये सब मिट्टी है, यदि वही सोना यहाँ "रजत मन्दिर" में दे दिया तो..। इसलिए सम्यग्दृष्टि की निगाह में तो-वह मिट्टी ही है। ऊपर- ऊपर से कह रहे हो या भीतर से कह रहे हो? इतिहास में युग के आदि में भरत चक्रवर्ती ने 72 जिनालय स्वर्ण के कैलाश पर्वत पर बनवाये थे। तो वह धाम आप भी बनाने जा रहे हैं।

इसमें देकर अपने आपको ऊँचा मानते हो। मोक्ष का धाम जिसको इष्ट हो जाता है तो फिर कुछ भी करना पड़े। सब कुछ छोड़ने को तैयार हो जाते हो। बंधा जी को ऐसा ही धाम बनाना चाहते हो तो बंधा जी से बंधना पड़ेगा। यहीं से हम गर्मियों के दिनों में गये थे, याद है आपको? भगवान भी ऐसे मिलें - पदिन में ही उन्होंने

सब कुछ कर लिया।

कई लोगों को पहले योजना बनानी पड़ती है, यहाँ बिना योजना के ही काम हो गया। यहाँ की जनता भी- लौटकर आना पड़ा। बंधा जी से जा रहे थे तभी कहा था. जा रहे हो परन्तु लौटकर आना ही पड़ेगा। लौटकर आ ही गये। अभी चातुर्मास मतलब 4 महिने पुरे भी नहीं हुये। पिछली- परिवर्तन भी जल्दी करा दिया। कौन ने? और कौन ने इतने के भगवान ने। गये थे तब जतारा होते हुये गये थे, आते समय डबे छोड़ना पड़ा। आते समय खरगापुर होते हुये आये। इधर की पटरी पर कभी नहीं गये थे।

यहाँ समय की ज्यादा जरूरत नहीं पड़ती। बांध दिया जाये तो मुमुक्षु लोग करते रहते हैं। "कम समय में अधिक तरक्की का यदि कोई उपाय है तो वह बंधा जी वालों से सीख लो।" अब हम कह सकते हैं कि हम दोबारा आ गये हैं। यदि नहीं करोगे तो बंधा जी के भगवान आपको ऐसे बांध देंगे। हम तो उन्हीं से शिकायत करेंगे। जो केवल बातें करेंगे उनका नाम बता देंगे। पैसे देकर बंधने वाले तो कई मिल जायेंगे, समय देकर बन्धना पड़ेगा।

तभी वह दानदाता भी इच्छापूर्वक, खुश होकर, स्वाभिमान को समझकर दान देगा कि हमारा भी कुछ उपयोग कर लो। आप लोग भी करते हैं या नहीं। दानदाता सोचता है कि बीच - बीच में आकर देखना है कि

सोना-चांदी जो भी दिया है वह चमक रहा है या नहीं।

इस प्रकार दानदाता आप लोगों को बान्धेंगे। कर्मेही भी विशेष रूप से इस कार्य को करेगी क्यों कि यह 10-20, सैंकड़ों वर्षों नहीं हजारों वर्षों के लिए हो रहा है। आज सुबह आये थे, शाम कैसे हो गयी पता ही नहीं चला। उस समय जब आये थे गर्मी में पसीना-पसीना, आज पंखा भी नहीं है तो भी पता नहीं चला। सुना है यहाँ 50 से 60 गांव इस बंधा जी से बंधे हैं मतलब बहुत बड़ा मालगुजार का स्थान है। (नामकरण)

बंधा जी तो है। मैं तो क्षेत्र का ही नाम बन्धा जी मानता था, ये तो गाँव का नाम है। आपने मांग अभी रखी है, समय तो देना पड़ेगा। हमने तो दो बार समय दे दिया। जो भी आये वह क्षेत्र की सेवा करे, एक-आध हफ्ता रुककर लाभ लेवें। अब हओ तो कह दो। शुद्ध बुन्देलखण्डी शब्द है 'हओ'। यह बहुत प्यारा लगता है। जल्दी न करियो। कई बार आना पड़ेगा आपको हमारे पास। दिन अस्त होने को है, आज रविवार भी हो गया। सभी बिना बांधे ही बंध गये।

जैसे गाय जब सार में आती है तो अपने सींग को युं नीचे कर देती है कि मेरे गले में रस्सी बांधो। हमने कई बार देखा - ऐसा गाय स्वयं अपने स्वामी से कहती है। ठीक उसी प्रकार हमारे सामने सहर्ष सामने आकर बंध गये। वे भले ही कह रहे हो कि हम इस लायक नहीं

है। बांधने वाला सब जानता है।

कुछ लोग कहते हैं - महाराज आजकल दुकान चलत नहीं है। हमने कहा - हमारे पास आ जाओ हम पहिये लगा देते हैं। फिर तो चलेगी नहीं भागेगी। हमारी दुकान तो भागती रहती है। हमने देखा, किन्तु दुकान जो पहले नुक्कड़ पर थी आज भी वहीं है, भागी नहीं। तो जो प्रतिज्ञा। अनुबन्ध किया उसे स्मरण में रखेंगे। पूर्वजों ने जो किया, आज आपको उससे भी आगे का मिल गया। नाति को ऐसा सौभाग्य मिल गया कि दद्दा भी उससे रह गये।

दद्दा जी वहीं से नाति के इस कार्य की प्रशंसा कर रहे होंगे। फूल बरसायेंगे फिर हेलिकापटर की भी कोई जरूरत नहीं। इतना ही।

अहिंसा परमो धर्म की जय।

[[प्रथम बार आचार्य भक्ति माइक से हुयी] क्यों की मंच पर ही आचार्य भक्ति हो गयी थी। इधर शिलान्यास हो रहा था] ई

"सब प्रयोग हो गये"

"संघ खरगापुर में था। आर्यिका प्रशान्तमती माताजी ने अगवानी की। जब आहार चर्या में गुरुजी के आहार देखने माताजी गयी तो बेकाबु भीड़ देखकर विस्मित हुयी। इर्या पथ में गुरुजी से बोली - आप कैसे आहार ले लेते हैं। इसके लिए कोई व्यवस्था क्यों नहीं करते। आ० श्री बोले - मैंने सब प्रयोग कर लिए किन्तु व्यर्थ हो गये। अब कोई भी व्यवस्था काम की नहीं - देवलोग भी वहाँ रहते होंगे। रोजाना की बात है।"

मोहनगढ़
19-11-18 "मोह न गढ़ मतलब मोहनगढ़" प्रातः

हम यहाँ पर विस्मृत होते आये हैं। विस्मृत का मतलब यह है कोई इसे वल्लभगढ़ कहते हैं, कोई बलदेव गढ़ कहते हैं तो कोई मोहनगढ़ कहते हैं। कौन गढ़ कहाँ पर है ये ज्ञात नहीं हो रहा था। अभयसागर जी को बेंधा जी चातुर्मास के लिए भेजा था। चातुर्मास के उपरान्त यहाँ के लोग आये थे। हमने इधर कभी विहार किया नहीं था सो कहा- देखो पुछ लेते हैं। ऐसा कहकर छोड़ दिया।

यहाँ की ग्रामीण जनता खेती-बाड़ी करती है। यहाँ का नाम ही है "मोहनगढ़" मतलब मोह न गढ़ है यह। ये लोग मोह बढ़ाना नहीं चाहते हैं। जिन्होंने आज मोह को कम किया वे सभी मन्दिर हेतु आगे आकर दान दिये। अब दूसरे ढंग से रचना परिवर्तन करके कुबत तो लगानी पड़ेगी। अक्षयक्षा ने कहा महाराज सब हो जायेगा। योग से पड़ नहीं सात वेदी हो गयी। 7 शिखर बनेंगे वे भी हो ही जायेंगे बस थोड़ा सा छलांग लगाने की जरूरत है।

छलांग लगाना अलग एवं ऊपर चढ़ना अलग है। नाते-रिश्तेदारों से भी काम हो जायेगा। मोह कम होगा तभी होगा। भगवान भी देखते रहते हैं कि ये लोग कुबत के भी बाहर कर रहे हैं। मोह को तोड़ा जा सकता है। कम कर सकते हैं। उस मोह को सभी कम करें इसी शुभ भावना से आशिर्वाद।

रात्रि = रमपुरा जि.-ललीतपुर (उ.प्र.) अहिंसा परमो धर्म की जय। [उत्तरप्रदेश प्रवेश]

बार जि०-ललीतपुर (उ.प्र.)

२०-११-१८ "फण्डा बार का" प्रातः

संसारी प्राणी अपने किये हुये कर्मों के कारण संसार में कई बार जन्म लेते आ रहा है फिर भी इसके संसार का फेरा अभी तक मिटा नहीं है। कुछ व्यक्ति कह रहे थे महाराज पहली बार ही इस ओर आये हैं। ऐसा लगा हाँ कहता हूँ तो गड़बड़ तथा ना कहता हूँ तो भी गड़बड़। ये तो बार है।

बार है तो बार-बार आ गये होंगे। फिर प्रथम बार कैसे हुआ बताओं? आप अभी भी थके नहीं हैं, बार-बार आने पर भी। भगवान से प्रार्थना करता हूँ बार-बार आना-जाना न पड़े, बस एक बार अपने धाम में चले जायें फिर बार-बार लौटकर नहीं आयेंगे।

रात्रि - बाँसी अहिंसा परमो धर्म की जय।

स्वाभिमान (इतिहास)

" हम लोग मोहनगढ़ में थे। वहाँ पर प्राचीन किला आज भी विद्यमान है। दुर्ग को देखने से ही लगता है कि यह अभेद्य है। वहाँ के राजा मानसिंह थे। किसी समय परचक्र ने उन पर आक्रमण बोल दिया। किन्तु दुर्ग इतना मजबूत की वे भीतर प्रवेश कर ही नहीं सकते थे। इसी समय द्वारपाल जो यादव थे उन्होंने नमक हरामी की और द्वार को खोल दिया। राजा को पता लगते ही दुश्मन के हाथों बंदी या मरने की बजाय अपनी रानी के साथ फांसी लगा ली। मरने से पूर्व राजा ने यह श्राप दे दिया कि इस नगर

[शेष आगे] Cont. →

कॉलेज, महरौनी, ललीतपुर

३१-११-१८ "फिर मिलेंगे" प्रातः

हमारी एक चीज घुम गयी है। मैं देखता हुआ आ रहा था और आप लोग भी देखते हुये आ रहे थे। नजदीक से भी देखने का प्रयास किया होगा। मैं आप सभी से पुछना चाहता हूँ वह चीज मिल गयी क्या? आप लोगो ने हमारे अर्थ को अलग ले लिया है, ऐसा लगता है। मैं जो अर्थ समझता हूँ वह आप सबके सामने रखना चाहता हूँ। रख दें? [हओ] ललीतपुर हओ में है की नहीं हैं, कहीं भूल तो नहीं गये।

जो चीज घुम गयी वह यह है कि आजकल चतुष्पद का (Hiway) निर्माण तो हो गया है। उस पर बड़े-बड़े वाहन आदि का आना-जाना बना रहता है। मैं ये देख रहा था कि हमारी पगडंडी जीवित है या नहीं। वह अब जीवित नहीं रह पायेगी क्यों कि उस पगडंडी पर चलने वाले नहीं बचे। चलाने वाले तो हैं चलनेवाले नहीं। इसलिये हमारे लिए हओ में हओ नहीं कहना। नहीं तो...। नहीं तो क्या? वाहनों पर लिखा रहता है न- फिर मिलेंगे।

Cont... ← [पिछला शेष] (अहिंसा परमो धर्म की जय) मैं कभी भी यादव नहीं रहेंगे। आज भी यहाँ एक भी यादव नहीं हैं। यदि रहना चाहे तो कोई न कोई कष्ट उन पर आ जाता है। छोड़कर भागना ही पड़ता है। ये इतिहास रहा है हमारे स्वाभिमान का। याद रखो।"

क्षेत्रपाल मन्दिर, ललीतपुर

22-11-18 "जंग से बचना है तो छोड़ो राग" प्रातः

तनक सा का अर्थ क्या होता है? हमें बता दो थोड़ा सा। सुनो। अपने स्वभाव की ओर हम देखते हैं वह न ही तनक सा है न ही मनक सा है। इसका मनक जिसे होता है वह एक प्रकार से जीवन को सार्थक बना लेता है। लोहा भी एक धातु है, कनक / स्वर्ण भी एक धातु है। लोहा कीचड़ में गिर गया तो गया। वैसे ही यदि लोहा को हवा-पानी मिल जाये तो रूप बदलना प्रारम्भ कर देता है।

वह लोहा जंग खाना प्रारम्भ कर देता है। जंग के उपरान्त गलकर मिट्टी हो जाता है। जंग क्यों खाता है? क्यों कि वह पर को अपनाता है। पर को दो रूप में अपनाया जाता है। भावों के द्वारा ज्ञेय-ज्ञायक के रूप में है तो गड़बड़ी नहीं किन्तु मोह के साथ होने पर गड़बड़ है। इसमें स्वयं को न देख पर को ही देखा जाता है। उसका भार समाप्त हो जाता है, जंग लगने के बाद वह मिट्टी में मिल जाता है। दूसरा स्वर्ण होता है उसे मिट्टी में गाड़ कर रख दो तो भी उसे कुछ भी नहीं होता। तनक सोचो तो।

इसलिये क्यों कि वह दूसरे को पकड़ता नहीं, छूता भी नहीं, दूसरा छू भी जाये तो वह बकराता भी नहीं है। लोहे की दशा अलग ही है- वह दूसरे को अपनाता है, इसने अपनाया नहीं। ये (स्वर्ण) देखता है अपना, क्या जायेगा, ज्यों का त्यों रहता है। आप ही बताओ सोना हो या अन्य धातु हो, सभी अपने ढंग से रह रहे हैं। भगवान के ऊपर धारा करते

है, पितल से, चांदी से या तनक सी लुटीया से, सोने की से करते हो।

लुटिया तो तनक सी ही है। आप ही बताओ सोने के बर्तन को घिसते नहीं कहीं मिट न जाये। मिटना तो है ही, किमती चीज है। भैया दूध डाल दिया तो मांजना तो पड़ेगा। कपड़े से पोंछ लेते है, शुद्ध बनाना है तो धोना तो पड़ेगा। आपको किमत बहुत नजर आ रही है। आत्मा का क्या स्वभाव है? भगवान की ओर देख लो। सोना नहीं रत्न से भी धारा करो तो भगवान को, देखते तक नहीं। तनक सी मुस्कान नहीं आ सकती।

भगवान क्यों नहीं मुस्कराते, जब कि आप भक्ति कर रहे हो। तो स्वभाव के बारे में उन्होंने बताया। थोड़ी सी मुस्कान ले लो तो... देखो मुझे देखकर मुस्करा दिये, तुम्हें देखकर नहीं, मैं भगवान के बहुत निकट का हूँ, तुम तो दूर हो ये राग आ गया। हम ये ही समझते हैं कि भगवान राजी हो जाये। वे किसी से राजी होते ही नहीं, न ही नाराज किसी से होते हैं। हम मान लेते हैं, उनके स्वभाव / स्वरूप को समझने में वर्षों लग जाते है बन्धुओं।

पहले उश वर्ष पूर्व आये थे - है न, मतलब आप लोग गिन रहे हैं। दो को एक तो नहीं गिन रहे न। आपकी ऊँगलियाँ है, आपकी गिनती है। हम तो हाँ कह देते हैं। हमने तो देखा अभिनन्दन नाथ भगवान के सामने ऐसा लगा जैसे पंचकल्याणक ही हो रहा हो। हमारे लाने भी आगे के लिये कमाई हो रही है। अब गाड़ के नहीं रखीयो। गाड़ने का जमाना

ठीक नहीं है, गाहना ही ठीक है।

मध्याह्न का अवसर दिया है आपको। भगवान तो लेते-देते हैं नहीं। आप यदि गाह कर रखेंगे तो ध्यान रखना - भक्त भले ही बन जाओगे भगवान नहीं बन पाओगे। भगवान बनने के लिए जो सही का भक्त बनता है वही बन सकता है बाकी उसही-उसही ही रहता है। आप ऐसे ही भक्त बनें।

"पात्रचयन" अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ

22-11-18 "प्रधानमन्त्री बनायेगा मन्त्रीमण्डल" मध्याह्न

यह ललीतपुर है और पंचकल्याणक का अवसर है, वह भी गौशाला में पंचकल्याणक गजरथ के साथ यह पंचकल्याणक सम्पन्न होने जा रहा है। ललीतपुर में अतीत में कई गजरथ महोत्सव सम्पन्न हुये हैं आगे के बारे में तो कुछ कह नहीं सकते लेकिन दयोदय में तो उसमें भी आगे कुछ कह नहीं सकते। दया का पालन करते हुये यहाँ गौशाला में 3-3 हजार पशुओं का एक साथ पालन किया जाता है ऐसी यह गौशाला है।

किसी भी प्रकार की कमी नहीं आने देने वाली यह गौशाला है। जब सब क्षेत्रों में मौलिकता को रखना चाहते हो तो दयोदय में पीछे रहने वाले नहीं। अभी ज्यादा उत्साह करना तो ठीक नहीं क्यों कि ललीतपुर में यदि लड़के की प्रारम्भ में ही प्रशंसा कर दे तो वह नम्बर नहीं ले सकेगा। अभी हमें भी सोचना होगा।

भारत में दया का समर्थन करने वाली जनता इस लीला की ओर अवश्य ही जायें। ज्यादा तो नहीं कम शब्दों में कहा जाता है तो कविता का रूप बन जाता है।

यहाँ पर कई गोष्ठीयों में मूकमाटी कविता को रूप प्रदान किया जाता था। ज्यादा तो नहीं इतना ही कहना था। शासन की जब बात चलती है तो प्रथम प्रधानमन्त्री का चयन होता है फिर प्रधानमन्त्री अपने आप ही मंत्रीमण्डल को मंत्री पद सौंप देता है। अपने अनुरूप ही मंत्री मण्डल को पूर्ण कर लेता है। ऐसा ही यहाँ पर हो गया। आप लोग भी उनका सहयोग करें तभी अच्छा लगता है। क्यों ठीक कह रहा हूँ न मैं? हिम्मे?

जैसे मान लो वैशभूषा तो पूरे शरीर पर हो गयी। खचाखच भर दिया किन्तु मुकुट तो रखा ही नहीं गया है। इसलिए आप लोगों को आगे भी-अभी करना है। समय तो हो ही चुका है। मुकुट लगने पर अपने आप ही निखार आ जाता है। गोशाला के समर्थक हैं वे तो विशेष रूप से इसमें आ चुके हैं, और क्या-क्या बनना है पता नहीं किन्तु इन सबका ध्यान रखेंगे।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नुँ विशेष- पॉजेटीव पक्ष पहले हो, नेगेटिव बाद में। इण्डिया नहीं भारत बोलो के स्थान पर "भारत बोलो - इण्डिया नहीं" तो अच्छा होगा। साथ ही भारत बड़े एवं डार्क शब्द में हो जब कि इण्डिया छोटे एवं हल्के रंग के शब्दों में लिखना चाहिए।

हीरापाल मन्दिरजी

23-11-18 "भक्ति की उम्र नहीं होती" प्रातः

ऐसा लग रहा था जैसे मुफ्त में मिठाई बंट रही हो। जब वैसा ही नहीं लगेगा तो कौन नहीं लेगा? मैं सोच रहा था कि आज ऊपर का सौधर्म इन्द्र भी एक प्रकार से पीछे रह गया होगा। यहाँ पर ऐसे ही नाच रहे थे लोग। युवाओं का तो ठीक 80-90 साल के दादा जी भी नाच रहे थे। उसके सामने सौधर्म इन्द्र का ताण्डव नृत्य भी फिका पड़ गया। सब लोगों ने भाग लिया कोई बचा ही नहीं। उसमें मैं भी शामिल हो गया।

यहाँ पर ऐसे ही हो गया जैसे गेहूँ / धान की खेती करते हैं तो शुरुआत में तो एक-एक पौधा दिखता है किन्तु बाद में कोई भी नहीं दिखता मात्र खेत ही नजर आती है। यहाँ पर भी ऐसा ही हो गया कोई दिख ही नहीं मात्र खेत दिख रही है। लेकिन सुनो! इसका आनन्द केवल मैं ही ले रहा हूँ। अब खेत डालने की कोई आवश्यकता नहीं है। अब आप लोगों को टिकिट मिल गया है, उसे अपने ढंग से संभाल कर रखना है।

मध्याह्न में सामायिक के बाद दयोदय गौशाला / अयोध्या नगरी की ओर सारे लोग, धुमधाम से विहार होगा। जो भी समय निश्चित है उसी में सब कार्य करना है। इतना अवश्य है कि योजना के अनुसार जो संकल्प लिये हैं, उन्हें पूर्ण करना है। प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप सबकी भावना पूर्ण हो एवं खूब प्रभावना हो।

मध्याह्न में विहार-गौशालाहेतु अहिंसा परमो धर्म की जय। नूँ

"पंचकल्याणक महोत्सव"
[24-30 नवम्बर 2018]

गौशाला-ललीतपुर

24-11-18 शरीर वही - बदबु क्यों? प्रातः

सुनते हैं एक व्यक्ति कई महिनो से रोग ग्रसित होकर के अपनी चर्या - अपनी क्रिया आदि जो भी है उसे भूल चुका है चुंकि अब उसकी आयु पूर्ण हो जाती है क्यों कि उस समय दूसरा कोई नहीं था, परिवार आदि भी कार्यवशात् अन्यत्र चला गया। मैं आपसे पुछना चाहता हूँ कि जो महिनो तक वह व्यक्ति रहा कुछ नहीं हुआ किन्तु अब एक दिन भी नहीं हुआ बदबु आने लगी। महिनो तक होश-हवाश खो चुका था पर जीवित था अब जीवन नहीं रहा।

इसीलिए उसमें विकृति प्रारम्भ हो गयी। आप लोग शरीर को ही आपा मानते हो जब कि यह तो सड़न-गलन स्वभाव वाला है। आत्मदृष्टि रखने वाला उस सड़न-गलन को रोक सकता है, आप भी रोक सकते हो। तीर्थंकर आत्मा का वही स्वभाव है। यहाँ वही होने वाला है। आप लोग तो आ ही गये हैं, हमारा भी आना हो गया है। कितना बनता है पता नहीं। जितना बन सके - देखो। इस वर्ष का तो - दिवाली के दूसरे दिन ही ही विहार हो गया और अष्टाह्निका के अंत-अंत तक यहाँ पहुँच ही चुके हैं।

ये अवसर दुर्लभ होते हैं जो आपको प्राप्त हो गया है। समय ऐसा मुहूर्त का निकला कि जो विहार का निमित्त हो गया। आप सभी मिलकर इस कार्य को रुचि एवं उत्साह से करें। कल पात्र चयन भी हो गया। अब मुहूर्त के अनुसार जो भी ब्रह्मचारी जी कहें उसी अनुरूप कार्यक्रम सम्पन्न करना है।

अहिंसा परमो धर्म की जय। नेमी

२५-११-१४ "घटयात्रा प्रवचनांश" प्रातः

- कम समय में भी हम अपनी पूरी बात रख देते हैं, एवं कम समय में आप सार को ग्रहण कर सकते हो।
- "तात्कालिक की अपेक्षा यदि त्रैकालिक को स्वीकार करलो तो सबसे अच्छा स्वाध्याय होगा। त्रैकालिक स्वभाव है आत्मा का।"
- विज्ञापन के द्वारा माल जल्दी बिक जाता है, पर यह आधुनिक प्रणाली है - आज की शताब्दी की देन है। इसमें धोखाधड़ी होती है।
- यदि वस्तु में गुण होगा तो विज्ञापन नहीं कोसों दूर से भी आकर ले जायेगा।
- गम्भीरता तभी आयेगी जब त्रैकालिक स्वभाव पर नजर होती है। जल्दबाजी नहीं करना चाहिए।
- चकाचौंध में न उलझो - वास्तविकता को कभी मत भूलो "यह भी बीत जायेगा" आज शुरुआत है - फेरी के दिन पता लग जायेगा।
- जो दाम भी ले ले और कन्या भी ले ले फिर भी जीवन पर छबाता रहे उसका नाम है - दामाद। सार्थक नाम रखा है दामाद।
- संजय एक व्यक्ति आहारोपरान्त कमण्डलु लेकर आया। अपनी गृहस्थ की कहानी सुनाने लगा (बोलते - बोलते उसने कहा पत्नि की ओर देखते हुये - महाराज ५० वर्ष से झेल रहा हूँ।

□ विवाह के बाद कितना सुख है ये सभी जानते हैं। दुख ही दुख है किन्तु कोई भी नहीं कहता क्यों कि कहीं पोलपट्टी खुल न जाये इसलिए सुखी जैसा ही नजर आता रहता है।

□ त्रैकालिक स्वभाव वाला ही कर्म सिद्धान्त को समझता है। पहले जो किया उसका फल अभी मिल रहा है - अभी जो कर रहे हैं उसका फल आगे मिलेगा। यही स्वभाव है।

□ बाजार से सौदा खरीदते हो तो भाव पूछते हो फिर शादी करने से शर्म क्या हो जाता है?

□ साल गिर जाये उसका मतलब है साल गिरह।

□ कितनी बार झेलना है ये तो चेलना से ही पूछ लेना। दोनों से जुड़ा है दाम्पत्य जीवन।

□ एक-एक करके साल गिरते जा रहे हैं और अनागत की आपत्तियों से घिरते जा रहे हैं।

□ चाहे मध्य-प्रदेश हो या उत्तर प्रदेश ये भी एक शाला है - जिसका नाम है - गौशाला।

□ स्वाध्यायशील व्यक्ति जो कर्मोदय होता है उसमें तटस्थ रहता है। रोता नहीं अपितु जो गांठ लगी है उसे खोलता चला जाता है।

□ टूटे फूल को देखकर खिले फूल ने गम्भीरता से कहा "संसार में कुछ नहीं है। "तनक सा भी नहीं"

□ बेटे को धर्मध्यान सीखाओ - धन-ध्यान नहीं।

□□□

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
1.	14/07/2018	कर्त्तव्य भी हो, भक्ति के साथ	खजुराहो	3
2.	15/07/2018	श्रीफल भी पड़ गये कम		8
3.	16/07/2018	बुराई से बचने की पुडिया		9
4.	17/07/2018	भाग्य को सुधारती-वैराग्य की स्मृतियाँ (प्रातः)		15
5.	17/07/2018	संयम स्वर्ण महोत्सव समापन समारोह प्रवचनांश (मध्याह्न)		18
6.	18/07/2018	रोटी का कमाल		22
7.	19/07/2018	जहाँ Since मौन होता, वहाँ हमारा विज्ञान बोलता		26
8.	20/07/2018	आओं बनायें समन्वय पार्टी		31
9.	21/07/2018	मोह रूपी राह को हटाना है मोक्षमार्ग		38
10.	22/07/2018	जीवन जीने की विधी		44
11.	23/07/2018	कीमत पहलु की		48
12.	24/07/2018	देव नहीं महादेव बनो		54
13.	25/07/2018	संदेश श्रीफल की आँखो का		58
14.	26/07/2018	चातुर्मास का मुख्य उद्देश्य है साधना		61
15.	27/07/2018	मिल गये भगवान गौतम स्वामी को (प्रातः)		63
16.	27/07/2018	गुरु पूर्णिमा प्रवचनांश (मध्याह्न)		67
17.	28/07/2018	स्वयं में शासित होना ही वीर शासन जयंती		71
18.	29/07/2018	बड़े-बड़े आचार्यों की साधना स्थली है खजुराहो		75
19.	30/07/2018	सोच हो-आसमान सी		72
20.	31/07/2018	आओ समझे जीवन की सच्चाई		81
21.	01/08/2018	कैसे दूर करें- मन की उचटन		83
22.	02/08/2018	आओ सीखें-मन का संचालन		87
23.	03/08/2018	आओ सुधारें अपनी मान्यता		92
24.	05/08/2018	फास्टफूड ने दिलाया विश्वास पुनर्जन्म पर		96

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
25.	06/08/2018	मोहक्षय से बढ़ता ज्ञान का क्षयोपशम	खजुराहो	99
26.	07/08/2018	सोचो पर सीधा, उलटा नहीं		101
27.	08/08/2018	मछली की तरह हल्के बनो		105
28.	09/08/2018	तत्त्वार्थ-सूत्र रूपी रसायन शास्त्र		107
29.	10/08/2018	पहचानिये आत्म-हीरे को		110
30.	11/08/2018	आओं देखें आत्मा रूपी लाइट में		113
31.	12/08/2018	सम्बन्ध छूटा तो जीवन टूटा		115
32.	13/08/2018	पंक में रहकर भी बनो पंकज		117
33.	14/08/2018	कब सोना और कब उठना?		120
34.	15/08/2018	उद्यम करो- उधम नहीं		122
35.	16/08/2018	बाधक नहीं- साधक बनों		125
36.	18/08/2018	आओ बचें कषाय रूपी तापमान से		127
37.	19/08/2018	थोड़े से भी पुरा हो सकता है काम		129
38.	20/08/2018	विभाव से भी प्राप्त होता स्वभाव		130
39.	21/08/2018	कैसे खुलें गाँठ समय पर		133
40.	22/08/2018	संदेश देता सर्प		135
41.	23/08/2018	कैसे हटायें मोह रूपी राजा को		137
42.	24/08/2018	अप्राकृतिक जीवन का नतीजा		139
43.	25/08/2018	क्या कहती है ढ़ोलक हमसे		142
44.	26/08/2018	कसकर पकड़ो देव गुरु शास्त्र रूपी ड़ोर को		145
45.	27/08/2018	प्रदुषण फैलाता Mobile		147
46.	28/08/2018	लाड़-प्यार कितना?		152
47.	31/08/2018	आओं जानें मूल्य बहुमूल्य का		157
48.	01/09/2018	कैसे करें धार्मिक अनुष्ठान?		160
49.	03/09/2018	घनत्व भावों का		162
50.	04/09/2018	मुक्ति जिससे, फिर मुक्ति की क्या बात?		164

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
51.	05/09/2018	समझाना नहीं समझना	खजुराहो	165
52.	06/09/2018	अतिक्रमण नहीं प्रतिक्रमण करो		167
53.	07/09/2018	स्वयं सेवक बनो- नेता नहीं		170
54.	14/09/2018	उत्तम क्षमा धर्म		175
55.	15/09/2018	उत्तम मार्दव धर्म		176
56.	16/09/2018	उत्तम आर्जव धर्म		179
57.	17/09/2018	उत्तम शौच धर्म		181
58.	18/09/2018	उत्तम सत्य धर्म		182
59.	19/09/2018	उत्तम संयम धर्म		184
60.	20/09/2018	उत्तम तप धर्म		186
61.	21/09/2018	उत्तम त्याग धर्म		187
62.	22/09/2018	उत्तम आकिञ्यन धर्म		189
63.	23/09/2018	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म		191

रविवारीय एवं विशेष प्रवचन

64.	05/08/2018	चिकित्सा शिविार समापन समारोह प्रवचनांश		194
65.	12/08/2018	रविवारीय प्रवचनांश		198
66.	15/08/2018	स्वतंत्रता दिवस प्रवचनांश		200
67.	18/08/2018	मोक्ष सप्तमी प्रवचनांश		201
68.	19/08/2018	रविवारीय प्रवचनांश		203
69.	26/08/2018	रक्षाबंधन पर्व- प्रवचनांश		206
70.	02/09/2018	रविवारीय प्रवचानांश		209
71.	24/09/2018	स्वर्णोदय - तीर्थ दिलायेगा मुक्ति		212
72.	25/09/2018	मूल मंत्र है, देखो-देखो		213
73.	28/09/2018	सभी दूर से आये हैं (प्रातः)		218

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
74.	28/09/2018	अपने दोषो को निर्मूल करना है- मोक्षमार्ग (मध्याह्न)		219
75.	30/09/2018	स्वर्णोदय तीर्थ का शिलान्यास		223
76.	04/10/2018	कैसे करें विधान?		224
77.	06/10/2018	समझो फण्डा Mobile का		226
78.	07/10/2018	लेश्या हो छिले गोले की सी		230
79.	08/10/2018	चेतन रत्न मिले वह गाँव कैसे?		232
80.	09/10/2018	कर्णप्रीय हो ध्वनि		233
81.	10/10/2018	क्या हो उद्देश्य विधान का?		236
82.	11/10/2018	आराध्य के भी आराध्य की हुई आराधना		240
83.	12/10/2018	द्रव्य चढ़ाओ- बिखराओ नहीं		239
84.	13/10/2018	आओं बने हल्के - भारी नहीं		241
85.	14/10/2018	हलचली अथ के द्वारा		243
86.	15/10/2018	64 प्रहरी पीपल है - हथकरघा		246
87.	16/10/2018	कैसे हो भविष्य मीठा?		250
88.	17/10/2018	ठुकराओ मत- गले लगाओ		252
89.	18/10/2018	कषाय कितनी? जीरो वॉट जितनी		254
90.	19/10/2018	खतरनाक कौन? युग या आप		258
91.	24/10/2018	शरद पूर्णिमा का संदेश		260
92.	25/10/2018	आना न पड़े - जाना पड़े		263
93.	26/10/2018	जाना कहाँ ?		265
94.	28/10/2018	कैसे बढ़ायें आँखों की ज्योति ?		266
95.	29/10/2018	जीवन जीना सिखाती भ्रामरी वृत्ति		270
96.	30/10/2018	आओं करें जिनवाणी सेवा		272
97.	31/10/2018	Well Come नहीं Well Go		275
98.	04/11/2018	बिन्दु से सिन्धु- मतलब-श्रमदान		278
99.	05/11/2018	सबका परिचय एक- सचिदानन्द		280

क्र.सं.	दिनांक	विषय	स्थान	पृष्ठ क्र.
100.	06/11/2018	शिक्षा लो वीतराग संतो से	खजुराहो	281
101.	07/11/2018	तुने खूब दिया भगवान		283
102.	08/11/2018	कैसे करें जीवन का संवर्द्धन एवं संरक्षण		284
103.	09/11/2018	गरीब नगर नहीं राजनगर है	राजनगर	286
104.	11/11/2018	कमजोर को बनायें बलजोर (प्रातः)	छतरपुर	287
105.	11/11/2018	जय-जय अतिशय क्षेत्र (मध्याह्न)		289
106.	12/11/2018	गाँव है सच्ची पाठशाला (प्रातः)	पहाड़गाँव	291
107.	12/11/2018	सब धर्मों का सार-अहिंसा (मध्याह्न)		293
108.	13/11/2018	गरीब कौन? श्रीमान् कौन ?	पचेर	295
109.	14/11/2018	तपस्या का फल है सद् आचार-विचार (प्रातः)	खरगापुर	298
110.	14/11/2018	नियामक नहीं है काल (मध्याह्न)		301
111.	15/11/2018	बंधु कौन ?		305
112.	16/11/2018	मांजना लेकिन क्या ?	मँजना	307
113.	17/11/2018	सीख देती प्रकृति	धामना	309
114.	18/11/2018	खिलौना नहीं जिन्दगी है ये (प्रातः)	बंधा जी क्षेत्र	311
115.	18/11/2018	बंधा जी में मिट्टी बन गयी सोना (मध्याह्न)		312
116.	19/11/2018	मोह न गढ मतलब मोहनगढ़	मोहनगढ़	316
117.	20/11/2018	फण्ड़ा बार का	बार (उ.प्र.)	317
118.	21/11/2018	फिर मिलेंगे	महर्रा कॉलेज, ललितपुर	318
119.	22/11/2018	जंग से बचना है तो छोड़ो राग (प्रातः)	क्षेत्रपाल जी, ललितपुर	319
120.	22/11/2018	प्रधानमन्त्री बनायेगा मन्त्रीमण्डल (मध्याह्न)		321
121.	23/11/2018	भक्ति की उम्र नहीं होती		323
122.	24/11/2018	शरीर वही- बदबू क्यों ? (प्रातः)	दयोदय गौशाला, ललितपुर	324
123.	24/11/2018	घटयात्रा प्रवचनांश (मध्याह्न)		325